CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
6-3
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सपूत

केदार पाण्डेय

(स्मृति-ग्रंथ)

भोजपुरी अकादमी पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संपादक
हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'
सहकारी
अविनाशचन्द्र विद्यार्थी

●

संस्करण
प्रथम : दिसम्बर १९८३

●

मूल्य : एकावन रुपया
© भोजपुरी अकादमी, पटना-१

●

मुद्रक
कामेश्वर प्रसाद
कालिका प्रेस, पटना–४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्यमेव जयते

वजाहत हबीबुल्ला
निदेशक

2-10-83 पी० एम० पी०
प्रधानमंत्री कार्यालय
नई दिल्ली
23 मई 1983

प्रिय श्री त्रिपाठी,

प्रधान मंत्री जी स्वर्गीय केदार पांडेय की स्मृति में निकाले जा रहे भोजपुरी अकादमी पत्रिका के विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनायें भेजती हैं।

आपका
वजाहत हबीबुल्ला

श्री एस० पी० त्रिपाठी,
अध्यक्ष
भोजपुरी अकादमी
बोरिंग रोड,
पटना--800001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगजीवन राम
संसद् (लोक सभा) सदस्य

६, कृष्णमेनन मार्ग
नई दिल्ली
५-मई १९८२

हमरा ई जानके बड़ा खुशी भइल कि भोजपुरी एकादमी पत्रिका के अगिला अंक विशेषांक रूप में स्व० केदार पाण्डेय जी के पुण्य स्मृति में निकालल जा रहल बा। पाण्डेय जी प्रशासक आ संगठनकर्त्ता बड़ा कुशल रहलन। मजदूर संगठन उनका बड़ा नीमन लागत रहे। सुभाव से बहुते मीठा आ सरल रहलन। भोजपुरी के त ऊ जाने रहलन। एह नजर से भोजपुरी पत्रिका के विशेषांक निकालल जरूरी बा। आसा बा कि उनका जीवन आ काम पर एकरा जरिए रोशनी डालल जाई।

विशेषांक सफल होखे इहे भगवान से निहोरा बा।

—**जगजीवन राम**

●

डा० कृष्णदेव उपाध्याय
अध्यक्ष
भारतीय लोक-संस्कृति शोध संस्थान

३ गुरुधाम कॉलोनी
दुर्गाकुंड रोड
वाराणसी
११-११-८३

भोजपुरी अकादमी पटना अपना पहिल अध्यक्ष श्री केदार पाण्डेय जी के स्मृति ग्रंथ प्रकाशित कर रहल बा ई सुनि के खुशी भइल। जुग-जुग से जवन भोजपुरी संस्कृति अपना लोक गीत आ लोक कथा का बल पर जीअति आ रहलि बा ओकरा खातिर स्वर्गीय केदार पाण्डेय जी का मन में बहुते मोह-ममता रहे। उहाँ का सन १९६५ ई० में वाराणसी के भोजपुरी संसद के अधिवेशन के उद्घाटन करत हिन्दी का साथे साथ अपना मातृभाषा भोजपुरी के विकास खातिर बहुते प्रभावकारी भाषण देले रहीं। एक निस्पृह समाज-सेवी का रूप में पाण्डेयजी अपना जिला-जवार आ बिहार में नाँव कमइलीं आ बिहार का बाहरो देश-विदेश में भोजपुरी अस अंतरराष्ट्रीय भाषा के साहित्य-सृजन आ प्रचार-प्रसार का दिसाईं सही नेतृत्व प्रदान कइलीं। अखिल भारतीय भोजपुरी 'साहित्य-सम्मेलन आ भोजपुरी अकादमी पटना उहें के देन ह। स्मृति ग्रंथ खातिर हमार हार्दिक शुभ कामना स्वीकार कइल जाय।

—**डा० कृष्णदेव उपाध्याय**

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशकीय

भोजपुरी अकादमी के प्रतिष्ठापक श्री केदार पाण्डेय जी का असामयिक निधन से मर्माहत हो के अकादमी कार्यालय आपन हार्दिक श्रद्धांजलि अरपित करत खा सोचले रहे कि स्व० पाण्डेय जी का पुण्य स्मृति में 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' के एगो 'सरधांजली विशेषांक' निकालल जाय। एह उदेस से विहार राज्य आ एकरा वाहरो के साहित्य-समाज-सेवानुरागी महानुभावन कीहाँ पाण्डेय जी से संबंधित लेख आदि खातिर अनुरोध-पत्र भेजाइल। श्रद्धांजलि, संस्मरणांजलि आवे लागल। एही बीचे १४ मई १९८३ के अकादमी के कार्यकारिणी समिति का बैठक में विचार भइल कि पत्रिका के विशेषांक ना निकालि के एगो स्मृति-ग्रंथ प्रकाशित कइल जाय। एही संकल्प के पूर्णाहुति स्वरूप *भोजपुरी सपूत : केदार पाण्डेय* के समुझल जाय।

सीमित समय आ साधन का माँह में रहतो अकादमी से जे सँपरल हा ऊ पंच का सोझा वा। एह ग्रन्थ का पन्ने-पन्ने में, पंक्ति-पंक्ति में, शब्द-शब्द में पाण्डेय जी के स्नेही आ श्रद्धालु सज्जन लोग के अपार आदर, प्रेम आ श्रद्धा लखार वा। अकादमी के रोंआँ-रोंआँ उहाँ सभे के आभारी वा।

लाचारी वस कुछ रचनन के समावेश ना हो पावल हा; ओह सभन के स्मृति-ग्रंथ का अगिला संस्करन में उचित स्थान दिआई।

जो अकादमी के उपनिदेशक अविनाश चन्द्र विद्यार्थी जी एह पुनीत अनुष्ठान में जीवे-जाने ना लागल रहिते आ कालिका प्रेस के व्यवस्थापक श्री कामेश्वर प्रसाद (बच्चा बाबू) के अत्यन्त आत्मीय सहयोग का चलते प्रेस के सभे कर्मचारी रातो-दिन दिल लगाके ना खटल रहितन तऽ ई ग्रन्थ समय पर ना निकलल रहित।

एह में भोजपुरी अकादमी के निदेशक श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', सहायक निदेशक श्री रविशंकर चौबे, प्रधान लिपिक-सह-लेखापाल श्री ललन दुबे, लिपिक श्री संतोष कुमार त्रिपाठी का साथे-साथ अकादमी के आउर सभे कर्मचारीगन के सेवा के बिसारल ना जा सके।

शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी
अध्यक्ष
भोजपुरी अकादमी, पटना-१

साधनापुरी, पटना-१
७ दिसम्बर १९८३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूची

		पन्ना
१. चित्रावली		
२. सरधांजली	...	१
३. संस्मरणांजली	...	३४
४. चंपारन के भूंइ	...	१३७
५. केदार पाण्डेय जी के भाषा संवंधी विचार	....	१६१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

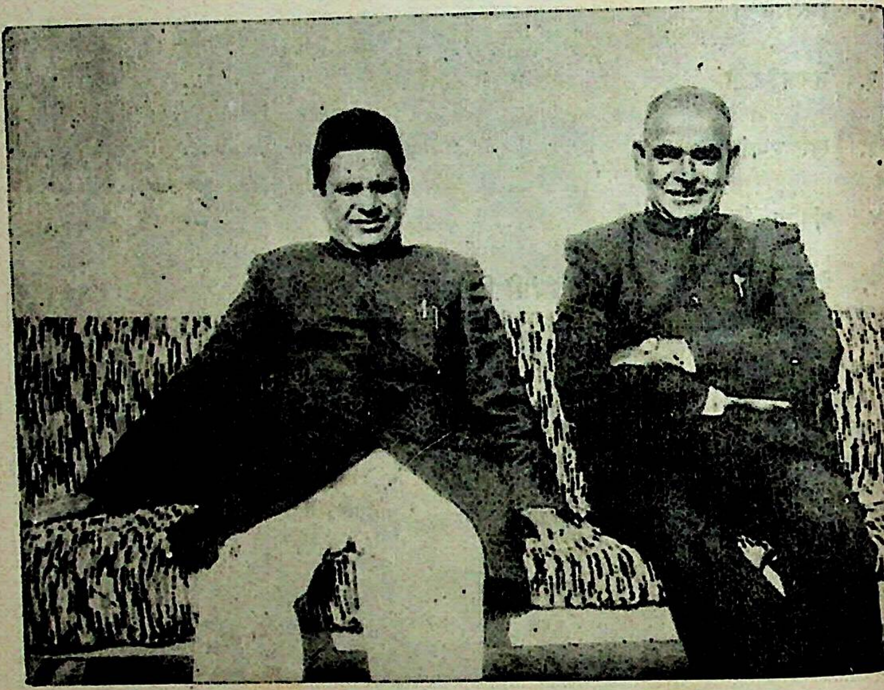

मोतिहारी में अपना मित्र श्री मथुरा चौबे, अधिवक्ता के साथ पाण्डेय जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

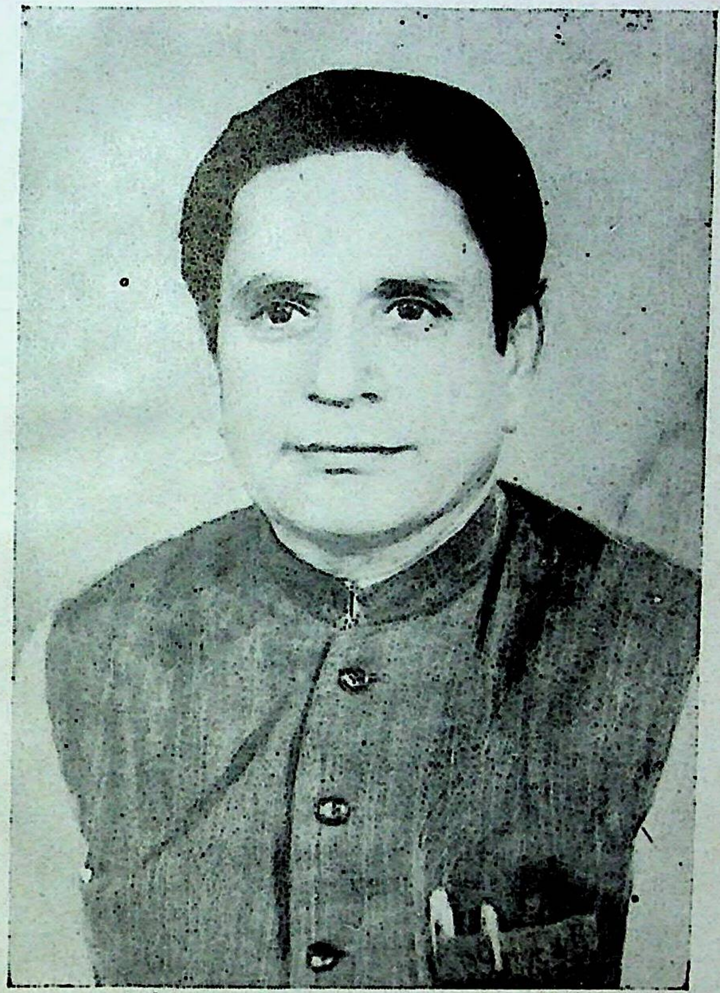

भोजपुरी सपूत

माई के बोली हमनी के भोजपुरी जब ले जीही
रोआँ-रोआँ एकर पांडे जी ! नइयाँ राउर लीहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

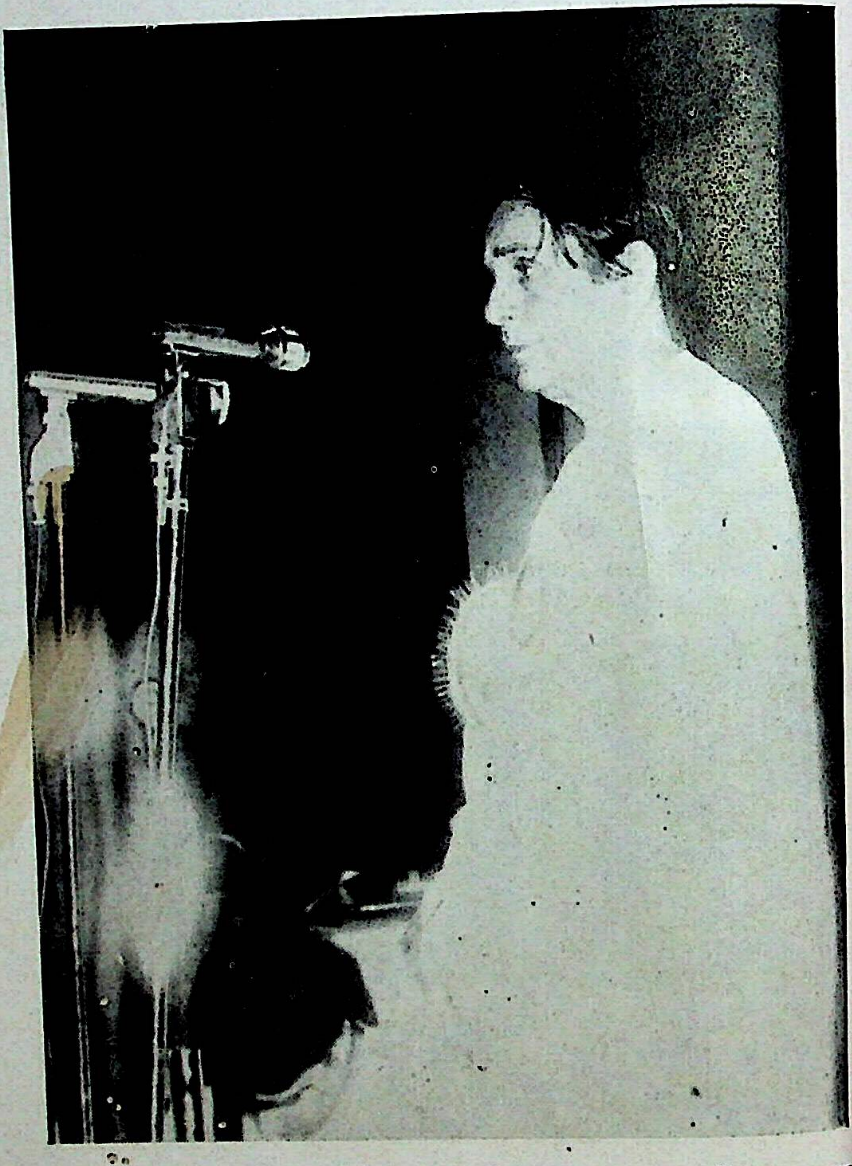

भोजपुरी अकादमी के तीसरा अधिवेशन में भारतीय नृत्य कला मन्दिर में भाषण करत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री केदार पाण्डेय : श्रीमती कमला पाण्डेय (धर्मपत्नी)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment. Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री मथुरा चौबे, अधिवक्ता कीहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

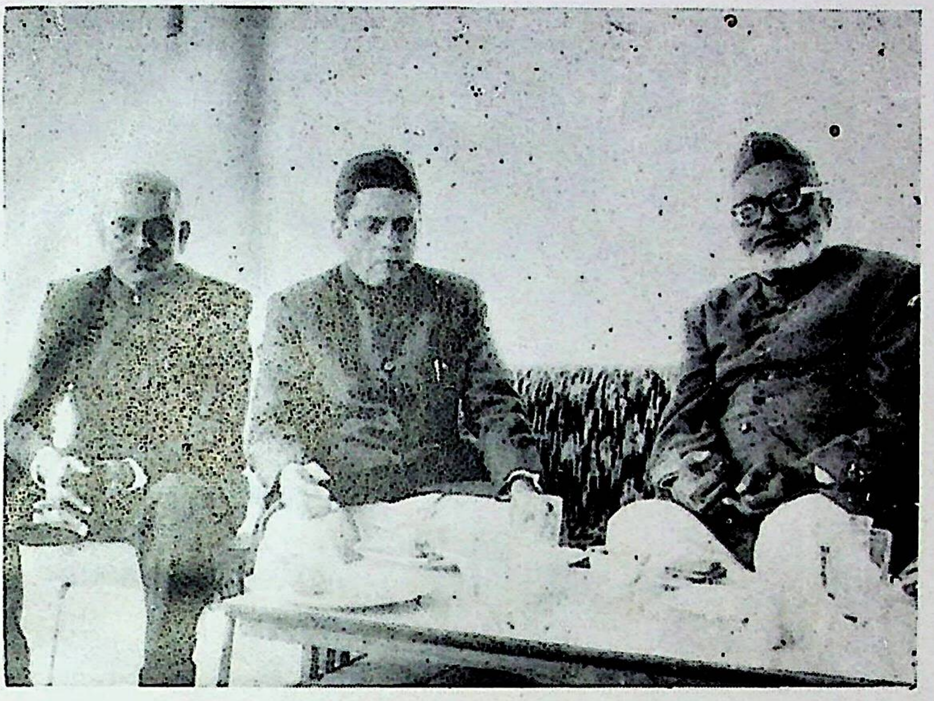

पाण्डेय जी श्री मथुरा चौबे के आवास पर

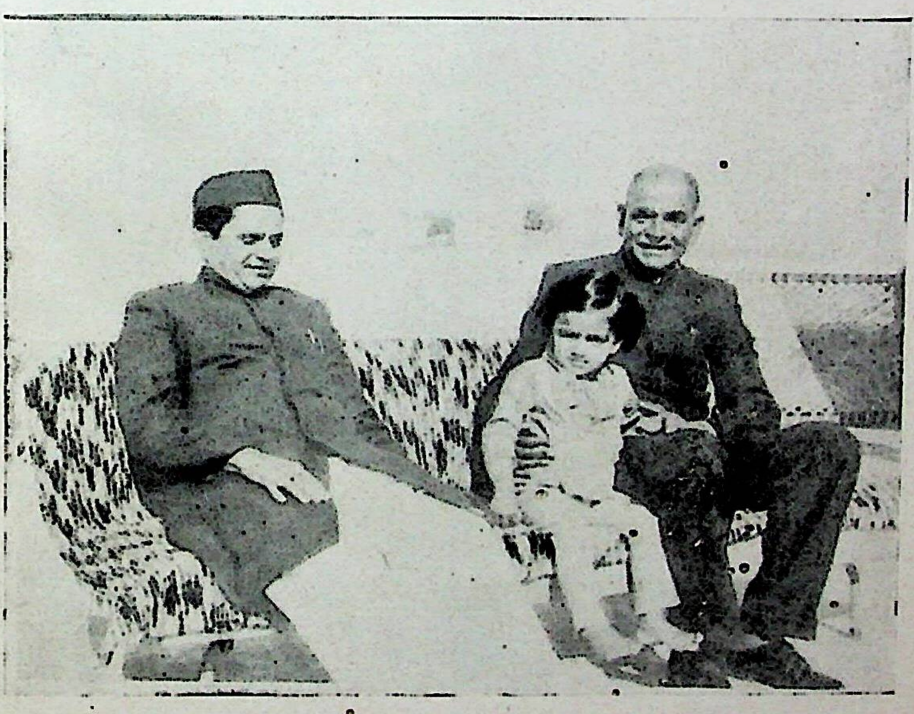

मोतिहारी में श्री मथुरा चौबे, अधिवक्ता के साथ पाण्डेय जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment. Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

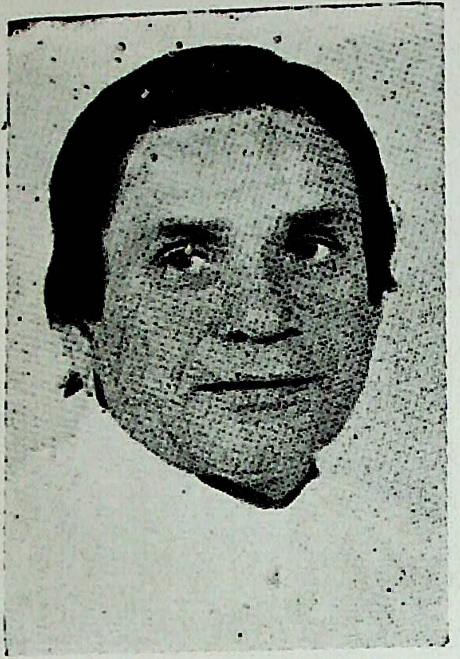

रेलवे मंत्रालय में

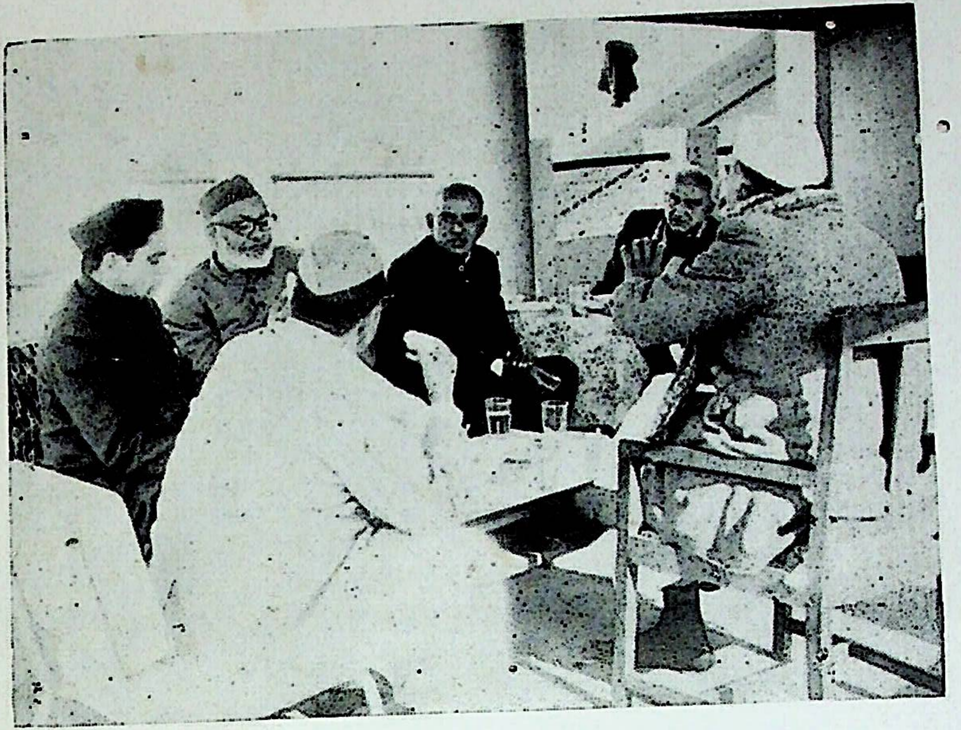

मोतिहारी में श्री मथुरा चौबे, अधिवक्ता का आवास पर बैठक में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अक्टूबर १९७६ में बुडापेस्ट से लवटला पर

३१ दिसम्बर १९८१ के अखिल भारतीय रेलवे
हिन्दी सप्ताह समारोह, कलकत्ता में भाषण करत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पटना जंक्शन प्लेटफार्म पर गंगादामोदर ट्रेन के उद्घाटन करत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरधांजली

I have known Mr. Pandey for a long time. In his death the country in general and Bihar in particular have lost an earnest patriot and an able administrator with varied experience.

Zail Singh
President of India

●

The public life is poorer by the death of Mr. Pandey. Mr. Pandey had served the country with distinction in different fields. Wherever he was, he took his work very seriously.

—M. Hidayatullah
Vice President of India

●

Mr. Kedar Pandey's death was severe loss to our public life. Mr. Pandey plunged into the freedom movement during the 'Quit India' struggle and later served the people with singular devotion making a mark as a trade union leader, legislator and minister. Mr. Pandey did notable work as Chief Minister of Bihar, and as a Central Minister. It is sad that he should have been removed from our midst when he had many more years to serve before him. He was a friend whose advice I shall miss.

—Indira Gandhi
Prime Minister of India

●

['दि टाइम्स ऑफ इण्डिया आ 'दि पेट्रिऑट' से साभार]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment. Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

A. Z. M. Obedullah Khan
Minister for Agriculture
Govt. of Bangladesh

We recall his (Mr. Kedar Panday's) valuable contribution to the work of the Joint Rivers Commission as his long and successful political career in the service to his nation.

●

Yogendra Makwana

राज्य मंत्री
कृषि मंत्रालय
भारत सरकार
नई दिल्ली 30 मार्च 83

Pandey ji was one of the staunch freedom fighters. He will ever be remembered for his devoted and dedicated services to the nation.

●

Bansi Lal
Member Parliament
(Lok Sabha)

8 Dr. Bishambhar Das Marg
New Delhi
April 2, 1983

Shri Kedar Panday was an able Parliamentarian and took keen interest in the proceedings of the Lok Sabha. We will be missing him very much.

●

M. G. PADHYE
Secretary (Irrigation)

सचिव
भारत सरकार
सिंचाई मंत्रालय
श्रमशक्ति भवन, रफीमार्ग
नई दिल्ली 33/31 मार्च 83

Shri Kedar Panday who was Union Irrigatian Minister shortly before his sudden and untimely demise had endeared himself to all the officers of and staff of the Ministry.

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ए० आर० किदवई
राज्यपाल, बिहार

राजभवन, पटना-22
अप्रील 4, 1983

Shri Kedar Pandey was a valiant freedom fighter, a true patriot, an eminent parliamentarian and a senior leader. He served the nation and the country with great dedication and made significant contributions for the development of Bihar. Besides he was a great advocate of social justice and enjoyed respect of all sections of people.

Pandeyji will be remembered long for his compassion and kindheartedness. In Shri Pandey's demise I have lost a very good friend whose sinere advice and help I greatly valued.

•

P. Ramchandran
Covernor of Kerala

Raj Bhawan
Trivendram
March 26, 1983

In the death of Shri Kedar Pandey, the country has lost an eminent son and a dynamic leader. Shri Pandey distinguished himself as a great freedom fighter, a leading trade unionist and an able administrator.

•

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(Extract from the reference made before the Full Coust on 18th April 1983 at 1.15 P.M.)

Mr. S. C. Ghose *(on behalf of the Advocates Association)*

Shri Kedar Pandey was a great personality. He was a great freedom fighter and dedicated his whole life for the poverty stricken people. He campaigned for the cause of the poor people not only by words but by his deed. It reminds me of one occasion when I was travelling from Patna to Ranchi in a first class compartment Just when the train was about to leave Patna Junction, Shri Kedar Pandey came in the very compartment in which I was travelling. He had got a very small suitcase in his hand. I thought that some one might be bringing his luggage but he had none. I offered him a chadar and a pillow, which I had, but he declined. He took a Khaddar Lungi and spread it on the berth. I however forced him to accept at least the pillow which he had done. He travelled the entire journey from Patna to Ranchi showing great success of an individual, who could sacrifice himself for the cause of others.

●

Mr. Prem Lall *(on behalf of the Bar Association)*

He was of affable nature and of sweet temperament His ability to remain cool even in most adverse circumstances is well known to all. He was extremely warm hearted and a real human being. He was a great advocate of social justice and he enjoyed respect of all sections of people. He was a real friend of the poor and down troddem.

●

The Advocate General **Mr K. P. Verma**

Life of Shri Kedar Pandey was full of learnings and sacrifices. He joined Bar as pleader at Motihari. On the 3rd of April 1952 he was enrolled as an advocate by the Bar Council and he shifted his practice to Patna High Court. In the same year he left the praetice and dedicated his life for national and social services. Shri Kedar Pandey was a man of clean heart He was socialist by conviction and a good lawyer by culture I came very close to him in the year 1962 when I was conducting a case against him. After the court hours be never allowed me to feel that I was posted against him in that case. In 1972 I became his lawyer in another case. He used to visit my place and talk heart to heart.

By his death we have lost a great leader of the State and a great friend of the poor.

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Hon'ble the Chief Justice

True it is that his entry in the Bar of the High Court at Patna may not perhaps be called a main part of his career, as his talent and spirit directed him to play the role of a political leader of high eminence; yet we should not forget the fact that he was, at one poi t of time, an advocate of this Court and that even when he was at the helm of the State affairs as Chief Minister of Bihar and later a Union Cabinet Minister, he used to exercise his right of franchise in the elections of the State Bar Council.

●

Ram Chandra Sinha, ***I. A. S. Retd.*** Patna-3

Advocate, Kadam Kuan 4. 4. 83

I had known Pandeyji since 1947 when I was posted in Motihari. Later I came to know him more intimately when he came over to Patna I was with Dr. S. K. Sinha. He had soon made his mark as a parliamentarian and administrator. I had the privilege to serve as a Principal Secretary to Govt. in a number of Departments under him. I always recall his great charm, administrative skill of the higher order and qualities of leadership which was so encouraging to the services. His death has been a great loss to India.

●

J. N. Pandey Ranchi--834002

Chief Conservator of Forests 26. 3. 1983

Bihar

Respected Shri Kedar Pandey ji was not only our leader and leader of Bihar but was a national figure loved and respected by all. His amiable personality, his smiling face and endearing and charming manners evoked instant respect of all. India and specially Bihar will miss this towering person for all times. It has been a cruel fate which has snatched him from our midst when we needed him most.

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

R. L. Bhagat
Advocate

Bhairopatti Farm
Darbhanga
27-4-83

I had the priviledge of being his classmate from Ist year to 4th year B. Sc. We remained in the same Hostel of the B. H U. block, took food in the same mess. During that period, in addition to collegiate activities, we were regular visiters to Shivaji Hall for phyisical exercise. Now he is no more but I am reminded of our college days and association. He went in politics while I had no touch with politics. Even now, I used to meet him whenever he came to Darbhanga and maintained that relation.

●

R. P. Choubey B. L.
Hony Counsel
Departmental Proceedings

Raghunathpur
Motihari

Late Pandeji had propounded and added to the political concept as a political head of the State Govt. of Bihar quoting 'every citizen had a right to sleep'. Alas ! there is no follow up action in sight.

●

Sitaram Rungate

Rungata House
Chaibasa
March 28, 1983.

He was personally known to me and we had intimate connection with him. He was a distinguished leader not only in Bihar but in the country. I had personal contact with him during his life. I feel personaly grieved at his passing away.

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजनारायण

६, तीनमूर्ति लेन
नई दिल्ली
२६ मार्च ८३.

भाई केदार पाण्डेयजी के आकस्मिक एवं असामयिक निधन का समाचार सुनकर मैं हतप्रभ हो गया तथा अपार कष्ट हुआ। मैं इन दिनों दौरे पर था और यह दुखदायी समाचार मुझे घुघली, गोरखपुर में सुनने को मिला। श्री केदारजी हमारे विद्यार्थी जीवन के साथी थे और महामना पंडित मदनमोहन मालवीय की कृति बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हम लोगों ने साथ-साथ अध्ययन किया। पाण्डेयजी हम से दो वर्ष जूनियर थे और हमारा तथा उनका संबंध बड़े एवं छोटे भाई जैसा था, उन्होंने उस संबंध को रजनैतिक मतांतर एवं अलग-अलग राजनैतिक दलों में होने के बावजूद बनाए रखा। जो हम दोनों कहीं मिलते थे तो विद्यार्थी-जीवन के वे स्वर्णिम समय अनायास आँखों के सामने आ जाते थे। उनके निधन से मेरा एक बचपन का साथी एवं शुभ चिन्तक हम से बिछुड़ गए।

●

रामावतारशास्त्री
संसद (लोक सभा) सदस्य

२८, नार्थ एवेन्यू
नई दिल्ली १

स्व० श्री केदार पाण्डेय जी की स्मृति में भोजपुरी अकादमी पत्रिका का विशेषांक प्रकाशित करने प्रयास स्तुत्य एवं सराहनीय है।

पाण्डेय जी से मेरा निकट का संबंध रहा है। उनके स्वतंत्रता सेनानी होने के नाते वह मेरे लिए विशेष रूप से श्रद्धाके पात्र रहे हैं। उनके निधन से बिहार को भारी राजनीतिक क्षति उठानी पड़ी है। स्वतंत्रता सेनानी ता खास तरह से मर्माहत हैं।

●

डा० राम शोभित प्रसाद सिन्हा

पुस्तकालयाध्यक्ष, सिनहा लाइब्रेरी, पटना

पुस्तक-प्रेमी पाण्डेय जी सिनहा लाइब्रेरी में ज्ञान-विज्ञान के नया-से-नया किताब देखे खातिर ललकल रहत रहीं। भारत सरकार के मन्त्री पद पर रहत एक बेर Moon पर पत्र-पत्रिका आ पुस्तकन के सवाचे उहाँ का एक पुस्तकालय में आइल रहीं। जब हम एगो टटके निकसल अमेरिकन प्रकाशन के जिकिर कइलीं तब उहाँके कहलीं कि किताब आवे त खबर देव। संजोग से जब ऊ किताब आइल तब पाण्डेय जी एक-दू दिन खातिर पटना आइल रहीं। हमरा फोन से कहत-कहत में पाण्डेय जी के गाड़ी आ गइल। ऊ किताब देखि के उहाँ के चेहरा पर जे अगरहट लउकल ऊ हमरा कबो ना बिसरी।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सैयद अब्दुल मजीद
नाजिम, यतीमखाना बदरिया-ए-बेतिया (मगरबी चंपारन)

"उन्होंने जिला चंपारन का नाम पूरे हिन्दुस्तान में रौशन किया। उनकी हुब्बुलवतनी (देशप्रेम की भावना), कौम परस्ती, यकजहती (संगठनात्मक गुण) हमारे लिए मशाले-राह है। मुझे उनके साथ रहकर सेयासी और समाजी जिन्दगी गुजारने का मौका मिला। मैं फेराखदिली (मुक्त हृदयता), रौशन जमीरी (उज्वल विचार) और गरीबपरवरी पाकर बेहद मुतास्सिर (प्रभावित) हुआ। उन्हें यतीमखाना बदरिया के यतीम बच्चों और बच्चियों से गहरा दिली लगाव था जिसका हर मौके पर बराबर इजहार-ए-खयाल फरमाते थे।'''जिला चंपारन यतीम हो गया है। खुदा करे कोई इसकी सही सरपरस्ती के लिए आगे बढ़े।

●

डा० अब्दुल मोगनी
अध्यक्ष, अंजुमने-तरक्किये-उर्दू, बिहार, पटना-६

आँजहानी (स्व०) केदार पाण्डेय साहब उर्दू दोस्त और अक्लियत नवाज (अल्पसंख्यक हितैषी) थे। वे एक साफ दिमाग और खुले दिल के सेयासत-दाँ थे और खास कर अपने अहदे वजारत में उन्होंने उर्दू दोस्ती और अक्लियत नवाजी का नुमायाँ सबूत दिया था। आप ने अंजुमन तरक्किये उर्दू बिहार को तालीमात से मुतल्लिक बाज सरकारी या नीम सरकारी एदारों में शख्सी तौर पर नुमाइन्दगी दी।

●

श्री शहजाद हसन मासूमी
संयोजक, बिहार राष्ट्रीय एकता समिति, पटना

केदार पाण्डेय जी ने राष्ट्रीय एकता और भाषाओं में एकता पैदा करने के कामों को बहुत आगे बढ़ाया। आपने बिहार की दूसरी भाषाओं जैसे मैथिली, भोजपुरी और उर्दू की अकादमियों के बनाने में अहम खिदमात अंजाम दिये हैं। आप से हिन्दू-मुसलमान-सिख-ईसाई सभी वर्गों के अदीब-ओ-शायर बराबर हिम्मत अफजाई पाते रहे हैं।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार विधान सभा

श्री राधानन्दन झा

अध्यक्ष

□ □

बिहार सरकार के भूतपूर्व मुख्य मंत्री एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री केदार पाण्डेय का देहान्त तिथि २५ मार्च १९८३ को डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली में मस्तिष्क-रक्तस्राव के कारण हो गया।

श्री केदार पाण्डेय का जन्म चंपारण जिले के 'तौलाहा' ग्राम में हुआ था।

प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम०एस-सी० और एल-एल० बी० की परीक्षाएँ पास कीं। तत्पश्चात् उन्होंने १९४५ में मोतिहारी और बेतिया में वकालत करना शुरू किया। बाद में वे १९४८ में पटना उच्च न्यायालय में वकालत करने लगे। इसके साथ ही उन्होंने कांग्रेस की राजनीति में सक्रिय भाग लेना आरम्भ किया और शीघ्र ही एक महत्त्वपूर्ण कार्यकर्त्ता के रूप में वे राजनीतिक क्षितिज पर छा गये। अपने राजनीतिक जीवन के प्रारंभ में वे सर्वप्रथम मजदूर आन्दोलन के नेता के रूप में उभरे। १९४६ से १९५४ तक वे लगातार भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की बिहार शाखा के उपाध्यक्ष तथा १९४६ से १९५२ तक चम्पारण चीनी मिल कर्मचारी संघ के महासचिव रहे। इसके अतिरिक्त वे कई वर्षों तक इंडियन नेशनल सूगर मिल वर्कर्स फेडरेशन के सचिव भी रह चुके थे।

श्री केदार पाण्डेय ने १९४२ के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में भाग लेने के कारण जेल की यातनाएँ भी सहीं।

श्री केदार पाण्डेय ने इतिहास के उस काल-खंड में राजनीति में दीक्षा ली जब मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए "करो या मरो" के मंत्र को असंख्य युवक-युवतियों ने वरण किया था। नेतृत्त्व के इस आदर्श निर्देश का अनुपालन करते हुए वे भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। चम्पारण की भूमि में अनेक बलिदानियों ने जन्म लिया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की कर्मभूमि में जनमे केदार पाण्डेय की अटूट देश-भक्ति शायद चम्पारण के परिवेश से मिली, जो अंतिम क्षण तक उनका स्वभाव बनी रही।

बेतिया के एक साधारण कृषक परिवार में उत्पन्न श्री केदार पाण्डेय का देश-सेवा के प्रति निष्ठा-भाव ही उन्हें उन ऊँचाइयों तक ले गया, जहाँ तक पहुँच पाना सामान्यत: संभव नहीं होता। उनका सरल और सहज स्वभाव, लोगों की कठिनाइयों को करीब से देखने-समझने तथा उनका हल ढूँढ़ने की उनकी उत्कंठा ने उन्हें दूरदृष्टि प्रदान की। यही दूरदृष्टि बाद में उन्हें कुशल प्रकाशक के रूप में प्रतिष्ठित कर गयी।

श्री केदार पाण्डेय का संसदीय कार्यकलाप भी शानदार रहा। १९५२ के सामान्य निर्वाचन में वे सर्वप्रथम बगहा निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। १९५७ में वे पुन: उसी क्षेत्र से निर्वाचित हुए। तीसरी बार १९६७ के आम चुनाव में वे नौतन निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान सभा के लिए चुने गये और १९६९ तक इसके सदस्य रहे। पुन: १९६९-७२, १९७२-७७ एवं १९७७-८० तक वे उसी क्षेत्र से राज्य विधान-सभा के सदस्य रहे।

प्रशासन के क्षेत्र में श्री पाण्डेय राज्य मंत्रिमंडल में १९५७-६२ तक उप-मंत्री बने और उन्हें उद्योग एवं प्रावैधिक शिक्षा विभाग सौंपा गया। बाद में १९७१ में उन्हें नदी घाटी योजना विभाग का मंत्री नियुक्त किया गया। १९७२ के सामान्य निर्वाचन के बाद श्री केदार पाण्डेय को राज्य के मुख्य मंत्री पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इस रूप में वे २ जुलाई, १९७३ तक कार्यरत रहे। वे १९८० में लोक सभा के लिए बेतिया निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित होकर केन्द्रीय सरकार के रेल मंत्री और बाद में सिंचाई मंत्री रहे।

श्री पाण्डेय अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य थे और वे वर्षों तक बिहार प्रदेश कांग्रेस (इ) कमिटी के अध्यक्ष भी रहे। बिहार विधान-मंडल कांग्रेस पार्टी के सचिव एवं मुख्य सचेतक के रूप में भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी।

प्रशासन के विभिन्न पदों पर रहकर श्री केदार पाण्डेय ने अपनी अपूर्व योग्यता, अप्रतिम कार्य-संचालन-क्षमता तथा एकनिष्ठ जन-सेवा के भाव का जो परिचय दिया है, वह बिहार ही नहीं, अपितु भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। उनके संगठन-संचालन की क्षमता, पार्टी के आदर्शों के प्रति अटूट आस्था और नेतृत्व पर विश्वास ने पार्टी के अन्दर उनके विरोधियों तक को प्रभावित किया।

यह निर्विवाद सत्य है कि उनके असामयिक महाप्रयाण से हमने एक ऐसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मठ राजनीतिक नेता और कुशल प्रशासक को खो दिया, जो अपने जीवन-काल में अनेक लोगों के प्रेरणा-स्रोत रहे। उनका अभाव भावी पीढ़ी को सदैव खलता रहेगा।

डा० जगन्नाथ

श्रद्धेय केदार पाण्डेयजी की मृत्यु से हमलोग सभी मर्माहत हुए हैं। उनके निधन से सम्पूर्ण देश के राजनीतिक जीवन और खासकर यहाँ विहार के राजनीतिक जीवन पर गहरा असर पड़ा है। वे एक सफल प्रवक्ता, समाजसेवी, कुशल प्रशासक थे। उनके निधन से समाजवाद का एक समर्पित नेता उठ गया है। पाण्डेयजी ने मजदूर आन्दोलन के नेता के रूप में राजनीतिक-जीवन में प्रवेश किया था। आजादी की लड़ाई में वे सक्रिय हिस्सा लिये और जेल की यातना भी सहे। भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस और चीनी उद्योग में मजदूरों के संगठन की हैसियत से उन्होंने मजदूर आन्दोलन में भी ख्याति प्राप्त की। वे १९५७ में उपमंत्री हुए, १९६९ में मंत्री बने और १९७२ में मुख्य मंत्री बने। उन्होंने ईमानदारी का जो मिसाल पेश किया है, चाहे वह कांग्रेस के समर्पित कार्यकर्ता की हैसियत से हो या उपमंत्री, मंत्री, मुख्य मंत्री की ऊँचाई पर, कहीं भी वे अपनी कार्य-पटुता के लिए याद किये जायेंगे। विलक्षण बुद्धि, सरल स्वभाव, मृदुभाषी उनके जैसा विरला ही होता है। वे १९८० में लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और रेल मंत्री हुए।

विहार के प्रशासन पर उनका स्थायी प्रभाव पड़ा है। विहार वरावर उनके कार्य की सराहना करता रहेगा। उनके कार्य को निरन्तर आगे वढ़ाने के लिये, आगे ले चलने के लिए हम लोग मदद करते रहेंगे। श्रीमती इंदिरा गाँधी के प्रवल समर्थक होने के नाते, समाजवाद के कट्टर नेता होने के नाते, कांग्रेस समाजवादी कार्यक्रम में, जो १९६९ में हुआ था उन्होंने अगली पंक्ति में जगह ली थी और दोवारे १९७८ में भी बड़ी दृढ़ता और मजवूती से आगे आकर उसका नेतृत्व उन्होंने किया था। प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष की हैसियत से भी और कांग्रेस संगठन के कार्यों को वड़ी मजवूती से उन्होंने किया था। ऐसे व्यक्ति के उठ जाने से सार्वजनिक जीवन में तो धक्का लगा ही है, हमारे कांग्रेस संगठन की भी क्षति पहुँची है।

श्री कर्पूरी ठाकुर

श्री केदार पाण्डेय अपने राज्य के मूर्धन्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं और कांग्रेस (आई) के नेताओं में थे। जैसा कि सर्वविदित है, उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में जबर्दस्त भाग लिया था और फलस्वरूप उन्हें जेल की यात्रा करनी पड़ी थी और जेल में यातनाएँ भुगतनी पड़ी थीं। वे ऐसे राजनैतिक कार्यकर्त्ता या नेता ही नहीं थे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बल्कि सामाजिक कार्यकर्त्ता भी थे। उन्होंने चम्पारण जिला में खास तौर से और पूरे बिहार में आम तौर से सार्वजनिक क्षेत्र में जो कार्य किये, भिन्न-भिन्न रूपों में भिन्न-भिन्न जिम्मेवारियों को सम्भालते हुए, उसमें उन्होंने अपनी गहरी छाप लगा दी थी। मजदूर आंदोलन से तो उनका बहुत ही निकट का सम्बन्ध था और अनेक मजदूर संगठनों से वे सम्बद्ध ही नहीं थे, बल्कि अनेक अवसरों पर उन्होंने मजदूरों के आन्दोलनों का नेतृत्व भी किया था। उनको मैंने इस सदन में ध्यान से देखा था और बहुत नजदीक से जाना था। वे असेम्बली में हमेशा अपना पार्ट अदा किया करते थे, अपनी भूमिका का निर्वाह किया करते थे। सार्वजनिक प्रश्नों पर जो विचार हुआ करता था, उसे बड़े ध्यान से सुनते थे और उस पर मनन करते थे। वे केवल राजनीतिक क्षेत्र के ही नेता नहीं थे बल्कि सामाजिक जीवन में वे बिना किसी भेद-भाव के लोगों के साथ व्यवहार-वर्ताव करते थे। मैंने यह निकट से देखा था कि वे बहुत मिलनसार व्यक्ति थे और सबों के साथ चाहे जिस दल का भी कार्यकर्त्ता क्यों न हो, वे बहुत अच्छा संबंध रखते थे। यहाँ सरकार में रहते हुए भी मैंने देखा था, वे जनहित के प्रश्नों पर, न केवल अपने दल के विधायकों से बल्कि विरोधी दल के विधायकों से भी सुनते थे और विरोधी दल के लोग भी जो उचित सुझाव देते थे, उसपर वे ध्यान देते थे उसे वे सही मानकर कार्रवाई करते थे।

हम नहीं जानते थे, कोई नहीं जानता था कि उनका असामयिक निधन हो जायगा। दुर्भाग्यवश वे ऐसे रोग से ग्रसित हो गये कि उसने उनका प्राण ही ले लिया। इससे बिहार के सार्वजनिक जीवन में रहने वालों को बहुत गहरा धक्का लगा है। स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेय कांग्रेस (आई) के महान नेता थे और इस प्रदेश के सार्वजनिक जीवन के एक महान व्यक्ति भी थे। उनके उठ जाने से सचमुच हमलोग बहुत दुखी हैं।

श्री राम लखन सिंह यादव

मुझे आज-पुराने दिनों की याद आती है। आज से नहीं, संविधान के लागू होने के बाद से, जब से पार्लियामेन्ट्री सिस्टम हमारे यहाँ लागू हुआ है, आम चुनाव के बाद से, तब से श्री केदार पाण्डेय के साथ मुझे रहने का इस असेम्बली में, सदन के बाहर, कांग्रेस के प्लेटफार्म पर, कांग्रेस की राजनीति में और जब दोनों का विचार अलग हुआ तब भी एक साथी के नाते, एक मित्र के नाते, सार्वजनिक जीवन में एक कार्यकर्त्ता के नाते, रहने का मौका मिला और जो संबंध उन्होने निभाया हमलोगों ने मिल-जुलकर जो काम किया, वे सारी घटनाएं आज हमारे सामने आती हैं। मुझे ऐसा लगता है कि ऐसे लोग जिन्होंने सार्वजनिक जीवन में कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मान्यताओं को अपनाया है, आजादी के दिनों में जो कुछ मूल्यों को अपनाया है, वैसे लोग धीरे-धीरे हमारे बीच से अब उठते जा रहे हैं और पता नहीं ऐसे लोग कब समाप्त हो जायेंगे। पता नहीं वे मान्यताएँ और मूल्य, जिनको हमारे देश ने,हम सब ने अपनाया है, वह कितनी दूर तक निभ पायेगा। श्री केदार पाण्डेय एक सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के रूप में, एक असेम्बली मेम्बर के रूप में, उसके बाद जब मौका लगा, तो मंत्री और मुख्य मंत्री के रूप में, फिर दिल्ली जाकर केन्द्रीय मंत्रिमंडल में जाने के बाद भी जो काम उन्होने किया है, वह हमारे और आपके लिये एक आदर्श छोड़ा है। मैं उम्मीद करता हूँ कि ऐसे व्यक्ति ने जो आदर्श छोड़ा है, उससे जो फायदा हो सकता है, हम सब उठायेंगे। प्रारंभिक काल से अन्तिम समय तक श्री केदार पाण्डेय के साथ मेरी मित्रता कायम रही। वे जहाँ भी रहे, सब विषयों पर बड़े दिल खोलकर, खुले दिल से आपस में बातचीत किया करते थे और ऐसा लगता था कि उन पर किसी तरह का अन्य प्रभाव नहीं है। ऐसे व्यक्ति को खोकर आज सारा बिहार दुखी है।

श्री राजकुमार पूर्वे

अध्यक्ष महोदय, आपने, सभा नेता ने और दूसरे विरोधी दल के नेताओं ने जो भाव स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेय के प्रति प्रकट किया है, जो श्रद्धांजलि अर्पित की है, मैं आप लोगों के साथ हूँ।

स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेय ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया। वे बिहार के एक बहुत बड़े देश-भक्त थे। उन्होंने कुशल प्रशासक के रूप में, या मंत्री के रूप में, या साधारण सदस्य के रूप में, या केन्द्रीय मंत्री के रूप में, जो रोल अदा किया, उसे भुलाया नहीं जा सकता। वे ओपोजिशन में भी बैठते थे तो दूसरे दल के लोगों की बात बड़े ध्यान से सुनते थे। मंत्री के रूप में या मुख्यमंत्री के रूप में जब वे रहते थे उस पर कारंवाई करते थे। इसका मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ। 'लैंड सीलिगं ऐक्ट' का सवाल था, हम लोगों ने सवाल उठाया, उनसे कहा तो उन्होंने एक स्पेशल कमिटी बना दी, उससे जाँच करवाई और उसको कार्यान्वित करवाया। वे यह नहीं देखते थे कि इससे किसी खास व्यक्ति पर या किसी खास दल पर क्या असर पड़ता है। उसी तरह से जब वे विरोधी पक्ष में बैठते थे, बहुत कम ऐसे व्यक्ति होंगे जो विरोधी पक्ष में बैठकर उतनी दिलचस्पी से दूसरों की बातों को सुनें, लेकिन वे एक ऐसे व्यक्ति थे जो हाउस में जो कार्यक्रम होते थे, उनको बड़े ध्यान से सुनते थे और दिलचस्पी लेते थे। वे अमेन्डमेंट देते थे, अपने अमेन्डमेन्ट पर अड़ते थे और वोट कराते थे। कुछ अमेन्डमेन्ट ऐसे होते थे जो प्रगतिशील होते थे, जिसमें वे हम लोगों का भी साथ देते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमने उनकी प्रगतिशील भूमिका देखी थी। वे इसे जीवन भर करते रहे। मेरा उनसे ज्यादा नजदीकी का सम्पर्क रहा है,।

श्री इन्दर सिंह नामधारी

आज हम बिहार के ऐसे विभूति को श्रद्धांजलि देने के लिये यहाँ उपस्थित हैं जिनको बिहार की जनता आने वाले बहुत लम्बे समय तक अपने मानस-पटल से नहीं हटा पायेगी। स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेय और उनकी स्थिति को देखकर ऐसा नहीं लगता था कि इतनी जल्दी भारत के इस कार्य क्षेत्र से अलग होकर वे अपनी रण-यात्रा में चले जायेंगे। कुछ ही दिन पूर्व वे केन्द्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य थे। उनकी आयु जितनी भी हो, उन्होंने जो भूमिका अदा की है, यह निर्विवाद है कि वैसा व्यक्ति राजनीति के लिए शृंगार है। उनके दिलों में राजनैतिक तिकड़मवाजी नहीं थी, वे योग्य और निष्ठावान व्यक्ति थे। उनके उठ जाने से बिहार की अपूरणीय क्षति हुई ही है, सारे हिन्दुस्तान की जनता आहत है। सबसे वड़ा गुण स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेय में था कि वे वहुत मिलनसार व्यक्ति थे। केन्द्रीय रेल मंत्री की हैसियत से मेरे पत्र का उत्तर जो उनकी ओर से आता था, वह उत्तर वैसा नहीं होता था जो छपा-छपाया हो और जो किसी के द्वारा भेज दिया जाय। जिस समस्या की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया जाता था, उस समस्या पर विस्तृत चर्चा के साथ उत्तर वे दिया करते थे। मुझे ऐसा लगता था कि ऐसा व्यक्ति ऐसे महत्त्वपूर्ण पद पर रहकर सारी समस्याओं को हल करे, ऐसे बहुत ही कम व्यक्ति होते हैं।

स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेय अपने मूल सिद्धांत को नहीं भूलते थे। १९७५ की घटना मुझे याद है, भोजपुरी सम्मेलन पटना में उन्होंने किया था भोजपुरी समस्याओं को लेकर। हो सकता है कुछ लोग कहें कि मैंने यह किया, वो किया लेकिन मुझे मालूम है कि वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होने भोजपुरी अकादमी की स्थापना की। भोजपुरी भाषा की प्रगति के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसे बिहार की जनता, खासकर भोजपुरी भाषा-भाषी नहीं भूल सकते।

ऐसे मनीषी, ऐसे सम्मानित व्यक्ति के उठ जाने से, मैं समझता हूँ बिहार एवं भोजपुरी भाषा-भाषियों की ऐसी क्षति हुई है जो निकट भविष्य में भरने वाली नहीं है।

[बिहार विधान सभा की १९ जून १९८३ की कार्यवाही से साभार]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार विधान परिषद्

शोक प्रस्ताव

अत्यन्त शोक के साथ कहना पड़ता है कि गत २५ मार्च १९८३ को बिहार के भूतपूर्व मुख्य मंत्री एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री केदार पाण्डेय का मस्तिष्क के रक्तस्राव के कारण नई दिल्ली स्थित डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल में निधन हो गया।

श्री पाण्डेय का जन्म पश्चिम चम्पारण जिलान्तर्गत तौलहा ग्राम में हुआ था। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम०एस-सी० तथा एल-एल० बी० करने के पश्चात १९४५ में उन्होंने मोतिहारी और बेतिया में वकालत करना प्रारम्भ किया। १९४८ से वे पटना उच्च न्यायलय में वकालत करने लगे। वकालत के साथ-साथ राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उनकी प्रतिभा निखरने लगी और एक कांग्रेस कार्यकर्त्ता के रूप में शीघ्र ही जनप्रिय हो गये। १९४६ से १९५४ तक वे लगातार भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस, बिहार शाखा के उपाध्यक्ष रहे। १९४६ से १९५२ तक वे चम्पारण चीनी मिल कर्मचारी संघ के महासचिव रहे। कई वर्षों तक वे इंडियन नेशनल सुगर मिल वर्कर्स फेडरेशन के सचिव भी रह चुके थे। महात्मा गांधी की कर्मभूमि चम्पारण के वातावरण ने स्वाभाविक रूप से उन्हें देश-प्रेम और राष्ट्रसेवा की ओर उन्मुख किया और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में वे कूद पड़े। १९४२ के "भारत छोड़ो" जन आंदोलन में सक्रिय योगदान देने के फलस्वरूप उन्हें जेल की यातनायें सहनी पड़ीं।

सर्वप्रथम १९५२ के आम चुनाव में वे बगहा निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। १९५० में वे पुनः उसी क्षेत्र से निर्वाचित हुए। १९६० के आम चुनाव में वे नौतन निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और लगातार १९६० तक वे उसी निर्वाचन क्षेत्र से विधान सभा सदस्य निर्वाचित होते रहे। १९८० में बेतिया निर्वाचन क्षेत्र से वे लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और केन्द्रीय सरकार में रेल मंत्री और सिंचाई मंत्री के पद पर रहे। राज्य मन्त्रिमंडल में वे १९५० से १९६२ तक उपमंत्री रहे। १९६९ में सरदार हरिहर सिंह के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंत्रिमंडल में वे उद्योग एवं प्रावैधिक शिक्षा विभाग के मंत्री बनाये गये। १९७१ में वे नदी घाटी योजना विभाग के मंत्री बने। १९७२ में बिहार के मुख्य मंत्री के पद को उन्होंने सुशोभित किया और २ जुलाई १९७३ तक वे इस पद पर रहे।

वे वर्षों तक बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष रह चुके थे, बिहार विधान मंडल कांग्रेस पार्टी के सचिव एवं मुख्य सचेतक के रूप में भी उन्होंने कार्य किया था।

उनके निधन से देश ने एक उच्च कोटि का राजनीतिक, निष्ठावान समाजसेवी; कुशल शासक एवं कर्मठ मजदूर नेता खो दिया। विभिन्न पदों पर रहकर उन्होंने देश एवं राज्य की जो सेवा की उसे आनेवाली पीढ़ी वरावर याद रखेगी।

ईश्वर दिवंगत आत्मा को चिर शांति प्रदान करे तथा उनके शोक संतप्त परिवार को धैर्य एवं शक्ति दें।

नसीरुद्दीन हैदर खाँ

आज मैं सदन में खड़ा हुआ हूँ ऐसे महान व्यक्ति के लिए अपनी कुछ भावनाओं को प्रकट करने के लिये जो बिहार के लिए बहुत ही गौरव के कहे जा सकते हैं और जो कर्मठ आदमी थे। हमारे पाण्डेयजी आज हमारे बीच नहीं है मगर वे अपनी जगह पर अटल हैं। पाण्डेयजी ने जो रोशनी दिखलाई है इस बिहार के सारे लोगों को और एक मिसाल कायम कर गये हैं उसे बिहार के लोग कभी भूल नहीं सकते हैं। उन्होने सारे क्षेत्रों में बहुत से रूपों में बिहार की सेवा की है। उनकी शुरू की स्कूली तालीम बिहार में हुई थी और वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से लॉ ग्रेजुएट हुए थे। उन्होंने १९४५ से १९४८ तक लॉ का प्रैक्टिस किया लेकिन उनके दिल में तो हिन्दुस्तान को आजाद करने के लिये चिराग जल रहा था। उसको वे दबा नहीं सके और वे महात्मा गाँधी द्वारा हिन्दुस्तान को आजाद करने के लिये छेड़ी गयी लड़ाई में कूद पड़े। उन्होने आजादी की लड़ाई में सक्रिय हिस्सा लिया जो सभी माननीय सदस्यों को मालूम है। वे हमेशा आग से खेलने के आदी थे और उन्होंने आजादी की आग में खेला और उन्हें सभी कार्यों में काफी सफलता मिली। पाण्डेयजी ने अपनी जिन्दगी एक मजदूर नेता की हैसियत से शुरू की थी और वे इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस के नेता १९४६ से १९५४ तक रहे और मजदूरों के लिये बहुत कुछ कार्य किया। उन्होंने मजदूरों के लिये काफी संघर्ष किया और आज भी उस इलाके के मजदूर चाहे वे किसी भी सुगर फैक्टरी में हों और किसी भी रूप में कहीं भी हों, भूल नहीं सकते जो संघर्ष उन्होंने मजदूरों के लिए अपनी जिन्दगी में किया। उसके वाद वे चुनाव लड़े और उसमें कामयाब हुए तथा मिनिस्ट्री में आये और सिंचाई मंत्री बनाये गये। आखिरकार कांग्रेस पार्टी ने देखा कि इनमें बहुत सारी खूबियाँ हैं और ये बिहार को सही रास्ता दिखला सकते हैं तो उन्हें मुख्य मंत्री बनाया गया। उन्होने मुख्य मंत्री के रूप में काम किया। बड़े जिलों को छोटे जिलों में करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का शुरुआत पाण्डेयजी ने ही किया। मैं बड़े गौरव के साथ कह सकता हूँ कि सीतामढ़ी को जिला बनाने की बुनियाद उन्होंने ही डाली थी और उनके द्वारा ही उसका उद्घाटन किया गया था। आज पाण्डेयजी हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी बातें हमारे सामने आती हैं। यहीं तक नहीं बल्कि १९८० में या उसके पहले जब कांग्रेस पार्टी में हमलोग बहुत से एक दूसरे के साथ जूझ रहे थे और बहुत से विरोधों का हमलोग मुकाबला कर रहे थे तो पाण्डेय जी हम लोगों के साथ कंधे मिलाकर लड़े ही नहीं बल्कि वे बी० पी० सी० सी० के प्रेसिडेण्ट थे और उन्होने यह साबित कर दिया कि इंसान का एक कैरेक्टर होता है और वे कांग्रेस पार्टी को छोड़ कर दूसरी पार्टी में नहीं गये। यह उनका कैरेक्टर था कि एक पार्टी से दूसरी पार्टी में किसी लोभ के लिये नहीं गये। वे बराबर श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ रहे। १९८० में बेतिया से चुनाव जीत गये और वे पार्लियामेंट में चले गये। उसके बाद वे रेलमंत्री के रूप में रहे तथा सिंचाई मंत्री के रूप में रहे। मगर एक ऐसा शख्स जिनका एक कैरेक्टर था और देश के लिए लगन थी, आज वे हमारे बीच नहीं हैं। उनके लिए जितना भी शोक मनाया जाय कम ही है। इस बिहार के लाल को मौत ने अपने पंजा में ले लिया और आज हम उन्हें स्वर्गीय कहते हैं। इसलिए हमें दुख होता है। वे संसद सदस्य तथा मंत्री ही नहीं थे बल्कि वे सारी जिन्दगी, हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई से लेकर मंत्री के रूप में रहने तक संघर्ष करते रहे। आज वे हमलोगों के बीच में नहीं हैं, जिसके लिए काफी दुख है।

श्री ठाकुर मुनेश्वर नाथ सिंह

बिहार की जनता श्री पाण्डेय जी के आकस्मिक निधन से शोकाकुल है। श्री पाण्डेय जी महान मानव तथा कुशल राजनीतिज्ञ थे। वे योग्य प्रशासक भी थे। देश तथा राज्य की जिस ढंग से उन्होंने सेवा की है वह स्मरणीय है। कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी दल में क्यों न हो उनके पास पहुँचता था तो उसे ऐसा मालूम पड़ता था कि परिवार के एक सदस्य से बातें कर रहा है। उसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने समाज की सेवा की है। केन्द्रीय सिंचाई तथा रेल मंत्री की हैसियत से उन्होंने देश की सेवा जिस प्रकार से की है वह स्मरणीय है। उन्होंने समाज तथा राज्य सरकार की सेवा निष्पक्ष भावना से तथा कर्मठता के साथ की। हम, हमारी पार्टी के लोग तथा विरोधी दल के माननीय सदस्यगण उनके निधन से शोकातुर हैं।

[बिहार विधान परिषद् की ७ जुलाई '८३ की बैठक की कार्यवाही से साभार]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री रामदयाल पाण्डेय
उपाध्यक्ष-सह-निदेशक
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

श्री पाण्डेय जी के निधन से भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम के महान कर्मठ सेनानियों की गौरवमयी परंपरा का एक मूल्यवान अध्याय समाप्त हो गया। राज्यीय या केन्द्रीय सरकार में प्रशासनिक अनुशासन की स्थापना पुण्यश्लोक पाण्डेय जी के प्रशासन काल की उल्लेखनीय ऐतिहासिक विशेषता रही है। वे राजनेताओं की उस पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि थे जो राजनीति की विकृति के युग में शालीनता, निष्ठा, ईमानदारी तथा सादगी को सुरक्षित रखते हुए सन्मार्ग से कभी विचलित नहीं हुई। स्व० पाण्डेय जी उस बात के लिए सदा स्मरणीय रहेंगे कि उन्होंने मूल्यों के ह्रास के युग में भी अपनी राष्ट्रीय भावना तथा स्वच्छ प्रशासनिक कुशलता का स्तर उन्नत बनाये रखा।… विहार-राष्ट्रभाषा परिषद् के अध्यक्ष के नाते उन्होंने रचनात्मक सुझावों से परिषद् को नई दिशा दी थी।

डा० नन्दकिशोर तिवारी
सचिव
रोहतास जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सहसराम

पुण्यश्लोक केदार पाण्डेय जी आधुनिक बिहार के निर्माताओं में मूर्धन्य थे। प्रशासन में वज्रादपि कठोर और व्यवहार में कुसुम से भी मृदु उनका स्वभाव विरल था। शिक्षा के प्रति किया गया उनका सुधार-कार्य आज भी हर शिक्षाविद् और शिक्षाप्रेमी के लिए अनुकरणीय उदारणार्थ एवं स्मरण योग्य है। विहार भोजपुरी अकादमी का निर्माण कराकर भोजपुरी भाषा का जो उपकार किया उसे इतिहास कभी नहीं भुला सकता। शांति प्रसाद जैन कालेज भवन का उन्होंने उद्घाटन किया था। वे सहसराम के नागरिकों और हम लोगों से अत्यंत भावनात्मक स्तर पर जुड़े हुए थे।

आज उनका अचानक हमारे बीच से चला जाना हम में एक विशिष्ट रिक्तता का बोध कराता है साथ ही यह एक ऐसे स्तंभ का अचानक विलुप्त हो जाना है जिस विश्वास स्तंभ पर हम हर संकट के लिए भरोसा रखते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुण्य स्मृति में

जनमे से पवलीं प्यार,
दुलरुआ रहलीं गांव-नगर-घर के
अचके हमनी के छोड़ि
परइलीं, कइ के सून देस भर के

हे भारत माता के सपूत !
जुग-जुग ले राउर नाँव रही
कीरति-काया बा अमर,
पुजाते सदईं सुजसी पाँव रही

पति परमेश्वर ! राउर चाहल
करतब हरमेसे करत रहबि
राखबि हृदया में हमरा के,
हम ध्यान चरन के धरत रहबि

राउर
कमला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमिट अक्षर

आशा का दिनमान अचानक नभ से अंतर्धान हो गया
बिना चढ़े मध्याह्न शिखर असमय दिन का अवसान हो गया
दिग्दिगंत विक्षिप्त बना आकुल अंतर के कोलाहल से
आज चतुर्दिक व्याप्त रुदन से मर्माहत यश-गान हो गया

पराधीनता-काल-रात्रि का ज्योतिर्मय अंगार खो गया
स्वतंत्रता के क्षितिज-भाल का अरुणोदय-शृंगार खो गया
स्मितिमय आनन प्रभापूर्ण प्रति पल नूतन नयनाभिराम वह
आतुर जन-मानस सरसिज का आह्लादक आधार खो गया

मातृभूमि के उर की आकांक्षा-अभिलाषा कौन कहेगा ?
राजनीति की आस्था-युत सम्यक परिभाषा कौन कहेगा ?
ममतामय माधुर्य बाँटता रहा सर्वदा घर-बाहर जो
भोजपुरी को उसके जैसा अपनी भाषा कौन कहेगा ?

कालजयी पौरुषमय स्वर्णिम यशःकाय वह अजर-अमर है
सहज-स्नेह की मूर्ति सुहृद-जन-मन-मंदिर में अविनश्वर है
निरभिमान व्यक्तित्व अप्रतिम सम्मोहक उदारचेता का
अंकित स्मृति-पट पर सुकीर्ति का सुकर सुलेख अमिट अक्षर है

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी
शिवाजी पथ
यारपुर, पटना—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धा के सुमन

आँखों में तस्वीर देश की
दिल में भारतवासी
दोनों हाथों में बिखरे थे
जिसके, काबा-काशी

अधरों पर झूमा करती थी
इन्कलाब की भाषा,
बहुत-बहुत अँटकी थी जिस पर
लोकतंत्र की आशा

कहाँ खो गया वह प्रहरी
"पाण्डेय केदार" हमारा ?
कौन सँजोएगा अन्तर में
अनुक्षण प्यार हमारा ?

गिरवी कभी न होने दी थी
जनगण की खुशियाली,
रूठ गया कैसे बोलो
गुल से गुलशन का माली ?

मँहक उठी जिसके सुगन्ध से
स्वच्छ वाटिका शिक्षा
होगी क्यों न भला युग-युग तक
उसकी स्वस्थ समीक्षा ?

कहाँ मिलेगा अटल निरंतर
वह ज्योतित ध्रुव तारा ?
जिसने आगे कदम बढ़ाकर
पीछे नहीं निहारा

श्रद्धा के ये सुमन निवेदित
हैं उस पौरुष बल को
आज समर्पित हुआ वीर जो
प्रकटेगा फिर कल को

—पशुपतिनाथ मिश्र 'प्रफुल्ल'
मोहनपुर, पुनाईचक, पटना-२३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिअना बुताइल

जोतिया में मिलि गइल जोतिया,
पिरितिया के दिअना बुताइल !

सोझका सुभाव भाव मिसिरी घोरल बात
चमकत चेहरा आ दमकत गात-गात
दुखिअन के रहलीं सँघतिया,
पिरितिया के दिअना बुताइल ! ....

भोजपुरी मइया के मानवाँ बढ़वलीं
अकादमी बनाइ सभ भाई के जुटवलीं
भासा के बढ़वलीं इजतिया,
पिरितिया के दिअना बुताइल ! ....

साहित्य आ साहित्यिकन के मोलवा बढ़वलीं
देस के विकासवा में जानवाँ लगवलीं
फूटि गइली हाय ! किसमतिया,
पिरितिया के दिअना बुताइल ! ....

अस मन करे थोरे दिन अउरी रहितीं
हमनी के आगे के रहतिया बतइतीं
अचके आइल रे बिपतिया,
पिरितिया के दिअना बुताइल ! ....

●

—सिपाही पाण्डेय 'मनमौजी'
मु० + पो० भगवानपुर, रोहतास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना रहल आजु ऊजुग पहरू

कुहुकलि बिरही कोइलि बन में, टूटल हियरा के तार-तार
जइसे बिनु प्रान देह कइके ऊड़ल रे भोजपुरी-सिंगार
ई सुनिके माथा चकराइल, पूछे करेज से बार-बार
दरबारे दिल्ली के उड़सल, अब सूखि गइल सउँसे बिहार

झुकि गइल तिरंगा भारत के, रुकि गइल झवाँ पछिया बयार
केसर के क्यारी मुरझाइलि, हिमवान थउसि बइसल पहार
पटुआइल हिन्द महासागर, गतिहीन भइल गंगा क धार
पच्छिम-पूरब बा सोक-मगन, सब साँथि परल सगरे बधार

करमठ-फरहर-दमगर नेता, ऊजुग पहरू ईमानदार
हँकरति बा जेकर नाँव लेइ, माँ भोजपुरी धइ के कपार—
"मझधार रहे बूड़त तहिया, नइया, कइलन खो के किनार
दिहलन हमरा माथे चन्नन, पहिरवलन ऊहे गाँथि हार

दइबा रे! तें कतना कठोर? का रहे सून तोरो दुआर?
ले गइले, ना मनले, छल से तें लूटि कतो पुतवा हमार!
बन्हले रहलीं खूँटा असरा, आई जिनिगी-बगिया बहार
नयका बिहान उतरित अँगना सुख-सिन्धु उमड़ि जाइत अपार

नइखन केदार पाँड़े भलहीं सोझा चमकत बन्हले कतार
कीरति उनकर छवले बाटे, बा चकित देखि ई जग असार
जब ले बा गंग-जमुन-धारा, तब ले पाँड़े रहिहें डिठार
महिमा के होत बखान रही, झलकी सीसा अइसन लिलार"

महतारी भाषा भोजपुरी, देली असीस भरि-भरि दुलार
जेकर अँसुवन भींजल आँचर, लेकर कइले बाड़न उबार
सरधा के बरिसत खार लोर, लिहलीं ओके अँजुरी बटोर
अरपित बा अमर सिपाही के, बिरहाकुल तनु, अपटे "अँजोर"

—रामवचन शास्त्री 'अँजोर'
मध्यविद्यालय, देवखैरा (रोहतास)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब जगहा तूं छवलऽ.........

चीर के कुहासा जइसे सूरुज बिछावे किरिन
तूंहूँ नया सूरुज के किरिन बिछवलऽ ?
पी के महतारी दूध कहाँ बिसरवलऽ तूं
महतारी भाषा भोजपुरी के बढ़वलऽ
कहवाँ डेरइलऽ तूं इन्हिका भा उन्हका से ?
बिना वजह कहाँ केहू ऊपर खखुअइलऽ ?
जुलुमी के खातिर तूं बुद्ध भगवान रहऽ,
अपना-पराया के तूं भेदवा मिटवलऽ
कतना सुधारवादी रहऽ तूं ई कही ना के ?
सिच्छा के दुन्यिाँ के ढेर चमकवलऽ
राते-दिन चूर रहऽ अनके खातिर तूं त
अपना खातिर कहाँ कुछुओ बचवलऽ !
भाषन के भोजन तूं कहाँ खाली बँटलऽ हा,
सोचलऽ जे ओकरा के सामने उतरलऽ
माई ई गवाह बाटे, लोग सब जानऽ ताड़न
काई लागल सीढ़ी पर के काई तूं हटवलऽ
सरल तलइआ के पनियाँ उबिछलऽ तूं
ओकरा नहाए–फींचे जुगुत बनवलऽ
आँख-फार देखऽताड़न उहवाँ के लोग सभ
फसर-फसर रहता के धूर तूँ हटवलऽ
दीन-दुखी-नंगा-भिगमंगा देख बड़ा दुखी
अपना जँगरवा के महिमा बतवलऽ !
साँचो कुछो टपके ना उपरी अकसवा से,
जहाँ गइलऽ का ना इहे बात तूं जनवलऽ
बोले में तूं अगहर देवे में तूं अगहर
कवनो काम नया आगे गोड़वा बढ़वलऽ
जहाँ–जहाँ गइलऽ तूं लोग चकचिहाइ गइल
नीति-धरम दूनो पर नजर तूं टिकवलऽ
तोहरा से होड़ लीही आके केहू, कहाँ ? तूं नीं
कतो कबो घड़ियालीं आँसू ढरकवलऽ.
राजनीति में तूं बाकिर कतना तूं ऊँचगर
देस आ बिदेस सभ जगहा तूं छवलऽ

—डा० स्वर्ण किरण
किसान कालेज, सोहसराय (नालंदा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तबो सूरुज ना मरे

लोहा हो, पाथर हो कूल्हि भनसारी परी,
काल का कराल गाले दुनिया झोंका गइल
लोर के कवन गनती बाटे जहान बीच,
आँखिन के केतना मोती दुख के लुटा गइल
ऊँच-नीच, राव-रंक, जिनिगी परपंच मंच,
संचल कुल प्रतिष्ठा आँखि मुँदले छिना गइल
टिकल सराये राही के अस मुसाफिर जे
आवे के आइल आ जाए के भुला गइल ?
नेकी जे कइल कुछ उहे जगे थाती बा,
बाकी त अउरी कुल अछरिये मेटा गइल
घर-घर में लउके परछाहीं ओही जिनिगी के,
जिअल ना जिआवल जे अनका के मुआ गइल
नाहीं त हाथी ऊँट कूकुर सियार केतना,
जिअले-मुअले जानल के धुरा उधिआ गइल ?
आपन पेट पोसे के कुकुरो झाँव-झाँव करे,
ठाँव-ठाँव डोले पोंछ, कुकुरे कहा गइल
पाकड़ जे पंथ राहे छाँह फइलावेला,
पानी पिआवे नदिया दानी कहा गइल
रखले कल्यान भाव ऊँच नीच सभे खातिर,
आदमी रहे एगो जे 'एकादमी' बना गइल
भासा के तुलसी के भाव के चउतरा पर
जरल अँजोर दिअरी नेहे भरा गइल
देके अनमोल थाती सेवा खातिर सँउपि के,
छोह—मोह त्यागि के अपने परा गइल
कइसे हिसाब करीं लोर आँखि पोंछ के
रोए के बेरा का दो कविता कहा गइल ?
ऊगेला, ओझल होला, डूबेला, अस्त होला,
तबो सूरुज मरे ना, मानल अमर बा
ओसहीं किरती मुरती के तस्वीर टाँगल बा,
जहाँ जाएवालन के बान्हल कमर बा

—सीतारामचंद्र शरण 'राम'
रामाश्रय, शिवपुरी (बेउर रोड)
पटना — ८००००२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेय जी के याद में

का भइले रामजी ललनवाँ हमार ?

माटी के बेटा बात माटी के करत रहन
दूर कइल चाहत रहन पसरल अन्हार

"तौलहा" उगल बीआ, "पटना" में बनल गाँछ
"दिल्ली" में फरे-फूले सोहरल हा डार

ताकि देले जेने ओने फैलल अँजोरिया
अइसन चनरमा के देखल बिहार

जाति आ धरम के ना पचरा में पड़लन ऊ
भोजपुरी भाषा खातिर रहले अवतार

गोर-गार औसद कद, धोती-कुरता में सज
एक बार कालो संगे लड़े के तइआर

यू० पी० भोजपुरी भाषी लोगन से भेंट होत
कहिहें कि करीं जवन करत बा बिहार

जुग-जुग तक धरती जो पुनवाँ बटोरेली
कोखिया से उतपन करेली "केदार"

धरती-गगन, चान-सूरुज, जमुना गंगा
जब तक रहिहें, रही किरती तोहार !

—चौधरी कन्हैया-प्रसाद सिंह
नोनार, भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेतिया के गान्ही

अचके लुटाइल भोजपुरी के रतनवाँ
माई भोजपुरी भाई रोवेला अंगनवाँ·······

के अब माई खाती मन से गोहार करी ?
सभका से भाई अइसन के बेवहार करी ?
सुतलो में आवे भोजपुरिये सपनवाँ········

मनवाँ गंगाजल जेकर बोलिया रमायन
महिमा से बाटे जेकर आज मनसायन
पिंजरा के छोड़ि गइल हिरामन सुगनवाँ···

भाव भोजपुरी के आ बड़ बउसाव रहे
माई के बोली खाती दिल दरिआव रहे
परे मन, देखे खाती छछने परनवाँ·······

सोझिया सुभाव बाकी मनवाँ में आन्ही
कहे भोजपुरिया केहू बेतिया के गान्ही
सुनि-सुनि फाटे छाती फफके नयनवाँ·······

माई बाड़ी, बेटा बाड़े कुल-परिवरवा
जीअता सभे नइखे प्रान के अधरवा
बगिया जरवलस रे तिरासी के फगुनवाँ··········

—ब्रजकिशोर दुबे
भोजपुरी अकादमी, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्व० केदार पाण्डेय के प्रति:

लऽ नमन हमार !

अपना पावन चरनन में
नया प्रेरणा के लगन लगावऽ
हे माई के लाल !
लऽ नमन हमार !

पुरुषार्थी, निर्भीक, निराला,
दिल-दरिआव
सेवा खातिर धधकत आग
त्याग गहन-गाथा तोहार
इतिहास रहल सम्हार
लऽ नमन हमार !

स्वतन्त्रता सेनानी
दृढ़व्रती, विहार-विभूति
तोहरे बल पर
फिरंगी के झुकल पताका
भोजपुरियन के मुँह भइल उजियार !
लऽ नमन हमार !

मुख्य मंत्री, रेल मंत्री
भारी सेवा सबकर
साहित्य सम्मेलन
भोजपुरी अकादमी
तोहरे प्रेरणा सरकार !
लऽ नमन हमार !

सगरें पवलऽ जस
भोजपुरी सपूत
माई के भरलऽ खोंइछा
तोहरे बिना आँखि लोराइल
पुरहर भइल अन्हार !
लऽ नमन हमार !

—डॉ० अरुणमोहन भारवि

प्रणव चटर्जी महाविद्यालय, बक्सर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डहकनि: भोजपुरी माई के

जो, जो रे बिधिना ! हमार कोख-चिभना तू !
अल्हरें चबइले हा करेज हे !
भइलीं निपूती खाली, आगी ई ना बूती हाली,
अचके मरोरि दिहले मेंज हे !
बजर-पहाड़ गाढ़ गिरल लुटाई गइलीं
पँजरी के छटकल हाड़ हे !
रोवे द जा छ-छ पाती, जार-आ-बेजार होई
फाटी गइले जोगवल फाँड़ हे !
सोनहुल-गेड़आ में अमिय-भरल प्रान
छलकत रहे घर-बाट हे !
ललित ललाम गोर, तरई में चान मोर
घुरुची के मजिगर काट हे !
राजपूत-राजदूत, बाबू मोरे राजबूत,
एकलवता दूध के सिंगार हे !
मोरे नोंनि सूते बाबू, मोरे ला फियाह रोज
सबुरो छियाह भइले हार हे !
हमरो केदार दिलदार पूत बँझिनी के
पुतवाली भइलीं पा उतान हे !
इहो ना सोहाइल, ना देखि गइले निदयी से
निठुरे खँखोरि लिहले प्रान हे !
कहाँ जाईं, का करीं अरज जाइ अब के से
सगरे वा छवले अन्हार हे !
गुदरी के लाल मोर, अन्हरी के गोजी गरहू
खोजी का हाँ कतो, के हमार हे ?
एगुड़े केदार गुलजार रहे घरे-बने
एगुड़े केदार पतवार हे !
एकही केदार का ना रहले छपित रवि—
चान भइले, नाव मंझधार हे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाख-लाख तरइन तिकवे ढुराइ लोर
भोर भइले भोर-भिमुसार हे !
कवना पराछित ई जाह में परल आह
कथी के ह सजा गहिड़ार हे ?
भगिया का गछिया में काँट-कपचाल बीचे
एकही गुलाब टेस-लाल हे !
तवनो के मन-भरि हँसहू ना दिहले रे
मलिया ! कवन तोर चाल हे ?
भोजपुरी-पोथिया लिखाए अन्ने जाति रहे
अछरी, सबद, डाँड़ि जोरि हे !
तले सोनहुलवा मथेलवे मेंटाइ दिहले
मोला कइसे धरी जरि-सोरि हे ?
भोज, भोजपुरी, भोजपुर-भाग भुरकुस
भहराइल भरते भँड़ार हे !
बड़की बहिनियाँ के अँगिया मुरुकी गइले
हमरो जाँगर लक-मार हे !
बड़-बड़ पूता मोरा ढेरो दरबारी भइले
कथ-पद हद के महान हे !
ढेर जाना मंदिर में दियना जरावेवाला
सेहू ना कहल धर-कान हे !
एकही केदार पांडे मंदिर के धाजा भइले
राजा भइले, लागल लहास हे !
घर के चिराग ऊ बहरवा के रबि-चान
दुनो माँ के एकही हुलास हे !
जे-जे पूत भइले भिरुखले ऊ माइये से
दूध के निनसले ऊ मोल हे !
पाई राजपद राजमद में मदाइ गइले
खोंइछो के रखले ना खोल हे !
दुलरू केदार के जें झोरी में भेंटल खोरी
जोरी माई ओरी से उरीन हे !
अतने से आह बरे, जाह परे मन आजु
माइये प लादी गइले रीन हे !
रहले सेनानी, सान-मान के गुमानी प्रानी
बानी चुवे अमरित ठोप हे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पानी के मरद जिनगानी के अरघ ले ले
सगरे देखाड़ सभे छोप है !
तन सुघराई पर मन के ललाई लहे
काम-रूप, विधि-गुन गोट हें
ब्रह्म-बेवहार रहे, बिसुनू-बिचार सँगे
सिव-सपना में लाहाल ोट हे।
जन-नेता, राज-नेता, बदरी में चान लेखा
अब कहाँ मिली परतोख हे !
आल्हर कँवल-दल, बजर कठेठ भल
सानत सोभाव सँगे सोख हे !
एगो इतिहास के सुघर अधेआ'य फाटी
टघरि गइल साम-गान हे !
माई के मंदिरवा के आरती के टेम्हीं बूती
झँवा गइले मानिनो के मान हे !
कविता के टेक एक सरस अनेकन में
भूलले कढ़वते खा राग हे !
जोरे जम्हू राजा ! साजा दिहले कचाक देना
मरमे तरसले पराग हे !
विहुनी नाँवें अब डहकनि जिनिगी में
लोरे से लिखाई मुख-छंद हे !
जाई, धाई जेही लवटाई जो केदार पूता
सेही ए अन्हरिया के चंद हे !

—डा० सर्वदेव तिवारी "राकेश"
रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिथिला-मन-सुमन

स्वर्गीय केदार पाण्डेक चरण में
श्रद्धा सँ मन-सुमन करैछी अर्पित
सादर एकरा स्वीकार करु हे देव !
करैछी श्रद्धांजलि मिथिलाक समर्पित

सुच्चा स्वतंत्रता सेनानी सरिपहुँ
शासक प्रदेश शासनक सत्र में
पाओल भरल छल मैथलीक प्रति
भक्ति अहाँ केर गत्र-गत्र में

विद्यालय सं विश्वविद्यालय धरि
मैथिलीक पढ़ाइ अहीं प्रारंभ केलहुँ
बिहार लोक सेवा आयोग में
मैथिलीक मान्यता अहीं देलहुँ

जे केलहुँ देलहुँ सब कीर्ति अहाँ केर
युग-युग मिथिला में लहरैत रहत
यश 'कीर्त्तिलता' ओ 'कीर्त्तिपताका' सन
मिथिला में अहूँ केर फहरैत रहत

—गणेश झा
स० पुस्तकालयाध्यक्ष
पटना मेडिकल कालेज़, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकप्राण केदार पाण्डेय

गणेश चौबे

□ □

तारीख २५ मार्च १९८३ ई० को आकाशवाणी से श्री केदार पाण्डेय जी के स्वर्गवास का समाचार सुनकर मैं शोकाकुल हो उठा। मुझे ऐसा लगा कि चंपारन में उदित होकर अपने प्रकाश से बिहार को आलोकित करनेवाला यह सूर्य, जिसकी किरणें देश के अन्य भागों में भी तेजी से फैल रही थीं, सदा के लिए अस्तंगत हो गया। तारीख २७ मार्च को वाराणसी की गंगा की धारा उसके पार्थिव शरीर को अपने उत्संग में समेट कर पाटलिपुत्र को स्पर्श करती हुई अनंत सागर में विलीन होने के लिए आगे बढ़ी। विधि का विधान सर्वथा प्रबल है।

स्वर्गीय केदार पाण्डेय का जन्म पश्चिमी चम्पारन के रामनगर थाने के तौलाहा ग्राम में एक मध्यमवर्गीय किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने के० आर० स्कूल बेतिया से प्रवेशिका, जी० बी० बी० कॉलेज मुजफ्फरपुर से आई० एस-सी०, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम. एस. सी. और एल-एल. बी. की डिग्री प्राप्त की। उनके दो पुत्र हैं, जिनमें श्री मनोज कुमार पाण्डेय डाक्टर हैं और श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय निजी कारोबार देखते हैं। उनकी दो पुत्रियाँ हैं जिनमें जेठी पुत्री सुश्री मंजु का विवाह श्री अशोक पाण्डेय आई. ए. एस० से हुआ है, जो आजकल बिहार के खाद्य आयुक्त हैं। छोटी कन्या सुश्री प्रतिमा का विवाह प्रयाग के जस्टिस हरिश्चन्द्र त्रिपाठी जी के पुत्र श्री प्रकाशचन्द्र त्रिपाठी से हुआ है, जो आजकल असिस्टेण्ट कमिश्नर, इन्कमटैक्स, दिल्ली हैं।

स्व० पाण्डेय जी को अपनी पैतृक सम्पत्ति के बँटवारे से लगभग पचपन एकड़ भूमि मिली थी, जिसमें अधिकांश खेत की मिट्टी उर्वर है। उनके हिस्से में जो घर मिला था, वह संकीर्ण था और गाँव की घनी आबादी में था। लगभग पच्चीस वर्ष पहले श्री पाण्डेय जी ने संसद सदस्य स्व० विपिन बिहारी वर्मा से आठ एकड़ जमीन पच्चीस हजार रुपये में खरीदी, जिसका भुगतान कई वर्षों में किश्तों में हुआ। श्री पाण्डेयजी ने अपने पहले मकान को छोड़कर इसी जमीन में अपना नया घर बनवाया है। उनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृषि-फार्म वेलौंरा में है। श्री पाण्डय जी को पटने के वृद्ध कौलनी में छव कट्ठा जमीन मिली थी। लेकिन किसी परिस्थिति में उस पर उनको कब्जा नहीं मिला और उन्होंने उस पर कब्जा करने का प्रयास भी नहीं किया। इसके अतिरिक्त श्री पाण्डेय जी की किसी भू-सम्पत्ति या किसी शहर में मकान की हमें जानकारी नहीं है। उन्हीं के प्रयास से तौलाहा में ग्राम-पंचायत की स्थापना हुई, डाकखाना खुला, टेलीफोन लगा और विजली आयी और इस गाँव का संबंध पक्की सड़क से जुड़ा। तौलाहा से एक माइल की दूरी पर चमुआ रेलवे स्टेशन है, जिसकी स्थापना में तो नहीं, परन्तु उसके विकास में श्री पाण्डेय जी का हाथ रहा है। यह है श्री केदार पाण्डेय जी का अपने गाँव के उन्नयन में योगदान।

श्री केदार पाण्डेय जी ने सन् १९४५ में मोतिहारी में वकालत आरंभ की। मोतिहारी के वकीलों में एक प्रथा है। जो कोई वहाँ वकालत आरंभ करता है उसे स्थानीय वकीलों को भोज देना पड़ता है। श्री पाण्डेय जी ने भी भोज दिया था। मैं भी उस भोज में शामिल हुआ था। वे वेलबनवाँ महल्ले में किराये के एक मकान में रहते थे। उसी महल्ले में मेरे एक भतीजा पं० मथुरा चौबे, जो आजकल सरकारी अभियोजक हैं, रहते थे। उन्होंने भी उसी साल वकालत आरम्भ की थी। विद्यार्थी-जीवन में मुजफ्फरपुर में जिस होस्टल में श्री पाण्डेय जी रहते थे, उसी में श्री मथुरा चौबे भी। दोनों में गाढ़ी मैत्री थी। फलतः मोतिहारी में भी दोनों व्यक्तियों का एक-दूसरे के यहाँ वरावर आना-जाना वना रहता था। यदि हम यह कहें कि श्री मथुरा चौबे स्व० पाण्डेजी के मोतिहारी में एक घनिष्ठ मित्र थे तो यह अत्युक्ति नहीं होगी। उन दिनों मैं चम्पारन कलवटरी का एक क्लर्क था और मैं भी वेलवनवाँ महल्ले में रहता था। मैं भी मथुरा चौबे का चाचा था। इससे श्री पाण्डेय जी के दिल में मेरे लिए आदर का भाव था। श्री मथुरा चौबे के यहाँ मैं भी सदा आता-जाता था और इसी समय मुझे श्री पाण्डेय जी के निकट-सम्पर्क में आने का अवसर मिला। तब से श्री पाण्डेय जी से उनके जीवन-पर्यन्त मेरा अपनापन वना रहा और मैं सैंतीस वर्षों तक उनके निकट-सम्पर्क में रहा। वाद में श्री पाण्डेय जी वकालत करने पटना चले गये। वहाँ वे हाईकोट में वकालत करते थे और साथ ही कांग्रेस का काम भी करते थे। श्री पाण्डेय जी जब कभी मोतिहारी आते थे, श्री मथुरा चौबे के यहाँ ही ठहरते थे। जब वे मंत्री हो गये तो वे वहाँ आने पर सरकिट बंगले में ठहरते थे। फिर भी अपने व्यस्त कार्यक्रम से कुछ समय निकालकर श्री मथुरा चौबे के निवास पर जरूर जाते थे। श्री पाण्डेय जी के राजनीतिक उत्कर्ष की अवधि में भी कभी-कभी ऐसा समय आया, जब वे मंत्री नहीं रहे। उस समय उनके अनेक अवसरवादी मित्रों ने उनका साथ छोड़ दिया। लेकिन श्री मथुरा चौबे उनके उत्कर्ष और अपकर्ष दोनों में साथ रहे और अपनी मित्रता में कभी कमी नहीं आने दी। वे उनके परिवार के एक अभिन्न अंग से बने रहे।

जिस समय श्री केदार पाण्डेय जी मोतिहारी में रहते थे, उन्हीं दिनों उनकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्मपत्नी का अति कारुणिक स्थिति में निधन हो गया। उनकी पत्नी मजदूर नेता श्री टी० परमानद की भतीजी थीं। वे मलेरिया बुखार से पीड़ित थीं लेकिन डाक्टर ने उसे कल्ला ज्वर समझ कर यूरिया की सूई दे दी और तत्काल उनका प्राणान्त हो गया। श्री पाण्डेय जी उस समय कचहरी चले गये थे। उनका दाह-संस्कार चांदमारी के निकट 'एकवना' में हुआ। दूसरे दिन फूला बुझाने और अस्थि-संचय में श्री केदार पाण्डेय के साथ सर्वश्री मथुरा चौवे, भागवत तिवारी मुख्तार, गदाधर सिंह वकील और इन पक्तियों का लेखक गया था। जब श्री पाण्डेय जी बुझी हुई चिता पर कुदाल से मिट्टी देने लगे तो उनकी आँखों से झर-झर आँसू गिरने लगे। हमारी आखों में भी आँसू आ गये।

पं० केदार पाण्डेय की उस दिवंगत पत्नी से एक कन्या थी. जिसका विवाह श्री अशोक जी से हुआ है। फिर पाण्डेय जी का विवाह विलौटी (शाहावाद) निवासी श्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी पटना, सचिवालय के एक सेक्शन औफिसर, की पुत्री कमलाजी से हुआ। आजकल श्रीमती कमला पाण्डेय एम. एल. ए. हैं।

राजनीति के क्षेत्र में

श्री केदार पाण्डेय जी का राजनीतिक जीवन सन वयालिस के आन्दोलन से प्रारंभ होता है। इसके पूर्व उनके परिवार के किसी भी सदस्य का राजनीति से कोई सरोकार नहीं था। उन्होंने इस आन्दोलन में डटकर भाग लिया और उन्हें जेल की सजा भी हुई। रामनगर राज की बकाश्त जमीन को लेकर जब थारुओं में जागृति के लक्षण दिखने लगे तो उन्होंने उनका नेतृत्व किया और जमकर इसके लिए आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन की सफलता पर उन्हें यथेष्ट यश मिला।

अंग्रेजी सरकार के जमाने में ईख उत्पादक किसानों के गन्ने की कीमत से प्रति रुपया दो आना काट कर उनके नाम पर डाकखाने के सेविंग बैंक खाते में जमा किया गया था। उस रुपये की वापसी का सवाल था। डाकखाने के कर्मचारियों और चीनी मिल के ठीकेदारों ने आपस में साँठ-गाँठ कर लिया था कि रैयतों की पहचान ठीकेदार ही करेंगे। जब कोई रैयत डाकखाने से रुपये की वापसी के लिये आता था तो वे लोग उसे दी जाने वाली राशि का आधा नाजायज तौर पर घूस के रूप में ले लेते थे। मेरे गाँव के एक रैयत को चौदह रुपये मिलनेवाले थे। उससे कहा गया कि तुम्हें सात रुपये मिलेंगे। वह रैयत श्री मथुरा चौवे के पास आया और उसने सारी बातें कह सुनाई। उस समय वहाँ श्री केदार पाण्डेय और मैं भी मौजूद था। श्री पाण्डेय जी ने उस रैयत को साथ ले लिया और मुझे भी साथ में चलने को कहा। हम तीनों पोस्टल इन्सपेक्टर के पास पहुँचे। इन्सपेक्टर ने. उत्तर दिया कि सेविंग बैंक के इस पेमेन्ट से मेरा कोई सरोकार नहीं है। श्री पाण्डेय जी उसी क्षण एस० डी० ओ० के यहाँ चले गये। इसकी जांच के लिए एक मजिस्ट्रेट भेजे गये। इधर ठीकेदारों ने गवाहों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समझा-बुझाकर हटा दिया। मजिस्ट्रेट आये लेकिन गवाह के नहीं रहने से साबित नहीं हो सका। श्री पाण्डेय जी उसी दिन पटना चले गये और श्री रघुनंदन पाण्डेय से मिले जो भ्रष्टाचार विरोधी विभाग के प्रभारी थे। मामले की जाँच हुई। अभियुक्तों पर मामला चला और उन्हें जेल की सजा हुई। उस मामले में श्री केदार पाण्डेय की भी गवाही हुई। उन्हें मुकदमे के अन्य गवाहों को राय दी कि आप लोग सच्ची बातें ही कहेंगे और किसी के सिखाने पर भी गलत नहीं बोलेंगे। उस समय के मुख्य मंत्री श्री कृष्ण सिंह पाण्डेय जी के सार्वजनिक कार्यों से बहुत प्रभावित हुए। उनके आग्रह पर ही श्री पाण्डेय जी मोतिहारी छोड़ कर पटना गये।

श्री केदार पाण्डेय बिहार सरकार के विभिन्न विभागों के मंत्री रहे, मुख्यमंत्री के पद पर भी रहे। वे केन्द्रीय सरकार में रेल मंत्री रहे, सिंचाई मंत्री रहे। वे जीवन-बीमा निगम के निदेशक रहे, बिहार कांग्रेस के अध्यक्ष और राष्ट्रीय मजदूर संघ के सचिव भी रहे। वे जिस किसी पद पर रहे, एक गरिमा के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन किया। हमारे सामने अनेक ऐसी बातें हैं, जो देखने में तो छोटी लगती हैं लेकिन उन पर गौर करने से श्री पाण्डेय जी की कर्त्तव्य-निष्ठा और चारित्रिक विशेषता का आभास मिलता है।

श्री केदार पाण्डेय जी उस समय राजस्व मंत्री थे। भूमि-सीमा निर्धारण कानून में संशोधन का प्रश्न था। संशोधन में खेती की जमीन के नहरी, नलकूप से सिंचाई वाली, ऊँची, दियारा और पहाड़ी के अन्तर्गत वर्गीकरण का प्रस्ताव था। उसमें 'चौर' की चर्चा नहीं थी। उत्तर बिहार में, खासकर पूर्वी चंपारन में ऐसी भूमि की बहुलता है। मैंने पाण्डेय जी को इस आशय का पत्र लिखा कि वर्गीकरण अधूरा है और उसमें 'चौर' की चर्चा नहीं है। इससे रैयतों की कठिनाइयाँ बढ़ जायेंगी, अनिश्चितता की स्थिति रहेगी। चौर की स्थिति दियारा से भी बदतर है। अतः उसका अलग वर्गीकरण होना चाहिये। यदि उसके अलग वर्गीकरण के पक्ष में सरकार नहीं हो तो उसे दियारा के अन्तर्गत रखा जा सकता है। मुझे उत्तर मिला कि आपका पत्र राजस्व विभाग में भेज दिया गया है। जब संशोधित कानून सामने आया तो उसमें दियारा के साथ चौर जोड़ा हुआ था। जनता के हित का पाण्डेयजी को कितना खयाल था, इससे पता चलता है।

श्री पाण्डेय जी मुख्य मंत्री थे। मैं उनसे मिलने ४ के.जी.ए. में गया और हौल में बैठ गया। श्री पाण्डेय जी आये। उन्होंने कहा कि मैं अभी श्री राम सिंहासन पाण्डेय के यहाँ विवाह में जा रहा हूँ, अतः मुलाकाती दस-एगारह बजे तक ठहर सकते हैं। मैंने पूछा आपको इतनी रात बीतने पर हमारी बातें सुनने का समय मिलेगा ? उन्होंने कहा मैं यहाँ दो बजे रात तक रहकर काम करता हूँ!

उसी दिन की एक दूसरी बात भी याद है। श्री पाण्डेय जी हौल में खड़े थे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और लोग घेर कर अपनी-अपनी वाते कह रहे थे। शाहाबाद जिला के कुछ किसानों ने नहर के अधिकारियों के खिलाफ आवेदन पत्र देकर अपनी कठिनाइयाँ सुनायीं। श्री पाण्डेय जी ने आप्त सचिव से कहा कि इस पर सिंचाई मंत्री से रिपोर्ट मांगे। श्री पाण्डेय जी आगे बढ़े। मैंने उन रैयतों को कहते सुना हम लोगों के दरखास्त पर चाहे जो भी औडर हो लेकिन कोई दूसरा मुख्य मंत्री रहता तो इस प्रकार हमें पीठ पर चढ़कर बातें करने नहीं देता।

एक दूसरे दिन की घटना है। मैं प्रातः श्री पाण्डेय जी से मिलने उनके छज्जूबाग के निवास पर गया। वहाँ उनके हाते में सड़क के दोनों तरफ सैकड़ों आदमी लाइन में खड़े थे। मैं भी यहीं खड़ा था। वहीं एक खद्दरधारिणी महिला भी थी जिसके हाथ में कांग्रेस का झंडा था और वह उसे झुकाये हुए खड़ी थी। श्री पाण्डेय जी घर से वाहर निकले और उनकी नजर उस महिला पर पड़ी। उन्होंने रूखे स्वर में पूछा, आपने झंडे को क्यों झुकाया है ? उसने उत्तर दिया मैं एक शिकायत लेकर आयी हूँ। पाण्डेय जी ने कहा पहले आप झंडा ऊँचा करें, फिर अपनी बाते कहें। उसने झंडा ऊँचा करते हुए कहा, आप पाँड़े-चौबे-तिवारी आदि की बाते सुनते हैं और दूसरों की वातों पर ध्यान नहीं देते हैं। आपने त्रिवेदी जी को पूर्णिया का एस० पी० बनाकर भेज दिया है। वहाँ मेर लड़का सिपाही है। उसे वे सीमा पर भेज देते हैं जहाँ पाकिस्तानियों से झंझट है। वह छुट्टी माँगता है पर वे उसे छुट्टी नहीं देते हैं। आप त्रिवेदी जी को वहाँ से बदल दें। पाण्डेय जी ने कहा, आप अपनी शिकायत लिखकर दें। उस महिला की बातों पर लोगों को हँसी आ गयी परन्तु पाण्डेय जी गंभीर ही वने रहे। वस्तुस्थिति यह थी कि त्रिवेदी जी की बदली पहले ही हो चुकी थी और वे पदोन्नत होकर पटना आने वाले थे।

जब पाण्डेय जी मुख्य मन्त्री हुए तो मैं उन्हें बधाई देने गया। बातचीत के सिलसिले में उन्होंने कहा कि मैं सचिवालय का जंग छुड़ाने का प्रयास करूँगा। बाद में मैं अपने एक काम से श्री पाण्डेय जी से तीन बार मिला और तीनों बार उन्होंने अपने आप्त सचिव को मेरी फाइल मँगाने का आदेश दिया। लेकिन मेरी फाइल नहीं आई। मैं चौथी बार श्री पाण्डेय जी से मिलने गया। उनके आप्त सचिव वहीं थे। उन्हे देखते ही मैं क्षुब्ध हो उठा। अभिवादन के वाद मैंने पाण्डेय जी से कहा आपने कहा, था मुझे सचिवालय का जंग छुड़ाना है। लेकिन आपके तीन वार आदेश के वावजूद मेरी फाइल अभी तक नहीं आयी है। श्री पाण्डेय जी दिन भर के लिए मौन हो गये। फिर उन्होंने गंभीर मुद्रा में मुझसे कहा, फाइल आयेगी और काम भी होगा। मुझे ऐसा लगा कि मैंने उद्दंडता पूर्वक बातें की हैं और मुझे इतने लोगों के सामने इस प्रकार बातें नहीं करनी चाहिए था। मुझे दुख हुआ किन्तु वाद में मेरी फाइल आयी और काम भी हुआ। ऐसी थी पाण्डेय जी में सहन शीलता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बार मैं संध्या समय ४.के.जी.ए.में हरी दूब पर बैठा था। बगल में एक मैथिल भाई बैठे थे। जब उन्हें पता चला कि मैं चपारन का रहनेवाला हूँ तो उन्होंने मुझसे पूछ दिया कि श्री पाण्डेय जी ने आपलोगों के लिए क्या किया है? उस समय मैं उनके इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका। लेकिन बाद में कुछ ऐसी बातें सामने आयीं, जिनकी चर्चा अपेक्षित प्रतीत होती है। चंपारन जिले की लंबाई करीब एक सौ माइल थी। इसकी उत्तरी सीमा पर नेपाल राज्य और पश्चिमी सीमा पर उत्तर प्रदेश का देवरिया जिला है। इस स्थिति का लाभ अपराध-कर्मियों को मिल जाता था। वे यहाँ अपराध कर्म करते थे और भागकर उत्तर प्रदेश या नेपाल की सीमा में चले जाते थे। श्री पाण्डेय जी ने इस जिले को दो हिस्सों में विभाजित कर दिया जिससे प्रशासन में भी सहूलियत हुई और जनता को अनेक कठिनाइयों से त्राण मिला। विभाजन के समय नये जिलों के नाम के प्रश्न को लेकर विवाद खड़ा हुआ। बेतिया और मोतिहारी दोनों सब डिवीजन की जनता चाहती थी कि उसके ही जिले का नाम चपारन रहे क्योंकि यह नाम इस देश में महात्मा गांधी के प्रथम सत्याग्रय से जुड़ा है। श्री पाण्डेय जी ने जिले का नाम पूर्वी चंपारन और पश्चिमी चंपारन रख कर इस विवाद का अंत किया। पश्चिमी चंपारन स्थित बेतिया के छोटे रमने को पार्क में बदल दिया गया जिससे नगर की सुन्दरता बढ़ी और जनता की सुविधाएँ बढ़ी। जिस समय वे केन्द्रीय सिंचाई मंत्री थे, थरुहट के दुर्दमनीय मसान नदी पर बाँध की निर्माण-योजना बनी और उस पर काम भी आरंभ हो गया। इससे चंपारन के सबसे पिछड़े क्षेत्र थरुहट में सिंचाई की व्यवस्था होगी और बाढ़ से बचाव भी होगा। बेतिया के महाराजा ने चंद्रावत नाम के एक नाला का निर्माण कराया था जिससे गंडक का पानी बेतिया तक आता था। मुझे जहाँ तक याद है उस नाले के जीर्णोद्धार की दिशा में भी कुछ प्रयास किया गया था। जब श्री पाण्डेय जी रेल मंत्री हुए तो उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र के रक्सौल स्टेशन से मुजफ्फरपुर तक सीधी ट्रेन की व्यवस्था की। उन्होंने मुजफ्फरपुर से रक्सौल तक दोहरी लाइन बिछाने के लिए सर्वेक्षण भी करने का आदेश दिया था। रक्सौल भारत और नेपाल की सीमा पर स्थित एक छोटा किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व का नगर है। श्री पाण्डेय जी न तो अधिक दिनों तक मुख्य मंत्री के पद पर रहे और न केन्द्रीय सिंचाई मंत्री और रेलमंत्री के पद पर ही। अतः अनेक जनकल्याणी इनकी योजनाएँ इनके जीवन काल में पूरी नहीं हो सकीं।

जब श्री पाण्डेय जी मुख्य मंत्री थे, उन्होंने शासन में चुस्ती लाने के लिए अनेक नये जिले, सब डिवीजनों और पुलिस स्टेशनों का गठन किया। एक दिन मैं पटने में एक रिक्शे पर बैठा था। उसी पर बड़हिया के भी एक सज्जन थे। बातचीत के सिलसिले में उन्होंने कहा कि मुंगेर जैसे जिले में भी अपराध में बहुत कमी हुई है। जब पाण्डेय जी शिक्षा मंत्री थे, उन्होंने परीक्षा में फैले कदाचार को रोकने का प्रयास किया और उन्हें बहुत अंशों तक सफलता भी मिली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री केदार पाण्डेय अनुशासन के पक्षपाती थे। वे अपने विचार पर दृढ़ रहते थे। जब वे मुख्य मंत्री थे, तृतीय श्रेणी के कर्मचारियों ने हड़ताल की। सात हफ्ते तक हड़ताल चली, लेकिन पाण्डेय जी उसके सामने नहीं झुके। अंत में हड़ताल समाप्त हो गयी। जब वे रेल मंत्री थे, ट्रेन के ड्राइवरों ने भी हड़ताल की लेकिन पाण्डेय जी उसके भी सामने नहीं झुके। अंत में हड़ताल समाप्त हो गयी।

श्री केदार पाण्डेय जी का राजनीतिक जीवन संघर्षमय रहा। वे आत्मनिर्मित व्यक्ति थे। वे अपनी कार्यक्षमता के बल पर आगे बढ़ते गये। वे ज्यों-ज्यों आगे बढ़े, उनके विरोधियों की संख्या भी बढ़ती गयी। अन्य लोगों की बात तो दूर रहे, उनके अनेक अपने आदमी भी उनके उन्नयन से उनसे द्वेष करने लगे थे। लेकिन श्री पाण्डेय जी कभी विचलित नहीं हुए और दृढ़तापूर्वक परिस्थितियों का सामना करते रहे।

सादगी की प्रतिमूर्त्ति: उच्च विचार के पोषक

सामान्यकद, गौरवर्ण, दमकती मुखाकृति और खादी से वेष्ठित शरीर। श्री केदार पाण्डेय जी का व्यक्तित्व आकर्षक था। पोशाक में सादगी, खानपान में सादगी, रहन-सहन में सादगी। मुझे श्री पाण्डेय जी की प्रथम पुत्री के विवाह और द्वितीय पुत्र के जनेव में भाग लेने का अवसर मिला था। इन दोनों यज्ञों में भी मुझे सादगी देखने को मिली। ऐसा लगता था कि श्री पाण्डेय जी सादगी की प्रतिमूर्त्ति हैं। वे मिठाई खाने से भागते थे और चाय में चीनी नहीं के बराबर लेते थे। जब वे पटने में रहते थे सूर्योदय से पूर्व वे गांधी मैदान में टहलने चले जाते थे और मैदान का दो-तीन चक्कर लगाते थे। जो लोग श्री पाण्डेय जी की इस आदत से परिचित थे और उनसे इतमीनान से बातें करना चाहते थे, वे उनके साथ लग जाते थे। धीरे-धीरे गांधी मैदान में उनके मुलाकातियों की संख्या बढ़ने लगी और उनके टहलने में बाधा होने लगी। फिर वे पोलो ग्राउन्ड की ओर टहलने निकल जाने लगे। बाद में उन्होंने शीर्षासन का भी अभ्यास आरंभ कर दिया था। श्री पाण्डेय जी जब सर्पेण्टाइन रोड में रहते थे, वे प्रातः घर से निकलने पर सबसे पहले पंच मंदिर में देव-दर्शन के लिए जाते थे।

श्री केदार पाण्डेय स्पष्ट विचारवाले व्यक्ति थे। फलत: वे धारावाहिक भाषण देते थे और सोचने के लिए रुकते नहीं थे। उनकी वाणी में ओज था और भाषण प्रभावकारी होता था। उनके भाषण में व्याकरण की अशुद्धियाँ नहीं होती थीं। मोतिहारी क उनके प्रशंसक उनके नाम पर कौलेज खोलना चाहते थे, लेकिन श्री पाण्डेय जी ने इस खयाल को पसंद नहीं किया। जहाँ तक मुझे मालूम है, उनके नाम पर कोई भी संस्था नहीं है।

एक सामाजिक व्यक्ति

श्री केदार पाण्डेयजी सामाजिक भावनाओं से ओत - प्रोत थे। वे व्यस्त रहते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी अपने मित्रों एवं सगे-संबंधियों के विवाहोत्सव आदि में उत्साह- पूर्वक सम्मिलित होते थे। कभी-कभी ऐसा होता था कि एकही दिन अनेक व्यक्तियों के यहाँ विवाह में शामिल होना पड़ता था। ऐसी स्थिति में उन्हें आने में देरी भी हो जाती थी। बारात में पहुँचने के बाद वे कन्या-पक्ष के भी दरवाजे पर जाते थे। मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति की पुत्री एवं भतीजे के विवाह में सम्मिलित होकर उन्होंने मुझे गौरवान्वित किया था। श्री मथुरा चौबे के पिता श्री वैद्यनाथ चौबे स्वर्गवासी हो गये। श्री मथुरा चौबे ने उनके श्राद्ध का निमंत्रण अपने निकट-संबंधियों तक ही सीमित रखा। जब श्री पाण्डेय जी को उनके निधन का समाचार मिला तो निमंत्रण नहीं रहने पर भी श्राद्ध में सम्मिलित हुए। कांग्रेस कर्मियों एवं सगे-संबंधियों की बीमारी की हालत में वे अस्पताल में जाकर उन्हें देखते भी थे। मेरे अनुज श्री महेश चौबे पटना मेडिकल कालेज अस्पताल में भर्ती थे तो पाण्डेय जी ने जाकर उन्हें देखा, ढाढ़स दिया।

श्री केदार पाण्डेय जी में जातीयता नहीं थी। उनके बारे में उनके सगे-संबंधियों का खयाल था कि वे अपने विरोधियों के काम मुस्तैदी से करते थे और अपने निकट के लोगों के कामों के लिए उनमें दिलचस्पी नहीं थी। यहाँ पर हम श्री पाण्डेय जी द्वारा अपने संबंधियों और निकटवर्त्ती लोगों के लिए की गयी सिफारिशों के दो-एक नमूने उपस्थित करना चाहते हैं, जिससे इस बात का सही-सही अंदाज लगाया जा सके।

एक बार मैं श्री पाण्डेय जी से मिलने गया। उन दिनों वे शिक्षा मंत्री थे। मेरा अपना कोई काम नहीं था और पटना जाने पर शिष्टाचार के नाते ही मैं उनसे मिलने गया था। मैं उनके छज्जूबाग वाले निवास की अतिथिशाला में बैठा था तो देखा कि वहाँ उनके एक निकट संबंधी बैठे हैं। उन्होंने मुझसे कहा, 'मेरे भाई ने शिक्षा विभाग में एक पद के लिए आवेदन-पत्र दिया है। मैं कई दिनों से यहाँ बैठा हूँ, परन्तु पाण्डेय जी इसके लिए सिफारिश नहीं कर रहे हैं। आप उनसे जरा कह दें कि वे सिफारिश कर दें।" मेरी बुलाहट हुई। जब मैं श्री पाण्डेय जी के पास जाकर बैठ गया तो वे भी आकर एक कोने में बैठ गये। बातें होने लगीं। इसी क्रम में मैंने कहा— 'जब आप पावर में रहते हैं तो आपके अपने आदमी घाटे में रहते है।' श्री पाण्डेय जी ने तीखे स्वर में कहा —"यह कैसे ?" मैंने उनके संबंधी की ओर इशारा करते हुए कहा, "ये कई दिनों से आपके यहाँ बैठे हैं, लेकिन इनका काम नहीं हो रहा है।" श्री पाण्डेय जी ने फोन उठाया और विश्वविद्यालय सेवा आयोग के अध्यक्ष से सिफारिश की। इसके बाद उनके संबंधी वहाँ से उठकर चले गये। फिर श्री पाण्डेय जी ने मुझसे कहा, "आपके कहने पर मैंने एक ऐसे व्यक्ति के यहाँ सिफारिश की है, जिससे मेरा परिचय नहीं है। इसी से मैं टाल रहा था। आप देख लेंगे, इनका काम नहीं होगा।" श्री पाण्डेय जी की बात सच निकली और उनके संबंधी को वह जगह नहीं मिली।

अब मैं आप बीती सुना रहा हूँ। मैंने कंकड़बाग में सरकारी मकान के लिए आवेदन-पत्र दिया था। पं० रामनाथ पाण्डेय उसके प्रभारी थे। मैंने श्री केदार पाण्डेयजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी को कहा कि आप पं० रामनाथ पाण्डेय से कह देते तो मुझे पटने में एक मकान हो जाता। श्री पाण्डेय जी ने फोन उठाया और श्री रामनाथ पाण्डेय से कहा—"आप तो गणेश चौबे जी को जानते ही हैं। उनके मकान का क्या हो रहा है ?" श्री रामनाथ पाण्डेय ने फोन पर कुछ कहा जिसे मैं नहीं सुन सका। मैंने श्री पाण्डेयजी से कहा, "इससे काम नहीं होगा। जोरदार सिफारिश से ही कुछ हो सकेगा।" लेकिन पाण्डेयजी ने फोन रख दिया। एक दूसरे अवसर की बात है। मेरे लड़के ने मेसरा से इंनजिनियरिंग परीक्षा पास की। मैं श्री केदार पाण्डेय जी से मिला और कहा, 'शैलेन्द्र ने इंनजिनियरिंग परीक्षा पास की है। उसके लिए कोई एक जगह चाहिये।' श्री पाण्डेयजी ने कहा, 'आप मोकामा के ट्रैक्टर कारखाने में और राँची के निकट में जगह की तलाश करें। मैं कह दूँगा।' मेरे लिए इन कारखानों की जगह की जानकारी प्राप्त करना दुष्कर था। अतः मैंने फिर पाण्डेयजी से अपने लड़के को कहीं जगह दिलाने की बातें नहीं कीं।

श्री पाण्डेयजी की इस तरह की सिफारिशें मुझे खटकती थीं। लेकिन मेरे दिल में ऐसा भी ख्याल आता था कि प्रशासकों की अपनी कठिनाइयाँ होती हैं। गलत रास्ते पर सिफारिश करनेवाला और है, पाण्डेय जी नहीं। यही कारण था कि श्री पाण्डेयजी के प्रति कभी मेरे दिल में दुराव का भाव पैदा नहीं हुआ। इसके विपरीत मैं यह सोच कर एक गौरव अनुभव करता था कि मंत्रीमंडल स्तर तक मेरी पहुँच है।

चुनाव के चक्कर में

सन १९५२ ई० और सन १९५७ ई० में श्री केदार पाण्डेय रामनगर निर्वाचन क्षेत्र से विधान सभा के लिये कांग्रेस की ओर से खड़े हुए थे और सफल भी हुए थे। सन १९६२ ई० में वे पुनः वहीं से उमीदवार बने। पहले के दो चुनावों में मैं नहीं था। इस चुनाव में काम करने के लिए मैं रामनगर पहुँचा। रामनगर निर्वाचन क्षेत्र का उत्तरी हिस्सा 'थरुहट' पहले रामनगर राज की जमींदारी के अन्तगर्त था। इस चुनाव में पाण्डेय जी के विरोध में रामनगर के राजा उम्मीदवार थे। हमें इधर-उधर से समाचार मिल रहा था कि थरुहट की स्थिति कांग्रेस के पक्ष में नहीं है। मैंने श्री पाण्डेय जी से इस बात की चर्चा की। उन्होंने मुझे आदेश दिया कि आप थरुहट चले जायें और वस्तुस्थिति का पता लगावें। मैं थरुहट गया। बैज और झंडे को अपनी जेब में रखा। मैंने ऐसे लोगों से बातें कीं जिनमें राजनीतिक चेतना नहीं थी। मुझे पता चला कि यहाँ की परिस्थिति कांग्रेस के अनुकूल नही है। थारू स्वभाव के बड़े भोले-भाले होते हैं। उन्हें उलटा या सीधा समझा देना कठिन नहीं है। कांग्रेस विरोधी प्रचार का उन पर असर पड़ चुका था। कांग्रेसी सरकार के खिलाफ थारुओं की जो शिकायतें थी उन्हें सुनकर हँसी आती थी। वे कहते थे, 'हमारा देश अलीगंज दीवान तक था। हमें बाजियों ने धकेल कर जंगल तक पहुँचा दिया है। जहाँ-तहाँ स्कूल खुल गये हैं जिनमें पढ़कर लड़के घर का काम नहीं करते हैं और कोट-पैन्ट के लिये रुपया माँगते हैं। कच्ची सड़कों को पक्की बना दिया गया है, जिनपर चलने से गाड़ी के चक्के जल्दी खराब हो जाते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। सरकार द्वारा गरीवों को पक्के फर्श के मकान दिये गये हैं। उन मकानों में जाड़े की रात में लकड़ी जलायी नहीं जाती है। स्त्रियों के लिये रवर के पुरुष और पुरुषों के लिये रवर की स्त्रियाँ वनायी जा रही हैं।' थारुओं की इस तरह की अनर्गल वातें मुझे सुनने को मिलीं। मैंने वापस आकर श्री पाण्डेय जी से वहाँ की परिस्थिति निवेदित की। उस समय पं० महेन्द्र शास्त्री वहाँ मौजूद थे, जो चुनाव में काम करने के लिये आये थे। श्री पाण्डेय जी ने श्री शास्त्री जी की ओर ताकते हुए कहा—'आप दोनों कवि-लेखक थरुहट चले जायँ। आप लोगों के साथ श्री लल्लन पाण्डेय और श्री प्रसिद्ध नारायण मिश्र भी रहेंगे।' श्री जगदीश पाण्डेय पाण्डेय जी के चुनाव के प्रभारी थे। उन्होंने हमारे लिये व्यवस्था कर दी। हम लोगों ने थरुहट के फरहरवा से गर्दी तक तेंतीस गाँवों में घूम-घूम कर प्रचार किया और लोगों को कौंग्रेस के अनुकूल बनाया। श्री पाण्डेय जी उस समय उपमंत्री थे। उनका झुकाव साधारण जनता की ओर था। फलतः उस क्षेत्र के वड़े-वड़े जमींदार इनके खिलाफ थे। उन सवों ने संगठित होकर पाण्डेय जी का विरोध किया, तरह-तरह के हथकंडे अपनाये। श्री पाण्डेय जी के साधन भी सीमित थे। इसका फल हुआ कि वे इस चुनाव में विफल रहे। वाद के चुनावों में श्री पाण्डेय जी नौतन क्षेत्र से प्रत्याशी वने और उन्हें वहाँ से हर वार सफलता मिली। वे केवल उसी चुनाव में सफल नहीं हुए, जव वे वेतिया क्षेत्र से संसद के लिये खड़े हुए थे और हवा श्रीमती इन्दिरा गांधी और कांग्रेस के प्रतिकूल थी। वाद में वे फिर उसी क्षेत्र से संसद के लिये खड़े हुए और काफी वोटों से विजयी हुए।

नौतन के चुनावों के समय श्री पाण्डेय जी वेतिया डाक वंगला में ठहरते थे। जाड़े का मौसम था। फिर भी वे साढ़े चार वजे भोर में उठ जाते थे और नित्यकर्म से निवृत्त होकर छः वजे तक अपने कार्यकर्त्ताओं से वातें करने के लिए तैयार होकर वैठ जाते थे। वे प्रातः आठ वजे वेतिया छोड़ देते थे और रात्रि में एक वजे लौटते थे तथा एक पसर त्रिफला का चूर्ण खाकर पानी पीते और सो जाते थे। ऐसा लगता था थकावट जैसी चीज पाण्डेय जी जानते ही नहीं हैं।

नौतन के चुनाव-प्रचार के समय की घटना की चर्चा यहाँ अपेक्षित है। नौतन के चुनावों में मैं वैकुंठवा के पं० सरस्वती दूवे के यहाँ रहता था और उसके चतुर्दिक के गाँवों पैदल घूम-घूम कर प्रचार करता था। एक वार मैं उस गाँव के हरिजनों की वस्ती में गया तो उन लोगों ने कहा कि हमलोग पाण्ड़ेय जी को वोट देंगे, लेकिन एक वार आप उनसे हमलोगों को भेंट करा दीजिए। संध्या का समय था। हरिजन कौड़े के चारो तरफ वैठे थे। मैंने जीप से उतर कर उन लोगों से कहा कि पांण्डेय जी आये हैं। मेरी वात सुनते ही एक नौ-दस वर्ष का वच्चा जीप की ओर यह कहते दौड़ा कि कौन हैं पाण्डेय जी? श्री पाण्डेय जी ने भावावेश में उस वच्चे को यह कहते हुए गोद में उठा लिया कि मैं हूँ पाण्डेय जी। वच्चा खुशी के मारे हँसने लगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्य के प्रति अनुराग

श्री केदार पाण्डेय जिस समय मोतिहारी में वकालत करते थे वहाँ की एक साहित्यिक संस्था 'भारतेन्दु साहित्य संघ' के मंत्री थे। सन १९६२ ई० में मेहसी में चंपारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का दूसरा अधिवेशन सम्पन्न हुआ। श्री पाण्डेय जी उसके स्वागताध्यक्ष थे। सन् १९६५ ई० में वाराणसी के भोजपुरी संसद के दूसरे दिन के कार्यक्रम का उद्घाटन था। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि भोजपुरी के विकास से हिन्दी की किसी भी तरह की क्षति नहीं है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में लिखी जानी चाहिए और प्रचारात्मक साहित्य भोजपुरी में। सन १९७६ ई० में उन्होंने चंपारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन और संस्कृत सम्मेलन में भी भाग लिया था। सन १९७३ ई० में छज्जूबाग के निवास में श्री पाण्डेय जी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का गठन हुआ। उसके प्रारंभिक खर्च का सारा भार श्री पाण्डेय जी ने ही वहन किया। १९७६ ई० में उसका दूसरा अधिवेशन आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता में पटने में सम्पन्न हुआ जिसके स्वगाध्यक्ष श्री केदार पाण्डेय ही थे। उसी वर्ष उनकी अध्यक्षता में भोजपुरी अकादमी का भी गठन हुआ। बाद में विहार सरकार ने उसकी व्यवस्था अपने हाथ में लेली। जब भोजपुरी अकादमी के प्रथम ग्रन्थ "कालजयी कुँअर सिंह" का प्रकाशन हुआ तो श्री पाण्डेय जी ने उसके रचयिता डॉ० सर्वदेव तिवारी 'राकेश' को एक सहस्र रुपये की राशि से पुरस्कृत किया। उन्होंने उसके विगत वार्षिकोत्सव में भाग लेकर उसे गौरवान्वित किया। गत वर्ष अक्टूबर में अमनौर में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे। श्री पाण्डेय जी द्वारा स्थापित दोनों संस्थाएँ, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन और भोजपुरी अकादमी, अपने सीमित साधनों के बावजूद भोजपुरी के प्रचार-प्रसार और विकास में संलग्न हैं। श्री पाण्डेय जी ने अनेक साहित्य सेवियों को संकट में आर्थिक सहायता दी थी।

श्राद्ध और श्रद्धांजलि

ता० ५ अप्रील १९८३ को स्व० केदार पाण्डेय जी का श्राद्ध उनके ज्येष्ठ पुत्र डॉ० मनोज कुमार पाण्डेय द्वारा उनके गाँव तौलाहा में सम्पन्न हुआ। स्व० पाण्डेय जी के मित्रों, सगे-सम्बन्धियों और प्रशासकों के अतिरिक्त बिहार के मुख्य मंत्री डॉ० जगन्नाथ मिश्र तथा केन्द्र और राज्य सरकार के अनेक मंत्रियों ने उपस्थित होकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित की। लगभग दस हजार उपस्थित अतिथियों और दरिद्रनारायण के भोजनोपरान्त यज्ञ की समाप्ति हुई।

स्व० केदार पाण्डेय जी में अनेक अनुपम गुण थे। उनका व्यक्तित्व लोकोत्तर था। उनके निधन से हमारी जो क्षति हुई है उसकी पूर्त्ति होने को नहीं है।

ग्राम पो० बंगरी
ब-रास्ता—पिपराकोठी, पूर्वी चंपारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेयजी : एक व्यक्तित्व

मथुरा चौबे

□ □

केदार पाण्डेय अपने व्यक्तित्व के धनी थे। उनका बड़ा से बड़ा विरोधी सब कुछ कह जाता था किन्तु यह नहीं कहता था कि उनमें योग्यता की कमी है। अपने बल पर, बिना किसी की मदद के, चंपारण के लगभग सभी ब्राह्मण नेताओं के विरोध के बावजूद श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर की "एकला चलो" के सिद्धांत का पालन करते हुए वे अपने जीवन के यात्रा-पथ पर अकेले बढ़ते चले जा रहे थे।

वे बहुत ऊँचे व्यक्तित्व के आदमी थे। छोटी-छोटी बातों में कभी नहीं पड़ते थे। अपनी धुन के पक्के थे। जिस काम के पीछे पड़े उसे करते ही चले गये। कभी पार्टी वगैरह बना कर नहीं चले। किसी के प्रति जो भावना थी उसे छिपा कर रखना उन्होंने नहीं जाना। जातीयता नाम की चीज उनमें थी ही नहीं और न किसी ब्राह्मण नेता ने उन्हें कभी मदद दी थी।

किसी आदमी के लिए उन्हें 'सबजेक्टिव फीलिंग नहीं थी। बिना सर पर सवार हुए वे किसी के लिए कुछ नहीं करते थे। आप कितना हू उनके निकट हों, अन्यतम मित्र हों, या परिवार के सदस्य हों, जब तक आप उन्हें तंग नहीं कीजिएगा, आप के लिए कुछ भी नहीं करेंगे। इसी से लोग कहते थे कि वे ठोस अपने आदमी को नहीं बना सके। किसी अपने की गैरहाजिरी में उसके लिए कुछ करना तो उन्होंने सीखा ही नहीं। 'पावर' में नहीं रहने पर वे 'नार्मल' रहते थे, सभी अपने उन्हें याद पड़ते थे तथा जहाँ जाते थे उनके भले स्वभाव के कारण तथा बड़प्पन की वजह से सभी उनकी इज्जत करते थे तथा आदर की दृष्टि से देखते थे। परन्तु कुर्सी पर बैठने पर उनमें 'चेंज' आ जाता था यद्यपि वे बार-बार दुहराते थे कि केदार पाण्डेय वही हैं, उनमें 'चेंज' नहीं आ सकता। कुर्सी पर बैठने पर उन्हीं लोगों की प्रधानता हो जाती थी जो 'अपार्चुनिस्ट' (मौके की ताक वाले) होते हैं यद्यपि वे सभी को पहचानते थे। ऐसी हालत में उनके अपने लोग धक्का खाने लगते थे और चमचे लोगों का काम होता था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजनीति तथा श्रीमती इन्दिरा गाँधी के पीछे वे पागल रहते। अगर 'मीटिंग' हो तो भले ही भाई का 'ऑपरेशन' हुआ हो या पत्नी बीमार हो, वे उन लोगों को छोड़कर 'मीटिंग' में चले जायेंगे।

श्रीमती गाँधी के अनन्य भक्त थे। यद्यपि मुख्य मंत्रित्व से वे हटाये गये तथा संसद सदस्य होने के दो महीने बाद तक मिनिस्टर नहीं बने, उन्होंने एक बार भी कभी श्रीमती गाँधी के खिलाफ शिकायत नहीं की।

कोई काम उन्हें करने को कहिये, अगर तुरत नहीं करा लेते तो वे अवश्य भूल जाते। अपने 'इनिशिएटिव' पर काम करना उन्होंने सीखा ही नहीं। राजनीति में वे बड़े से बड़े दुश्मन की बुराई करना नहीं जानते थे। दुश्मन अगर उनसे मिल जाना चाहे तो वे तुरत गले लगा लेंगे। उनका कहना था कि राजनीति में दुश्मन से 'डायलॉग' (बातचीत) कभी बन्द नहीं करना चाहिए। आज का दोस्त कल दुश्मन बन जाता है और दुश्मन दोस्त बन जाता है।

वे नियति अर्थात् भाग्य के विश्वासी थे। जो काम जिस समय पर होने वाला है वह होकर रहेगा ऐसी मान्यता के वे कायल थे। लड़कपन से पितृहीन होने के बावजूद तथा मध्यम वर्ग का बालक होने पर भी अपने भाग्य तथा मिहनत के बल पर वह भारत सरकार के मंत्रिपदों तक पहुँचे।

मैं उनका बहुत प्रिय व्यक्ति हूँ। मुज्फ्फरपुर कालेज के 'फर्स्ट इंयर' से लेकर हाल तक कभी अपनापन में कमी नहीं रही। जिस तरह वे श्रीमती गाँधी के पीछे पागल थे उससे भी अधिक मैं उनके पीछे पागल था। मैं उन्हें दिल से मानता था और जहाँ तक मेरा विश्वास है वे भी मुझे मानते थे। मैं ने जीवन में दोस्त बनाया तो इसी 'पोलिटिसियन' को। मैं उसके पीछे पागल था और वह राजनीति के पीछे। मैं उसे जब देखता था, खुशी से नाच उठता था तथा गर्व से फूल जाता था कि है कोई मेरा दोस्त जो ऐसा हो? उसकी लोग जयजयकार करते थे तो वह खुश होता ही होगा, उससे अधिक खुशी मुझे होती थी। मैं न उसकी भीड़ में जा सकता था और न उससे मिलने दिल्ली जा सकता था। अतः संतोष के साथ उसकी उन्नति देखकर हर्षित होता था तथा सोचता था कि अब मेरी और उसकी दोस्ती कैसी। कभी सोचा करता था कि वह है हिन्दुस्तान का रेल मंत्री जिसके लिए 'स्पेशल ट्रेन' चलती है और मैं हूँ 'बंगरी हॉल्ट' पर उतर कर चवरे-चंवर चल कर 'बंगरी' पहुँचने वाला आदमी। आज 'स्पेशल ट्रेन' नहीं, विधि के निष्ठुर विधान से वह भगवान के विशिष्ट विमान से दूर, अत्यंत दूर चला गया हमारे ऐसे धरातल पर स्थित एक अभिन्न के हृदय-पटल पर अपना अमिट स्वरूप छोड़कर!

●

अधिवक्ता
बेलबनवाँ, मोतिहारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्व० केदार पाण्डेय : एक विरल व्यक्तित्व

डा० भगवती शरण मिश्र

हमारे आर्ष चिन्तकों ने कहा कि विद्या विनम्रता प्रदान करती है :—"विद्या ददाति विनयं।" सही अर्थों में विद्वान वही है जो विनयी हो। अगर इसी परिभाषा पर कसा जाय तो कुछेक ही वास्तविक अर्थों में विद्वान कहे जा सकेंगे। पाण्डेयजी ऐसे ही कुछेक लोगों में थे। विनम्रता की प्रतिमूर्त्ति पाण्डेयजी को अहंकार स्पर्श तक नहीं कर पाया था। राजनीतिक जीवन में उन्होंने बड़ी-बड़ी ऊँचाइयाँ देखीं। राज्य कैबिनेट के मंत्री से लेकर मुख्यमंत्री और फिर केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के वरिष्ठ सदस्य के रूप में भी उन्हें अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का अवसर मिला। पर, जानने वाले जानते हैं कि एक साधारण कांग्रेस कार्यकर्त्ता श्री पाण्डेय और रेल मंत्री श्री पाण्डेय के बीच रत्ती भर का भी अन्तर नहीं आया।

विद्वान थे सही अर्थों में पाण्डेयजी। विद्या को क्रिया के धरातल पर नहीं उतारी तो वह अविद्या मात्र रह जाती है। हमारे उपनिषदों ने कहा—"विद्या च अविद्या च, द्वे विधे विद्या स्मृते।" पाण्डेय जी ने अपने ज्ञान को क्रिया के धरातल पर उतारा, व्यवहार में उतारा, उसे मात्र "पुस्तकी" विद्या नहीं रहने दी। "यस्तु क्रियावान पुरुषः स विद्वान्"—जो क्रियावान है वही विद्वान है। इसीलिए कहा, पाण्डेय जी सही अर्थों में विद्वान थे।

ऐसे श्री पाण्डेय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम० एस-सी० परीक्षा उत्तीर्ण थे। वे विज्ञान के विद्यार्थी थे। पर, विज्ञान तक ही उनका ज्ञान सीमित नहीं था। उनसे दर्शन, इतिहास, अध्यात्म, साहित्य जिस पर चाहें आप विचार सुन लें और उनकी विद्वत्ता और अध्ययनप्रियता के कायल हो जायँ। एक बार उन्होंने मुझे गीता के कई श्लोक कंठस्थ सुना दिए जिसमें एक मुझे आज भी याद है—"सह यज्ञा प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति ··· ··········।" इससे स्पष्ट होता है कि यद्यपि वे आधुनिक प्रणाली से शिक्षित थे, फिर भी यज्ञ, पूजा-पाठ और आराधना-उपासना के प्रति भी वे पूरी तरह आस्थावान थे।

इसमें कोई संदेह नहीं कि सरस्वती, श्री पाण्डेय की जिह्वा पर विराजती थी। मुख्य मंत्री के रूप में और फिर रेल मंत्री के रूप में उनके कई भाषण मैंने सुने। अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में धारा-प्रवाह बोलने की क्षमता से वे युक्त थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशासनिक क्षमता की बात लें तो यह सबकी जानकारी की बात है कि उनके मुख्यमंत्रित्व काल में राज्य का चतुर्दिक विकास तीव्र गति से संभव हुआ था। खास कर राज्य के औद्योगीकरण पर जितना जोर उनके समय दिया गया उतना शायद ही कभी संभव हुआ हो।

पाण्डेय जी की एक बड़ी विशेषता थी और वही शायद उनकी सबसे बड़ी दुर्बलता थी कि शत्रुओं के प्रति भी वे स्नेह रखते थे और उनके अपराधों को शीघ्र भूल जाते थे। मार्कण्डेय पुराण में देवी के प्रति एक उक्ति आती है--"वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्" हे भगवती ! इस तरह तुमने वैरियों पर भी दया दिखलायी है। यही स्थिति थी पाण्डेय जी की। स्वयं शिव (केदार) नामधारी थे न, तो शिव और शिवा में कितना अन्तर है ? और फिर शिव भी तो प्रख्यात अवढरदानी हैं।

पाण्डेय जी ने गीता पढ़ी ही नहीं थी, उसके उपदेशों को हृदयंगम भी किया था। गीता के समत्व योग अथवा समदृष्टि के वे पूरी तरह कायल थे। छोटे-बड़े का भेद उनके सामने कुछ नहीं था। गीता कहती है—"शुनि चैव श्वपाके च पंडिता समदर्शिनः।" बुद्धिमान, ब्राह्मण, चंडाल, गौ और कुत्ते में कोई अन्तर नहीं करते। पाण्डेय जी अपने क्षेत्र के साधारण कृषक और कार्यकर्त्ता से उसी तरह जी खोल कर मिलते थे जिस तरह बड़े-बड़े मंत्रियों, सहयोगियों और अधिकारियों से।

जीवन में व्यवस्था और नियम कोई उनसे सीखे। हर कार्य को समय से सम्पादित करने के लिए वे विख्यात थे। सार्वजनिक जीवन में रहे हों या उससे बाहर, उनकी दैनिक व्यवस्था और नियम-पालन में भी कभी ढिलाई नहीं आई। एक उदाहरण ले सकते हैं। मुख्यमंत्री रहने और नहीं रहने पर भी पटने के गाँधी मैदान के प्रातः भ्रमण के उनके कार्यक्रम में कोई व्यतिरेक नहीं हुआ। इसी तरह रेलवे या दूसरे विभाग के मंत्री के रूप में दिल्ली में उनका यह कार्यक्रम नियमित चलता रहा। खाने-पीने के मामले में भी उन्होंने कड़ाई से नियमों का पालन किया। बड़े से बड़े भोज में भी उन्होंने दो-चार बड़े चम्मच से अधिक कुछ मुँह में दिया नहीं। नियम के प्रति यही अटूट आस्था शायद उनके सुन्दर स्वास्थ्य के मूल में थी। अकाल काल-कवलित हो जाने की बात अलग है, नहीं तो साठ के ऊपर की उम्र में भी पाण्डेय जी पचास से अधिक कभी नहीं लगे।

पाण्डेय जी का पार्थिव शरीर भले हमारे मध्य नहीं रहा, उनकी आत्मा हमें प्रेरणा और उत्साह प्रदान करने के लिए सदा हमारे साथ है। उनके प्रति हम सच्ची श्रद्धांजलि तभी दे पायेंगे, जब हम उनके संकल्पों को पूर्ण और सपनों को साकार करने में अपना सहयोग दे सकें। पाण्डेय जी ने जो कार्य अधूरा छोड़ दिया है इसे पूर्ण कर सकें वे ही उनके सच्चे सहयोगी और सहायक माने जा सकते हैं।

रेल मंत्रालय, नई दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी चेतना के प्राण : श्री केदार पाण्डेय

कुलदीप नारायण "झड़प"

स्वर्गीय केदार पाण्डेय के निधन का शोक-समाचार सुनते ही हृदय उद्विग्न हो उठा। क्षणभर स्तब्ध हो सोचने लगा—अकस्मात यह क्या हो गया। राष्ट्र, समाज और भोजपुरी क्षेत्र पर यों वज्रपात ! मन में बार-बार यह बात आती थी—हे प्रभु, यह दुःखद समाचार झूठ हो जाय।

मनुष्य के जीवन-काल में उसकी सही पहिचान नहीं हो पाती। परलोक-गामी होने पर ही लोग उसके वास्तविक मूल्य को आँकते और महत्त्व को समझते हैं। आज पाण्डेयजी जब हमारे बीच नहीं हैं तो उनका अभाव समस्त भोजपुरी समाज के हृदय में कसक और कचोट उत्पन्न कर रहा है। जनपदीय चेतना की वह जाग्रत-मूर्त्ति अचानक लुप्त हो गई। भोजपुरी का एक आधार-स्तम्भ टूट गया तथा भोजपुरी क्षेत्र का अनुपम प्रकाश-रत्न खो गया।

पाण्डेयजी भोजपुरी समाज के लिए प्रेरणा, उत्साह और शक्ति के स्रोत थे। उनके निधन से राष्ट्र और समाज की गहरी क्षति हुई है, खासकर विहार और पूर्वीय उत्तर प्रदेश की जनपदीय चेतना को घोर धक्का लगा है। विहार में मैथिली का लोक सेवा आयोग में प्रवेश उन्हीं के मुख्य-मंत्रित्व काल में हुआ था तथा बिहार में भोजपुरी अकादमी की स्थापना का श्रेय भी उन्हीं को है। इसके पूर्व पटना में जो अराजकीय भोजपुरी अकादमी स्थापित की गई थी उसके भी प्राण-प्रतिष्ठाता वही थे। उस संस्था ने "भोजपुरी समाचार" नामक एक लघु पत्रिका के कुछ अंक भी प्रकाशित किए। जनपदीय चेतना जगाने में और भोजपुरी आन्दोलन के इतिहास में उक्त संस्था तथा भोजपुरी-समाचार का महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिसके संरक्षक श्री केदार पाण्डेय, अध्यक्ष शास्त्री श्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी तथा निदेशक श्री हवलदार त्रिपाठी "सहृदय" थे।

पाण्डेयजी को केवल "भोजपुरी अकादमी" की ही स्थापना का श्रेय नहीं है, बल्कि वे अ० भा० भोजपुरी-साहित्य-सम्मेलन के संस्थापकों में भी अग्रगण्य थे।

समयानुसार पाण्डेय जी ने "भोजपुरी अकादमी" और "भोजपुरी साहित्य सम्मेलन" को आर्थिक सहायता भी दी एवं उनके कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया। इन दोनों संस्थाओं को उनका आश्रय तथा संरक्षण प्राप्त था। राजकीय भोजपुरी अकादमी के उत्सवों में भी वे सम्मिलित होते थे और उसकी आवश्यक सहायता के लिए तत्पर रहते थे। यही कारण है कि उनका अभाव समस्त भोजपुरी क्षेत्र को कचोट रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी की चर्चा होने पर "भोजपुरी आन्दोलन" का सारा इतिहास सामने झलक उठता है। भोजपुरी आन्दोलन भोजपुरी जनपदीय योजना का ही एक अंग है, जिसके प्रवर्त्तक पं० बनारसी दास जी चतुर्वेदी हैं। उन्हीं के प्रयास से सन् १९३० ई० में "ब्रज-साहित्य-मंडल" की स्थापना आगरा में हुई थी और उन्हीं की प्रेरणा से सन् १९४६ ई० में भोजपुरी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ, जिसका माध्यम उन्होंने मुझे बनाया। फल-स्वरूप "अखिल भोजपुरी प्रांतीय साहित्य-सम्मेलन" का पहिला अधिवेशन दि० २-३ मार्च १९४७ ई० को सिवान में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ क्योंकि उक्त अधिवेशन में प्राय: समस्त भोजपुरी क्षेत्र के प्रतिनिधि गण पधारे एवं संदेश-सहयोग किया। उस अधिवेशन की अध्यक्षता आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय ने की। इसी क्रम में दूसरे और तीसरे सम्मेलन क्रमश: महापंडित राहुल सांकृत्यायन तथा डा० उदय नारायण तिवारी की अध्यक्षता में गोपालगंज और बलिया में हुए।

भोजपुरी-आन्दोलन के प्रारम्भिक कार्यकर्त्ताओं में मेरे मित्र और तात्कालिक सहयोगी पं० महेन्द्र शास्त्री जी का स्थान सर्वोपरि है। शास्त्री जी ने भोजपुरी आन्दोलन को अपना प्रधान लक्ष्य ही बना लिया था तथा मरते दम तक भोजपुरी की सेवा में लगे रहे। वे भोजपुरी की ही नींद सोते थे और भोजपुरी के लिए ही जगते थे। उनकी लगन के फल-स्वरूप सारन जिले में भोजपुरी आन्दोलन का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। भोजपुरी आन्दोलन के इतिहास-पृष्ठ पर उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। यहाँ यह बता देना आवश्यक प्रतीत होता है कि स्वनामधन्य महेन्द्र शास्त्री जी श्री केदार पाण्डेय के जामाता श्री अशोक कुमार पाण्डेय आइ०ए०एस०के 'बड़का बाबू जी'(पिता के बड़े भाई)थे। भोजपुरी साहित्य के बहुमुखी सर्जक शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी जिनकी चर्चा पहले की जा चुकी है—पं० केदार पाण्डेय जी के श्वशुर हैं। इस स्पष्टीकरण से इतना स्पष्ट हो जाता है कि मात्र केदार पाण्डेय जी ही नहीं, बल्कि उनके नाते-रिश्ते का पूरा परिवेश भोजपुरी आन्दोलन का जीता-जागता स्वरूप है।

जहाँ तक मैं जानता हूँ, केदार पाण्डेय जी के स्वभाव में शील-शिष्टाचार, मृदुता और उदारता का विशेष गुण था। "प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं" किन्तु पाण्डेय जी ने बिहार के मुख्यमंत्री पद को सुशोभित किया तथा भारत सरकार के रेल मंत्री और सिंचाई मंत्री भी रहे, पर वे "आपा" से अमर्यादित कभी नहीं देखे गये। वे पहले अधिवक्ता और मजदूर नेता थे और राजनीतिक बाद में। यही कारण है कि उनका हृदय अपनी संस्कृति और अपने राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान की भावना से उद्बुद्ध था। शरीर तो नश्वर है—गुणवान अपने सद्गुणों और सद्कार्यों से अमर होता है

"नास्ति येषां यश: काये जरामरणजं भयम्"

लिलकर, बलिया (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेयजी से पहिल भेंट आ अन्तिम दर्शन

सर्वेन्द्रपति त्रिपाठो

□ □

इसवी सन् १९४८ के मई माह में सहायक निबन्धक, ईखोत्पादक सहयोग समितियाँ, मोतीहारी का कार्यालय के सभ कर्मचारियन के सेवा-पुस्तकन में अंकित प्रविष्टियन के जाँच करे खातिर चम्पारन गइल रहीं। सुबह में जाँच करत खा केहू का मुँहें सुनाई परल कि स्थानीय अदालत में आजु दुपहर का बाद बड़-बड़ दू गो जमींदारन के बीच चलत दीवानी मुकदमा के सुनवाई सबराला साहेब का इजलास में होखे के बा जवना में मोतीहारी के नामी-नामी वकील लोग बहस करी।

मुदाअलेह पक्ष से सहायक निबंधक खुद विशेष परिचित रहन एह से हठात् कचहरी जाये खातिर तइयार हो गइले। कुतूहलवश हमहूँ उनुका साथ चलि देली। कचहरी पहुँचते देखे में आइल कि इजलास खचाखच भरल बा आ वकील लोग के जमघट लागल बा। ओहिजा के दृश्य देखते अइसन बुझाइल कि आजु के विवाद विकट बा एही से लोगन के काफी जमावड़ा बा। देखते-देखत न्यायाधीश आपन आसन ग्रहण कइले आ कुछु देरि बाद बहस शुरू हो गइल। बहस के दरमियान देखे में आइल कि वकीली पहनावा पेन्हले अउर दुपलिया गाँधीटोपी धारन कइले कुछु छोटे कद के खनहन आ गोर बदन के एगो दिव्यमूर्त्ति खड़ा भइले आ बिलकुल शान्त वातावरण में शिष्टता के साथ आपन कथ कहे लगले। उनुकर तर्क आ दलील सुनि-सुनि के अनेक वकील लोग सिर हिला-हिला के आपन सहमति सूचित करत देखल गइले आ न्यायाधीशो के भावना कुछु ओइसने बुझाइल जवना से ई प्रत्यक्ष हो गइल कि एह वकील के तर्क जायज आ सराहनीय रहे।

चारि बजे साँझि खा इजलास उठल आ सभ केहू अपना-अपना गन्तव्य खातिर चलि परल। सहायक निबंधक का साथ हमहूँ उनुका कार्यालय में पहुँचलीं आ उत्कंठावश कथित वकील का विषय में जानकारी कइल चहलीं। असिस्टैन्ट रजिस्ट्रार केन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को-आपरेटिभ सोसाइटीज आ ओइजा के आरगनाइजर श्री जनार्दन प्रसाद मिश्र उनुकर इतिवृत्त सुनावे लगले, आ उनुका सादगी, सत्यवादिता, ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठता, वाक्-पटुता, आ समाज-सेवा में तत्परता के अइसन खाका खिंचले कि बहुत निकट से उनुका के देखे आ उनुका से बात करे के लिप्सा ललक उठलि। एह से श्री मिश्र से हम आपन मुराद प्रगट कइलीं, आ ऊ तत्काल हमरा के लेके उनुका आवास स्थान खातिर चलि पड़ले। डेरा पर पहुँचला का बाद पता चलल कि ऊ अपना मित्र श्री मथुरा चौबे का साथ केहू से मिले खातिर बाहर निकलल बाड़े आ लवटे में कुछ देरी होई। ई सुनि के हमनी वापस हो गइलीं।

दोसरा दिन सुबह सात बजे श्री जनार्दन मिश्र से उनुका विषय में विशेष जानकारी मिलल आ नाँव-गाँव जनला का बाद पता चलल कि हाले में पत्नी का मरला के कारन उनुकर अस्तव्यस्तता कुछु जादे बढ़ि गइलि बा अउर कईगो ईख-मजदूर-संघन से सबन्धित रहला से प्राय: कुछु विशेष समय ऊखि उपजावे वाला गृहस्तन के भा चीनी मिल में काम करेवाला मजदूरन के भिन्न-भिन्न समस्यन के लेके मिल-मालिकन से भेंट करे में लागि जाला, एह से कबों-कबों डेरा पर भेंट अस्थिराह ना हो पावे। खैर, जब हमनी पाण्डेय जी का डेरा पर पहुँचते रहीं कि दू-तीनि आदमी के साथ बात करत उहाँका घर से बाहर निकलते देखाई पड़लीं। एह से वापस ना हो के हमनी उनुका डेरा पर ठहर गइलीं आ उहवाँ जे आदमी रहन उनुका से बातचीत करत अनायासे पता चलल कि खूब सुबहे उनुका शादी के विषय में बेतिया चीनी मिल के कवनो बड़ पदाधिकारी बात करे खातिर आइल रहन। उनुके से बात करत उहाँ का बहरइलीं हा आ लगले लवटबि।

लगभग एक घंटा बाद पाण्डेय जी अइलीं आ परिचय लेला-देला का बाद जवन कुछु बात भइलि ओह से उहाँ का सहिष्णता, बात करे के ढंग आ मधुरीवाणी से हम बहुत प्रभावित भइलीं। समयाभाव के कारन जादे बात ना क के निस्संकोच हम आपन अभिप्राय जनावत अपना जेठी कन्या का बिवाह के प्रश्न छेड़ि देलीं। कुछु पसोपेश में पड़ला का बाद पाण्डेय जी अपना साथी वकील श्री मथुरा चौबे का साथ अन्दर घर में प्रवेश कइलीं आ चार-पाँच मिनट बाद बाहर आ के सूचित कहलीं कि चलित माह का अन्तिम सप्ताह में आवश्यक प्रक्रिया का बाद शादी संबन्धी बात तय कइलि जाई।

सादर सम्मान पा के हमरा प्रस्थान करे का पहिलहीं पाण्डेय जी का ओरि के संभवत: पण्डित जी लड़की का कुंडली के माँग कइलीं। कुंडलीं तऽ हमरा कंठस्थे रहे, कहि सुनवलीं आ पंडित जी ओकर आलेखन कइला का बाद जाँच के कहलीं कि ई संबन्ध करे योग्य बा। अइसन भइला का बाद आश्वासन का दायरा के कुछु बल मिलल। स्वभावतन हमहूँ पाण्डेय जी के कुंडली मँगलीं और उत्तर में निम्नांकित जन्मपत्री पवलीं—"शुभि संवत् १९७३ अग्रहन शुक्ल पूर्णिमा शनिवार, मिथुन लग्न, मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण तदनुसार ९ दिसम्बर १९१६ ई० के श्रीमान् रामफल पाण्डेय जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का धर्मपत्नी के गर्भ से चौठा पुत्र श्री केदार पाण्डेय के जन्म भइल। राशि नाँव वेदव्यास।

जन्मांग

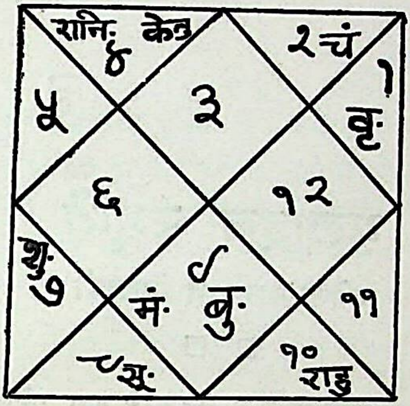

पा के हर्षित मन पटना वापस अइलीं। सभ विधि-विधान का निपटला का बाद ६ जून १९४८ के शादी सम्पन्न भइल।

पाण्डेय जी का अनेक राजनीतिक चढ़ाव-उतार के देखत आ ३४ बरिस ९ महीना २० दिन साथ रहला का बाद अकस्मात् वेलिंगडन अस्पताल, नई दिल्ली में २५ मार्च १९८३ के दिन में ११ बजि के ५५ मिनट पर विषम परिस्थिति में अन्तिम दर्शन भइल।

देखलीं जवना रूप में पहिले पहिल हठात।
ओकरा अति प्रतिकूलही लखलीं अन्त-कुघात॥

सभ तन के गति मानि ई, आइल-गइल विचारि।
वासुदेव का कथ्य के देलसि चित्त उचारि॥

●

अध्यक्ष
भोजपुरी अकादमी, पटना–१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुलाइल स्मृति

उपेन्द्र नारायण विद्यार्थी

□ □

मनुष्य के जीवन में घटल स्मृति के केहू कइसे भुला सकेला। एक बेर के बात बा कि गया जिला के जहानाबाद अनुमंडल के पारसबीघा अउर डोहिया में भइल दुर्घटना के संबंध में वस्तु-स्थिति के जानकारी लेवे खातिर काँग्रेस (ई) के बड़-बड़ नेता लोग दुर्घटना स्थल प गइल रहे। ओकरा में भारत के महान विभूति, स्वतंत्रता संग्राम के अग्रज नेता स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेय जी, ओह घरी के बिहार विधान सभा में काँग्रेस (ई) विधायक दल के नेता अउर बिहार के भूतपूर्व मुख्य मंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र जी, श्री रामाश्रय प्रसाद सिंह, श्री योगेश जी, श्री सदानन्द बाबू, श्री कुमुद रंजन झा जी श्री महावीर चौधरी जी सरीखे अउर कई एगो नेता लोग उहँवाँ गइल रहे। वर्णन ना कइल जा सके कि ओह घरी पारसबीघा आ डोहिया के चारो तरफ कइसन भयंकर स्थिति रहे। चारो ओर लोगन के चीत्कार-हाहाकार मचल रहे। केकरो बहू-बेटी के इज्जत लुटा गइल रहे त केकरो अपना जान से हाथ धोए के पड़ल रहे। केहू के घर के सउँसे सम्पत्ति लुटा गइल रहे त केहू के जवान लइका मर गइल रहे। कहे के मतलब कि केतना दर्दनाक स्थिति रहे एकर वर्णन कइल मुश्किल बा। ओह घरी ई सभ नेता लोग के आँख से आँसू बहत रहे। ई सभ नेता लोग ओह दिन भोरे से लेके साँझ तक चारो ओर घूम-घूम के दुखी लोग के सांत्वना बन्धावस। बहुत दर्दनाक दृश्य रहे। पूरा अस्पताल मरीजन से भरल रहे। दिनभर सभ केहू अस्पताल में लोग के देखभाल कइल। केहू के ना खाए के सुध रहे ना पीए के। साँझि-खा सभ नेता लोग जब पटना खातिर वापस चलल त बीच में धनरुआ ग्राम में जहाँ हमार घर बा, पहुँचल। उहाँ पहुँचके सभ केहू आराम कइल आ उहँवें खाए-पीए के व्यवस्था कइल गइल।

ओह घरी सभ केहू बहुत थाकल रहे एह से खूब जम के भोजन भइल। स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेय जी हमरा इन्तजाम से बड़ा प्रसन्न भइलन। एह छोट घटना के उ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमेशा इयाद राखत रहन। बाद में जब कवो उन्हका से भेंट होखे चाहे पटना में या दिल्ली में, ऊ बराबर कहस कि तोहरा किहाँ खूब खइले बानीं आ बराबर हमरा परिवार के हालचाल पूछल करसु। केहू किहाँ खाइल भा विश्राम कइल कवनो बड़ बात ना रहे, तबो श्री पाण्डेय जी केतना महान रहले कि उन्हका ई बात हमेशा इयाद रहत रहे। राजनीति में ओह घरी हम बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस (ई) के महासचिव रहलीं। हमरा बराबर श्री पाण्डेय जी से भेंट करे के मौका मिलत रहे। ऊ एतना सहज आ उदार दिल के रहन कि केहू खातिर उन्हका दिल में छल-कपट ना रहत रहे। ऊ केहू प खिसियातो रहन त तुरते ठंढा हो जात रहन। इहाँ तक कि डा० जगन्नाथ मिश्र जी जे ओह घरी बिहार के मुख्य मंत्री रहस उन्हको के ऊ खिसिआ के कबो-कवो कहत रहन कि तू त हमार छोट भाई हव, एह से जवन हम कहतानी ओइसेही कर ऽ। राजनीति में विरोध रहला के बावजूद दूनों आदमी में गाढ़ प्रेम रहे।

अइसन महान आ सरल हृदय के नेता के इयाद में मन हमेशा दुखी हो जाला!

सदस्य,
कार्यकारिणी समिति
भोजपुरी अकादमी, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जमीन के नेता

—राजमंगल मिश्र

□ □

पं० केदार पाण्डेय के हम १९६२ ई० का पहिले से जानत वानीं। केदार पाण्डेय जी जमीन के नेता रहलीं आ गरीबन के भलाई करे में इहाँ का कवनों कसर ना उठा रखलीं। बिहार के राजनीति में इहाँ के खास स्थान रहे आ रही। भोजपुरी बोले वाला लोग पाण्डेय जी के कबो ना भुलाई। पटना के भोजपुरी सम्मेलन भोजपुरी इतिहास में एक आपन स्थान बनवलस, जवना से भोजपुरी भाषा-भाषी लोग के देश-विदेश में प्रचार भइल। पटना में जवन भोजपुरी एकेडमी पाण्डेय जी बनववलीं आ जवना से भोजपुरी के विकास एह प्रान्त में आ दोसरा प्रान्त में हो रहल बा, ओकरा के भोजपुरी बोले वाला लोग ना भुलाई। भारत सरकार के रेल मंत्री चाहे बिहार के मुख्यमंत्री होके जवन काम पाण्डेय जी कइलीं ओकरा के देश के आ प्रान्तके लोग कबो ना भुलाई। पांण्डेय जी त आज के दुनियाँ में नइखीं, लेकिन जवन उहाँका लीक एह देश में छोड़ गइल वानीं, ओह लीक से चलला से देशवासी के आ भोजपुरी भाषा भाषी लोगन के तरक्की अगहूँ होई।

★

सदस्य, बिहार विधान सभा
पटना

पाण्डेयजी के यादगारी

—डा० रामावतार शुक्ल

□ □

आज कल पटना में राजेन्द्र नगर के पास रेलवे लाइन के ऊपर पुल बन रहल बा। एकरा के हम जब-जब देखीला (आजकल रोजे देखत वानीं) त पाण्डेय जी के स्मरण हो आवेला और आँख में लोर आ जाला। बात अइसन भइल कि रेल मंत्री बनला के तुरत बाद उहाँ के पटना अइलीं और विना कवनो औपचारिकता के पटना विश्वविद्यालय के कर्मचारी लोग के तरफ से अभिनन्दन करे के प्रस्ताव स्वीकर कर लेहलीं। ओह घरी हम विश्वविद्यालय के कुलपति रहलीं, अउर समारोह में १०-१५ मिनट देरी से पहुँचलीं। कारन ई कि राजेन्द्रनगर के गुमटी बन्द रहे। जब हम पाण्डेय जी के ई बात बतवलीं त पाण्डेय जी अपना पी० ए० के बुला के पुल बने के मंजूरी तुरते दे दिहलीं।

पांण्डेय जी अब नाहीं रहलीं, पर बहुत दिन तक भारत अउर विशेष कर बिहार के लोग उनकर याद करत रही।

★

अध्यक्ष
बिहार अन्तर विश्वविद्यालय बोर्ड, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के रतन लुटा गइल

डॉ० प्रभुनाथ सिंह

□ □

अमनौर के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन "न भूतो न भविष्यति" के विशेषण से समाप्त भइल। कुआर के महीना, दशहरा के गहमा-गहमी, तीन दिन तीन रात तक लाख तक पहुँचल तमसवीन, भोजपुरी के नेही-छोही लोगन के जुटान, कान से सगरो सुनाय, "ई सम्मेलन नइखे होत भोजपुरी के मेला लागल बा"। सन् १९८२ के ई अधिवेशन ऐतिहासिक रहल। एकरा पीछे एगो लमहर बल आ प्रेरणा रहे भोजपुरी के रतन स्व० पंडित केदार पाण्डेयजी के। जब स्वागताध्यक्ष का हैंसियत से हम उहाँ के उद्घाटन करे के नेवता देवे गइलीं त पाण्डेयजी ललकरले—प्रभुनाथजी, अइसन ई सम्मेलन करीं कि सगरो डागा पिटा जाय, भोजपुरी के झंडा आसमान में फहरा जाय। के जानत रहे कि एकरा बाद भोजपुरी के झंडा के बाँस टूट जाई, डागा के डोरी छूट जाई आ भोजपुरी माई के लाल सदा-सदा खातिर काल का गाल में जाके सूत जाई! विधि का विधान के आगे केहू के वस ना चले। निमनके आदमियाँ असमय उठा लीहल जाले। लोग का पास बाँच जाला बस इयाद, ओकर करनी-धरनी!

अमनौर का मंच से पाण्डेयजी उत्तर प्रदेश के लोगन के खूब ललकरले कि अपने सबन का प्रयास करे के चाहीं कि उत्तरो प्रदेश में विश्वविद्यालय का कोर्स में भोजपुरी राखल जाय. भोजपुरी-भाषी लोग का संविधान का अष्टम अनुसूची में भोजपुरी के शामिल करे खातिर डट के लड़ाई लड़े के चाहीं। सब लोग दिल्ली में बटोराय, "आगे-आगे हम चलब"। हमनी दिल्ली अभी ना पहुँचलीं बाकिर पाण्डेयजी हमनी के छोड़ के आगे, बहुत आगे चल गइलीं, अइसन जगह जहाँ से उहाँका अब ना लवटब। भोजपुरी के जवन दिल्ली उहाँ का चलते पँजरे बुझात रहे अब "दिल्ली दूर हो गइल"। भोजपुरी के अपना मंजिल तक अब के पहुँचाई? सगरो अन्हार लउकत बा, राह देखावे वाला अपने राही बनके दूर निकल गइल। हे भगवान! ई कहिआ के बैर सधवलऽ!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी अकादमी के स्थापना कराके पाण्डेयजी भोजपुरी साहित्य के विकास के इतिहास में अमर हो गइले। जब कवनो इमारत तैयार हो जाले त ओकर कंगूरा सबका दिखाई देला। ओकरे के देख-देख लोग इमारत के सराहेला, बाकिर इमारत के नेंवें के ईंटा पुजाला, कंगूरा के ईंटा आज ले कतहीं ना पुजाइल। पाण्डेयजी भोजपुरी इमारत के नेंव के ईंटा रहले; पुजइले, बराबर पुजात रहिहें।

राजनीति में हम बानीं, पाण्डेयजी हमनी के नेता रहलीं राजनीति में। जब कभी अकेले में भेंट भइल, राजनीति के बात कम, भोजपुरी के आगे बढ़ावे के बात ज्यादा। हृदय में बराबर एगो बेचैनी--एकाडमी ठीक से चले के चाहीं, पइसा कम पड़त बा, प्रभुनाथजी ! रउआ जगन्नाथजी के बहुत नजदीकी बानीं, उहाँ से कहके पइसा दिलायीं, काम सब ठीक से ले चले के चाहीं, इहे सब बराबर उहाँ के रटना रहे। बार-बार उहाँका कहीं – विद्यालयो में भोजपुरी में पढ़ाई चालू करे खातिर जोर मारे के चाहीं, किताब लिखाये के चाहीं। विहार लोक सेवा आयोग में, एगो विषय का रूप में भोजपुरी के मान्यता खातिर उहाँ का हृदय में बराबर एगो अकुलाहट रहे। सँपरल काम ना होखे, ना भइल। पाण्डेयजी आज हमनी का बीच नइखीं, उहाँ के छोड़ल काम के पूरा करे के बा, करेजा के दीढ़ करके। हक खातिर लड़ाई लड़े के उनकर सीख बराबर रहे। जवन मसाल उहाँका जरा के गइल बानीं ऊ मधिम ना होखे के चाहीं।

—भूतपूर्व राज्य मंत्री

बिहार, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मृति–शेष केदार पाण्डेयजी

डॉ० बच्चन पाठक 'सलिल'

□ □

अनन्य राष्ट्रभक्त, भोजपुरी के प्रवल पक्षधर आ संकल्प के धनी केदार पाण्डेयजी खाली एगो राजपुरुषे ना रहलीं। साहित्यकार, कलाकार, शिक्षक आ आम आदमी सभे उहाँ के आपन नजदीकी मानत रहे।

ओइसे त कई वेर हम उहाँ के देखले रहीं वाकिर नजदीक से देखे आ वतिआवे के मोका तव मिलल, जव उहाँका मुख्य मंत्री रहलीं। हम स्व० महेन्द्र शास्त्रीजी के सँगे उहाँ के डेरा पर गइल रहलीं आ जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के प्रकाशित पाँच गो पुस्तक दिहलीं। पाण्डेयजी खुलल मन से आसीस देलीं आ कहलीं अइसहीं भोजपुरी सेवा में लागल रहीं सभे।

जवना घरी पाण्डेयजी मुख्य मंत्री ना रहलीं जमशेदपुर अइलीं। उहाँ के सम्मान में को-ऑपरेटिव कालेज में एगो सभा भइल। पाण्डेयजी एगो गैर सरकारी भोजपुरी अकादमी के स्थापना करे के चाहत रहीं जेकरा खातिर उहाँका तीन लाख के वजट वतवलीं। कालेज के प्राचार्य श्री मंगल दुवे, जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के अध्यक्ष प्रो० चन्द्रभूषण सिन्हा आदि सव केहू आश्वासन दीहल। पाण्डेयजी वतवलीं कि अकादमी के स्थापना का वाद ओकर सरकारीकरन आसान हो जाई। ओह महान साधक के रोपल विरवा भोजपुरी अकादमी आज उनका जस के धाजा पहरावतीआ।

कुछ दिन के वाद भोजपुरी समाज के सालाना जलसा में पाण्डेयजी के हम मुख्य अतिथि बने खातिर निमंत्रित कइलीं। स्वीकृति आ गइल। लोगन में बहुत उछाह रहे। पाण्डेयजी एक दिन पहिलहीं पहुँच गइलीं। हमनी साँझ के सर्किट हाउस में मिललीं। ढेर लोग जुटल रहे वाकिर पाण्डेयजी हमनी से अलग मिललीं आ कार्यक्रम देखि के खुश भइलीं।

दूसरा दिन सबेरहीं सर्किट हाउस से एगो कार हमरा दुआर पर आइल कि पाण्डेयजी बोलावतानीं। हम दउरल गइलीं। पाण्डेयजी उदास होके कहलीं—सलिलजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज रउरा सभे के जलसा में हम ना रहि सकीले । चासनाला कोयला खदान में दुर्घटना हो गइल बा। हमरा उहाँ जाए के अचानक आदेश आइल बा। हम रउरा जलसा के शुभ कामना करतानीं। सब भाई-बहिन से हमार हथजोरी कहि देब। हम उदास त भइलीं, बाकिर उहाँ के दायित्व आ विवशता के ध्यान राखि के संतोष करे के परल।

पाण्डेयजी एगो कुशल प्रशासक रहलीं। उहाँ के मुख्यमंत्रित्व काल में स्कूल-कालेज के परीक्षा में कदाचारिता बन्द हो गइल रहे। हम जब कबो कवनो केन्द्र के पर्यवेक्षक बनीला स्व० पाण्डेयजी के याद बरबस आ जाला।

एक बार सिंहभूम जिला भारत सेवक समाज के एगो आयोजन हमरा अध्यक्षता में रहे। पाण्डेयजी मुख्य अतिथि रहलीं। हम वक्ता लोगन के नाम काटि दिहलीं आ पाण्डेयजी से निहोरा कइलीं कि अपने मार्गदर्शन करीं। पाण्डेयजी व्यस्त रहलीं, बाकिर एक घंटा जमि के बोललीं। भ्रष्टाचार उन्मूलन, जातिवाद, समाज में साहित्यकार आदि के भूमिका पर उहाँ के भाषण भइल। ई उहाँ के मौलिक चिन्तक रूप के झाँकी रहे।

भोजपुरी भाषा के ई दुर्भाग्य रहे कि पाण्डेयजी अइसन सक्षम सवांग अचानके चलि गइल। स्मृति में अथोर श्रद्धांजलि।

प्राध्यापक
वीमेंस कॉलेज, जमशेदपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चंदन-बन का बाँस में सुगन्ध

कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'

□ □

महाकाल का गाल में मानवजाति के अनगिनत पीढ़ी पइठि गइलि। ई परम्परा विना रोक-टोक के चलिल आवति वा आदिए काल से आ चलति रही असहीं बरसाती नदी का उखमजल धार मतिन सृष्टि का अन्त तक। एह नरलोक में कवनो नर भा नारी का सदई खातिर ठहर-ठेकान ना कवो रहल आ ना रही। एह संसार रूपी मेला में मेलहरू बनि के मानव आवेला आ आवेला मुट्ठी बन्हले बाकिर जाए का बेरी दूनो हाथ पसारि के ई कहत चलि देला जे "एहिजा बसे ना केहू, देश ई बिराना"।

ई देश त बिराना जरूर वा काहें जे एहिजा अमर होइ के केहू ना आवे। हँ, एगो बात माने के पड़ी जे एह मृतलोक में केहू अमर होइ के ना आवे तवो अइसना लोग आइल करेले जे अपना आप का सुख सुविधा के त्यागि के "सर्वेपिसुखिनः सन्तु सर्वेसन्तु निरामया! सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्" के मंत्र अपनाइ लेलन ओइसन महानुभाव लोग अमरता के उत्तम छाप समाज पर देइ के सवतुक जिनिगी के अरचित पथ वाला आदर्श देखाइ जाले। ओही नर-रतन लोग से मानव जाति का निजगुत सहारा मिलेला। भा ई ग्यान रहेला जे हम कुछ अइसने करतब कइ के संसार से जाईं जवन देश, समाज, मातृभूँइ भा मातृभाषा आदि वदे लाभदायक होखे। स्व० पं० केदार पांडेयजी ओही नर-रतनन के सोनहुली कड़ी रहीं। भारतीय संस्कृति से उहाँ का सुलभ रहे सादा जीवन, ऊँच बिचार; महात्मा गांधी से मानव होइ के मानव रूप में उचित आदर-आ मातृभूँइ भोजपुर से सुलभ रहे भगवान शंकर वाली अल्हड़ आ उदारतावाली नीति।

स्व० पांडेयजी से हमार परिचय उहाँ का वाराणसी में विद्याध्ययने काल से रहल हा। आदरनीय श्रीकृष्ण सिंहजी का मंत्रीमंडल में पांडेयजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपमंत्री रहीं। भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर का कार्यकारिनी से तय भइल जे मंडल का ९ वाँ अधिवेशन में मुख्य अतिथि का रूप में पांडेयजी के नेवते के भार विप्रजी आ श्री फागूराय के दीहल जात बा। कार्यकारिनी का आदेशानुसार हमहन पटना गइलीं। अपना आवास पर हमहन के देखते पांडेयजी अगराइ के अगवानी कइलीं। सर-समाचार होते रहे तब ले जलपान आइल। अधिवेशन में आवे के तिथि तय भइला का बाद पांडेयजी बक्सर अनुमंडल का विकास के बात चलवलीं। हम कहलीं जे हम त ज्यादातर काशिए रहत बानीं आ हमरा जाने में एह स्वतंत्र भारत का बिकास रूप चंदन बन में बक्सर 'बाँस' मतिन बिराजमान बा आ एही से बक्सर में बिकास के कवनो चासे बास नइखे। भाई फागू राय जी भी हमरा कहला के जोरदार समरथन कइले आ पांडेयजी हँसि के चुप लगा गइलीं।

अधिवेशन का दिन बिहार आ उत्तर प्रदेश का कवियन के मजगर समकठा जुटल रहे आ पांडेयजी का साथ रहलन कई गो विभागन के नामी विशेषज्ञ। ओह दिन पांडेयजी ओह लोग से कहले रहीं, "बक्सर का इतिहास भारत की राजधानीं दिल्ली से भी पुराना है। इस कर्म भूमि को विकसित करने में आप लोगों का सहयोग अपेक्षित है। अतः आप यथासंभव अपने विचार देकर इस पुनीत कार्य हेतु अवश्य सहयोग दें!" नहर, सड़क आ उद्योग के अधिकारी लोग त बाढ़ पीड़ित क्षेत्र का माथे पार उतरि गइले बाकिर बिजली वाला अधिकारी बिजली का बल पर अनुमंडल के कायाकल्प के रूप दरसवले रहन। हरि इच्छा से बिजली लागिओ गइल बहुत हालिए-हाली आ एह से अनुमंडल में बहुत कुछ लाभो पहुँचल। दियारा क्षेत्र में नलकूप गाड़े से अभियन्ता लोग भटकत रहन जे गंगा का ढाही वाली जमीन में नलकूप ठटल कठिन बा। एहू काम के सफल बनावे में पांडेयजी के उत्तम प्रयास सुलभ भइल आ भरम वाला भूतो भागि गइल।

ओह अधिवेशन में भोजपुरी का प्रति जवन कामना पांडेयजी प्रगट कइले रहीं हमरा पास सुरक्षित बा। भोजपुरी के अखिल भारतीय रूप में संगठन के महामंत्र श्री राहुल जी देले रहीं आ सरब प्रथम ई अनुष्ठान बक्सर से चलल। पहिला प्रयास भोजराज का भवन 'नवरतन' गढ़ पर भोजपुर में भइल, दोसरका काशी में आ तीसरा बिहार राज का राजधानी पटना में।

स्व० रघुबंस बाबू कहले रहन जे पं० केदार पांडेयजी के वरद हस्त बा एह कामें में एह से आशा बा जे तिसरका उड़ान पर तीतिर पकड़ाइए के रही। अभाग बस बाबू रघुबंस नारायन सिंह ऊ समारोह ना देखलीं बाकिर उहाँ के विश्वास रहे जे पांडे जी खड़ा बानीं त बेड़ा पार भइल असंभव नइखे। ओह शुभारंभ के सातवाँ अधिवेशन अमनौर में धूमधाम से मनावल गइल बा आ डा० प्रभुनाथ सिंह आदि आगा खातिर आपन करतब निभावे के व्रत ले चुकल बानीं। पांडेयजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के निधन त अभाग वनि के खटकते रही। पांडेयजी धुन के महान धुरंधर रहीं। उहाँका मन में अनायास बिचार उठल जे अकादमी के स्थापना होखे के चाहीं। ओही लगले भाई "सहृदय" जी के वइठाइ के संस्था के स्थापना कइ दिहलीं। "जहाँ चाह तहाँ राह", प्रभु कृपा से सरकार से संस्था के मान्यता मिलि गइल। पांडेयजी जवना काम में हाथ लगावत रहीं, श्रद्धा आ विश्वास का साथ। उहाँ का सफलता के कुंजी भी इहे रहे। रेल भा सिंचाई कार्य में अधिक दिन तक ना रहलो पर स्व० पांडेयजी जवन कइ गइल बानीं अधिकारिन बदे मशाल के काम करी। पांडेयजी के नश्वर शरीर पंच-भूतन में मिलि गइल बाकिर उहाँ का आचार, विचार, सदाचार, उदारता, सहिष्णुता, पर-दुख-कातरता, भावुकता आ सहनशीलता आदि के प्रभाव पथ प्रदर्शक का रूप में जुग-जुग ले जगमगात रही, मानव जाति का मंगलमय कल्यान बदे। ॐ शान्ति !

—विप्र नगर

सिविल लाइन्स, बक्सर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा के उन्नायक केदार पाण्डेयजी

उमाकान्त वर्मा

□ □

भोजपुरी भाषा के उन्नायकन में पाण्डेयजी के नाम आदर से लीहल जाला। पाण्डेयजी से हमार सम्बन्ध बहुत गहरा त ना रहे लेकिन उहाँ से हमार भेंट भोरहरिया में पटना के गाँधी मैदान, जेकरा के लॉनो कहल जाला, में हो जात रहे। पहिले पहिल एही टहले के क्रम में जब हम उहाँ के प्रणाम कइलीं त उहाँ के आगे बढ़ गइलीं। उहाँके झटक के टहले के आदत रहे। कुछ लोग हमेसे उहाँ के टहले में साथ देत रहस। उहाँके अपना छज्जूबाग वाला डेरा से गाँधी मैदान पहुँचत रहलीं आ हम चौधरी मार्केट के नगीच से आवत रहलीं। उहईं हमार ससुराल के डेरा पड़ेला। कुछ दिन तक लगातार संजोग से भेंट हो जाय, आ उहोंके मुस्कुरा के सिर हिला दीं। एक दिन उहाँके हमरा प्रणाम कइला पर रुक गइलीं आ हमरा बारे में पूछ-ताछ कइलीं। ई जनला पर कि हम हाजीपुर में राजनारायन कॉलेज में प्राध्यापक बानीं आ भोजपुरी में रचना करीले उहाँके हमरा के अपना डेरा पर आवे के निमंत्रण देलीं।

दोसरा दिन हम उहवें साथे भोरहरिये में टहलते उहाँ के डेरा पर गइलीं। संजोग कहीं कि उहाँ के डेरा पर हमरा भोजपुरी भाषा के अनन्य उपासक, प्रचारक, भोजपुरी में "भोजपुरी" नाम के पहिला पत्रिका निकालेवाला आ भोजपुरी में सिद्ध व्यंग्य कविता के सृष्टि करेवाला आचार्य महेन्द्र शास्त्रीजी के दर्शन भइल। हमरा के देखते उहाँके प्रसन्नता से भर गइलीं आ हमरा के अँकवारी में भरत कहलीं, आईं उमाजी, आईं। बड़ा संजोग से रउआ से भेंट हो गइल रउआ से गीतो सुनला बहुत दिन हो गइल। पाण्डेयजी शास्त्रीजी के विह्वलता देख के मुस्कुरा देलीं आ अंगना में चल गइलीं। बाद में हमरा मालूम भइल कि पाण्डेय जी आ शास्त्रीजी में बड़ा नगीच के रिश्ता बा। पाण्डेयजी के लड़की के शादी शास्त्रीजी के ज्येष्ठ भतीजा अशोक पाण्डेय से भइल बा जे हमरा गुरु डॉ० रामजी पाण्डेय के पुत्र हवन। अँगना से पाण्डेयजी अइलीं त दू कप चाय लेले अइलीं। हम त पाण्डेयजी के सहृदयता पर पानी-पानी हो गइलीं। हम आपन चाय उहाँ के ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़ा देलीं त पाण्डेयजी शास्त्रीजी के ओर इशारा करत हमरा से कहलीं- " उमाजी, जब अपने के उहाँ से असीस पहिले से मिलल बा त हमरा खातिर अपने लइके जइसन बानीं। अपने पीहीं। हम नाकर-नुकर करत रहलीं तव ले अँगना से चाय के एगो कप पाण्डेयजी खातिर आ गइल। शास्त्री जी एने "भोजपुरी के कवि और उनका काव्य" पुस्तक जे उहाँ रखल रहे, में से हमार परिचय निकाल के पाण्डेयजी के देखा के हमार परिचय देवे लगलीं आ कहलीं, उमाजी, अपनेके ऋतु गीत हमरा वड़ा नीक लागेला। अपने "आइल रे बरखा" वाला गीत सुनाईं। हम गीत सुनावे लगलीं त जब आखिरी पंक्ति आइल त पाण्डेयजी के भाव विह्वलता देख के हम अभिभूत हो गइलीं। पंक्ति रहे—

मुनिया निकसल मउनी लेके
कोखिया छोड़ि अँगनवाँ
खुरुपी लेले रधिया निकसल
झुनिया सोचत करमवाँ
चटकल से पियवा नाहि आइल
आइल रे बरखा।

भाव विह्वल होके उहांके शास्त्रीजी से कहलीं--गाँव के मजदूरी करेवाला मेहरारू लोग के एतना यथार्थ चित्रण भोजपुरी में हम पहिले ना सुनले रहलीं हँ। भोजपुरी साहित्य के ई बानगी अपने वताईं कवनो साहित्य के सामने राखल जा सकेला कि ना। कइसे लोग भोजपुरी के उपेक्षा करेला। शास्त्रीजी मुस्कुरात कहलीं--अबहीं त रउआ उमाजी के सुनलीं हँ। आ शास्त्रीजी, सतीशजी, आ अनिरुद्धजी के सुनब त अपने के माने के पड़ी जे भोजपुरी के गीत साहित्य अब आकास थामे लागल बा। पाण्डेयजी कहलीं लागता अबहीं भोजपुरिया लोग आपन हीन भावना छोड़ नइखे पावत। शास्त्रीजी उत्साहित होके कहलीं-ई त साँचे बा लेकिन जादे लोग विनम्रता में अपना के कम मान लेला। ना त भिखारी ठाकुर से लेके "बटोहिया" तक के साहित्य में स्थान मिलल बा कि ना। "बटोहिया" के लोग भोजपुरी के ना मान के हिन्दी के मानेला। हिन्दी से हमरा कवनो विरोध नइखे, लेकिन ऊ लिखल त भोजपुरिये में गइल बा नू। हम दूनो सिद्ध पुरुष के देखते रह गइलीं। उठ के चरन छुअलीं त पाण्डेयजी हमरा के आवत जात रहे के कहलीं आ भोजपुरी के भंडार भरे के आसीस देत विदा कइलीं।

एकरा वाद उहाँ से भेंट प्रसाद साहित्य परिषद् में १९६० में पटने में भइल। ख्वाजा अहमद अब्बास प्रसिद्ध साहित्यकार आ फिल्म निर्देशक एगो विहार के अकाल पर वृत्तचित्र वनावे जात रहलन। ऊ ओह वृत्तचित्र ला हमार तीन गो भोजपुरी गीत लेलन, जेमें संगीत जे० पी० कौशिक के रहे। पाँच सौ सिल छायाचित्र डिजाइन के कैमरामैन जौन फ्रैंकलिन के रहे आ जेकरा के सुलक्षणा पंडित, एम० आर० मिश्रा, नरेन्द्र सक्सेना, पंकज मिश्र आ के० एन० शर्मा लोग गवले रहे। फिल्म के नाम रहे "धरती की पुकार"।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह फिल्म के भारत सरकार खरीद लेलस आ आजो एह फिल्म के प्रदर्शन जन-सम्पपर्क विभाग द्वारा जगहे-जगहे होत रहेला। हमरा सामने में कई जगह गोष्ठी भइल जेमें से एगो इहो रहे। गोष्टी में हमरा के देख के पाण्डेयजी मुसुकइलीं आ अपना अध्यक्षीय पद से बोलत कहलीं--उमाजी से एक बार हमरा भेंट पहिलहूँ भइल बा। ओही दिन हम समुझ लेले रहलीं कि भोजपुरी भाषा के साहित्य के गउरव के इहाँ के बढ़ाइब। आज ई सुन के कि अब्बास साहब जइसन निर्देशक इहाँ के भोजपुरी गीत अपना फिल्म में लेलीं हँ, हमरा ई कहे में क़वनो हिचक नइखे कि भोजपुरी में ओह लोग के अपना ओर खींचे के ताकत बा जे लोग ना भोजपुरी में लिखल आ ना जनमे से भोजपुरी क्षेत्र के बा। अगर उमाजी जइसन लोग भोजपुरी के बोली ना मान के शास्त्रीय रूप से भोजपुरी के सँवारी त ऊ दिन दूर नइखे जब भोजपुरी के अकादमिओ बनि जाई। फेरु त बहुत देर ले उहाँ के गीत रस में डूबत रहलीं आ अब्बास साहब के फिल्म के एगो गीत के ऊ पंक्ति के बार-बार सुनलीं जे में मेहरारू अकाल के अइलो पर नइहर ना जाये के पुष्टि खातिर कहतिया--

तू मोर गुइयाँ मो तोर रनियाँ
जाने धरम पुरान हो बालम
जाने धरम पुरान,
छोड़ जे नइहरवा हम जइबो
नरको नाहि ठेकान हो बालम
भटकत रही परान।

फेर उहाँ से हमार आखिरी भेंट अबकी अमनउर में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में भइल।

आज "भोजपुरी साहित्य सम्मेलन" चाहे "भोजपुरी अकादमी" दूनों के बढ़ावे में जे लोग के जाँगर लागल रहेला ओमें पाण्डेयजी के जोगदान के भुलावल ना जा सके। "भोजपुरी अकादमी" त उहवें के निर्माण ह। उहाँ के निधन से भोजपुरी भाषा आपन एगो दृढ़ समर्थक खो देलस।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजनारायण कॉलेज, हाजीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यक्तित्व के धनी स्वर्गीय पाण्डेयजी

डॉ० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी

□ □

संसार में कुछ लोग अइसन होले कि गँवे से आवेले आ आपन काम पूरा कइके झटके से विदा हो जाले। बाकिर "कृतिर्यस्य स जीवति" जे संसार में कुछ कइ जाला, काल का पट्ट पर कुछ लिख जाला, कुछ चिह्न छोड़ जाला, अपना के पहिचान लेला आ अहंकार से बहुत दूर रहेला, ऊहे संसार में मुइओ के जीअत रहेला। ओकर नाँव जुग-जुग ले लीहल जाला। स्वर्गीय केदार पाण्डेय एही माला के एगो मनियाँ रहले ह।

सवेरे सूरुज के किरन से चमकत बरफ निअर दग-दग गोर देह, करिया-करिया भवँरानुमा केस से सुशोभित कुआर के पूर्णिमा का चनरमा निअर मुखमण्डल, आम का फाँक निअर आँख, करिअई जामुनी रंग के धनुही निअर भौंह, गोल-गाल सुघर मुख-मण्डल, संगमरमर का चौकी पर मोती निअर जड़ल दाँत के पाँति, ना बहुत बड़ आ ना बहुत छोट कद में पाण्डेय केदारजी के हँसमुख चेहरा देख के सभे प्रसन्न हो जात रहल ह।

कार्ल्स एम० श्वेव के कहनाम ह कि मानव खातिर व्यक्तित्व फूल का सुगन्ध के समान ह। ई बात स्वर्गीय पाण्डेयजी पर लागू होत रहल ह। उनुका निरछल व्यक्तित्व का सोझा सतुरो झुक जात रहल ह। वास्तव में पाण्डेयजी महान सहनशील आ धैर्यवान व्यक्ति रहले ह। उनका अपना काम पर भरोसा रहत रहल ह। झूठ वादा ऊ ना करत रहले ह। जेतना हो सके लायक रहत रहल ह ओतने कहिहें। ऊ अपना व्यक्तित्व का रइछा खातिर कष्टो सहत रहलन ह। बाकिर ओकर रइछा हर मूल्य पर करत रहले ह।

प्रसिद्ध विचारक बुल्वर कहले बाड़न कि वास्तव में उहे जीवन स्वतंत्र ह जवन अपना पर शासन करेला आ कष्ट सहेला। पाण्डेयजी एकर उदाहरन रहले ह। ऊ दोसरा का काम खातिर कष्टो सहिहें आ अपना पर शासन रखिहें कि केहू हमरा से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाराज ना होखे, केहू का कवनो प्रकार के हमरा से दुख भा कलेस ना होखे। प्रायः लोग अइसना व्यक्ति के भीरु (डरपोक) समझेला बाकिर पाण्डेयजी में ई बात ना रहल ह। उनुका स्वभाव से मुग्ध होके विपक्षिओ उनकर आदर करत रहल ह। एह उठापटक का जुग में ऊ विहार में एगो अकेला व्यक्तित्व वाला व्यक्ति रहले ह। अपना मन्त्रित्व काल में उनकर छवि अउरी निखर गइल। ऊ विहार के शासन एह प्रकार सम्हरले कि केहू अँगुरी ना उठावल। महाकवि कालिदास जी कहले वानीं "पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते।" गुण सभ स्थानन पर आपन पदस्थान वना लेला, आदर करा लेला। त पाण्डेयजी एही अपना मधुर-मुसुकान, सरल स्वभाव आ निरछल व्यवहार से सभका हृदय में स्थान वना लेले रहलन।

पाण्डेयजी के सवसे वड़हन खूबी रहे उनुकर कार्य-कुशलता। कवनो काम मिलि जाउ पाण्डेयजी ओके बहुते कुशलता से पूरा करत रहलन ह। कुशल-पुरुष के वानी उलुटा वोलेवालन वक्तनो के चुप करा देले आ अपना पक्ष के मन्द बुद्धिवालन के चतुर वक्ता वना देले। इहे गुन पाण्डेयजी में रहल ह। विज्ञान के कुशल विद्यार्थी आ काशी के हवा-पानी के सुवास से सुगन्धित वुद्धि से पाण्डेयजी एगो सूझ-वूझ वाला कुशल वक्ता रहले ह। ऊ राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति, भाषानीति सभ पर समान अधिकार राखत रहले ह।

पाण्डेयजी भोजपुरी क्षेत्र के गौरव रहले ह। भोजपुरी भाषा के सवसे पहिले सरकारी संरक्षणे ना, ओकर विहार में अकादमी वनावे के काम पाण्डेयजी कइलीं आ अबहीं अमनौर का पिछलका अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का सभा में उहाँका इहो विश्वास दिहलीं कि हम उत्तर प्रदेश में एकर अकादमी वनवा देइबि। एतने ना ऊ भोजपुरी खातिर सभे कुछ करे के तैयार रहले ह। वाकी एकर ई अर्थ ना ह कि ऊ हिन्दी अथवा अन्य भषन के विरोधी रहले ह। ऊ त सभा में कहत रहले ह कि हिन्दी हमार राष्ट्रभाषा ह। भोजपुरी ओकर भण्डार भरे आ वढ़ावे वाली ह आ उर्दू त हिन्दी के एगो विधा ह, उर्दू से कवनो विरोध नइखे। वाकी सभकर सभे सपना कवो पूरा होला? पाण्डेयजी के ई लालसा उहाँ का सँगहीं चलि गइल।

पाण्डेयजी के स्वभाव सरल आ निरछल रहल ह। सभा सोसाइटी में अइहें त सभका वीच में वइठि के गँवई निअर वात करिहें। खूब दिल खोलि के हँसि-हँसि के वति-अइहें। सभकर वात सुनि के ओकरा के आश्वासन दीहें आ लागी कि ई हमार आपन हउवन। प्रसिद्ध कवि गेटे के कहनाम ह कि मनुष्य के व्यवहार ऊ दर्पन ह जवना में आपन चिन्ह लउकेला। पाण्डेयजी के व्यवहार अइसन सरल, साफ रहल ह कि उनुका सभमें आपन चित्र लउकत रहल ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतिथि सत्कार हमरा देस के वहुत प्राचीन "धर्म" ह। "अतिथिदेवो भव" अतिथि देवता के समान ह । पाण्डेयजी के अतिथि सेवा उहे जानत रहल ह जे उनुका समीप में रहल ह। एगो मुसलमान भाई हमरा के वतवले कि जव हम दिल्ली जाइबि आ पाण्डेयजी के फोन करब, त ओने से इहे आदेस होई कि "खाना" हमरा साथे, हमरा घर पर खाये के बा। ओहीजा वात होई । फेरु त घर भर के लोगन के वीच हम ई कबो महसूस ना कइलीं कि हम मुसलमान हउवीं आ पाण्डेयजी हिन्दू हउवन । एक दस्तरखान पर हमनी का बइठि के खाइब जा। अइसन व्यक्ति आजु हमरा बीच से उठि गइल ।

पाण्डेयजी मानव-धर्म के पोषक रहले ह। ऊ जाति-पाँति का क्षुद्र बन्धन से बहुत ऊपर उठल रहले ह। साँच कहल जाउ त ऊ सच्चा अर्थ में "मानव" रहले ह आ "मानव धर्म" के पालन करत एह पृथ्वी से प्रस्थान कइ गइले ह। प्रत्येक सहृदय व्यक्ति पाण्डेयजी के सुहृद रहल ह। आजु हमरा बीच नइखन बाकिर उनुका निधन से सबसे अधिका दुखी भोजपुरी माई बाड़ी जेकरा खातिर ऊ व्याकुल रहत रहलन ह। डॉ० विवेकी राय अपना शोक श्रद्धांजलि में कहले कि पाण्डेयजी का निधन से भोजपुरी-आन्दोलन उत्तर प्रदेस में कई बरिस पीछे हटि गइल । स्वर्गीय पाण्डेयजी अइसन व्यक्तित्व रहले ह कि ओह व्यक्तित्व के सभे आपन समझत रहल ह। ओ में कुशल प्रशासक के योग्यता रहल ह। गाँधीजी का आदर्श पर चले चलावे के क्षमता रहल ह। राजनीति में रहिओ के साहित्य के स्वाद लेवे के अपूर्व लालसा रहल ह। पाण्डेयजी गँवई गाँव के गुलाब के सुगन्ध रहले ह। भोजपुरी माटी के कुल्हि विसेसता उनुका में मिलत रहल ह। उनुका से अभी देश के बहुत आशा रहल ह, विसेसकर उत्तर भारत आ भोजपुरी क्षेत्र के जे उनुका के आपन अंग मानत रहल ह। शरीर के कवनो एगो अंग ना रहला पर जइसे ओकर सम्पूर्णता में कमी कहाला ओही तरे आज पाण्डेयजी का अभाव से भोजपुरी क्षेत्र में कमी आ गइल वा जेकर पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नइखे लउकत ।

अइसन महापुरुष के हम भोजपुरी क्षेत्र के जनता का ओर से कोटिशः श्रद्धांजलि अर्पित करत बानीं।

नरहीं, बलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उहाँके ठाँव-कुठाँव कुछुओ ना देखलीं

डॉ० शंकर प्रसाद

□ □

कतना मुश्किल होला कवनो अइसन महान आत्मा के बारे में लिखल जेकर पूरा जिनगी दोसरे खातिर समर्पित रहल। अइसे त ई परिवर्त्तनशील संसार में केकरा नइखे जाये के, बाकिर केहू के गइल अइसन बुझाला कि अपने जान निकल गइल होखे। स्वर्गीय केदार पाण्डेयजी के पार्थिव शरीर त अब हमनी के बीच नइखे बाकिर उनकर जस के शरीर हमनी से अलग कहाँ भइल बा। अतना सरल, अतना मीठ, अतना मृदुभाषी अतना निष्कलुष आदमी सँउसे संसार में कमे देखे के मिली। उहाँके पावन गंगा रहीं। 'ना' त कबो जबान पर आवते ना रहे। अइसे त कतना स्मृति उहाँ से मिलला के हमरा भिरी सुरक्षित बा, बाकिर कुछ के जिक्र कइला से मन मानत नइखे। भोजपुरी अकादमी के गठन के शुरुआत के समय हमनी के बराबर उहाँ के साथ रहलीं जा। हमरा याद बा कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दोसरका अधिवेशन पटने में भइल रहे। हम सांस्कृतिक कार्यक्रम के संचालक रहीं। मंच पर स्वर्गीय पं० हजारी प्रसाद द्विवेदीजी भी रहीं। पाण्डेयजी हमनी के अपना घर पर आमंत्रित कइले रहीं। ओहीजे हमार उहाँ के गाना सुनलीं। तारीफ त अइसे सभे कोई करेला, आ कइल बाकिर पाण्डेयजी के स्नेह आ आशीष के हम आजो अपना पीठ पर सहलावत महसूस करीला। उहाँ के नरम आ मीठ आवाज में कहलीं—ए भाई, अइसे त गावेला सब कोई बाकिर झमकावेला केहू-केहू। शंकर जी के गीत के असर हमरा मन पर अइसनके भइल हा। ईश्वर इहाँ के दीर्घायु करस। जब उहाँके जनलीं कि हम मारिशस तक में भोजपुरी आ भारत के झंडा गाड़ आइल बानीं त खुशी में उहाँके हमरा के अपना छाती से लगा लिहलीं।

एगो दोसर स्मृति के धरोहर रउआ सभे के सामने रख रहल बानीं। हमार भगिना के तिलक में उहाँके पटना आइल रहीं। ओ घरी उहाँ के रेल मंत्री रहलीं। आपन धर्मपत्नीजी के साथ उहाँ के पधरलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"केनी बानीं बुद्धदेव बाबू ?"

ई स्वर हवा में तैर गइल। हमनी के सब कोई उहाँ के ओर लपकलीं जा। उहाँ के शीतल मुस्कान में कहलीं— "ए भाई, रेल मंत्री आ गइलीं एकर ई मतलब नइखे कि रउआ सभे जइसन गाड़ी अइला पर प्लेटफार्म पर शोर मचाईला ओइसे सोर मचाईं। हम कवनो तामझाम के साथ आइल नइखीं। भूख लागल बा, पहिले खिआईं तब बातचीत होई।"

हमनी के त सकता में आ गइलीं जा जब उहाँके भुइँएँ पलहथी मारि के खाए पंघत में बइठ गइलीं। चारो तरफ पांडेयजी के जय-जयकार मन ही में गूँजे लागल।उहाँ के जतना स्वाद आ प्रेम से हमनीं के इहाँ खइलीं ओकरा के मन आजो भुला ना सकल।

एह बीसवीं शताब्दी में अइसन आदमी के लोग मूर्ख कहेला। कहेला कि ई व्यवहार कुशल ना ह। भले पांडेयजी अपना अच्छाई में दुनिया के मन में दोसरा रूप में बसल होखीं बाकिर केहू सहृदय उहाँ के भुला ना सकी।

एगो अउर मिलन के छोट चित्र। स्थान ह अमनौर। भाई प्रभुनाथ सिंहजी अपना इहाँ लमहर तैयारी के साथ भोजपुरी के अधिवेशन मनवलीं। डॉ० नामवर सिंह, डॉ० केदार नाथ सिंह जइसन विद्वानो लोग आमंत्रित रहे। खुला अधिवेशन में पांडेयजी दल-बल सहित मोतिहारी से अमनौर पहुँचलीं। अइसन बुझाइल कि हमनी के मानेवाला धूल-धाकड़, आन्ही-पानी में कहाँ से आ गइले। अमनौर जे मोतिहारी से पहुँचेला ऊ जानेला कि रहता कतना मुश्किल आ धूल से भरल बा। पाण्डेयजी के चेहरा प मुस्कान रहे भले उहाँ के धूल से भरल होखीं। कहीं उतावलापन ना दिखाता ना कहीं ई भान होता कि उहाँ के के हईं। आइके मंच पर जे डटलीं त डटले रहि गइलीं। लगभग एक घंटा ले उहाँ के जोरदार भाषण भइल। बाकिर हमरा बुझाए कि कड़ी उहाँ के हाथ लागत छूट जा रहल बा। कुछ खोअल-खोअल लगलीं। पहिलका बार एगो व्यवस्थित आदमी अव्यस्थित लागल। हमरा तनी अजीब लागल। जब उहाँ के मंच पर बोलि के बइठलीं त हम पास जा के पुछलीं, तबियत ठीक बा ? बाबूजी कुछ कमजोर लागत बानीं ?

"अरे ना हो, सेंट्रल के मंत्री भइल कवनो ठठ्ठा काम ह। का कहल जाव, आदमिए खातिर जीए आ मुए के बा।"

ई हमार अंतिम मुलाकात रहे। हम का जानत रहलीं कि सब केहू के छाती में साँस फूँकेवाला अतना जल्दी हमनी से बिदा ली।

उहाँ के अच्छाई के कीमत दुनिया उहाँके जीअत त ना देलस बाकिर उहाँ के ना रहला प ई आभास जरूर भइल कि अपने सरीर के कवनो अंग अपना से जुदा हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइल। पाण्डेयजी के जबान प "ना" शब्द रहवे ना कइल। उहाँके दुश्मनो के आशीष दिहलीं ; जे बुराई कइल ओकरो के गले लगवलीं। अइसे त हर आदमी कवनो ना कवनो दुख के भुला ही देला बाकिर पाण्डेयजी के ना रहला से हमनीं के टूअर भ गइलीं जा। उहाँ के कवो ठाँव-कुठाँव ना देखलीं। अपना दामन में फूले सजवले रहलीं ; दुनिया उहाँ के राह में काँटे बोअत रहि गइल। ललित बाबू के बाद उहाँ के कमी बिहार के लोग का, भारत के लोग, ना भुला सकी। हमनी के अँजुरी में जतना प्रार्थना के शब्द बा सब उहाँ के समर्पित निवेदित बा। काश, अइसन आदमी कवहुँओ हमनी के बीच से ना उठित।

भूतपूर्व कार्यक्रम अधिशासी
आकाशवाणी, पटना
सम्प्रति : प्राध्यापक
पटना विश्वविद्यालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी प्रेमी केदार पाण्डेय

विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव

□ □

स्व० केदार पाण्डेय के जनम भूँइ पछिमी चम्पारन के तौलाहा गाँव। भोजपुरिया गाँव का खाँटी वातावरण में जनमल, पोसाइल, पढ़ल-लिखल। बचपन से भोज-पुरिया संस्कार में रसल-बसल अइसन कि ऐन १९३० का दशक में जी० बी० बी० कालेज (आज का लंगट सिंह कालेज) आ बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय में शिक्षा पवला का बावजूद अंग्रेजियत के छाप उहाँका जिनिगी पर ना पड़ल। विज्ञान के स्नातक होके कानून के पढ़ाई कइलीं। चम्पारन का वृन्दावन नाम का स्थान पर गाँधी जी के यात्रा के असर आ चम्पारन के मूर्द्धन्य नेता प्रजापति मिश्र आ वैद्यनाथ मिश्र का त्याग-तपस्या से भरल जीवन के आदर्श के छाप नौजवान केदार पाण्डेय पर अइसन पड़ल कि मोतिहारी कोर्ट से पटना का हाई कोर्ट तक वकालत के पेशा में शामिल भइलो पर मन देश सेवा में अइसन रमल रहल कि ओह जमाना का आमदनी आ प्रतिष्ठा वाला वकालत के पेशा छोड़ि के सक्रिय राजनीति में अपना के सउँप देलीं। मन से समाजवादी पाण्डेयजी श्रमिक समस्या का समाधान के अगुआई कइलीं। हरिनगर, सुगौली चीनी मिल मजदूर संघ के अध्यक्ष पद पर रहि के मजदूरन के हालत सुधारे वास्ते बड़ा काम कइलीं।

पाण्डेयजी का राजनीतिक जीवन के विस्तार से चर्चा दोसरा जगह मिली। इहाँ उनका भोजपुरी प्रेम के कुछ उदाहरन देखल जाय। जन प्रतिनिधि का रूप में पाण्डेयजी जहाँ भी रहलीं बड़ा लोकप्रियता पवलीं। भोजपुरी से उनका नेह एतना रहे कि का जन सभा होए का व्यक्तिगत भेंट मुलाकात, भोजपुरी क्षेत्र का लोगन का बीच हमेशा भोजपुरिए में भाषण आ बातचीत। मुहावरादार भोजपुरी, ठेठ शब्दन से भरल भोजपुरी, गाँव-गँवई का लहजा के भोजपुरी, लच्छेदार धारा-प्रवाह उनका मुँह से निकले। सभा में राज्य आ केन्द्र के मंत्री लोग होखे, चाहे प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ पदाधिकारी लोग, मगर सभा जो भोजपुरी क्षेत्र में होत बा त पाण्डेयजी के भाषण भोजपुरिए में होई। गाँव घर का रोजमर्रा का भाषा में क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय समस्या पर बोलि के पाण्डेयजी जन-जन का मन में बसि गइली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दोसरा अधिवेशन के पटना में सफलता पूर्वक करावे के श्रेय पाण्डेयजी का बा। क्षेत्रीय भाषा के हिमायती पाण्डेयजी जब बिहार के मुख्य मंत्री भइलीं बिहार में मैथिली अकादमी के स्थापना करवलीं काहे कि ओकरा वास्ते मैथिली भाषी लोग रचनात्मक काम कर चुकल रहे। उहाँका भोजपुरी अकादमी के प्राण-प्रतिष्ठापक बनलीं। हाले में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सातवाँ अधिवेशन अमनौर (सारन जिला) में भइल। पाण्डेयजी उद्घाटन का दिन अइलीं। उत्तर प्रदेश में भोजपुरी का विकास का विषय पर कहलीं जे बनारस तक उत्तर प्रदेश भोजपुरी भाषी बा। बाकिर उहाँ भोजपुरी अकादमी नइखे। उत्तर प्रदेश का भोजपुरी प्रेमी लोग के इशारा करत कहलीं, "महाराज! रउआ लोगन कुछ करत काहे नइखीं। जब ले कुछ करब ना, माँगब ना, आन्दोलन ना करब तब ले ई सब काम थोड़े होई। रउरा काम करीं, माँग करीं, इहाँ संगठन बनाईं, तब नू हमनी उहाँ जोर लगाइब।"

उहाँका हिन्दी आ भोजपुरी का परस्पर विरोध के भ्रामक दुष्प्रचार के हमेशा काटत रहलीं बिल्कुल दू-टुकी तर्क दे के कि खाली भोजपुरिए ना, हिन्दी प्रदेश का सब क्षेत्रीय बोलिअन के जतने विकास होई हिन्दी ओतने मजबूत होई। पाण्डेयजी भोजपुरी का विकास के वास्ते सृजनात्मक साहित्य का साथ शोध-परक साहित्य-निर्माण के हिमायती रहीं आ हर मंच से एह बात के जोर दे के कहत रहलीं। उहाँ का वेतन भोगी साहित्यकार का अपेक्षा भोजपुरी वास्ते समर्पित साधक साहित्यकार के ज्यादा महत्त्व देत रहीं।

भोजपुरी का विकास वास्ते सरकारी समर्थन आ सहयोग खातिर प्रयत्न करे के वास्ते जेतना साफ पुरजोर शब्दन में पाण्डेयजी कहत रहलीं ओतना भोजपुरी साहित्य का विकास में लागल साहित्यकारो लोग ना कहत रहल। पाण्डेयजी का उठि गइला से भोजपुरी के एगो बेजोड़ पाया बइठि गइल। बिना कवनो राजनीतिक स्वार्थ से प्रेरित भोजपुरी के ऊपर उठावे खातिर आतुर एगो साधक लोप हो गइल। मगर भोजपुरी क्षेत्र के लोग भोजपुरी का संबंध में स्व० केदार पाण्डेयजी का आशा-आकांक्षा के साकार रूप देवे में पाछा ना रही।

भोजपुरी क्षेत्र के लोग आ भोजपुरी का विकास में लागल लोग, पाण्डेयजी के भोजपुरी प्रेम कबहीं ना बिसराई। उनकर सपना ओह लोग के मार्ग-दर्शक बनी। भोजपुरी भाषा का प्रेमी आ साधक लोग का नजर में पाण्डेयजी के भोजपुरी प्रेम उनका राजनीतिक उपलब्धि से बड़ सिद्ध भइल।

●

(सुगौली, पूर्वी चम्पारण)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरिआ कबो ना मरे

गणेशदत्त किरण

□ □

वहुत लोग अपना नाँव से ना, अपना पिता आ अपना कुल का कवनो महान पुरुष का नाँव से जानल जाला। बाकिर वहुत लोग अइसनो प्रतिभा पौरुष लेके धरती पर आवेला, जे आपना जस से अपने ना, अपना कुलो के उजागर करेला। जे अपना पिता भा अपना कुल का कवनो महान पुरुष का नाँव से जानल जाला से पितृनामधन्य आ जे अपना नाँव आ पौरुष से जानल जाला से स्वनामधन्य कहल जाला। आदरणीय स्व० श्री केदार पाण्डेयजी स्वनामधन्य व्यक्तित्व के स्वामी रहलीं।

आजु जे अपना के उनुकर निअराहुत मानि रहल वा से सभ अनाथ हो गइल वा। काल केहू का साथ इयारी ना करे। अवहीं काल्हुए के बात ह। इतिहास में उनुका नाँव से एगो अलगे अध्याय जोड़ल गइल आ आजुए ओह इतिहास के सोनहुला पन्ना काल फारि के भागि गइल ....। कुछ पन्नन में दीमक लागि गइल । ना, अइसन ना हो सके। धरती के ई सपूत, भोजपुरी भाषा के अग्रदूत, भारतमाता के नयन तारा, भोजपुरिअन के दुलारा, दलितन के तारक, पतितन के उद्धारक श्री केदारपाण्डेयजी अमर हो गइल बाड़न।

एक बेर भूतभावन भगवान शंकर माता पार्वती के अकेला में एगो अमर कथा सुनवले रहलन। एह अमर कथा के सुनत-सुनत माता पार्वती का उँघाई आ गइल रहे। जवना गाँछ का नीचे भगवान शंकर अमर कथा सुनावत रहलन, ओही गाँछ का एगो कोटर में वइठल सुग्गा दम्पति—बोध आ मैत्री-ओह अमर कथा के सुनि के हुँकारी भरत रहे। हुँकारी सुनि के भगवान शंकर समुझि ना सकलन कि माता पार्वती का नींद आ गइल बा। पूरा अमर कथा सुनि लिहला का बादे उनुका पता चलल कि कथा त प्रबोध आ मैत्री नाँव के दुगो सुग्गा—सुग्गी सुनि के अमर हो गइलन स आ पार्वती एह सुख से बंचित रहि गइली। भगवान शंकर के क्रोध जागल। सुग्गा-सुग्गी के भस्म करे खांतिर आपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिसरका नेत्र खोलि दिहलन। बाकिर प्रबोध आ मैत्री दूनो त अमर कथा का प्रभाव से अमर हो चुकल रहलन स। भगवान शंकर के जवन तिसरका नेत्र कामदेव के जराके अनंग बना देले रहे, उहे प्रबोध आ मैत्री के कुछ विगारि ना सकल। ओही प्रबोध आ मैत्री के संतान भोजपुरिआ होला। भोजपुरिआ अमर कथा सुनले बा। एकरा हियरा में प्रबोध आ मैत्री भाव भरल बा। ई मरि ना सके .... कबो मरि ना सके

रेडियो से जब पाण्डेयजी का स्वर्गवासी हो गइला के खबर प्रसारित कइल गइल त अचके ओह खबर पर विश्वास ना भइल रहे। एक हप्ता पहिलहीं से उनुका बेमारी के समाचार अखबारन का माध्यम से मालुम होत रहत रहे। एह से मन सनाका खा गइल। इहे बुझाइल कि ओह समाचार से पूरा भोजपुरी परिवार का लकवा मारि गइल होखे। आँखिन का आगा अन्हार हो गइल। हाय, अब हमनी भोजपुरिअन के का होई ? के अइसन दाही बा, के अइसन दरहखाह बा, जे आपाधापी का जुग में भोजपुरी के अलख जगवले रही ? ना, पाण्डेयजी मरल नइखन ! मरिओ के अमर बाड़न। दस करोड़ भोज-पुरिअन के हृदय- सम्राट कबो मरि ना सके। विद्वान के कबो मृत्यु ना होखे। इतिहास पुरुष कबो ना मरे,कबो ना मरे।

पाण्डेयजी कतना मिलनसार, साहसी, भोजपुरी के नेही-छोही आ विद्वान रहलीं एकरा के कलम का नोक से चित्रित ना कइल जा सके। उदाहरन का रूप में हम अपना साथ में घटल घटना प्रस्तुत कइल चाहतानी। सन् १९७३ ई० के बात ह। हमरा गाँव पर कुछ असामाजिक तत्व भोरे-भोरे शौच जात खा हमरा पर अन्हाधुन्ह गोली चलवले रहलन स। एकर परिणाम ई भइल कि हम सख्त रूप से घवाहिल हो गइल रहलीं। आठ गो गोली हमरा दहिना जंघा के छेदि के पार करि गइल रहली स। बाँचे के कवनो आस ना रहि गइल रहे। हम अचेतावस्था में एगो कार से पटना मेडिकल कालेज का इमरजेंसी वार्ड में भरती करावल गइलीं। का जाने पाण्डेयजी का कइसे हमरा घवाहिल भइला के खबर मिलि गइल। ओह समय में उहाँका बिहार के स्वास्थ्य मंत्री के गरिमा-मय पद पर आसीन रहलीं। इमरजेंसी वार्ड में जब हमरा होस आइल रहे त हम देखले रहलीं कि उहाँका आ पं० सूरजनाथ चौबेजी गोड़तारी खड़ा होके रोअत रहलीं जा।

पाण्डेयजी अस्पताल का इंचार्ज डाक्टर आर० बी० पी० सिन्हा के हमरा सामने निर्देश देले रहलीं—डा० साहेब, अगर किरणजी का कुछ हो गइल त अतने बूझल जाय कि भोजपुरी के जवन क्षति होई, ओह क्षति के पूरा ना कइल जा सके। "आज पाण्डेयजी ई कहि के सरगे गइलीं आ किरणजी नरक भोगि रहल बाड़न। पाण्डेयजी का चलि गइला से भोजपुरी के जवन क्षति भइल, ऊ क्षति किरणजी का, किरणजी के सात पीढ़ी भी पूरा ना करि सके। बाकिर पाण्डेयजी का एह कहला के डा० आर० बी० पी० सिन्हा पर अइसन प्रभाव परल रहे कि हमार इलाज बहुत तत्परता आ सावधानी का साथ भइल आ हम चंगा हो गइल रहलीं। हमरा पूरा इयाद बा, पाण्डेजी अपना पी० ए० श्री राम अवधेशजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिवारी के हमरा परिस्थिति के जाँच करत रहे खातिर अस्पताले में बइठा देले रहलीं। श्री राम अवधेश तिवारीजी एकइस दिन तक हमरा सेवा में लागल रहि गइल रहलीं।

आजु हम सोचीला कि पाण्डेयजी कतना महान रहलीं। कहाँ विहार का स्वास्थ्यमंत्री के गरिमा-मंडित पद, व्यस्त जीवन आ कहाँ हमरा लेखा एगो सतही कवि ? हम बौना आ पाण्डेयजी उत्तुंगकाय गौरव-गिरि। कइसे हमरा पर उहाँ के अतना नेह हो गइल। हम अपना जीवन में उहाँ के नेह पाके निहाल हो गइल रहलीं।

हमरा पर पाण्डेयजी के विशेष नेह रहे। एह बात के अतने से समुझल जा सकेला कि एक दिन अस्पताल में हमरा अइसन अनुभव भइल कि काल के क्रूर पंजा हमरा ओर धीरे-धीरे बढ़त आ रहल बा आ घरी-दू-घरी में हमार नरेटी चाँपि दी। दस दिन तक घाव से रकत बहल बन्द ना भइल रहे। जीभि के सवाद बदलि गइल आ कंठ सूखे लागल रहे। सिरहाना बइठि के पंखा झलत अपना पत्नी से हम कहले रहलीं कि अब घरी-दू घरी के एह संसार में मेहमान बानीं। गोड़तारी एगो टेबुल पर बइठल श्री राम अवधेश तिवारीजी जब ई बात सुनलीं त शोकाकुल हो गइल रहलीं। छने भर में विद्युत्गति से ई सभ हाल सचिवालय पहुँचि गइल रहे आ आनन-फानन एके कार से पाण्डेयजी आ पं० सूरजनाथ चौबेजी अस्पताल आ गइल रहलीं।

पाण्डेयजी का अस्पताल पहुँचे का पहिलहीं डाक्टरन के एगो दल हमरा उपचार में जुटि गइल रहे। डा० आर० बी० पी० सिन्हा कहलन कि अगर रोगी के तत्काल पाँच सौ सी० सी० खून ना चढ़ावल जाई त बचावल कठिन हो जाई। एह काम खातिर "ए" ग्रुप का रक्त के जरूरत रहे। श्री रामअवधेश तिवारी खुद धावल ब्लडबैंक गइलीं आ रक्त ले अइलीं। एह तरह से हमार प्राण बाँचि गइल रहे। आजु हम सोचीला, हमार जनम भलहीं पिता दे दिहलन, बाकिर हमार धर्मी पिता त रहलन स्वनामधन्य श्री केदार पाण्डेयजी आ उनुका चरन में हमार मस्तक सरधा से झुकि जाला।

हमरा त अतना तक बुझाला कि स्व० पाण्डेयजी के प्रयास ना भइल रहित त बिहार में भोजपुरी अकादमी के स्थापना भइले ना रहित। अगर कपट छोड़ि के साच बात बोलल जाय त अतना स्वीकार करे के परी कि पाण्डेयजी का भोजपुरी से अतना प्रेम रहे जवना के लेखनी से चित्रित ना कइल जा सके। जवना समय में अकादमी के स्थापना गैर-सरकारी तौर पर भइल रहे, ओह घरी अकादमी का निदेशक पद पर रहे खातिर कवनो विद्वान के तलास शुरू भइल रहे। भाषा के सेवा एगो कठिन तपस्या ह, जवना के कवनो-कवनो साधक पहचानेला। एह साधना के पं० हवलदार त्रिपाठी "सहृदय" जी पहचनले रहलीं आ सेवा भावसे एह गरिमामय पद के स्वीकार कइलीं। साच कहल जाय त अकादमी के स्थापना शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, श्री भैरवनाथ पाण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री हवलदार त्रिपाठी "सहृदय" आ स्व० केदार पाण्डेय का सम्मिलित प्रयास के प्रतिफल ह। जइसे महाभारत का युद्ध काल में अर्जुन का महत्ता का साथ साथ श्री कृष्ण का गरिमा के स्वीकार कइल गइल, ओइसहीं अतना त स्वीकार करहीं के परी कि श्री हवलदार त्रिपाठी "सहृदय" जी एह धर्मयुद्ध में अर्जुन के पराक्रम देखवलीं त स्व० श्री केदार पाण्डेयजी श्री कृष्ण के भूमिका निवहावत रहलीं।

अतने ना, भोजपुरी अकादमी के सरकारी मान्यता प्रदान करावे में श्री पाण्डेयजी जवन योगदान कइलीं, ओकरा के भुलावल ना जा सके। सरकारी मान्यता मिलि गइला का बाद जब प्रकाशन कार्य शुरू भइल आ भोजपुरी के गौरव ग्रंथ का रूप में जब प्रो० (बाद में डा०) सर्वदेव तिवारी "राकेश" लिखित भोजपुरी महाकाव्य "काल-जयी कुँवर सिंह" के प्रकाशन भइल त स्व० श्री केदार पाण्डेयजी एह प्रकाशन पर बधाई देत अपना थइली के मुँह खोलि देले रहलीं। कहे के मतलब जे एक हजार एक रुपया का मानदेय राशि से एह प्रकाशन संस्था आ ओतने से डा० राकेश के पुरस्कृत कइले रहलीं। भोजपुरी भाषा का प्रति उहाँ के अगाध नेह देखि के हम त अभिभो में परि जात रहीं। एह सभ गुणन का चलते कहे के परता कि भोजपुरिआ अमर कथा सुनले बा। एकरा में प्रवोध आ मैत्री भाव भरल बा। ई मरि ना सके, काहे कि प्रवोध आ मैत्री के संतान अमर होला।

ये मैंने माना हमारा नेता फना है, लेकिन फना नहीं है।
बताने वाले ने यह बताया मरा है, लेकिन मरा नहीं है॥
सजा के अरथी पे लोग जिस दम मसान घर से ले जा रहे थे
तो मैंने देखा केदार पाण्डेय भी उसमें कंधा लगा रहे थे।
हजारो आलम की भीड़ थी आरती सभी जब घुमा रहे थे।
तो मैंने देखा केदार पाण्डेय खड़ा हो के मुसकुरा रहे थे।
हजारों दिल से हमारा नेता टला है, लेकिन टला नहीं है।
बतानेवाले ने यह बताया मरा है, लेकिन मरा नहीं है।

बैरी: पो, महदह, भोजपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार विभूति केदार पाण्डेय

विक्रमादित्य मिश्र

□ □

स्व. पं० केदार पाण्डेयजी के राजनीतिक आ सामाजिक जीवन बड़ा जीवन्त आ जागरूक रहे। इहाँके एक कर्मठ, मेहनती आ तेजस्वी नेता रहीं। पढ़ाई-लिखाई से ले के अपना अन्तिम समय तक इहाँके बराबर कठिन-से-कठिन मेहनत में विश्वास करत रहीं। इहे कारण रहे कि इहाँके अपना राजनीतिक आ सामाजिक जीवन में बड़ा-से-बड़ा सम्मान मिलल। अपना राज्य विहार आ केन्द्र के राजनीति में बड़ से बड़ पद मिललो पर इहाँके बड़ा सहज भाव से अपना के जनता के सेवक मानत रहीं। इहाँ में अहंकार आ पद के मद कबहुँओ जरिको नजर ना आइल।

दिल्ली में, लोकसभा के सदस्य आ मंत्री बने के पहिले केदार पाण्डेयजी बिहार के राजनीति में एक बहुत बड़ा नेता रहीं। बिहार के राजनीति में काफी दिन तक रह गइला के बाद जब इहांके दिल्ली चलि गइलीं तबो बिहार के राजनीति से इहां के संबंध बनल रहि गइल, खतम ना भइल। अपना राज्य बिहार में इहाँ के उपमंत्री से मुख्य मंत्री तक के पद मिलल रहे आ इहांके बड़ा सफलता के साथ एह सभ पदन के सम्हरलीं।

सन् १९७२ ई० के १९ मार्च के बिहार के मुख्यमंत्री बनला के बाद इहांके पटना में, पटना के नागरिक लोग के दीहल गइल अभिनन्दन समारोह में कहलीं, "हम अपना के जनता के एक मामूली सेवक मानींले। अपनहू सभे हमरा के जनता के एक सेवके मानल जाईं।" ओह अवसर पर अपना अभिनन्दन के उत्तर देत समय इहांके कहले रहलीं कि बिहार तथा पूरा देश के जनजीवन के अच्छी तरह विकास के वास्ते सबसे पहिला काम ई बा कि इहाँ के शासन यंत्र में लागल जंग के साफ कइल जाउ। एही जंग के कारन कवनो राज्य के आ पूरा देश के विकास के गोड़ी आगे नइखे बढ़ि पावत। स्व० पाण्डेयजी ओह अवसर पर इहे कहले रहलीं कि एह देश के गरीबी के दूर करे वास्ते खेती, उद्योग धंधा आ शिक्षा के ठोस रूप प्रदान करे के पड़ी।

स्व० पाण्डेयजी खेती आ उद्योग-धंधा के क्षेत्र में जापानी पद्धति पर क्रान्ति लावे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के चाहत रहीं। शिक्षा के क्षेत्र में गिरावट के वास्ते इहाँके छात्र, शिक्षक आ अभिभावक तीनों के दोषी मानत रहीं। एही तरह से दिन-पर-दिन बढ़त महँगाई, प्रशासन में ढिलाई, अनुशासन में कमी के वास्ते भी इहाँके बड़ा चिन्तित रहत रहीं। एह सब समस्या के उचित समाधान के वास्ते पाण्डेयजी में एक ओर जहाँ अकुलाहट रहे उहें दूसरा ओर इहाँ में साच लगन, अद्‌भुत उत्साह आ पक्का इरादा रहे। प्रगति के कवनो काम में इहांके तनिको देरी करे के ना चाहत रहीं।

बिहार के मुख्यमंत्री के पद भार ग्रहण कइला के तुरन्त बाद इहाँके दिल्ली गइलीं अउर उहाँ से बारह करोड़ रुपया बाढ़ ले तबाह बरबाद लोग के सहायता के वास्ते ले अइलीं। मिथिला विश्वविद्यालय के स्थापना, राज्य के विश्वविद्यालयन के अवक्रमण, विश्वविद्यालयन के परीक्षा के पवित्रता आ नियमितता, कदाचार वगैरह के वास्ते प्रभावकारी कारवाई, प्राइमरी विद्यालयन के आकस्मिक निरीक्षण के वास्ते उड़नदस्ता के इन्तजाम, लोगन के शिकायत सुने के वास्ते लोक शिकायत सेल के स्थापना आ संचालन, प्राइवेट मेडिकल कॉलेज के स्थापना पर रोक, जमीन आ शहरी सम्पत्ति के हदबन्दी के वास्ते विधेयक पारित करावल, चकबन्दी कर के भूमिसुधार के छव बरिस में पूरा होवे वाला योजना, शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी सुधार, प्रशासन के काम में चुस्ती वगैरह पाण्डेयजी के सरकार के कुछ अइसन खूबी रहे जे बिहारे के ना भारतवर्ष के इतिहास में इहाँ के अमर बना दिहले बा। एही सभ क्रान्तिकारी कामन के वजह से पाण्डेयजी के दुश्मनो लोग इहाँ के इयाद करेला आ हमेशा इयाद करत रही।

बचपने से इहांके पढ़े-लिखे में बड़ा मन लगावत रहीं। पढ़े-लिखे में इहांके बड़ा मेहनती रहीं। एह वजह से इहांके घर के लोग इहांके पढ़ाई-लिखाई में अवकात भर मदत कइल लोग। इहाँ के बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से १९४४ ई०— में एम० एस-सी० के परीक्षा पास कइलीं। ओकरा बाद इहांके ओहिजे से कानूनो के परीक्षा पास कइलीं। पढ़ाई खतम कइला के बाद इहांके मोतिहारी कचहरी में वकालत शुरू कइलीं। कुछ दिन तक मोतिहारी में वकालत कइलाके बाद इहांके पटना हाईकोर्ट में सन् १९४८ ई० में चल अइलीं। एहिजा से इहां के राजनीतिक जीवन शुरू भइल। फेर इहांके चीनी मिल कर्मचारी महासंघ के सचिव बनि गइलीं। एकरा अलावे इहांके भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष आठ बरिस रहलीं।

सक्रिय राजनीतिक जीवन में इहांके पहिला बार १९५२ ई० में अपना विधान सभा क्षेत्र रामनगर (पश्चिमी चम्पारण) से विधान सभा के सदस्य भारी बहुमत से चुनि के भइलीं। सन् १९५७ ई० में भी अपना क्षेत्र से विधान सभा के सदस्य चुनल गइला के बाद इहांके स्व० श्री कृष्ण सिंह के मंत्रिमंडल में उपमंत्री बनावल गइलीं। एकरा बाद इहांके कई बार मंत्री बनावल गइलीं आ हर बार बहुत मिहनत आ सफलता के साथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन जिम्मेवारी निभवलीं। सन् १९७२ ई० में १२ मार्च के इहांके विहार के मुख्यमंत्री बनावल गइलीं आ तब इहांके कवन-कवन कांम कइलीं से संक्षेप में बतावल जा चुकल वा। सन् १९८० ई० के जनवरी में इहांके वेतिया (चम्पारण पश्चिम) से लोक सभा के सदस्य चुनल गइलीं। सन् १९-० में ही ८ जून के इहांके केन्द्र में सिंचाई मंत्री बनावल गइलीं।

पाण्डेयजी के दिमाग में पूरा देश आ खासकर विहार के वास्ते रेलवे के विकास से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण योजना रहे। विहार में गोपालगंज जिला में गंडक पर रेल-पुल बना के उत्तर प्रदेश के कपतानगंज से वेतिया तक रेल लाइन ले जाये के, दरभंगा में निर्मली से आगे रेल लाइन विछा के, समस्तीपुर से दरभंगा तक आ ओकरा आगे नरकटियागंज तक बड़ी लाइन ले जाये के, मुजफ्फरपुर से पछिम नरकटियागंज तक के भी छोटी लाइन के बड़ी लाइन बना देवे के, छपरा से बारावंकी तक के छोटी लाइन के बड़ी लाइन बनावे के जे काम ललित बाबू के समय में शुरू भइल रहे ओकरा के एक वर्ष में पूरा कर देवे के, देवघर आ दुमका के बड़ी लाइन से जोड़ देवे के अउर हजारी-बाग तक रेलवे लाइन दउड़ा देवे के, पटना में दीघा के पास गंगा पर रेल पुल बना देवे के, पटना से गया तक दोहरी लाइन विछा देवे के, राँची से हजारीबाग तक और गिरी-डीह के ओर आदिवासी क्षेत्र में दूगो नया रेल लाइन बनावे के वगैरह अनेक योजना स्व० पाण्डेयजी के दिमाग में रहे। जेकरा बारे में उहांके समय-समय पर कई बार सार्व-जनिक रूप से कह चुकल रहीं। उहांके इहो कहले रहलीं कि हम विहार के एगो अलगे जोन बनावे के कोशिश करब अउर कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, वगैरह के तरह पटना से भी सबर्बन रेलगाड़ी चलावे के प्रबंध करब ताकि आरा, मोकामा, गया वगैरह आसपास के इलाका से लोग रोज पटना आ के आफिस वगैरह के काम करी और साँझ के फेर अपना-अपना घरे लवट जाई।

पद के मद आ अहंकार पाण्डेयजी में एकदम ना रहे। एम० एल० ए० रहीं तब, चाहे मंत्री रहीं तब, चाहे कुछ भी ना रहीं तब, हमेशा एक भाव। व्यावहारिक जीवन में उहांके बड़ा सहज, सहृदय आ भावुक रहीं। केहू से कवनो दुराव-छिपाव ना राखत रहीं। जे ही कुछ कहे के रहत रहे से साफ-साफ कहि देत रहीं। कभी-कभी हमनी के मन में इहाँ पर बड़ा खीझ होत रहे कि इहाँके सभका से सभ बात काहें साफ-साफ कह दीले।

पाण्डेयजी केकरा के केतना मानत रहीं, ई पता लगावल मुश्किल रहे। उहांके नजर में त बस एकेगो बात रहे—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

सभ कोई सुखी रहे, सभे लोग निरोग रहे, सभकर कल्यान हो, कोई दुखी न रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेयजी अइसन अखिल भारतीय स्तर के नेता बहुत कम मिली जे खात-पीअत सूतत-बइठत, टहरत-घूमत आम जनता के बात आ दुख-दर्द आत्मीयता के साथ सुनी, समुझी आ ओकरा के दूर करे के कोरसिस करी।

एने कुछ दिन से पाण्डेयजी के बात-बेवहार से अनजाने अइसन बुझात रहल ह कि उहांके अब शायद एह दुनिया में ढेर दिन नइखे रहे के। उहांके रेलमन्त्री बनला के बाद १५ अप्रैल १९८१ ई० के हम दिल्ली गइल रहलीं। ठहरल पाण्डेयेजी के इहाँ रहीं। ओह समय पाण्डेयजी बड़ा व्यस्त रहीं। कारन ई कि इगलैंड के प्रधान मंत्री मारग्रेट थैचर दिल्ली आइल रहली। ओह दिन त पाण्डेयजी से सिर्फ देखा-देखी आ प्रनामे-पाती भइल, पूरा बातचीत ना हो सकल। सोरह अप्रील के मारग्रेट थैचर संसद के दुनू सदनन के संयुक्त रूप से सम्बोधित कइली। एह से ओह दिन पाण्डेयजी सुबह आठ बजे घर से निकललीं आ साढ़े बारह बजे रात में लवटि के फेर घरे अइली। ड्राइंग रूम में हम, पाण्डेयजी के छोट लइका प्रमोदजी, एक आदमी पाण्डेयजी के कोई संबंधी आ पाण्डेयजी बइठल रहीं जा। पाण्डेयजी ओह दिन के सभ समाचार हमनी के सुनावत रहीं आ हमनी के समाचार पूछत रहीं। प्रमोद जी पुछले कि बाबू जी, भोजन कइल जाई नू ? पाण्डेयजी बोललीं. ना, भोजन हम ना करब। आज त मारग्रेट थैचर के सम्मान में पार्टी रहल ह। ज्यादा सामान त उहाँ नन-भेजिटेरियन रहल ह, लेकिन हम थोड़ा सः फल वगैरह खा लेलीं ह। अब कुछ खाइब ना, थोड़ा दूध पी लेब।

पाण्डेयजी के मुँह से नन-भेजिटेरियन के बात सुनि के हम तुरत पूछ दिहलीं कि अपने त मांस-मछरी खाईले त खाली फल वगैरह खा के काहे रह गइलीं ह ? एह पर पाण्डेयजी कहलीं कि ना, अब हम मांस-मछरी खाइल छोड़ दिहलीं। ई सब अच्छा चीज ना ह। अब त हमनी के अइसन करे के बा कि ज्यादा दिन कइसे जिन्दा रहल जा सकेला। फेर उहांके हमरा से कहलीं कि रउआ त जानत बानीं कि हमरा परिवार के लोग के बड़ा शौर्ट लाइफ होला। हमर सब भाई लोग ६०-६५ के आस-पास मर गइल लोग। हमरो उमिर अब ६० बरिस से अधिक हो रहल बा। एह पर हम कहलीं कि खैर, ई सब छोड़ल जाय। तब उहांके कहलीं कि ना अइसहीं कह देहलीं ह।

पाण्डेयजी के ई बात हमरा उहांके मृत्यु के समाचार सुन के बरबस इयाद हो गइल आ हम सोचे लगलीं कि पाण्डेयजी के ऊ बात का एही असामयिक मृत्यु के आगम भा पूर्वाभास रहे।

दूसर घटना पिछला बरिस यानी १९८ ई० के अक्टूबर महीना के ह। दुर्गापूजा के अवसर पर पाण्डेयजी अपना गाँवें तउलहा गइल रहलीं। हर साल दुर्गापूजा के समय पाण्डेयजी के पूरा परिवार गाँव पर जाला आ बड़ा धूमधाम आ बिधि-बिधान से दुर्गा जी के पूजा-पाठ तथा हवन वगैरह कइल जाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेयजी २६ अक्टूबर आश्विन शुक्ला नवमी के हवन आदि समाप्त करके घर से निकललीं आ रामनगर आ रामनगर के आसपास के गाँवन में जा-जा के छोट वड़ सभ लोग से वड़ा स्नेह आ आत्मीयता के साथ भेंट-मुलाकात कइलीं। ओह दिन उहां के हमरो गांवें गइल रहलीं आ सभ लोग से भेंट-मुलाकात कइलीं।

उहाँ के मृत्यु के बाद हमरा वुझाता कि अपना पास-पड़ोस के लोग से एह तरे अचानक जा के मिललो-जुललका एकरे आभास रहे !

पाण्डेयजी के राजनीतिक, सामाजिक आ पारिवारिक जीवन बड़ा उज्ज्वल रहे। उहांके सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय, एक आदमी रहीं। एह सभ दृष्टिन से जो राजेन्द्र प्रसाद जी "देशरत्न" रहीं, डा० श्रीकृष्ण सिंह "विहार केसरी" रहीं त पं० केदार पाण्डेयजी "विहार विभूति"। एकर प्रमाण ओह दिन देखे के मिलल जे दिन उहां के शव दिल्ली से पटना आइल, पटना से वनारस गइल आ जेह दिन यानी ५ मार्च ८३ के उहां के जनम भूमि तउलहा में उहां के श्राद्ध सम्पन्न भइल। एह सभ अवसर पर के ना स्व० पाण्डेयजी के पार्थिव शरीर के दर्शन कइल, के ना रोवल आ के ना उहां के आत्मा के स्थायी शान्ति के वास्ते भगवान से प्रार्थना कइल।

अनुसंधान-पदाधिकारी
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्
पटना-८०००४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

हमनी के पाण्डेय जी

खुर्शीद आलम

□ □

बिहार के अमर विभूति, मातृभूमि के अनन्य सेवक, कुशल प्रशासक, विद्वान राजनेता, मृदुभाषी, मिलनसार आ व्यक्तित्व के धनी स्व० केदार पाण्डेयजी बिहार के मुख्य मंत्री तथा भारत सरकार के रेल आ सिंचाई मंत्री के रूप में अपना क्षमता आ कार्य-कुशलता के जइसन उदाहरन पेश कइलीं ओइसन उदाहरन इतिहास में खोजला पर भर सक ना मिली।

पाण्डेयजी अब हमनी के बीच ना रहलीं। लेकिन उहाँके जनता-जनार्दन के भलाई आ बढ़ंती खातिर जे कुछ कइलीं ओकरा के नइखे भुलावल जा सकत। खास कर के चम्पारन खातिर त उहाँ के देह के रोंआँ-रोंआँ समर्पित रहे।

भोजपुरी खातिर उहाँके जे कइलीं ओकर बरनन करे में शब्द सक्षम नइखन स। आज भोजपुरी अकादमी उहें के देन ह। उहें के प्रयास से भोजपुरी भाषा के इज्जत मिलल। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के जे लमहर सम्मेलन पटना में भइल जवना में देश के मूर्धन्य विद्वान, महान विचारक आ भारतीय संस्कृति के अमर शब्दकार स्व० डा० हजारी प्रसाद द्विवेदीजी के साथे महान जननेता बाबू जगजीवन राम जी पधरले रहलीं ओकर आयोजक उहेंका रहीं।

स्व० पाण्डेयजी के ई विशेषता रहे कि उहाँके भोजपुरी भाषी क्षेत्र में जब कबो भाषण दीं त भोजपुरिए में बोलीं। उहाँ के ई गुन जनता आ भोजपुरी के प्रति उहाँ के नेह-छोह के सभ से लमहर नमूना रहे।

स्वभाव से मिलनसार आ मृदुभाषी पाण्डेयजी अपना व्यक्तिगत जिनिगी में एतना सरल रहलीं कि छोट से ले के बड़ तक बिना कवनो शर्म-संकोच के लगे पहुँच जाय आ आपन दुख तकलीफ बिना कवनो लाग लपेट के बेधड़क कह देवे।

कवनो क्षेत्र में कामकरेवाला नया लोग के प्रति उहाँ के विशेष स्नेह प्रेम रहे अपना भाषण में उहाँके एह बात के बार-बार दोहराईं "हम रउरा लोगनी के घर के आदमी हईं। रउरा लोगनी हमरा के पराया काहे समझींले ? हमर देह के रोंआँ-रोंआँ अपने सभन का सेवा खातिर नेवछावर बा।"

प्रधान संपादक
दफीना हिन्दी साप्ताहिक, मोतिहारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन रहीं पाण्डेय जी

सुरेश्वर प्रसाद द्विवेदो

□ □

स्व० केदार पाण्डेय जी एह देश के महान सपूत आ महान देश भक्त रहीं। हमनी के उहाँ के ऊपर वड़ा गुमान रहे। विहार प्रांत के जब उहाँका मुख मंत्री रहीं तवना समय में शिक्षा के क्षेत्र में जे काम कइलीं ऊ वेजोड़ रहे। विहार में परीक्षा के क्षेत्र में जवन भ्रष्टाचार रहे ऊ जादू-मंतर लेखा खतम हो गइल आ विद्यार्थी लोग मन लगा के पढ़े लागल। पाण्डेय जी जब तक विहार के मुख्य मंत्री रहीं तब तक चारो ओर विहार के नाम आउर शान बढ़ल। उहाँका स्वतंत्रता-सेनानी रहीं एह से अपना मान-सम्मान से जादे देश के मान-मरजांद के ख्याल रखलीं।

पाण्डेय जी जब केन्द्रीय मंत्रिमंडल में सिचाई मंत्री रहीं ओह समय में दिल्ली में अक्तूबर ८० में अखिल भारतीय वकील सम्मेलन भइल रहे। विहार से करीब एक सौ वकील लोग सम्मेलन में भाग लेवे खातिर गइल रहे जवना में हमहूँ रहीं। सम्मेलन के दोसरका दिन हमनी के पाण्डेयजी के वोलावा पर उहाँ के निवास-स्थान पर गइलीं जा जहाँ पर सभ वकील लोगन से उहाँका घरवइआ अइसन मिललीं। उहाँका सादगी आउर सज्जनता के मूर्त्ति रहीं। सभ किसिम के लोगन से विना भेद-भाव के मिलल करीं आ अपना वूता भर गरीब दुखिया के मदद करीं जेह से उहाँका आम जनता के हृदेआ में वसि गइल रहीं।

एक वार के वात ह जब पाण्डेय जी भारत सरकार के रेल मंत्री रहीं आ उहाँका दिल्ली से पटना आइल रहीं। राजकीय अतिथिशाला में भेंट करे वाला लोगन के काफी भीड़ रहे। हमहूँ उहाँ से भेंट करे खातिर गइल रहीं। भेंट भइल हमरा मुश्किल लागत रहे। गेट पर एगो पुलिस अफसर हमरा से चिल्ला के कहलन कि अवहीं पाण्डेय जी से भेंट ना होई। तब हम एगो एम० एल० ए० के साथ भीतर जाके उहाँसे भेंट कइलीं। हमरा के देखते पाण्डेय जी कहीं कि का ववुआ, का समाचार बा? हम उहाँ से एह बात के निवेदन कइलीं कि रउआ अखिल भारतीय नवजवान वकील सम्मेलन के उद्घाटन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर आपन स्वीकृति दीहीं आ मिदनापुर (पश्चिम बंगाल) आवे के किरिपा करीं। उहाँका बड़ा सनेह से कहलीं कि बबुआ तूं त हमरा घर के लइका बाड़ऽ, तोहरा से हमरा छुट्टी लेवे में कुछऊ संकोच ना होई। बात ई बा कि जेह दिन तोहार सम्मेलन बा ओही दिन इंटीगरल कोच फैक्ट्री मद्रास में हमरा एक नया प्लांट के उद्घाटन करे के बा। हम एह सुअवसर पर सम्मेलन के सफलता खातिर आपन शुभ कामना संदेश दे देहब। हमरा उमीद बा कि हमरा के तूं लोगन माफ कर देबऽ। उहाँका साथ-साथ ईहो कहलीं कि हमार इच्छा बा कि रेल मंत्रालय के तरफ से देश के वकील लोगन के हरेक तीन साल पर एक बार पूरा परिवार खातिर पहिला दर्जा के दस हजार कीलोमीटर के मुफ्त रेलवे पास दीहल जाय जवना से वकील लोगन के पूरा देश-दर्शन आउर लोगन से मिले के मौका मिले एह बात से उहाँ के उदार हृदय के परिचय मिलल।

ओह दिन हमरा जिनिगी के मनहूस घड़ी रहे जेह दिन समाचार सुनाइल कि पाण्डेय जी स्वर्गवासी हो गइलीं। हमरा अइसन लागल कि भारत माता एगो आउर सपूत खो देली आ बिहार सून हो गइल। तबहूँ हमरा अइसन लागत बा कि पाण्डेय जी कहीं घूमे गइल बानीं आ कवनो समय उहाँका आ धमकब।

अधिवक्ता
उच्चतम न्यायलय, नई दिल्ली
महा सचिव,
अखिल भारतीय युवा अधिवक्ता महासंघ नई दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ दिन परेला इआदि......

भैरवनाथ पाण्डेय

□ □

दग-दग गोर चान अस चमकत चेहरा। ओह पर भलसानुस का तेजी आ खुसमिजाजी के सरल-सोहावन भाव। चंपारनी छवारिक के छाव धइले औसत लमछर कद के खनहन-छरहर देहि-धाजा। तवना पर धपधप उज्जर खादी के पएजामा-कुरता आ ऊपर से सोभनउग जवाहिरी वंडी। माथ पर बरसाती मेघ निअर कुचकुच करिआ केस —अइसन लागे जइसे कालिदास का मेघदूत के उपमा छछाते साकार-सरेख हो गइलि इोखे —

> " सिवजी के धवरा बरधवा अखाड़ि माथे
> पँकिआ लेलेवा लपटाइ ।"

तनिका फरका से, रूप-रंग, भेख-रेख आ चाल-ढाल से देखनिहारन का बूझे में इचिको अटहर ना परत रहे जे कवनो पुरान काँगरेसी नेता हवें। अइसना सुन्नर, रूपगर, भेखगर आ मिलनसार मनई से के ना दू गाल बतिआइ के अपना के धनि-धनि मानत रहे। अपने सभे के बतावे के ना परी कि इहाँका के रहीं। इहें का रहीं केदार पाण्डेयजी, जे एह धरती पर नइखीं। धरती से उठि गइला का बादे कवनो मनई का मोल-मरजाद के निजगुत पता चलेगा। आजु पाण्डेयजी अस भोजपुरी माई के लाल का ना रहला से भोजपुरी के घर-आँगन भकसावन आ खूँख-छूँछ लागत बा।

पाण्डेयजी, सही में, जननेता रहीं। अइसे त जननेता के कई गो रूप होला, बाकिर हमरा त उहाँ के भोजपुरिहा रूप के थोर-बहुत देखे-परिखे आ हवेखे के जवन संजोग मिलल बा तवन हमरा छोटहनि जिनिगी के सँचे जोग थाती बनि गइल बा। हमरा जहाँ ले इआदि परत बा, हम उहाँ के ओह घरी से थोर-बहुत जाने लागल रहीं, जब उहाँका बाबू श्रीकृष्ण सिंह का मंत्रिमंडल में पहिले उपमंत्री बनावल गइल रहीं। तब से, राजभाषा विभाग, पटना के हमरा रोटिहा साथी राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, जे एह घरी वाराणसी में भारत सरकार का पत्र-सूचना-कार्यालय में सहायक सूचना-अधिकारी बाड़े,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उहाँक बारे में बेरि-बागर कतने नीमन-जवून सुनावत गइले। बाद में, एक बेरि रवींद्र वर्माजी का जोगाड़ से, पटना का आइ. एम. ए. हॉल में, भोजपुरी के एगो जुटान भइल, जवना में बिहार का मुख्य मंत्री का रूप में, उहाँ के अध्यक्षीय भाषण, भोजपुरी में सुने के हमरा मोका मिलल रहे। बाकिर, उहाँ से निठाह परिचे भइल पछिला दसबरिसी सन् १९७१-१९८० ई. में जब भोजपुरी भाषा-साहित्य का संगठनात्मक-रचनात्मक उठान के योजनाबद्ध उतजोग, बड़ा जोम से नया सिरे जोर पकड़लसि।

सन् १९७२-७३ ई. में "भोजपुरी" संपादक स्व. सरदार रघुवंशनारायण सिंह पटना में पधरलीं। आरा से "भोजपुरी" का प्रकाशन के जवन तार टूटि गइल रहे ओकरा के फेरु से जोरे खातिर बाबू साहेब बड़ा मनबेदिल होइ के कंचित उदवेगल-उदवासल आइल रहीं। उहाँका ब्रजकिशोर-पथ पटना का इंडिया मशीनरी के मालिक स्व. बाबू जगन्नाथ सिंह का भावुकता, सज्जनता के बरिआर अलम भेंटाइल रहे। उहाँका स्व. जगन्नाथ बाबू का बंगला में आपन डेरा गिरवले रहीं। ओहिजा सड़क का किनारे "अखिल भारतीय भोजपुरी महासभा" के एगो साइनबोर्डो टँगाइ गइल रहे। "भोजपुरी" के एक अंक पटना से प्रकशितो हो चुकल रहे। रघुवंश बाबू का लरी-जरी से हमरा पहिल बेरि स्वर्गीय केदार पाण्डेयजी का भोजपुरी प्रेम आ उदारता के निजगुत प्रमान मिलल रहे। भोजपुरी का बढ़ती खातिर पटना का गली-गली छिछिआत रघुवंश बाबू का एके होसिला आ खखन रहे, ऊ ई कि कइसहूँ भोजपुरी भाषा-साहित्य बिहार का लोकभाषा सभन का पंघति आ भयवद्दी में आपन बरोबर के हक आ दरजा पाइ जाउ। उहाँके नारा रहे "हक का लड़ाइ में ढिलाई बड़ा अखड़ेला"। एही हक-पद खातिर हुँकरत-हुमचत आ मकवड़ा मारत रघुवंश बाबू एक दिन स्व. केदार पाण्डेयजी का छज्जूबागवाला आवास पर आपन सोटा ठेघत पहुँचि गइलीं। उहाँ का मन में पाण्डेयजी से निरुआरि आ सरिआइ-फरिआइ के दुइ टूक बतिआवे खातिर के उचरलीं—"ए पाण्डेयजी! रावा भल कइलीं जे बिहार लोक-सेवा-आयोग में मैथिली भासा के घुसाइ दिहलीं बाकिर रउरा एह बात के तनिको बिचार ना कइलीं जे बिहार का दोसरा भासा के लोगन पर का गुंजरी। तनिका अपनो "मातृभाषा" का ओरि निगाह कइले रहितीं। हमनीं के बालबाचा कवना जोम पर लोक-सेवा-आयोग में आपन बरोबरी के दरजा पइहें स।" पाण्डेयजी ई सुनि खोनसाइ के जवाब दिहलीं, "अपने सभे त अवहीं ले कवनो काम सही ढंग से कइलीं ना आ जे सही ढंग से कइले बा, ओकरा के आगा बढ़त देखि के आपन छाती पीटे लगलीं, निठुरी मुँहे अँगजराह बात कहे लगलीं"। पाण्डेयजी रघुवंश बाबू के एगो नम्बरी नोट थम्हावत कहलीं—"अवहिओं से चेतीं सभे। भोजपुरी के एगो प्रतिनिधि संगठन ठाढ़ करीं।" ओह दिन का बतकही से रघुवंश बाबू के मति-बुधि जागल आ उहाँका एकरा फिकिरी जागि गइलीं। उहे रुपया आ बतकही आजु का अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के नेंव डाले में सभ से पहिलकी हुमादि बनल, जवना से भोजपुरी का संगठनात्कम योजनाकार आ कार्यकर्त्ता लोगन का कुछु करे-धरे के रुचिगर फरदाँव भेंटाइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब से लगाइत आजु का भोजपुरी अकादमी तक स्वर्गीय केदार पाण्डेयजी का बारे में जो आपन सभ संस्मरण कागद पर उतारि दीं त कमो-से-कम त सएकड़ पृष्ठ रँगाइ जाई आ एगो छोटहन पोथे तेआर हो जाई। अब बुझल जाउ जे पटना का पूरे एक दशक का भोजपुरी क्रियाशीलता के पुरहर इतिहासे ओह संस्मरण में समाइ-समेटाइ जाई। ओह इतिहास के लगभग सभ पात्र अबहीं जीवे-जाँगरे अछइत बाड़न। जो हमरा इआदिगारी के सउँस गेंठरी खुल जा त डर वा जे ऊ "पंडोरा" के बकसा बनि जाई। केहू का बारे में जो जिअतार साच कहा गइल त भारी अमनख के बात हो जाई आ संस्मरण के सरसता द्रोह, कलह आ विवाद के रूप धइ ली। एह संस्मरण का बारे में हम अपना जाने-बूझे भरि इहे कहबि जे मन पारल जाला बीतल बात के। एकरे दोसर नाँव स्मरण कइल कहाला। साच पूछीं त मन बड़ा बेलूरा होला। ओकरा में बीतल बातन के मीठ-खार रस अइसन पेहम हो गइल रहेला कि जो कुल्हि बात उँगिलि दिआउ त ऊ स्मरणे भरि होई, संस्मरण ना बनि सकी। बाकिर सोचनउग ई बा जे महासागर से बढ़ि के खारा के होई जवना में से परकाजी मेघ मीठ जल लेइ लेला आ खार छोड़ि देला। मेघ अइसन अपना इआदगारी का सागर से जब केहू हिगराइ के अपना फरिछ मीठ बातन के कागद पर उतारि देला तबे सत्य-शिव-सुन्दर से भरल संस्मरण के सिरिजना होले। हम, मेघ निअर, भरि सक, अपना बेलूरा मन का सागर से "सत्य कहीं लिखि कागद कोरे" का कसउटी पर कसल स्वर्गीय पाण्डेयजी का बारे में, एकाध गो छिटफुट प्रसंगन से जुटल, खाली मीठे-मीठ बातन के जिकिर एह संस्मरण में कइल चाहबि।

बात ओह समे के ह, जब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का दोसरका अधिवेशन, माने "पटना अधिवेशन" के कार नधाइल रहे। पटना में जोर-सोर ले अधिवेशन के तेआरी चलति रहे। कतो नेंवता छपात रहे, त कतो रिपोट आ भासन। एने "भोजपुरी के प्रकाशित ग्रंथ" नाँव के पुस्तिका का छपाई में हाथ लागल रहे, ओने सम्मेलन-पत्रिका के संपादन- प्रकाशन होत रहे। बड़ा दल-फल रहे। सम्मेलन के पहिल-प्रबन्ध मंत्री भइला का चलते हमरो कपार पर बड़ा भार रहे। महामंत्री जी के जवन-जवन हुकुम होत रहे, ओकरा के कार्यालय संचालक भइला का नाते कवनो कीमत पर तामील कइल हमार धरम रहे। डा० बसन्त कुमार ओह अधिवेशन के स्वागत-मंत्री आ खुदे पाण्डेयजी स्वागताध्यक्ष रहीं। बाकिर, अधिवेशन का इन्तजाम के पूरा भार सम्मेलन के कार्य-समिति अपने ऊपर ले लेले रहे। एह ठानल कार के सँपरावे में अइसे त सम्मेलन के सभ पदाधिकारी अपना सावङ आ बल-बउसाव भरि लागले रहन बाकिर हमरा पर त एकर निसा चउबीसो घंटा चढ़ल रहत रहे। ओह ! कतना उछाह रहे ओह घरी !! एक दिन स्वागताध्यक्ष का हैसिअत से पाण्डेयजी कहलीं जे अधिवेशन वास्ते चंदा-उगाही खातिर सम्मेलन के केहू कार्यकर्त्ता हमरा सँगे जमशेदपुर चलो। महामंत्री जी सभ से पुछलीं, बाकिर एह काम खातिर केहू के मन ना सम्हुआइल। आखिरस में ई भार हमरे के सँउपाइल। महामंत्रीजी के राइ भइलि जे हम पाण्डेयजी का जाए से एक दिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिलहीं जमशेदपुर चलि जाईं आ उहाँ देखि-सुनि के पाण्डेयजी खातिर चन्दा उगाही के एगो कार्यक्रम तेआर कइ के राखीं। जानीं जे हम जमशेदपुर गइलीं आ ओहिजा पहुँचि के हम चन्दा-उगाही खातिर एक घंटा, दू घंटा आ तीनि घंटा में भुमुते-सँपरावे जोग गिनल-चुनल लोगन के अलग-अलग तीनि गो सूची तेआर कइ लिहलीं। बड़ा मगन रहीं जे पाण्डेयजी जब आइबि तब उहाँका सूची देखि के बड़ा खुश होइबि। डा० रसिक बिहारी ओझा "निर्भीक" का डेरा से चलि के हम सर्किट हाउस में, पाण्डेयजी का ओहिजा पहुँचे से एक घंटा पहिलहीं पहुँचि गइल रहीं।

पाण्डेयजी दूइ बजे दिन में जसहीं ओहिजा पहुँचलीं कि मुलाकाती आ पैरवीकार लोग उहाँके छापि लिहलन। हमरा से उहाँके देखादेखी त भइलि आ हम उहाँ से सम्मेलन का ओरि से अपना अइलो के चरचा कइ दिहलीं, बाकिर चंदा-उगाही खातिर बनावल सूची पर उहाँ से बात-बिचार कइ के अहथिर होखे खातिर ओह भीड़ि में हमरा सँवसारे-पइसार ना भेंटाइल। का कहीं, ओह साँझि के कुफुति हमरा कबो भोर ना परी। पाण्डेयजी का साँझि खा पंचायत-परिषद का एगो सभा के अध्यक्षता करे के रहे काफी दूर-दराजवाला एगो महल्ला का इसकोल में। सभे उहवाँ जाए खातिर तेआर भइल त हम सोचलीं कि हमहूँ ओहिजा चलीं। मोटर गाड़ी में हम पहिलहीं अपना खातिर जगहि लूटि लिहलीं आ ओहिजा चलि गइलीं। ओहिजे ओहि रात भोजनो करे के रहे। भासन खतम भइला पर पाण्डेयजी फराकित होखे खातिर सर्किट हाउस लवटि अइलीं। हम सोचलीं जे ओहिजा फँफराह भेंटाई त सूची पर बात-बिचार कइ लेबि। इहे सोचि के हमहूँ इहाँ का साथे लवटि आइल रहीं। एहिजा फर-फराकित भइला का बाद जब हम उहाँका सोझा सूची पेश कइलीं तब उहाँका थकहरला निअर जम्हाई लिहलीं आ सूची पर कवनों हरख-बिसमाद भा उछाह ना देखवलीं। दू बजे दिन से उहाँके पाछा लागल छपले-छपले हम कतना हलकान भइल रहीं। एकर अन्दाज उहे लगा सकेला जे अइसना कुफुति में कबो परल होई। त हमार उदवेग-उछाह कठुआइ गइल। तबो, खाए खातिर उहाँका सँगे फेर ओह इसकोल पर जाहीं के परल। ओहिजा पहुँचला पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आ कवि-गोष्ठी होखे लागलि। हमरा पाण्डेयजी पर भोजपुरी साहित्य का सरसता के प्रभाव जमावे के बड़ा नीक मोका भेंटाइ गइल, जे में उहाँका खुश होइके चंदा-उगाही का कार में तनीं उछाह देखाईं। कवि-सम्मेलन में हमहूँ श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी कृत "कौशिकायन" सस्वर सुनवलीं—पनरह-बीस मिनट ले। लोग बड़ा खुश भइल। ओह घरी हमरा भोजपुरी भासा के जनसंचारी महिमा के निठाह आ परतच्छ प्रमान मिलल। अब सोचलीं जे पाण्डेयजी हमरा कविता-पाठ से खुश भइल होखबि आ काल्हु भोरे चन्दा-उगाही के कार मनगरे निबुकि जाई। राति खा सर्किट हाउस में हमरा फरस पर बिछल एगो सतरंजी पर, उगुगे रहि के, राति काटे के परलि।

भोरहरिआ का बेरा में उठते पाण्डेयजी हवाखोरी खातिर चललीं, त हमहूँ सँगे लागि गइलीं। हमनी तीनिए आदिमी रहीं जा। राह में हम आपन कार्यक्रम बारम्बार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेयजी के बतावत-समुझावत गइलीं। उहाँका जब हुँकारी भरि दीं, त जीव में जीव परे, जे हमार एहिजा आइल सुकलान होई। बाकिर टहरि के लवटत खा पाण्डेयजी सड़क का किनारे के एगो मकान में चलि गइलीं, जवन कि स्वर्गीय नलिनविलोचन शर्माजी का भाई (डाक्टर) के मकान रहे। हम सोचलीं जे अधिका-से-अधिका आधा घंटा में इहाँ से फुरसति हो जाई। तवो साढ़े सात ले हमनीं का सर्किट हाउस में पहुँचिए जाइबि जा आ आठ बजे से चंदा-अभियान में निकसबि जा। बाकिर, पाण्डेयजी ओहिजा पकिआ दू घंटा ले बतिआवते रहि गइलीं आ ओने डाक्टर साहेब सुगुम भेंटाइल एह राजनेता के खातिर-बात में बझवले रहि गइले। हमार जीव त अधसंसू हो गइल। हमरा ओहिजा एको पल ठहरल जबुर जनात रहे। जब ओहिजा से छुटकारा मिलल तब राह में हम फेरू चंदा-उगाहीवाली बात चलवलीं। पाण्डेयजी फेरू हुँकारी भरत गइलीं।

सर्किट हाउस में पहुँचते-पहुँचत ना जाने कहाँ से फेरू चिउँटा-माटा अस सएकड़ लोग उहाँ के छापि लीहल। ओह लोगन से फुरसति पावत-पावत दस बजि गइल। पाण्डेयजी के, एह बीचे हम बड़ा हिम्मति कइ के चंदावाली बात मन परावत गइलीं। आखिरस में, उहाँका कहलीं जे नागिन् भाई पारिक के फोन कइल जाउ। फोन भइल आ कहाइल जे पारिकजी एगारह बजे मुलाकात करीं। पारिकजी आवे के सँकरले।. अब पाण्डेयजी अपना गाँव-जवार का एगो वकील किहाँ जलपान करे चलि दिहलीं। उहाँ का सँगे लोगवाग के एगो हुजूम चलल। हम उहाँ से कहलीं जे पारिक साहेब का आवे में अब अधे घंटा बाकी बा। उहाँका बेरोख होइ के हमरा के डपटत कहलीं जे हम जलपान ना करीं ? हम कहलीं जे पारिक अइहें आ लवटि जइहें—एह से हम एहिजे रहत बानीं, जेह में उनुका के बिलमावल जा सके। उहाँका कहलीं जे रउआ जलपान ना करबि ? हम कहलीं जे ना। उहाँका लोगवाग का सँगे चलि गइलीं। सर्किट हाउस में बाँचि गइलीं हम आ भोरे से हमार दुरगति-फजिहत देखत निर्भीकजी। निर्भीकजी के हमहीं बोलवले रहीं। कहले रहीं जे अपना परिषद के प्रकाशन लेइ के आईं आ पाण्डेयजी के भेंट करीं, जे में सम्मेलन का काम में उहाँ के चाव बढ़ो। बाकिर भीड़ि का मारे बेचारू निर्भीकजी के लोगवाग मोके ना दीहल आ उहाँका घंटन्हि सर्किट हाउस का लॉने में ठाढ़ रहे के परल।

पारिक साहेब ठीक समे से पहुँचि गइले। हम उन्हुका से परिचे पूछिके उन्हुका के सम्मेलन का बारे में एकसुरिए जानकारी देवे लगलीं। ऊ कहले जे हम बगल में एस० डी० ओ० का आवास पर जात बानीं। पाण्डेयजी जबे आईं, हमरा के फोन से खबरि करदि। हम पाण्डेयजी के राह जोहत रहि गइलीं, बाकिर उहाँका साढ़े बारह बजे ओहिजा पहुँचलीं। उहाँका एक बजे से चासनाला-खान-दुर्घटना के निरीक्षण करे जाए के रहे। आवते मातर हम उहाँ से पारिक साहेब का अइला के खबरि जनवलीं। उहाँका फोन करवलीं। पारिक अइले। बन्द कमरा में पाण्डेयजी, पारिक साहेब आ हम, सम्मेलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का गरज-उदेस पर पाँच मिनट बतकही कइलीं जा। पारिक कहले कि एक दिन हमरा इहाँ नास्ता पर आइल जाउ। पाण्डेयजी कहलीं कि ठीके बा। पारिक साहेब विदा भइले। पाण्डेयजी कमरा से निकसि गइलीं आ चासनाला चलि दिहलीं। हमरा से कहलीं जे कहिओ फेरू पारिक किहँ आइल जाईं, से रावा पटना लवटि जाईं। हम अवहीं ले अन्न-दाना ना गरहले रहीं। सभ केहू चलि गइल। बाँचि गइले निर्भीकजी। हमरा के ऊ एगो होटल में लिआ जाइ के भरि पेट खिअवले आ अपनहूँ खइले। ऊ हमरा के वहुते ढाढ़स दिहले।

पाण्डेयजी का संगे चन्दा माँगे के हमरा वहुते कड़ुआ अनुभव भइल। वाकिर; एह जतरा में उहाँका ओही अधिवेशन खातिर 'हरलालका' से एक हजार रुपया दिअववलहूँ रहीं। तवो उहाँका नाँवे के ई प्रताप रहे जे पटना अधिवेशन खूवे खुसफएली से भइल। एह घरी जव केहू पाण्डेयजी पर भोजपुरी का नाँव पर चन्दा लेवे के तोहमत लगावेला तव हमार रोआँ ओकरा पर जरे लागेला। कतना अजाची आ निस्पृह रहीं पाण्डेयजी !

जव पाण्डेयजी के आँखि भरि-भरि अइली :

ई बात सन् ७७-७८ के ह। ओह घरी पाण्डेयजी डॉ० जगन्नाथ मिश्रजी का मंत्रिमंडल में शामिल ना भइलीं। तबो मिसिरजी उहाँके राजस्व-वोर्ड का कवनो समिति के चेयरमैन बनवले रहीं। ओही सिलसिला में एक बेरि, हमरा भोजपुरी अकादमी खातिर, जवन कि वोरिंग रोड (पटना) का 'हेलेना हाउस' में खुदे पाण्डेयजी का अध्यक्षता में खुललि रहे, चंदा-उगाही में उहाँका सँगे हजारीवाग, राँची आ धनवाद जाए के परल रहे। ओह जतरा में, ड्राइवर समेत कार से हमनीं पाँच आदिमी पटना से चललीं जा। पीछे का सीट पर एक ओरि हम, एक ओरि पाण्डेयजी आ हमनी का बीच में उहाँ के ससुर साहेव (शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठीजी) आ आगे का सीट पर ड्राइबर का पँजरा बइठल बलिया जिला के एगो सज्जन। हमरा पहिलहीं भासल रहे जे लमहरा के सफर वा, एह से राह में मन-सायन खातिर भोजपुरी के एगो-दूगो सरस किताव ले लेवे के चाहीं। हम "सीता के लाल" आ "कौशिकायन" अपना पासे राखि लेले रहीं। ठीके, पटना से जसहीं हमनीका बहरि भइलीं जा कि शास्त्रीजी के हुकुम होइ गइल जे कुछु सुनावत चलऽ, जे में रास्ता कटो। हम "सीता के लाल" सस्वर सुनावे लगलीं। बड़ा एकान्त रहे, एह से सुननिहार लोगन का सुने में मन लगावहीं के परल। सीता के सोचाहट आ पाताल-प्रवेश के रसगर कविता आ गीति के मरम सभका मन के मथे लागल। हम परतच्छे देखलीं जे बलिया के सज्जन का गाल पर लोर ढरके लागल। एने पाण्डेयजी रूमाल से आपन आँखि पोछे लगलीं। ओह दिन पाण्डेयजी के सरस काव्य सुनाइ के उहाँका मन में हम भोजपुरी का आधुनिक रचनाकारन के प्रति वड़ा वरिआर भाव जगवला के सुख अनुभव कइलीं। अइसन भावुक आ रसगर रहीं पाण्डेयजी !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेयजी के दरवाजा भोजपुरी खातिर बराबर खुलल रहे। भोजपुरी खातिर उहाँका मन-प्रान में बड़ा अनुराग रहे। आजु जब उहाँका, हमनीका बीच से उठि गइलीं, भोजपुरी के एगो बरिआर पाया ढहि गइल बुझात बा। अब हमरा जाने कवनों अइसन राजनेता हालाहाली नइखन जेकरा खातिर भोजपुरी जिनिगी के ओइसन अंग होखे, जइसन स्वर्गीय केदार पाण्डेयजी खातिर रहे। आजुओ जब हमरा भोजपुरी का दिसाईं पाण्डेयजी के इआदि आवेले तब हमरा जीभी पर रमाकान्त द्विवेदी 'रमता' जी के एगो पाँति सहजे उतरि जाले—"ऊ दिन परेला इआदि नयन न्नरि आवे हो साथी !" जब ले भोजपुरी सम्मेलन आ भोजपुरी अकादमी फूलत-फरत रही तब ले एहनी के सुवास स्वर्गीय पाण्डेयजी का अमर यशः शरीर के जन-जन का आँखी का आगा उजागर करत रही अइसन हमरा पुरहर भरोस बा।

—उपनिदेशक, राजभाषा,
दक्षिणी छोटानागपुर प्रमण्डल,
आयुक्त कार्यालय भवन, राँची-८३४००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इयादि ओह सत्पुरुष के

डॉ० विवेकी राय

□ □

पटना में भोजपुरी अकादमी के स्थापना भइल एह भाषा का उत्कर्ष के एगो महत्वपूर्ण मंजिल का रूप में बा। एह मंजिल पर पहुँचि के जेकर-जेकर नाँव इयादि आवत बा ओह में एगो नाँव बहुत वजनदार बा, केदार पाण्डेय। स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेय स्वयं कुछ लिखलन ना बाकिर भविष्य में भोजपुरी भाषा में लिखे-पढ़े वाली पीढ़ियन खातिर बहुत पोख्ता इन्तजाम कइ गइलन। भोजपुरी भाषा का अइसन-अइसन दू-चारि गो समर्पित समर्थ सेवक मिलि जइते त ई कहाँ से कहाँ चलि जाइति। बाकिर विधि के विधान अइसन कि अचके मिलली सेवक छिना गइल।

अइसे त पटना में कई बेरि दर्शन करे के सुयोग मिलल आ हर बेरि भोजपुरी का सपनन में बूड़ल एगो साहित्य प्रेमी के राजनीतिक राजपुरुष का भेस में देखि के मन तृप्त भइल बाकिर पछिला भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन का अमनौर (सारन) वाला अधिवेशन में आ एकरा से पेश्तर भोजपुरी अकादमी पटना का वार्षिकोत्सव में, एह दू मोका पर पाण्डेयजी के दर्शन भइला पर जवन भोजपुरी का विस्तार खातिर छटपटात रूप देखे के मिलल ऊ बिसरे लायक नइखे।

काहे बिसरे लायक नइखे, एकर एगो खास कारन बा। ओह कारन में आपन स्वार्थ बा। स्वार्थ व्यक्तिगत नइखे, ऊ साहित्यिक विषय के सार्वजनिक स्वार्थ जइसन बा बाकिर स्वार्थ स्वार्थे ह। हम स्वार्थ के ओकरा कहे ले पहिले अपनहीं उठालेत बानीं, अत्यन्त ईमानदारी आ नेकनीयती से। असल में अइसने परहित चिन्तन के सुभाव कवनो आदमी के महान बनावेला। आजु का हवा में अइसना महान आदमिन के टोटा परल जात बा। नयी पीढ़ी के बुद्धिजीवी आ प्रशासक लोग त अपना के एक दम सिकोरि के कछुआ निअर बना घलले बाड़न। मन व्यक्ति का संकुचित अहं का बाहर निकलते नइखे। बहुत कठोर लाइन अपना चारू ओरि खिंचाइलि बा। कइसे देश-जाति के बेड़ा पार लागी ? कइसे अपना गुड़ुरा से बहरिअइहें आजु के बुद्धिजीवी आ प्रशासक लोग ? कइसे स्वहित आ अहित का मारीच सुबाहु से भोजपुरी जइसन भाषा का सिद्धाश्रम के रक्षा होई ? कइसे "सहित" का भाव से भरल साहित्यिक यज्ञ पूर्ण होई ? कवनो ऋषितुल्य व्यक्ति का संकल्प लेके आगे बढ़े के परी।

बस, एही आगे बढ़े वाली बात के हम पहिले उठवले रहलीं ह। भोजपुरी अकादमी, पटना का वार्षिकोत्सव में पाण्डेय जी हमके निगिचा बोला के कहलन कि अब उत्तरो प्रदेश में भोजपुरी अकादमी बने के चाहीं। हम कहलीं कि बिहार जइसन हवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर प्रदेश में नइखे त उहाँ का बहुत दृढ़ता से कहलीं कि हवा त अइसन चीज ह कि हर जगह रहेले आ कतहीं ना रहेले। जहाँ ना रहेले उहाँ बनावल जाले। बिहारो में बनावे के परल रहे आ उत्तरो प्रदेश में बनावे के परी। एकरा बाद सरकारी स्तर पर प्रयत्नन के रूपरेखा उहाँ का बतवलीं। मालूम भइल कि प्रयत्न एह सीमा तक हो गइल बा कि उत्तर प्रदेश के सरकार में बिहार सरकार का भोजपुरी अकादमी के 'बाइलॉज' आ कार्य-पद्धति के विस्तृत विवरण मँगा के अध्ययन कइल जा रहल बा। कुल्हि काम ठीक बा। बस तनिका ओकरा के समर्थ हाथन से उकसावे के बा। एकरो कार्यक्रम का बारे में पाण्डेयजी विस्तार पूर्वक बतवलीं।

जतना देर ले बात भइल ओतना देर ले बारम्बार मन में आवत रहे कि भारत सरकार के ई रेलमंत्री बोलत रहल ह कि एगो भोजपुरी के सिपाही ? एकदम ठेठ भोजपुरी में, ओकरा भीतरी दाह का सँगे। अपना मंत्री के, अपना राजपुरुष के आ अपना राजनीति के कर्मी व्यक्ति के तनिक देर खातिर हटा के एगो विकासशील भाषा आ ओकरा साहित्य के बढ़न्ती का आपाधापी में बूड़ल ओह व्यक्ति के का भूलल जा सकेला ? अतना ऊँचा पद पर पहुँचि के निचलकी जमीन का सवालन का सँगे जुड़ल रहल मामूली महानता के बात ना रहल। साहित्यिक सवालन के हालत त आजु काल्ह अपनहीं बहुत खस्ता हो गइल बा। साहित्य बेचारा हो गइल बा, एकदम अपूछ। भोजपुरी में एगो कहाउति कहल जाले कि ए छूँछा तोके के पूछा ? माने ई कि जे छूछ बा, खाली हाथ बा, ओकर केहू हेरी-खोजी नइखे।

त का सचहूँ आजु साहित्य एकदम छूँछ हो गइल बा ? लागत त अइसने बा। कवनो समय रहे कि साहित्य सबका सहित रहे, भरल-भरल रहे, ओकरा पास शब्द रहे, ओकरा पास शब्दन के अर्थ रहे आ ओकरा पास भाव के अथाह-अकूत सम्पदा रहे। आजु हालत उल्टा हो गइल बा। साहित्य के सगरे मूल्य आ मानदण्ड नष्ट भ्रष्ट हो गइल बाड़न स। ओकर मान-सम्मान घटि के शून्य डिग्री पर चलि गइल बा। ओकरा प्रभाव पर प्रश्न वाचक चिह्न ना गुणे के निशान लागि गइल बा। जब ले ऊ धर्म से जुड़ल रहे तब ले त खैरियत रहे बाकिर जब से ऊ अर्थ से जुड़ि गइल तब से अर्थ त हाथ से निकलिए गइल शब्दो के जमीन खिसकि गइल। आजु ऊ सर्वहारा हो के राजनीति का पाछा-पाछा चले के मजबूर हो गइल बा। ओने राजनीति बा कि बहुत क्रूरता का संगे ओके धक्का पर धक्का देति चलति बा। बेचारा साहित्य एकदम टूटि के चकनाचूर हो गइल बा।

यूरोप में त साहित्य आ साहित्यकार का टूटन के हल्ला बहुत पहिले भइल बाकिर हिन्दुस्तान में स्वराज्य का बाद यानी लोकतंत्र का स्थापना का सँगे-सँगे हालत बिगड़े शुरू भइल। अब त माने के परत बा कि शब्द सगरे खोखला हो गइलन स एकदम अर्थहीन। अर्थ में अर्थ ना रहि गइल, शब्दन का टुटला से ऊ अनर्थ के रूप हो गइल। इहे हाल हो गइल भावन के। भाव अभाव हो गइल। जवना युग में कविता अकविता हो गइल, कहानी अकहानी हो गइल, आस्था अनास्था में बदलि गइल आ सब कुछ अस्वी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारबोध का आधुनिकता में बूड़ि गइल ओह युग में तव का रहि गइल ? सचहूँ साहित्य आ साहित्यकार छूँछा हो गइल। ओके पुछवइया केहू ना रहि गइल। स्वार्थ खातिर इस्तेमाल हो गइला में आ पूछ भइला में फरक होला। छूँछ आदमी के प्रतिनिधि साहित्यकार आजु रोवत फिरत वा, कतहीं ओकर पूछ नइखे, केहू हेरी—खोजी नइखे ओकर।

अइसना हालत में अइसन महान व्यक्ति जव आगे वढ़ि के एगो मामूली साहित्य सेवी आ एगो जमीन छोड़ि के उठत भाषा का साहित्य के पूछत ओकरा सुख-दुख आ वढ़ंती का बारे में सोचत बा, खुद कुछ करत वा, ओके भरपूर समय देत वा त एह के का कहल जाई ? मने मन केतना मानल जाई ?

फेरू अइसने चीज भोजपुरी साहित्य —सम्मेलन का अमनौर वाला अधिवेशन में देखे के मिलल। मंच पर पाण्डेयजी राजपुरुष भा प्रशासक का रूप में ना, भोजपुरी का सेवक का रूप में बिराजमान मिलन। बहुत जुझारू भाषा में भोजपुरी के पक्ष लेके भाषण कइलन आ कुछ मुद्दन पर सरकार के आलोचनो कइलन। पाण्डेयजी का ललकार में बहुत वजन रहे आ ओही सुर में मंच पर ऊ उत्तर प्रदेश का सरकार के ललकारि वइठलन त हमार कान खड़ा हो गइल। पटना वाली बात इयादि आइल। ओह; एह आदमी का भीतर कइसन विकट भोजपुरी—प्रेम भरल वा ? बहुत साफ आ दूटूक शब्दन में मंच पर पाण्डेयजी कहलन कि उत्तरोप्रदेश में भोजपुरी अकादेमी बनावे के अगुआई हमहीं करवि।

अव हम सोचत वानीं कि काश उनका के अइसन अगुआई करे के मोका मिलल रहित। तव संभव रहे कि कुल्हि कठिनाइयनों के हल मिलि गइल रहित जवना के डा० नामवर सिंह उठवले रहलन। अमनौर वाला भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन में डा० नामवर सिंह कहलन कि उत्तर प्रदेश में कठिनाई वा कि भोजपुरी अकादमी का बनते व्रज, अवधी, वुन्देली आ पहाड़ी आदि भसवन के आठ गो अकादमी वनावे खातिर लोग कपार पर चढ़ि बइठिहन। वाद में डाक्टर नामवर सुझावो दिहलन कि ई समस्या कइसे हल हो सकेले। मोट रूप में लोक भाषा अकादमी वना के ओकरा भीतर भोजपुरी वगैरह के अलगा—अलगा खाना कइ के काम चलि सकेला। ई सुझाव महत्वपूर्ण रहे वाकिर एकरा अलावे अउरिओ सुझाव आ रास्ता त हो सकेला। अकेले भोजपुरी वाला रास्तो से हो सकेला। सवाल रास्ता के नइखे, सवाल चले वाला के वा।

चलेवाला अपना कठिन करेजा से जहाँ राह ना होले उहाँ राह वना देला। अगुआई करेवाला जहाँ कठिन मोर्चा होला उहाँ डटि के सामना करेला। ओकरा जुझारू आ जीवट भरल कदमन के समय का चूमे के परेला। ईश्वर के ई कृपा रहे कि भोजपुरी भाषा का आन्दोलन का सुरुआते में स्व० श्री केदार पाण्डेयजी का रूप में अइसन एगो जीवट वाला सेनानी मिलि गइल कि रास्ता साफ हो गइल। अव ओह साफ रास्ता पर चलत का वेरी ओह सत्पुरुष के केतना इयादि आवत वा ?

वड़ी बाग गाजीपुर (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एगो गृहस्थ जोगी

—सत्यनारायण लाल

हम स्व० केदार पाण्डेयजी के निगिचा से बहुत कम देखे पवलीं। बाकिर जब-जब देखलीं, अपना देस, समाज आ भारत का विकास खातिर कुछ नया विचार, कुछ नया जोस, कुछ नया सुझाव आ कुछ नया संकल्प उहाँ का बात आ व्यक्तित्व से उभरल आ हम उहाँ का प्रति एगो अचरज भरल सनेह आ सराहना का भाव से विभोर हो गइलीं।

स्व० पाण्डेयजी हमरा मन-प्रान का सामने एगो गृहस्थ जोगी भा जोगी गृहस्थ का रूप में चमकलीं। जइसे-जइसे उहाँ के जाने-सुने-समुझे के मोका मिलत गइल, ऊ रूप अवरू साफ होत गइल। जब हम उहाँ के जोगी कहत बानीं त "जोगी" शब्द के दू गो अर्थ हमरा सामने बा—"योग: कर्मसु कौशलम्" आ "कठिन से कठिन परिस्थिति से उबारे के जोगाड़ लगावे वाला।" एही दूनों अर्थन में हमरा स्व० केदार पाण्डेयजी 'जोगी' बुझात रहीं। एगो दूगो उदाहरन देला से हमार बात साफ हो जाई।

एह सताब्दी का सातवाँ दसक का बीतत-बीतत भोजपुरी भासा आ साहित्य के रूप काफी निखर चुकल रहे। आठवाँ दसक का शुरू के तीन-चार साल में ही सैंकड़न संस्था आ हजारन जागरूक विद्वान लोग भोजपुरी का विकास-प्रसार खातिर जी-जान से भिड़ गइल रहलन। बाकिर सभ अलगा-अलगा काम करेवाला, छितराइल-छितराइल, एक दोसरा से कटल-हटल। एह स्थिति के देखि के कुछ बड़-बुजुर्ग आ कुछ प्रबुद्ध उत्साही नौजवान लोगन का मन में आइल कि अखिल भारतीय स्तर पर एगो अइसन संस्था के निर्माण कइल जाउ जे संगठन का एगो बरिआर धागा में सभ संस्थन के फूल लेखा गाँथि देउ। सभ एक दोसरा का समीप आ जा स आ सभ केहू सभकरा उपलब्धि से अवगत हो के समग्र रूप से भोजपुरी भासा आ साहित्य का विकास-विस्तार खातिर कुछ करो। स्व० रघुवंश नारायण सिंह का प्रयास से स्व० केदार पाण्डेयजी का छज्जूबाग स्थित राजकीय आवास पर भोजपुरी माई का लगभग पंद्रह-सोरह दुलरुआ आ चेतनउग बेटन के जुटान भइल।

ओह जुटान का मोका प भोजपुरी के तत्कालीन गतिविधि के पूरा विवरण सामने आइल। सभ का चेहरा पर संतोष आ आनंद के भाव उभरल। मजगर जोस-खरोस का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथे ई वात तय भइल कि एगो अखिल भारतीय संस्था के गठन कइल जाउ जवना का मार्ग-दर्शन में भोजपुरी खातिर सामूहिक आ क्रमवद्ध प्रयास होखो। वाकिर ई केहू ना वतावत रहे कि काम कइसे शुरू होखो आ प्रारंभिक खरच-वरच खातिर फंड कहाँ से उपलब्ध कइल जाउ। एही मार्मिक स्थल पर स्व० पाण्डेयजी के जोगी रूप—कार्य-कुशलता आ प्रवुद्ध नेतृत्व का समन्वय से निर्मित जोगी रूप—के दर्शन भइल। चेहरा प एगो असाधारण चमक आ मुस्कान उभरल आ सभा प उड़त निगाह डालत उहाँ के वाणी फूटि परल- "रउरा सभ जहुआइल काहे वानीं। काम स्पष्ट वा। एगो अखिल भारतीय स्तर के भोजपुरी संस्था वनावे के वा। ओकर नामकरण करे आ संचालन के नियम-कायदा वनावे खातिर एगो तदर्थ समिति वना लीं जा। शुरू में चिट्ठी-पत्री आ कागज पत्र में खरचा खातिर तव तक हम सइ रुपया दे रहल वानीं। अवहिएँ से काम शुरू कइ दीं सभे।"

अव का चाहीं ? सभ का वुझाइल कि कवनो नया प्रकाश मिलि गइल होखे। झटपट तदर्थ समिति के गठन भइल। श्री द्वारिका प्रसाद सिंह अध्यक्ष आ पाण्डेय कपिलजी संयोजक वनावल गइलीं। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल। ई संस्था आज अपना काम-धाम का वल पर आपन परिचय खुदे दे रहल वा। देस विदेस में एकर नाम फइल रहल वा। वाकिर जे जानत वा से ही जानत वा कि एह संस्था के वीआ वोवे खातिर परती तूरे के काम केदारे पाण्डेयजी कइले रहीं।

भोजपुरी अकादमिओ का स्थापना का जरि में पाण्डेयजी का सूझ-वूझ के अधिका हाथ रहे। एकर जिकिर उहाँका वड़ा रस लेले एहतरे करत रहीं :—

"भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का पटना अधिवेशन खातिर जवन राशि इकट्ठा भइल तवना में से कुछ वाँचि गइल रहे। हम ओकरा के चोरा के (भोजपुरी में चोरावल छिपावलो का अर्थ में आवेला) राखि देलीं कि कवनो अइसने मोका प कामे आई। जव भोजपुरी अकादमी का स्थापना के मोका आइल, त ओही पइसा से काम शुरू क दिआइल।"

केतना सचाई, केतना सफाई आ केतना सादगी वा एह अभिव्यक्ति में। केतना विश्वास वा कहे वाला का अपना प आ श्रोता लोग प। आगे चलि के भोजपुरी अकादमी के विहार सरकार अपना देख-रेख में ले लेलस। वाकिर जव तक ई स्थिति ना आइल पाण्डेयजी घटला-वढ़ला प हमेशा मदत करत गइलीं। (एह प्रसंग में श्री हवलदार त्रिपाठीजी 'सहृदय' के प्रयास भी स्मरण हो आवत वा। उहाँका वड़ा धीरज आ परिश्रम से अकादमी का दुर्दिन में काम चलवले रहीं।)

भोजपुरी विद्यापीठ आ विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का गठन-संचालन में पाण्डेयजी का सूझ-वूझ आ धन से वहुत सहायता मिलत रहे। जव कवनो विषम परिस्थिति आवत रहे, "भोजपुरी" जी (श्री शिवशंकर पाण्डेय) उहाँ किहाँ पहुँचि जात रहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्व० पाण्डेयजी अपना अनोखा ढंग से वोलत-वतिआवत कवनो ना कवनो राह निकालि देत रहीं। विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन खातिर त उहाँका एगो बहुत बड़ अधिवेशन कइल चाहत रहीं, तीन चार लाख खरच क के। एकरा खातिर पइसो जुटावे के जवाव-देही उहाँका बहुत हद तक, लेवे के तइयार रहीं। वाकिर के जानत रहे कि "मन की मन ही माँहि" रहि जाई ?

जीवन का अउरो-अउरो क्षेत्रन में पाण्डेयजी के सूझ-बूझ आ कार्य-कुशलता के दर्शन होत रहे। उहाँका काम करे के ढंग देखि के लोग चिहा जात रहलन। एक वेर उहाँका मुख्य मंत्री आ शिक्षा मंत्री रहीं। विश्व विद्यालायन के परीक्षा रहे। पहिला दिने कदाचार के वोलवाला रहे। केहू पाण्डेय जी के ध्यान एह ओर खींचल। उहाँ का कहलीं "घवड़ा जनि। काल्हु से कतहीं कदाचार ना देखवऽ" आ का जाने उहाँका कवन जादू भरलीं कि साँचो दोसरे दिन से परीक्षा में से कदाचार विला गइल। शासन-परिवर्त्तन तक सभ ठीक रहल।

पाण्डेयजी का हाजिरजवावी आ वेलौस कथन के भी वड़ा प्रभाव पड़त रहे। अपना जवाव से उहाँ का सवाल करे वाला के चुपे ना कइ देत रहीं अपना भाव-भंगिमा आ छिपल-छिपल मुसकान से श्रोता लोगन के मनो जीत लेत रहीं। कवनो वहुते अजगुत वात उहाँ का वोली में रहे। कान में तीतो लागे वाली वात मन में पहुँचत-पहुँचत मीठ हो जात रही स।

एह संदर्भ में एगो सुनल वात कहे के मन करता। कवनो सभा में कुछ नौजवान लोग बड़ा रोसिया के वोलल—"अपना एस०पी० के मना क दीहल जाउ। ऊ हमनी प हाथ छोड़ि देत वाड़न। ई वात ठीक नइखे।" पाण्डेयजी ओह लोग कावर एगो खास निगाह से तकलीं आ अपना नपल-तुलल अन्दाज में मुसुका के जवाव दिहलीं—"त का जानत वाड़ लोग कि हम एस०पी० के तोहनी लोगन के चुम्मा लेवे खातिर वहाल कइले वानीं।"

वात सुने में नीक नाहिएँ रहे। वाकिर एह ढंग से, एह कुशलता से कहल गइल कि सुनि के सभ केहू हँसि दीहल। नौजवान लोगन का भी सवाल के जवाव मिलि गइल।

आजु स्व० केदार पाण्डेय के पार्थिव शरीर नइखे रहि गइल। वाकिर उहाँका देस, समाज आ भासा खातिर जे कइ गइल वानीं, ऊ सभ काम उहाँ के अमरत्व प्रदान करे खातिर पर्याप्त वा। लोग दिवंगत आतमा का परम शांति खातिर प्रार्थना करेला। वाकिर हमरा वुझाता कि स्व० पाण्डेयजी अपना देस, समाज आ भाषा खातिर जवन काम शुरू कइले—करवले वानीं, ओकरा विना पूरा भइले, उहाँ का शांति ना मिली। एह से हमार त सभ लोगन से हथजोरी वा कि जी जान से लागि के उहाँ के शुरू कइल कामन के पूरा क दिआउ, जेह में उहाँ का परम शांति मिल सके। ई हमनी का ओर से अपना श्रद्धेय स्व० पाण्डेयजी खातिर सभ से सही श्रद्धांजलि होई।

साधना कुटीर
चउधरी टोला. पटना,—६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशासक पाण्डेयजी

रासबिहारी पाण्डेय

□ □

प्रशासकीय योग्यता वाला राजनीतिज्ञ विरले होला लोग। श्री वावू के परम्परा में श्री केदार पाण्डेय जी भी रहीं। सच पूछल जाय त पाण्डेय जी श्री वावू के प्रशासकीय गुण के उनकर उत्तराधिकारी के रूप रहीं। उहाँ के सबसे वड़ गुण रहे कि ई जानत रहीं कि कवन काम कइसे, केकरा से आ कब करावल जा सकेला। विहार में जिला के पुनर्गठन कइलीं त एह वात के भी ध्यान देलीं कि कवना जिला में केकरा के जिलाधिकारी बनावल जाय। एह से सब नया जिलन में जिला-गठन के वाद बहुत काम भइल आउर जनता में उत्साह के वृद्धि भइल।

श्री केदार पाण्डेय से हमरा पहिले पहिल भेंट १९६५ में वेतिया में भइल। अलग-अलग हमनीका गाँव से पैदल आवत रहीं। उहाँका पैदल एक आदमी से वात करत आवत रहीं। उहाँके व्यतित्व आउर वातचीत के ओर हम आकृष्ट भइलीं। पहिले से परिचय ना रहे। वाकिर हम उहाँ के नाम से जानत रहीं। रास्ता में ही एक दूसरा से परिचय भइल। उहाँका खुस भइलीं कि एक पदाधिकारी हो के पैदल घूमि रहल वाड़न। हमरा भी आश्चर्य भइल कि श्री केदार पाण्डेय भूतपूर्व मंत्री हो के भी गाँव-गाँव से पैदल आ रहल वाड़न। वाद में हमार कर्मठता के हर स्थान पर उदाहरण स्वरूप उहाँ के कहे लगलीं। हमार काम करे के उत्साह में दूना वृद्धि भइल।

विहार में परीक्षा में कदाचार पूरा जोर पर रहे। १९७२ में औरंगावाद जिला के परीक्षा केन्द्र पर हमरा एह काम के भार मिलल। काम झंझटिआह रहे। मित्र लोग हमरा के हतोसाहित कइल। वाकिर हमरा एह काम में शत प्रतिशत सफलता मिलल। औरंगावाद कालेज के स्थानापन्न प्राचार्य श्री ठाकुर के उत्साह अउर हमार सहयोग के चर्चा श्री केदार पाण्डेय से औरंगावाद गइला पर कइल गइल त मुसकुरा के कहलीं कि हम एही लोग अइसन पदाधिकारी के वल पर एह तरह के घोषणा कइले रहीं।

औरंगावाद नया जिला के उद्घाटन के अवसर पर अपार भीड़ जमा भइल। वाजा-गाजा आउर नाच से सारा शहर आउर जी०टी० रोड जगमगा गइल। पाण्डेय जी ओह समारोह के अपना भाषण में अनेक समस्यन के साथ-साथ औरंगावाद के एह माँग पर कि औरंगादाद से भी एक मंत्री वनावल जाय, कहलीं कि अभी हमरे के रउरा लोग औरंगावाद के मंत्री समझ लीहीं आउर औरंगावाद के लोग हमरा से उहे रूप में मिल सकेला। उहाँके एह कथन के हमेशा निभावत गइलीं।

उहाँके प्रशासनिक योग्यता के घटना विहार में अनेक भरल पड़ल वा। अपना निश्चय के कार्य रूप में वदले में पूरा समर्थ रहीं। चाहे भोजपुरी क्षेत्र के कार्य होत रहे चाहे मैथिली के लोक सेवा आयोग में स्थान दिलावे के होत रहे, सब काम उहाँ के तत्काल करके विना हिचक के देखा देलीं।

श्रम भवन, बेली रोड, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सपूत : श्री केदार पाण्डेय

डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय'

□ □

पाण्डेय जी काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के छात्र रहल हईं। हमहूँ ओहिजे के। एसे बड़ा अपनइती बुझात रहल ह पाण्डेय जी से। पाण्डेय जी हमके आपने लगलीं, अपने परिवार के एगो बड़ भाई।

पाण्डेय जी का विहार राज्य के मुख्य मंत्री भइला के समाचार हमके काशिए में मिलल। उहाँ का मुख्य मन्त्री भइला से काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय में बड़ा उछाह रहे। का छात्र, का अध्यापक आ का विश्वविद्यालय के अउरी-अउरी कर्मचारी—सभे पाण्डेय जी का मुख्य मन्त्री भइला से अगराइल--धधाइल रहे। सभ के बुझा जइसे ओकरा परिवारे के एगो लायक सवाँग का हाथे विहार राज्य के नेतृत्व सउँपाइल बा। काशी का लोगनो में एह बात के गरव-गुमान रहे जे काशी से जुड़ल, काशिए में अँखिगर आ सयान भइल पाण्डेय जी विहार राज्य के मुख्य मन्त्री भइलन हँ। घाट-घाट, गली-गली नुक्कड़े-नुक्कड़, पान के गुमटी पर, चाय के चुस्की, पर जहें देखीं तहें एके बात के चरचा, एके बतकही। काशी से निकसे वाला 'आज', 'गाण्डीव,' 'सन्मार्ग' जइसन अखबारनो के कालम के कालम खुशखबरी से रँगा गइल रहलन सन। मुख्य मंत्री पाण्डेय जी बड़ा सरकस, सावँग वाला, दबंग आ पनिगर मुख्यमन्त्री भइलीं। विहार राज्य के आबरू अउरी मुख्य मंत्री पद के गौरव आ पत-पानी राखे खातिर उहाँका चउकस रहल करीं। मुख्य मन्त्री का रूप में आपन एगो साका चलवलीं। पाण्डेय जी जो दस बरिस एह राज्य के मुख्य मन्त्री रहि गइल रहितीं त बिहार-केसरी श्री कृष्ण सिंह, उत्तर प्रदेश के गौरव श्री गोविन्द वल्लभ पन्त, वंगाल के शान डा० विधान चन्द राय आ मद्रास के चाणक्य चक्रवर्ती राजा जी अस आपन एगो अलगे लीक खिंचले रहितीं। तब पाण्डेय जी के विहार एगो सिहाए जोग राज्य हो गइल रहित।

हम एगो शिक्षक हईं। शिक्षक भइला का नाते पाण्डेय जी के मुख्य मन्त्रित्व-काल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा मन में वसि गइल। शिक्षा-क्षेत्र में परीक्षा का रूप में जवन भ्रष्टाचार आपन अंगद पाँव रोपले रहे ओके पाण्डेय जी डोला दिहलीं। परीक्षा पाण्डेय जी का समय में मखौल ना रहि गइल। परीक्षा के पवित्रता बनवले रहे खातिर पाण्डेय जी जवन-जवन जोग-जतन कइलीं, ऊ पढ़े-पढ़ावे वाला सिलसिला फेरू से चालू कइलस। नेक आ ईमानदार शिक्षक छात्र एह मनरूचा मुख्यमन्त्री के पाके निहाल भइलन। परीक्षा के पवित्रता के रछपाल खातिर पाण्डेय जी हरमेसा इयादि रहिहन।

हम भोजपुरी-प्रेम जहें देखीला ओहिजे उमड़ीला। पाण्डेय जी भोजपुरी के सपूत रहलीं। राष्ट्र आ राष्ट्रभाषा का हितारथ में जन-मन में रसल-वसल, अपना भोजपुरी के वढ़न्ती खातिर उहाँ का रात-दिन वेकल, वेगर रहल करीं। सउँसे देश आ राष्ट्रभाषा हिन्दी के हित जोगवत रहे वाला जन-जन का आशा-आकांक्षा के उरेही पाण्डेय जी सूतत-जागत भोजपुरी के भला चाहत अइलीं। भोजपुरी के वढ़न्ती के सपने देखनिहार उहाँका ना रहलीं, एकरा खातिर वरोबर उजुग रहत रहलीं हँ। कथनी करनी से एक होके पाण्डेय जी भोजपुरी के भलाई चाहत अइलीं आ एकरा खातिर गोलो-गोहार कइलीं।

भोजपुरी साहित्य मण्डल वक्सर का अधिवेशन के अध्यक्षता पाण्डेय जी कइले बानीं। पाण्डेय जी का छतरछाँह में रघुवंश वावू के सपना साकार भइल। उहाँका अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का पटना अधिवेशन(दुसरका अधिवेशन) के स्वागताध्यक्ष रहलीं, जेकर अध्यक्षता कइलीं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी।

ओही घरी पाण्डेय जी का करत भोजपुरी अकादमी के श्री गणेश भइल। पाण्डेय जी गुनगाहक रहीं। उहाँका आदमी के परख खूब रहे। भोजपुरी अकादमी के उहाँका जोग हाथ में धरावल चाहत रहलीं। एही टोह में उहाँका श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' अस भोजपुरी प्रेमी, भाषा-मरमी पण्डित आ निपुन निदेशक के ओहिअवलीं-उपरवलीं। सहृदय जी के जोरत गैर सरकारी भोजपुरी अकादमी के'हेलेना हाउस' से के तरे सरकावत-डुगुरावत, डेहरि लँघावत सरकारी अलम के सुपट राह धरवलीं-एकर एगो आपन इतिहास वा। ई इतिहास पाण्डेय जी का भोजपुरी-प्रेम के उजिआर करत वा। भोजपुरी का विजय-रथ के राजमार्ग पर ले आवे वालन में पाण्डेय जी अगहर वानीं। जव-जव भोजपुरी भिरहा-अफतरा आ उरेवा परलि, गोहार सुनते पाण्डेय जी पाँव-पयादे धवलीं आ भोजपुरी का विजय-रथ का चक्का के हावड़ से उवरलीं।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सातवाँ अधिवेशन, अमनौर (सारन) में २९-३०-३१ अक्टूबर, १९८२ के भइल रहे। ओह घरी भोजपुरी-प्रेम से उमहल केन्द्रीय सिचांई मन्त्री श्री केदार पाण्डेय जी के भाषण सुनहीं-गुने लायक रहे। वुझात रहे जइसे भोजपुरी-प्रेम पाण्डेय जी के देह धके खाड़ हो गइल होखे। एह अधिवेशन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में उहाँका कहलीं जे भाषा के प्रभाव धरमो से जादे होला। अब ई विवाद नइखे कि भोजपुरी भाषा ना ह आ इहो कि एकर उन्नति से हिन्दी के प्रगति में बाधा पहुँची। जब हम ई बात बोलतानीं त हम खूब सोच के बोलत बानीं आ आपन मन्त्री पद के उत्तरदायित्व समझ के बोलत बानीं कि जनता आपन जोर लगाओ, हमहूँ जीव-जान से भोजपुरी के बढ़न्ती खातिर मदद करब। आगे उहाँका कहलीं कि भोजपुरी के उन्नति खातिर हम 'अनकण्डिशनल' मदद करब काहें कि ई हमार भाषा ह। हम एकरा के मदद ना करब त हम खुदे आगे कइसे बढ़ब ?

भोजपुरी सपूत पाण्डेय जी आज हमन का बीच में नइखीं। इहाँ के इआदि भोजपुरी प्रेमिन का राह के बटसारी (पाथेय) बनल रही। अमनौर अधिवेशन में पाण्डेय जी दुख का साथे कहले रहलीं जे आज तक यू० पी० आ मध्यप्रदेश में भोजपुरी अकादमी के स्थापना ना हो सकल हालाँकि भोजपुरी भाषा-भाषी लोग बिहार से जादे उत्तर प्रदेश में बा। "नाधा त आधा" के मन्त्र देनिहार पाण्डेय जी के सपना साँच करे में भोजपुरी प्रेमी जुटि जास आ उत्तर प्रदेश अउरी लगवहिएँ मध्य प्रदेश में भोजपुरी अकादमी के स्थापना क, करा के भोजपुरी सपूत पाण्डेय जी के आपन श्रद्धांजलि अर्पित करसु। भोजपुरी-प्रेम दिन-दिन बढ़े, भोजपुरी के बढ़ती होत रहे इहे पाण्डेय जी का नेवरती सचकी श्रद्धांजलि बा।

भोजपुरी सपूत श्री केदार पाण्डेय जी लायक रहलीं ह। लायक नेता, लायक प्रशासक, लायक आदमी, लायक बन्धु, लायक हीत-मीत, सभ तरे लायके लायक रहलीं ह।

लायक नेता पाण्डेय जी मुख्यमन्त्री, केन्द्रीय रेल मन्त्री, सिंचाई मंत्री, बिहार राज्य कांग्रेस के अध्यक्ष जेह रूप में-जहें गइलीं, जहें रहलीं, आपन छाप छोड़त गइलीं।

लायक नेता आ लायक सपूत श्री केदार पाण्डेय जी अपना करनी से अमर बानीं।

एस० पी० विद्यामन्दिर
बक्सर (भोजपुर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केदार पाण्डेय दूगो रहलन

पाण्डेय आशुतोष

□ □

हम दूगो केदार पांडे के जानत बानीं। एगो केदार पांडे त चम्पारन में रामनगर (तौलहा) के रहलन्न आ एगो उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ (कनैला) के रहलन।

दूनो जने के तीन-तीन गो विआह भइल रहे। दूनो जने के निपट देहात में जनम भइल आ सब से कमाल के ई बात कि दूनो जने के माई के भासा भोजपुरी रहे। साँच कहीं त एक जने भोजपुरी खातिर जमीन-गारा- ईंट जुटा के नेव दिहलन आ दुसरकू माई के मंदिर तइआर कइलन।

दूनो समाजवादी, देशाटन करे वाला यात्री आ दूनो संसार भरमन कइले के बाद देश-सेवा करते प्रान गँववलन। दूनो के मौत के पहिले बेहोशी छपले रहे। रउआ ई बस संजोग कहि सकी ले लेकिन एह संजोग के चमत्कार अब देखीं कि दूनो केदार पांडे के जीवित आ तिसरकी पत्नी के नाम 'कमला' ह।

अपने-अपने छेतर में ई दूनो केदार पांडे अमर बाड़े।

चम्पारन के केदार पांडे भी दुसरका केदार पांडे अइसन पहिले क़िसान-मजदूर के नेता रहलन। बाद में बिहार के मुख्य मंत्री भइलन, देस के सिंचाई मंत्री आ रेल मंत्री भइलन। बीसन बार जेल गइलन।

दुसरका केदार पांडे भी जेल गइलन, तिब्बत गइलन, रूस गइलन, लंका गइलन। केहू बतलावे लागी त थाक जाई कि ऊ कहाँ-कहाँ गइलन।

चम्पारन के केदार पांडे के बेटन के नाम ह डा० मनोज आ प्रमोद।

आ आजमगढ़ के केदार पांडे के दूनो लड़िकन के नाम ह डा० ईगोर आ जेता।

दुसरका केदार पांडे के साहित्यिक लोग "राहुल सांकृत्यायन" के नाम से देस आ बिदेस में जिआदे जानेला।

ई दूनो सरयूपारी ब्राह्मण विद्या अध्ययन कइलन काशी में, ए बात के का कहब ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक जने केदार पांडे हमार सम्बन्धी रहलन आ एक जने हमार गुरु। हमरा पर दूनो जने के रिन बा। कइसे चुकाइब ?

जब हम छोटमुट के रहलीं त चम्पारन जिला में केदार पांडे के नाँव बाजत रहे। केहू कहे कि हमरा लइका के नोकरी लगा दिहले; केहू कहे कि हमरा के अस्पताल में भरती करा के दवा करवा दिहले। केहू के बेटा के कालेज में नाँव अपने पइसा से लिखवा दिहले। माने जहाँ जाईं बस नेता केदार पांडे के नाँव गावल जा रहल बा।

हमरा बारे में खूब चाचा जी (हम चाचा जी कहीं) के मालूम रहे कि हम साम्यवादी विचार वाला मनई हईं। एक बेर अपना साढ़ू भाई स्व० जगदीश नारायण चौबे जी के पास उहाँ के हमरा के लेके गइलीं आ कहलीं-"एजगदीश जी, एडवर्ड कार्देज के किताब 'समाजवाद और युद्ध' के एक प्रति हे आसुतोष के द त। तू जाने ल कि ना,ई कमुनिस्ट विचार के हउअन।"

ओ दिने हमरा पता चलल कि सब जानकारी उहाँ के बा। आपन इज्जत देख के हमार छाती फूल गइल। ई ऊ जमाना रहे जब हमरा अइसन आदमी से कंगरेसिया लोग अइसन भड़के जइसे छाता देख के भइँसा।

उहाँ के साहित्य से अतना लगाव रहे कि रेल मंत्री भइला के बाद रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति में चुनल विद्वान लोग के सदस्य रखलीं जेह में डा० माचवे, डा० विद्या-निवास मिश्र, शिवानी, डा० किशोर, बालशोरि रेड्डी, दैनिक 'हिन्दुस्तान' के संपादक विनोद कुमार मिश्र, डा० बचनदेव कुमार, 'दिनमान' के सम्पादक श्री कन्हैया लाल नन्दन आदि के नाम लीहल जा सकेला। ई बात अलग बा कि एह में से कुछ लोग पहिले से मेम्बर रहे।

चाचाजी के पहिलका गुन रहे आदमी के आ समय के पहचान। जब सगरे लोग श्रीमती गाँधी के साथ छोड़-छोड़ के भागत रहे एगो उँहेके रहलीं बिहार के जे दुर्दिन में जम के साथ दिहलीं।

हिन्दी के ख्यातिप्राप्त साहित्यकार श्री शिव सागर मिश्र जी अइसन आदमी रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति के निर्देशक रहलीं जेकरा के पा के संचालन करे में उहाँ के काफी सुविधा भइल।

जब उहाँ के घरे आईं त भीड़ जुट जाय। गाँव-गँवई के गँवारो लोग आपन दुख-दर्द कहे खातिर हमेसा घेरले रहे।

छोटका से बड़का सबकर बात सुनीं आ ओकर समस्या के हल करीं। बीसन आदमी के त बेटी के बिआह उहाँके करवले होखब।

भोजपुरी अकादमी के निर्माण उहें के देन ह। सरगो में उहाँ के अत्मा के सुख मिले हमार प्रभु से इहे प्रार्थना बा।

●

पो० मलकौली (प० चंपारन)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युधिष्ठिर राजनीति में

विद्यानाथ ओझा

"राजनीति" के "कूटनीति" भी कहल जाला। कूटनीति के जन्म "कुटिल" शब्द से बनल "कौटिल्य" से भइल बा। राजा चन्द्रगुप्त के मंत्री रहलन चाणक्य अउर उनकर नाम रहे "कौटिल्य"। चन्द्रगुप्त के राज्य दृढ़ करे खातिर आ नन्दवंश के नाश करे खातिर ऊ कूटनीति से काम लिहलन अउर चूंकि नीति राज सत्ता के स्थायी करे खातिर इस्तेमाल भइल ओकर नाम बाद में राजनीति हो गइल। राजसत्ता लेवे खातिर, ओकरा के कायम राखे खातिर आगे भी स्थायी राखे खातिर एह नीति के इस्तेमाल होला।

कौटिल्य एक नीतिशास्त्र भी बनवलन जवना के नाम "अर्थशास्त्र" रहे। ओमें राजसत्ता के मजबूत अउर कायम राखे खातिर कुछ नीति भी बनवलन। लेकिन ओह नीति के बनावे में उनकर उद्देश्य ई बराबर रहे कि राजसत्ता समाज के कल्याणकारी हो। राजशासन अइसे चले कि समाज सुखी हो, समाज के कल्याण हो, समाज में बुराई ना घुसे वगैरह। जब अंग्रेजी शासन के देश से हटावे के रहे तब के एह देश के आजादी के लड़ाई लड़ेवाला लोग के ई राजनीति रहे कि देश के एक बनावल जाय। अंग्रेजन के भगावल जाय, जाति-पाँति के भूत भेद-भाव ना डालो। सब मिल के अंग्रेज के भगावे में भाग लेव। ओह घड़ी नेता लोग में जो कवनो मतभेद भी होत रहे त अंग्रेजन के भगावे के तरीका का बारे में; अवधि अउर समय का बारे में। जाति लेकर के, सवारथ लेकर के, या पार्टीबन्दी लेकर के ना होत रहे। ओह घरी के कूटनीति कहीं या राजनीति कहीं, विदेशी शासक का खिलाफ इस्तेमाल होत रहे। आपसी मतभेद में, सवारथ के साधे में इस्तेमाल ना होत रहे। एह से ओह समय के राजनीति में चाणक्य के कूटनीति के उपयोग रहे। धीरे-धीरे समय के धार के मुताबिक राजनीति बदलत गइल। अंग्रेजन का गइला का बाद पद लेवे खातिर आजादी के सेनानी लोग में आपसी भेद-भाव बढ़त गइल, कूटनीति के प्रयोग आपसे में होखे लागल अउर राजनीति पूरा कूटनीति हो गइल। राजनीति के ई दशा अधिकतर १९५५—६५ का दशक में अधिक भइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकरा पहिले के राजनीति में गाँधीजी, नेहरूजी, डा० राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना आज़ाद वगैरह का देश-भक्ति अउर उनका व्यक्तित्व के अधिक प्रभाव रहे—ओह में आपसी संबंध में कूटनीति के लेश ना रहे। विहार में वा० श्रीकृष्ण सिंह, बाबू अनुग्रहनारायण सिंह आदि में, ओह लोग का समय के ऊपर लिखल देश के नेता लोग के संस्कार अउर प्रभाव पूरा रहे। ई लोग आपसी संबंध में द्वेषभाव, द्वेषनीति या छलनीति या कूटनीति में लेश मात्र भी विश्वास ना करत रहे। ओही उच्च कोटि के अगुआ लोग का छत्रछाया में अउर उनका नेतागिरी में स्व० श्री केदार पाण्डेयजी के राजनैतिक जीवन पल्लवित-पुष्पित भइल। एह से इनका में छोट दलनीति, आपसी द्वेषभाव आदि ना घुस सकल। ऊ लोग पूरा देश अउर पूरा राज्य विहार-के एक मान के ओकरा के पूर्ण रूप से आगे बढ़ावे के कोशिश करत रहल। एह वजह से करीब वीस वरस बाद भी जब राजनीति दलगत राजनीति अउर स्वारथ-साधन के नीति हो गइल, उनका से पुरनका संस्कार अउर विशाल—हृदयता ना छूटल। सबका मालूम बाटे कि जब कोई भी उनका राजनीतिक पार्टी यानी काँग्रेस (इ) का भीतर के बिरोध के बात करे त पहिले ऊहे डाँट सुने। एह मामला में स्व० पाण्डेयजी के दिल अतना साफ अउर दृढ़ रहे कि ऊ काँग्रेस (इ) पार्टी में कवनो तरह के बिरोध ना चाहत रहले। ई चाहत रहले जरूर कि पार्टी में कड़ा अनुशासन रहे, देश में श्रीमती इन्दिरा गाँधीजी के जिनका के पार्टी नेता चुनले वा आदेश के सब सदस्य पूरा-पूरा मानस। ओसहीं राज्य में भी जे पार्टी के वरीय नेता अउर सदस्य वा ओकर राय, ओकर अनुशासन कनीय कार्यकर्त्ता लोग अवश्य मानो। "जो पार्टी में रहीं त ओकर अनुशासन मानीं, नाहीं त छोड़ दीं"—ई स्व० पाण्डेय जी के बराबर कहनाम रहे।

जे स्वर्गीय श्री केदार पाण्डेयजी के नजदीक आवे ऊ अच्छी तरह जान जात रहे कि उनकर हृदय बहुत कोमल, भावुक अउर सरल रहे। ऊ एतना सरल अउर सहृदय रहलन कि उनका विश्वास ना होत रहे कि आदमी नमक हराम भी हो सकेला अउर नमक हराम होके दुश्मनी भी कर सकेला। उनकर विश्वास रहे कि कवनो आदमी के भी मदद अउर सेवा कर के ओकरा के जीतल जा सकेला जबकि जे केहू थोड़ा भी व्यावहारिक वा ऊ जानता कि आज काल्ह बहुत आदमी अतना गिर गइल वा कि जवना पत्तल में खाई ओही में छेद करी। केहू से अधिकतम स्वार्थ साध ली, आपन काम करा ली-फिर दोसरा जगह जाई त जो पहिलका आदमी का शिकायत से ओकर काम उहाँ निकले वाला होई त ओकर खूब शिकायत करी। अपना आत्मा के हनन अतना कर दीं कि ओकरा महसूस भी ना होई कि नाजायज कर रहल बाटे।

अगर केहू स्व० पाण्डेयजी से कही कि रउआ अमुक आदमी खातिर अतना समय दे रहल बानीं आ ऊ त राउर शिकायत अमुक आदमी किहाँ करत रहल ह त पाण्डेयजी के जवाब होई··· "रउरा ना नू समझलीं— ओकरा कवनो असन्तुष्टि होई—ओकर अउर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ कांम बाकी रहल होई। हम पार्टी के नेता बानीं। पार्टी का कार्यकर्त्ता के काम त हम करबे करबि। अगर ऊ नमकहराम भी बा त ई हमन नेता सब के दोष बाटे। ओकर दोष नइखे।" स्व० पाण्डेयजी एह प्रकार के सरल हृदय अउर साफ हृदय के नेता रहलीं।

स्व० पाण्डेयजी इहाँ जे भीड़ लागत रहे ओह भीड़ में समाज के सभ स्तर के लोग रहत रहे। ओमें देहात के सभ जाति, सभ दल के लोग रहबे करी, सभ स्तर के सरकारी कर्मचारिओ रहिहन। अक्सरहाँ पाण्डेयजी का कवनो मशहूर जलसा में जहाँ उनका भाषण करे के रहे ओ में जाये में देरी हो जाय। एकर कारण ई रहे कि उनकर कोशिश रहत रहे कि जुटल लोग में से सब केहू से भेंट हो जाय, कोई निराश ना जाय। अक्सरहाँ छोटा तवका के कर्मचारी जइसे सिपाही, जमादार, पिउनो आदि से भेंट करे के ओकर गरज पूछ लेत रहीं-एमें अक्सरहाँ देर हो जाय।

घड़ी देखत आ समय निहारत जब उनकर स्टाफ याद दिलावे कि फलाना सभा में जाये में देर हो रहल बा, अतना समय हो गइल त पाण्डेयजी ओह हस्तक्षेप से नाराज होके कहब ....."त का हम बड़का अफसर लोग से भेंट क लिहलीं अउर बड़का बाबू लोग ब्राह्मण-राजपूत लोग से भेंट कर लिहलीं त हइ छोटका कर्मचारी लोग से ना मिलीं; ई लोग के छोड़ के चल दीं त ई लोग कहाँ जाई ? केकरा से आपन सवाल कही ? इहो देश के जनता बा। हम एहू सब खातिर बानीं, ब्राह्मन-राजपूत- भुँइहारे खातिर नइखीं हरिजनो के, एह छोटका तवका के कर्मचारी के भी हमरा ऊपर ओतने अधिकार बाटे।" एकरा बाद उनकर स्टाफ का कोई जबावे ना रही। एक तरफ त ई हालत रहे, दोसरा तरफ सभा में देर से पहुँचला के कारण पाण्डेयजी के आलोचना लोग करे। लेकिन एह से स्व० पाण्डेयजी का कोई परवाह या चिन्ता ना रहत रहे। उनका एह बात के सन्तोष रहत रहे कि कवनो आदमी के ऊ निराश ना जाये दिहलन। जहाँ तक भइल सब का ऊपर ध्यान दे के राहत देबे के कोशिश कइलन। केहू के निराश ना जाये दिहलन एकर उनका आत्म सन्तोष अउर ओकर सुख होत रहे।

आजकल का राजनीति में या कूटनीति में छल-कपट भरल बा--छल-कपट के खेला बा। जे जतना तिकड़म करी, सफल होई; जे सिधाई करी, निश्छल होई, सीधा हाँकेवाला होई, ऊधक्का खाई, नुकसान भोगी, ओकरा आगे बढ़े में रुकावटे रही। लेकिन स्वर्गीय पाण्डेयजी अतना सत्यनिष्ठ अउर निश्छल रहलन कि ई बात आ ई चरम सत्य भी सुने के ना चाहत रहलन। कोई उनका से मिले आई आ उनका बारे में कुछ इनका मालूम रही त ऊ आवते उनका के सुना दीहन--"रउरा अइसन करीले। अइसन कहीले। ई ठीक ना ह। एसे त राजनीति गंदा होई।"

स्व० पाण्डेयजी का सत्यवादिता से, युधिष्ठिर-पंथी भइला से, उनकर बहुत नुकसान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होत रहे कहे कि आज का राजनीति में कांग्रेस (इ) दल में भी अनेक गुटबंदी बा। कतना इनकर विपक्षी आई, इनका से सब इनका दिल के बात जानली। अपना सिधाई में अपने आप सब कह दीहें अउर ऊ जा के अपना गुट के जना दी। ओकर फायदा उठा के इनहीं के सब तरे तंग करे लागी।

ई सब कोई जानत रहे अउर मानेला कि पाण्डेयजी का केहू के प्रति द्वेष-वैमनस्य ना रहे। विपक्षी लोग भी आई त उनका से अपना दल के सदस्य अइसन बात करिहें। ई बात बा कि आजकल के राजनीति गंदा हो गइल बाटे। ई ना राजनीति ह ना कूटनीति ह। ई कीचड़ नीति ह। एह में स्व० पाण्डेयजी स्वच्छ संस्कार के नेता अवश्य रहले। लेकिन ओह तरह के आज का राजनीति में अकेले रहले। जो इनका अइसन पुराना संस्कार अउर पुराना उच्च राजनैतिक आचरण वाला आधा दर्जन भी लोग रहित त राजनीति में अतना गंदगी ना फयले पाइत अउर गंदगी साफ होखे के उमीद कइल जाइत। लेकिन पाण्डेयजी अकेल आदमी रहले जे कीचड़ में कमल खिलावे के कोशिश करत रहले।

ऊ एही गंदगी के शिकार हो के अकाल काल के गाल में चल गइले अउर गंदगी साफ होखे के जवनो एगो आशा, के एगो टिमटिमात दिआ रहल ऊहो एह कीचड़ में गुल हो गइल। पाण्डेय जी के प्रकाशपूर्ण स्मृति आगे आवे वाली पीढ़ी के राह देखाई एह में सुबहा नइखे।

२७/श्री कृष्णपुरी
पटना–१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिले के अरमान दिले में रहि गइल

महेश्वराचार्य

□ □

श्री केदार पाण्डेयजी के अचानक निधन सुनि के हमरा ग्वाल कवि के नीचे लिखल ई कवित्त इयाद हो आइल

जाकी खूब खूबी खूब खूबन मैं खूबी खूब;
ताकी खूब खूबी खूब खूबी अवगाहना।
जाकी वदजाती बद जाती इहाँ पंचन मैं
ताकी वद जाती वदजाती हूँ उराहना।
ग्वाल कवि कहैं पर सिद्ध सिद्ध रहैं,
पर सिद्ध वहै जाकी इहाँ उहाँ की सराहना।
जाकी इहाँ चाहना है ताकी उहाँ चाहना है
जाकी इहां चाह ना है ताकी उहाँ चाह ना।।

पाण्डेयजी अइसन ना सुयोग्य शासक देश के मिली ना कुशल नेते। भोजपुरी के त पाण्डेयजी गर्व रहले हा। ऊ जो भोजपुरी के ना अपनवले रहिते त ना भोजपुरी के सम्मेलन खड़ा होइत ना अकादमी वनित।

हम पहिले ओहिल भोजपुरी में एगो आलोचना के किताव लिखलीं "सीता के लाल: एक समीक्षा"। मूल किताव "सीता के लाल" कवनो एम. एल. ए. के समर्पित कइल गइल रहे। एह सें समीक्षा के किताव के समर्पित करे के जव सवाल आइल त हमरा पाण्डेयजी से वढ़ि के दोसर सुयोग्य नेता, राष्ट्र-प्रेमी आ भोजपुरी के शुभचिंतक ना लउकल। तव हम आपन समीक्षा पाण्डेयजी के समर्पित क दिहलीं।

समरपन-समारोह के तिथि नवरात्र में परि गइल। हम विन्ध्याचल चलि आइल रहीं। एह से पाण्डेयजी के अपना हाथे हम किताव समर्पित ना क सकलीं। सोचत रहीं कि कभी हमहूँ उनुका आगा जाके परिचित हो जाइव। वाकिर ई हमार अभिलाषा पूरा ना हो सकल आ उहाँका एही वीच में चलि वसलीं। उहाँ से मिले के अरमान दिले में रहि गइल।

●

द्वारा डाकघर,, शाहपुर पट्टी
भोजपुर (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेय जी के साथ पाँच बरिस

शिवशंकर 'पाण्डेय भोजपुरी

□ □

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पटनावाला दोसरका अधिवेशन १५-१६ मई १९७३ के सफलतापूर्वक सम्पन्न कराके स्व० केदार पाण्डेयजी भोजपुरी भाषा आ साहित्य के प्रति आपन प्रेम भोजपुरी जगत में जाहिर करि चुकल रहीं। एह सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन सीवान में २९-३० अक्टूबर १९७७ के भइल रहे। सीवान के अधिवेशन से रंज हो के कुछ भाई लोग पटना आइल आ श्री केदार पाण्डेयजी से मिलि के सीवान के सम्मेलन में पदाधिकारिन केचुनाव में भइल गड़बड़ी के चलते अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के समानान्तर एगो अलग संस्था बनावे के प्रस्ताव राखल। संयोग अइसन कि ओह घरी हमहूँ ओहिजा गइल रहलीं। स्व० पाण्डेयजी सब लोग के बात ध्यान देके सुनलीं आ टपाक से कहलीं-ना, हम "समानान्तर संस्था बनावे के ना नू कहबि। अगर अपने सब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ केहू के डिक्टेटरशिप से रंज बानीं त अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से बड़का सम्मेलन बना के ओकरा माध्यम से भोजपुरी के विकास खातिर काम करीं सभे। कवनो रेखा के महत्व घटावे खातिर ओही के बगल में एगो बड़ रेखा खींचि देवे के चाहीं। छोटका के मेटावे के बात सोचल गलत ह।"

पाण्डेयजी के बात सुनि के सभ लोग उहां के मुँह टुकुर-टुकुर ताकत रहि गइल। थोड़ी देर के बाद सभ लोग प्रणाम कइ के चलि गइल। चूंकि हम अपना नौकरी से त्याग-पत्र देवे के बारे में बतिआवे गइल रहीं एह से ओहिजा बइठले रहि गइलीं। एही घरी दू कप चाय ले के एगो नोकर आइल आ हमनीं का दूनों आदमी चाय पीए लगलीं। हमरो चाय में चीनी ना रहे बाकिर लाज के मारे हम चीनी ना मँगलीं। पाण्डेयजी त एगो टेबुलेट डालि के पीए लगलीं। चाय के चुस्की ले-ले के उहाँका कहे लगलीं - "देखलीं नू एहलोग के बिगड़ल? कवनो आदमी जब कुछु करी त ओकरा से गलती होइबे करी। मिलि-जुलि के काम करे के मन नइखे त आइल हा लोग 'पारलल' संस्था बनावे। अइसन साफ जवाब दे देलींहाँ कि लोग के मुँह लटकि गइल हा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखीं ई लोग विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन बनावेला कि खाली बतिआइए के रहि जाला। विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के जरूरतो बा। भोजपुरी त भारत के बाहरो बोलल जाले। संसार भर के भोजपुरी भाई-बहिन से सम्बन्ध राखे खातिर कवनो अइसन संस्था बने के चाहीं जेकरा माध्यम से मारीशस, सूरीनाम, ब्रिटिश गायना आदि से सम्बन्ध बढ़ा के भोजपुरी भाषा के विकास कइल जा सके जहँवाँ भोजपुरी भाई-बहिन लोग भारत से जा के बसि गइल बा।" स्वर्गीय पण्डेयजी के बात आ सुझाव हमरा दिल में बइठि गइल आ ओही घरी हम संकल्प करि लिहलीं कि ऊ लोग ई काम करो भा मति करो, हम विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गठन कइए के दम लेवि। बस दोसरके दिन त पटना के पीरमुहानी के युनिवर्सल प्रेस में भोजपुरी भाषा के साहित्यकार आ हित - चिन्तक लोगन के एगो बइठक दिनांक १ - ११ - ७७ के शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठीजी के अध्यक्षता में बोलावल गइल आ प्रस्ताव पास कइ के विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ एकरा सामान्य देख - रेख में भोजपुरी विद्यापीठ के गठन कइल गइल। एह दूनों संस्थन के निवंधन भी सन् १९७७-७८ में ही करा लिहल गइल।

विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी विद्यापीठ के कार्यालय के विधिवत उद्घाटन युनिवर्सल प्रेस के एगो कोठरी में स्व० पाण्डेयजी के हाथे भइल। एह दूनों संस्थन के अनेक बइठक उहाँ के सभापतित्व में भइल काहें कि उहें का एह संस्थन के कार्यकारी अध्यक्ष रहलीं। अध्यक्ष मारीशस के तत्काल प्रधानमंत्री श्री शिवसागर रामगुलामजी के बनावल गइल रहे। एहीं से सब काम-धाम पाण्डेयजी के देख-रेख में ही होत रहे हम एह दूनों संस्थन के महामंत्री बनावल गइल रहलीं। चूँकि भोजपुरी विद्यापीठ के काम के आगे बढ़ावे में अधिक समय के जरूरत परल एह से विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के काम अधिकतर प्रस्तावे में रहि गइल। तबो आजु एकर एकावन आजीवन सदस्य बनावल गइल बाड़े जवना में एगो स्व० पाण्डेयजी भी रहलीं हाँ। भोजपुरी विद्यापीठ द्वारा चलावे खातिर भिन्न - भिन्न प्रकार के परीक्षा के पाठ्यक्रम तइयार भइल, एकर शिक्षा आ परीक्षा शाखा जय प्रकाश पथ (वोरिंग रोड) में श्री उमानाथ भू०पू० निदेशक पर्यटन विभाग आ तत्कालीन भोजपुरी विद्यापीठ के उपकुलपति के देखरेख में खोलल गइल आ तब से आजु तक बिहार के अनेक माध्यमिक विद्यालयन में परीक्षा केन्द्र खोलि के परीक्षा लीहल जा रहल बा। भोजपुरी विद्यापीठ के परीक्षा में उत्तीर्ण लगभग पाँच सौ विद्यार्थिन के प्रमाण - पत्र भी स्व० पाण्डेयजी के कर-कमल द्वारा दीहल जा चुकल बा। सन् १९८१ के समारोह में प्रमाण - पत्र बाँटल गइल रहे। भोजपुरी विद्यापीठ के परीक्षन के चलावे खातिर हर तरह के सहयोग स्व० पाण्डेयजी देत रहीं। एही क्रम में उहाँका एक हजार एक रुपया के सहयोग भी एक मुश्त एक बार देले रहीं। पाण्डेयजी एह दूनों संस्थन के आजीवन सदस्यो रहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी विद्यापीठ के काम कुछ सरिआ गइला पर विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन करे खातिर उहाँका जोर देवे लगलीं। एकरा कार्यकारिणी के दिनांक ६-१०-७८ के ही वइठक में पाण्डेयजी प्रस्ताव रखलीं कि एक लाख रुपया खर्च कइ के एगो अधिवेशन पटना में कइल जाय। उहाँ के एह विचार के अनुसार अधिवेशन करे खातिर हम प्रयास करे लगलीं। वाकिर विभिन्न कामन में फँसि गइला का कारन एह काम में हम तेजी ना ले आ सकलीं, जेकर हमरा काफी दुख वा। सन् १९८२ के नवम्बर में हम दिल्ली जाके अधिवेशन दिल्ली में ही करे खातिर पाण्डेयजी से वात कइके श्री ए० पी० शर्मा आ श्री भीष्मनारायण सिंह से भी वतिअवलीं। ई तीनों नेता ओह घरी केन्द्रीय सरकार के मंत्री रहलन। विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन दिल्ली में ही होखो तय हो गइल वाकिर समय के वारे में निर्णय ना हो सकल। अप्रिल-मई, ८३ में एकर अधिवेशन करे के वात मन में रहे। वाकिर भगवान के ई मंजूर ना भइल। ऊ पाण्डेयजी के ही हमनी से छीनि ले गइले। का कहीं, जव से पाण्डेयजी उठि गइलीं तव से हमार दिल वइठि गइल वा। उहाँका हमनी के राह वता के चलि गइलीं। अव हमनी के धरम वा कि पाण्डेयजी के अधिवेशन करे वाला सपना के साकार करीं।

विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी विद्यापीठ के कोष जमा करे खातिर चन्दा अभियान चलावल गइल। एही क्रम में पाण्डेयजी भी दू मोका पर हमरा साथे दू नामी-गिरामी आदमी के पास चन्दा माँगें गइलीं। एह दूनों आदमी में से एगो रहले मौर्याक्लार्क होटल के मालिक आ दोसरका रहले जनता पार्टी के विधायक श्री सूरजदेव सिंह। पाण्डेयजी के ही फिएट से हमनींका दूनों आदमी मौर्याक्लार्क होटल पहुँचलीं आ होटल के मालिक के पास खवर भेजलीं। होटल के मालिक अपना कार्यालय से वाहर आ के हमनीं के भीतर ले गइले। वड़ा आवभगत से वइठवले आ कॉफिओ पिअवले। पाण्डेयजी विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी विद्यापीठ के चन्दा देवे खातिर जसहीं कहलीं तसहीं होटल के मालिक हमरा से पुछलन कि का राउर संस्था आयकर विभाग में निवंधित वा? हम उत्तर दिहलीं कि ना। तव उहाँका कहलीं कि रउरा आयकर विभाग में एह संस्थन के निबंधन करा के आईं। एकरा वाद पाण्डेयजी भी हमरा ओरि ताकि के कहलीं —ठीके वा, रजिस्ट्री कराके आइल जाउ।" आयकर विभाग में निवंधन करावे के प्रयास हो रहल वा। पूरा हो गइला पर हम फेरू मौर्याक्लर्क के मालिक के पास जाइवि। दोसरका आदमी, जेकरा किहाँ हमनीं का दूनों आदमी एह संस्थन के चन्दा माँगे गइलीं जा उनका वारे में भी त पहिलहीं वता देले वानीं कि उहां का जनतापार्टी के विधायक वाबू सूरजदेव सिंह हईं। सूरजदेव वावू नया-नया झरिया क्षेत्र से विधान सभा के सदस्य चुनाइल रहीं। सरकारी मकान ना मिलला का वजह से उहाँका ओह घरी राजस्थान होटल में ठहरल रहीं। हमार एगो भाई, जेकर नाम डा० सिद्धिनाथ पाण्डेय ह, ओह घरी झरिया में काम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करत रहलें। उनुका सूरजदेव बाबू से थोड़ा परिचय रहे। सूरजदेव बाबू से शायद ऊ एह संस्थन का बारे में बतिअवले भी रहले। उन्हुकरे कहला से हमनीका सूरजदेव बाबू से मिले खातिर राजस्थान होटल में पहुचलीं। होटल में हमनीं का पहुँचते एक प्रकार के तहलका मचि गइल। लोग पाण्डेयजी के बारे में पूछताछ करे लागल। सूरजदेव बाबू कमरा से बाहर आके हमनीं के अपना कमरा में ले गइले आ चाय पिअवले। चाय पिअते-पिअते पाण्डेयजी सूरजदेव बाबू से विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी विद्यापीठ के चन्दा देबे के कहलीं—"सूरजदेव बाबू, हमरा के रउरा चन्दा दीं। हमनींका विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी विद्यापीठ खोलि के एह भाषा के विकास के कोशिश करतानी जा। रउरा जइसन भोजपुरिया सभ का भी मदद करेके चाहीं।" सूरजदेव बाबू कहलीं —"हम जरूर सहयोग करबि। रुपया ले आवे खातिर आदमी भेजि रहल बानीं, मँगा के पाँच हजार रुपया रउरा पास भेजि देबि।" सूरजदेव बाबू के कवनों आदमी रुपया देवे ना आइल आ हमनिओंका दोहरा के ई सोचि के ना गइलीं कि जब बाबू साहब कहलहीं बानीं त भेजिए देबि। ओह घरी जनता पार्टी के सरकार रहे, हो सकेला सूरजदेव बाबू पार्टी के काम में फँसि के चन्दा भेजवावे वाली बात भुला गइल होखसु। हमहूँ सरकारी काम में बाझल रहि गइला के वजह से सूरजदेव बाबू से दोहरा के भेंट ना करि सकलीं। अब त सरकारी सेवा से स्वेच्छा से छुट्टी ले के हम खालिये हो गइल बानीं। पाण्डेयजी के लालसा रहे कि पटना में सरकारी जमीन के बन्दोबस्त करा के ओहिजा विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी विद्यापीठ के कार्यालय भवन बना के ओकर नाम "कुँवर सिंह भवन" राखल जाउ।

एक बार पाण्डेयजी चन्दा माँगे खातिर सोनपुर के बच्चा बाबू (प्राइवेट जहाज कम्पनी के मालिक) के पास हमरा के भेजलीं। बच्चा बाबू कहलीं कि पाण्डेयजी से पूछि के ही कुछ करबि। हम अनेक बार दउड़ लगवलीं बाकिर हर बार खबरि मिले कि पाण्डेयजी से बात ना हो सकल हा। हमहूँ बीमा कम्पनी के एजेन्ट माफिक जवन घरी बोलावल जाईं पन्द्रह मिनट पहिलहीं पहुँचि जाईं। जात-जात हमरा त नाकोदम होइये गइल बाकिर "बच्चा बाबू" भी कम नाको चाना ना चबवले होइहें। अन्त में एक दिन बच्चा बाबू हमरा के देख के अपना एगो आदमी के कहले कि दे दीं। ई बुझा गइल कि पहिलहीं से हमरा के देवे खातिर तइयारी रहे। हमरा के एगो लिफाफा मिलल। बच्चा बाबू कहलीं–पाण्डेयजी से बाते ना होत रहे एह से देरी हो गइल हा। बात भइला पर, उहाँका कहलीं हाँ कि ठीक बा दे दीं। रउरा बहुत बार आवे के परल बाकिर बे जनले हम कइसे दे दीं। अबहीं अतने ले जाईं, फेरु देबि। लिफाफा लम्बा रहे एह से देखि के पता ना चलि सकल कि एह में कतना होई। बाकिरू एह में एक हजार रुपया रहे। हमरा एह प्रस्ताव पर कि बच्चा बाबू भोजपुरी विद्यापीठ के गद्य-पद्य संग्रह छपवा दीं, बच्चा बाबू कुल खर्चा के हिसाब मँगले रहीं जवन हम आजु तक ना दे सकलीं। विद्यापीठ के नया कमिटी बनि गइल बा। एह कमिटी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के सुझाव के अनुसार खर्चा के हिसाव तइयार कइके पूरा विवरनी लेके हम फेरु बच्चा बाबू से मिलवि।

स्वर्गीय केदार पाण्डेयजी राजनीति के काम में फँसल रहला का वादो एह दूनो संस्थन खातिर जब-जब हम मँगलीं, समय दिहलीं। मन वचन आ कर्म के धनी पाण्डेयजी सशरीर हमनीं का साथे अव नइखीं वाकिर एह दूनों संस्थन के संचिकन्ह में उहाँ के अनेक आदेश आजुओ हमरा के रास्ता बता रहल बा। जवन काम स्व० पाण्डेयजी प्रारम्भ करि गइल वानीं ओह कामन के आगे बढ़वलके उहाँ के असली स्मारक होई।

शंकर सदन

जी ३२—पीपुल्स कोऑपरेटिव कालोनी, पटना २०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदार-चेता पाण्डेयजी

राम अवधेश तिवारी

□□

स्वर्गीय पाण्डेयजी से हमार पहिले पहिल परिचय श्री जगन्नाथ प्रसाद सिंह, भूतपूर्व सदस्य, विहार विधानसभा, १९५२ में करवलीं। पहिला मिलन में ही हम उहाँ के व्यक्तित्व से बड़ा प्रभावित भइलीं। कुछ काल के बाद में हमार उहाँ से सम्बन्ध आउर गाढ़ होत गइल। स्वर्गीय पाण्डेय जी कतना महान रहलीं, ओकरा बारे में दू-चार इआदगारी काफी होई। १९४२ ई० में भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेला खातिर पाण्डेयजी एगारह महीना खातिर जेल-यातना सहलीं। ओह कठिन हालत में जेल से लवटि के उहाँका बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम० एस-सी० एल-एल० बी० के डिग्री पवलीं। सन् १९५२ ई० के आम चुनाव में काँग्रेस के उम्मीदवार के रूप में पहिला बार बिहार विधान-सभा के सदस्य भइलीं। १९५७ से १९६२ तक गृह (आरक्षी), सामान्य प्रशासन, सिंचाई आ विद्युत विभाग के उपमंत्री आउर १९६९-७१ ले बिहार के उद्योग, नदी घाटी योजना, सिंचाई आ विद्युत विभाग के मंत्री रहीं। १९७२-७३ में मुख्य मन्त्री के अवधि में के प्रशासन अउरू जादेतर शिक्षा के क्षेत्र में जे काम कइलीं, ऊ शिक्षा के इतिहास में सोने के अक्षर में लिखाई। बिहार काँग्रेस दल के संगठन में अध्यक्ष के रूप में उहाँका सबसे उच्च पद पर रहलीं। अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटी में भी पचीस बरिस तक रहि के दल में बहुत काम कइलीं। केन्द्रीय मन्त्रिमंडल में रेल मन्त्री, सिंचाई मन्त्री रहि के देश के सेवा कइलीं। कई सामाजिक संस्थन से उहाँ के सम्बन्ध रहे। स्व० पाण्डेय जी सरल-निर्मल व्यक्तित्व के महामानव रहीं। आज जहाँ उच्च पद पर रहे वाला लोगन के सम्बन्ध में भ्रष्टाचार के अनेक बात उठता, चाहे ओकरा में जादेतर झूठे काहे ना होखे लेकिन स्वर्गीय पाण्डेय जी के कवनो तरह के कबो कोई अपवाद सुने के ना मिलल। आज के युग में ई छोट बात ना होके सभ से बड़ बात बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज के सार्वजनिक जीवन में एह तरह के चरित्र कुछुए लोग के होई। एकर मुख्य कारन उहाँ के धर्मनिष्ठ आउर निष्ठावान राजनीतिज्ञ नाते समाज में बड़ा भारी आदर रहे। उहाँके जरूरत से जादा निश्छल, नरम आउर सरल सोभाव के आदमी रहीं। उहाँ के वेवहार कवहूँ भुलाइल ना जा सकेला। एकरा अलावे ई कहल जाय कि स्वर्गीय पाण्डेयजी सिर से पाँव तक विनय के साक्षात मूरति रहीं त कवनो अतिशयोक्ति ना होई। उहाँ के काम में विसवास करत रहीं। बातचीत के दौरान उहाँका गीता के ई पंक्ति बरावर लोगन से कहीं :—

"कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन"

मानव के काम करे के अधिकार मिलल बा, फल के चिन्ता ना करे के चाहीं। कठिन- से-कठिन काम सरलता आउर सफलता से करि के धरि देत रहीं। उहाँ में जतना उत्साह के जरूरत होला, ऊ सभ कूट-कूट के भरल रहे। एक बे एगो बिरोधी सज्जन अपना निजी काम में मदत खातिर उहाँ से आग्रह कइले। ओह काम के करावे खातिर पाण्डेयजी हमरा से कहलीं। हम इनकार करते कहलीं कि अइसन दुष्ट आदमी के पाप निअन काम करे खातिर हमरा से मत कहल जाय। उहाँका तुरंते हमरा से कहलीं —"सूरुज के प्रकाश पुष्प अउर विष्ठा दोनों के समान रूप से मिलेला। एह से हमार करतब बा कि जब हम समर्थ बानीं तब आपन आउर पराया दूनो के मदत समान रूप से करीं।"

ई उहाँ के बड़ मानव होखे के चिह्न रहे, जेकरा के हमकवहूँ भूल ना सकीं। स्वर्गीय पाण्डेयजी के जीवन वास्तव में एक अनुकरन करे जोग जीवन रहल। एह सन्दर्भ में हम एक घटना के रउरा सभ से बतलावे के चाहतानीं। एक बेरि विधान सभा के बइठक में एगो सदस्य सदन में उहाँ के बड़ा कटु आलोचना गंदा भासा में कइले। पाण्डेय जी अपना सरकारी जवाब में अपना के बड़ा संजम से सभा में रखलीं। ओह दिन के बइठक खतम भइला के बाद उहाँ के कुछ मित्र सदस्य आउर हमहूँ कहलीं कि रउरा ओह सदस्य के जवाब खूब कड़ा आउर उन्हुके भासा में देवे के चाहत रहे। स्वर्गीय पाण्डेयजी बड़ा तपाक से भोजपुरी कहावत सुनवलीं :—"कादो कादो से ना धोआए, ओकरा खातिर निरमल जल चाहीं।"

हमनींका सभ कोई अवाक होके उहाँ के मुँह ताकते रह गइलीं। अपना घोर विरोधी तक के खेआल बरावर राखत रहलीं। ओहू लोगके काम करे में ओतने उत्साह देखावत रहलीं, जतना अपना लोग खातिर। स्वर्गीय पाण्डेयजी कवहीं झूठ बोलिके केकरो के भुलावा में ना राखत रहीं। ई उहाँ के महान व्यक्तित्व आउर स्वच्छ चरित्र के सबूत बा। हम उहाँ के हरमेस एगो उदात्त पुरुष के रूप में देखलीं आउर समझलीं। राजनैतिक, सांस्कृतिक आउर शैक्षणिक क्षेत्र में एक जइसन योग्यता देखि के चकित रहि जात रहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ा खुशी के बात बा कि हमरा स्वर्गीय पाण्डेय जी के नेह आउर नगिचाह पावे के सौभाग्य मिलल। तवो हम ई कवहूँ ना कहवि कि हम उहाँ के सभ तरह से सभ वड़प्पन के समझ सकलीं। स्वर्गीय पाण्डेयजी प्रेम के पवित्रता के गंगा के एक हिलोर अइसन अन्तःकरण के जवानी से भिंगा देवेवाला उदार चिन्तक आउर मनीषी रहीं। का विहार कवो उहाँ के भुला सकी ? अइसन महामानव के नगीच पाके हमहूँ अपना के गौरवान्वित समुझतानीं। एही शव्दन के साथ हम सरधा के सुमन उहाँ के स्मृति में अरपित कर तानीं।

तिवारी निवास
उत्तरी श्रीकृष्णपुरी, वोरिंग रोड,
पटना–१३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के सपूत

सांवलिया 'विकल'

□ □

१९१७ ई० में महात्मा गान्धी चम्पारन आ के आजादी के जे शंख फूंक गइल रहस, चम्पारन के लोगनि में ओकर प्रभाव १९४२ में वढ़-चढ़ के रहे आ इहे कारन रहे कि महात्मा गान्धी के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के जब नारा गूंजल, चम्पारन के वच्चा-बूढ़ा-जवान, औरत-मर्द, विद्यार्थी-किसान याने सँउसे चम्पारन, 'करो या मरो' के व्रत ले के आन्दोलन में कूद पड़ल। जगहे-जगहे रेलवई के पटरी-उखड़ाए लागल, टेलीफोन के तार कटाए लागल, थाना-डाकखाना धह-धह लहक उठल। ओने गोरा पलटन के सिपाही आपन वन्दूक भाँजत आन्दोलनकारिअन के सरग पेठावत अपना उखड़त पाँव के जमावे में वेचैन रहन।

१९४२ में रामनगर (चम्पारन जिला के एगो थाना) वीर-बाँकुड़ा पैदा कइले रहे। गौनाहा के माटी राज कुमार सुकुल के पैदा कइलस जे १९१७ में गान्धी जी के ध ले अइले। शिकारपुर में विपिन विहारी वर्मा, चनपटिया में प्रजापति मिश्र आ गुलाली सोनार ,वगहा में कमलनाथ तिवारी आ नवतन में केदारमणि शुक्ल जइसन स्वतंत्रता सेनानी पैदा भइले त रामनगर में केदार पाण्डेय। एतना नाँव गिनावे के मतलव ई नइखे कि चम्पारन के आउर सभ हिस्सन में स्वतंत्रता सेनानी पैदा ना भइल रहस आ स्वतंत्रता के लड़ाई में जम के अंग्रेजन से लोहा ना लेले रहस। नाँव सभ हम वानगी के रूप में रखलीं हँ एहसे कि एह लेख के नायक स्व० केदार पाण्डेय जी के वारे में हम कुछ प्रकाश डाल सकीं।

पाण्डेय जी के परिवार से हमार लगाव वहुत नजदीकी के रहल ह। कारन, पाण्डेयजी के गाँव तौलाहा में हमार ननिहाल ठहरल। हमरा बचपन के जियादे दिन ननिहाले में बीतल। हमरा देखे के मिलल कि पाण्डेय जी के परिवार आ हमरा मामा के परिवार में जे भाईचारा रहे, मधुर सम्वंध रहे , ऊ विरले मिलेला। हमरा याद वा दूनों परिवारन के लोगनि में 'काका-भइया, काकी-भउजी' के गुड़-मिसरी मिलल सम्वोधन। दूनो परिवारन के औरत लोगनि में ओइसने प्रेम-भाव रहे। दूनो घर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लइकी लोग पारा-पारी एक दोसरा किहाँ जाय आ खान-पान, गप-सप करे लोग। सखी-बहिनपा के रिश्ता ओह लोग में खूब गाढ़ रहे।

हमरा एगो छोटका नाना जंग बहादुर लाल के एके गो बेटा वासुदेव प्रसाद रहस। ऊ पाण्डेय जी के हमउमिरिया रहस। १९४२ के आन्दोलन जब छिड़ल, दूनो जने एके-सँगे ओह आन्दोलन में कूद पड़ले। ओह गाँव से इहे दूनो जने एक संगे दिन-रात ओह आन्दोलन में आपन कमाल देखावल लोग। रेलवई के पटरी उखाड़े से ले के टेलीफोन के तार काटे में आ ओह इलाका में थाना, पोस्ट आफिस, रेलवे स्टेशन आदि लहकावे में आगे-आगे रहल। ओने अंग्रेजी पुलिस वारंट लेले ओह लोग के पीछा करत फिरे। हमरा इयाद बा—हमरा मामा (वासुदेव प्रसाद) के पकड़े खातिर दिन भर घड़सवार पुलिस गाँव में, दरवाजा पर चक्कर लगावत, गाँववालन के डेरवावत- धमकावत घोड़दउड़ करे। बाकिर ऊ दूनो जने भूमिगत हो गइल रहस। बाद में पाण्डेयजी त पड़क लीहल गइले आ हमार मामा (वासुदेव बाबू) क्षमा माँगि के बरी हो गइले आ आन्दोलन से आपन नाता तोड़ लिहले। उनकर बाप-मतारी ना चाहे लोग कि उनकर एकलउता जेहल जाय। हमार समझ बा—सैंकड़ में कमे लोग होला जे अपना बेटा के कवनो आन्दोलन में जाए देवे के चाहेला, ओहू में एकलौता के। आ इहो बात बा कि जतना लोग आजादी के लड़ाई में कूदल रहे, ओह में कमे लोग अइसन रहे जेकरा अन्दर देश-प्रेम, गुलामी के कसक आ मातृभूमि के रक्षा के भाव रहे। उहे लोग खुसी-खुसी लाठी-गोली खाइल, जेहल मे बन्द भइल आ अनेक प्रकार के दुख-तकलीफ सह के देश के आजाद करावे में अगुआई कइल। पाण्डेय जी का सँगे हमार मामा स्वाधीनता संग्राम में कूदल रहस त जरूर, बाकिर उनका अन्दर देश-प्रेम के कमी रहे भा आन्दोलन के दौरान अँग्रेजन से मिल रहल दुख- तकलीफ सहे के साहस ना रहे जेकरा वजह से ऊ अंग्रेजन से क्षमा माँगि लिहले आ ओने पाण्डेय जी राष्ट्र सेवा के आपन धर्म समझ के आपन तन- मन-धन सब दाव पर लगा के वीर सेनानी बनल रह गइले। फल ई भइल कि आजादी मिलला का बाद पाण्डेयजी राष्ट्रनायक कहाए के हकदार भइले आउर वासुदेव बाबू सौ-दू सौ के मास्टरी क के आपन भार बनल जिनिगी ढोवत रह गइले। हम ई बात एह से कह रहल बानीं कि पाण्डेयजी के अन्दर देश-प्रेम ना रहित त उहो एम० एस-सी० के डिग्री ले के कहीं प्रोफेसरी करे लगिते, राजनीति के पचड़ा में ना परिते। बाकिर, कांग्रेस के एगो साधारन कार्यकर्त्ता के रूप में उनकर आगमन राजनीति में भइल आ ऊ अपना देश-भक्ति आ समाज सेवा के भाव के बल पर बढ़त-बढ़त केन्द्र में मंत्री के ओहदा ले पहुँचले। जो पाण्डेयजी के असमय मृत्यु ना होइत त ई कवनों अचम्भा के बात ना रहल ह कि ऊ आउर ऊँचा ओहदा ले पहुँचिते।

जइसन हम ऊपर बता चुकल बानीं, पाण्डेयजी के देखे के मोका हमरा बहुत निगचा से मिलल बा। उनका में घमंड नाँव के कवनो बात ना रहल ह। हम देखले बानीं, बिहार सरकार में मंत्री बनला के पहिले आ बाद में उनकर सुभाव एके तरह के रहल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब ऊ गाँवे अइहन, उनकर गाड़ी हमरा मामा के दुआर पर आवे-जाये के बेरी कुछुओ देर खातिर जरूर रुकी आ गाड़ी से उतर के ऊ प्रणामा-पाती करिहें, हाल-समाचार होई तब ऊ आगे बढ़िहें। गाँव के आउर सब लोगनि के साथ ऊहे 'काका' 'भइया' आ 'बबुआ' वाला सम्बोधन! गाँव-इलाका के लोगनि के दुख-दर्द उनकर आपन दुख-दर्द बनल रहत रहल ह।

रामनगर विधान सभा क्षेत्र से पाण्डेयजी के प्रवेश विधान सभा में पहिले-पहिल १९५० ई० में भइल। पाँच बरिस के अपना कार्यक्रम में पाण्डेयजी ओह इलाका खातिर बहुते कुछ कइले। बाकिर एगो बात के उनका में कमी रह गइल। ऊ रहल भाई-भतीजावाद। आ इहे कारन रहे कि अगिला चुनाव में ऊ रामनगर क्षेत्र से हरा दीहल गइले। उनका के हरावे में जियादे भूमिका रहल उनके पट्टी-पटिदार आ गाँव वाला लोगनि के। स्वार्थ में अन्धा हो के ऊ लोग पाण्डेयजी के रामनगर क्षेत्र छोड़ा त दीहल बाकिर एह से पाण्डेयजी के नुकसान त कुछ ना भइल, नुकसान उठावे के पड़ल रामनगर क्षेत्र के जनता के। ओने पाण्डेयजी के पा के नवतन क्षेत्र के जनता निहाल हो उठल। १९६७ से १९७७ के चुनाव ले लगातार ऊ नवतन क्षेत्र से विधान सभा में प्रतिनिधि बन के गइले आ मन्त्री-मुख्यमंत्री के रूप में रहि के पूरा बिहार के सेवा कइले। १९८० ई० में नवतन क्षेत्र के जनता के छाती गर्व से आउर फूल उठल जब पाण्डेयजी बेतिया लोक सभा क्षेत्र से (जे में नवतन शामिल बा) संसद सदस्य चुना के लोक सभा में गइलें आ उहाँ केन्द्रीय मंत्री बनले। नवतन विधान सभा क्षेत्र पाण्डेय जी का छोड़ला के बाद नवतन के जनता पाण्डेयजी के पत्नी श्रीमती कमला पाण्डेय के आपन प्रतिनिधि चुन के विधान सभा में भेजलस। एह संभावना से इन्कार नइखे कइल जा सकत कि श्रीमती पाण्डेय बिहार सरकार में मंत्री पद पा के नवतन क्षेत्र के सँगे-सँगे पूरा बिहार के सेवा ओही रूप में करिहन जइसन पाण्डेयजी कइलन।

पाण्डेयजी के राजनीतिक जीवन आ सामाजिक जीवन के चर्चा हम अपना जानकारी के अनुसार ऊपर कइलीं हँ। अब जो उनका सांस्कृतिक जीवन के कुछ चर्चा ना होई त हमरा देखे में ई लेख अधूरा रह जाई। त लेख के आगे बढ़ावत हमरा कहे में कवनो संकोच नइखे कि पाण्डेयजी का जतना प्यार अपना मातृभूमि से रहे, मातृभाषा (भोजपुरी) से भी ऊ ओतने प्यार करत रहन। अपना गाँव-घर में त ऊ भोजपुरी में बतिआवते रहलन हँ, बाहर भोजपुरी क्षेत्र में जहँवाँ भासन करे जात रहलन, उनकर भासन भोजपुरिए में होत रहे। एह माने में ऊ स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद के परम्परा जीवन भर निबाहत रहले। भोजपुरी के विकास खातिर पाण्डेयजी बराबर चिन्तित रहस। उनका अथक प्रयास से बिहार में भोजपुरी अकादमी के स्थापना भइल। बिहार के विश्वविद्यालयन में भोजपुरी के पढ़ाई शुरू भइल, बाकिर एतने से उनका सन्तोष ना रहल ह। ऊ चाहत रहलन हँ कि बिहार आ उत्तरप्रदेश में भोजपुरी के पढ़ाई निचला दर्जा से होखो। उत्तरप्रदेश आ मध्यप्रदेश में भोजपुरी अकादमी के स्थापना हो जाय आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संविधान के अष्टम सूची में भोजपुरी के मान्यता मिल जाय। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पिछला अमनौर अधिवेशन में उनका भासन से हमनी भोजपुरिहा के आसा बँधल कि अब सचहूँ पाण्डेयजी के प्रयास से भोजपुरी के नीमन दिन लवटेवाला बा। बाकिर विधि के विधान कि पाण्डेयजी अपना बचन के पूरा करे के पहिलहीं हमनी भोजपुरिअन के रोअत-बिलखत छोड़ के परलोकवासी हो गइलन। साहित्य आ कला से उनका बहुते लगाव रहल ह। ऊ विज्ञान के विद्यार्थी-जीवन से गुजरल व्यक्ति रहलन। आउर जगहा के बात त हम ना करब, बाकिर बेतिया भा रामनगर में कवनों अइसन साहित्यिक समारोह ना होत रहल ह जवना में पाण्डेजी के सहयोग आ शुभकामना प्राप्त ना होई। अपना व्यस्त जीवन से समय निकाल के ऊ ओह समारोह में जरूर शामिल होखे के प्रयास करत रहलन हँ। एह तरे हम जो उनका राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आ वैयक्तिक जीवन के पूरा-पूरा वर्णन करे के चाहीं त एह छोटहन लेख में सम्भव नइखे। एह से हम आपन बात इहँवें खतम करत उनुका इआद में आपन सिर नवावत बानीं।

डी/१९, गंडक कॉलोनी—२
मोतीहारी-८४५४०१
(पू० चम्पारण)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पित राजनेता

रामाश्रय प्रसाद सिंह

□ □

भोजपुरी इलाका में एगो कहावत बड़ा प्रचलित वा—

"काटीला खर-वन छाईला टाटी।
का जानी राम कहाँ लगिहें माटी।।"

के जानत रहे जे पंडित केदार पाण्डेय एतना जल्दी हमनी के छोड़ के वासठे वरिस का उमिर में परलोक चल जइहन। जे आदमी राजनीति के अपना जीवन के अंग वनवले रहे आ ओकरे जरिये जन-सेवा करे खातिर वेहाल रहे, ऊ बीचे में विधाता का विधान का अनुसार संसार से हमेसा खातिर विदा हो जइहें, एकर तनिको आभास ना रहे। गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरित मानस' के 'अयोध्याकाण्ड' में एगो दोहा आइल वा—

"सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस विधि हाथ।।"

मरन पर केकर बस वा! महाकाल देवता के कवर कहाँ आ कब के बनी, के कह सकता—'जगत चवेना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद' कवीर बाबा दर्शन का भाषा में वहुत पहिले कह गइल बाड़न।

पाण्डेयजी चम्पारन के विभूति रहलन। ऊ कवनो सीमा में अपना के ना बन्हले। उनकर सेवा के क्षेत्र खाली बिहारे आ चम्पारन ना रहे। अगर अइसन बात रहित त ऊ राजनीति में ना अइते। उनका खातिर राजनीति पेशा ना रहे। राजनीति के ऊ सेवा के सब से नीमन माध्यम मानस। एही से उनकर क्षेत्र आसाम से लेके गुजरात तक आ काश्मीर से लेके कन्याकुमारी तक रहे। गाँधीजी के राह पर निर्भीकता के साथ चलते रहे में ऊ आपन सबसे बड़का धर्म मानत रहले। एही से कवनो पद मिलल भा ना मिलल, एकर चिन्ता पाण्डेयजी का ना रहे। ऊ त एकेगो बात जानस जे भारत के सब लोग के जतना सेवा हो जाय, कर लेबे के चाहीं। सेवा के ही उहाँका आपन आदर्श बनवले रहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोतीहारी से आपन कर्म-यज्ञ शुरू कके पटना होके भारत के राजधानी नई दिल्ली तक पहुँच के आ कांग्रेस के साधारन सिपाही से लेके बिहार के मुख्यमन्त्री आ भारत सरकार के सिंचाई आ रेलमन्त्री जइसन ऊँच पद पा के भी उनका में कवनो प्रकार के अहं ना आइल। पद आदमी के घमण्डी बना देला। पंडित केदार पाण्डेयजी का जीवन में अहंकार नाम के कवनो चीज हम ना देखलीं। ई एगो अइसन गुन उनका पास रहे जेकर बराबरी दोसर कवनो गुन ना कर सके। एह संसार में मनुष्य बनल सबसे बड़का गुन ह। उर्दू के एगो शायर कहले बाड़न —

"नहीं दुश्वार है हर चीज का आसाँ होना।
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्साँ होना॥"

केदार पाण्डेयजी शब्द का सही अर्थ में मनुष्य रहलीं। इंसानियत के दामन उहाँका कबो ना छोड़लीं। उनकर राजनीतिक बिरोधी भी ई बात कहेला लोग जे पाण्डेयजी में मनुष्यता कूट-कूट के भरल रहे।

केदार पाण्डेयजी समर्पित राजनेता रहलीं। उहाँ के सबसे बड़का गुन धीरता रहे। कठिन से कठिन समय में भी पाण्डेयजी आपन धैर्य बनवले रहीं। बिचलित होखे के त ऊ नाँवे ना जानस। हमेसा मुस्कुराहट उनका मुँह पर बनल रहे। उहाँ के हृदय विशाल रहे। ईहे कारन रहे जे छोट-मोट धक्का के उहाँका कवनो गम ना करीं। उनकर विचार रहे जे सत्य सत्य ह आ झूठ झूठ। दोसरा खातिर प्रेम आ सहानुभूति उनका हृदय में हमेशा बरकरार रहे। उनका हृदय के तुलना ओह सरोवर से कइल जा सकता जेकर पानी कबो ना सूखे। प्रेम, सेवा, सहानुभूति आ विश्वास के उहाँका अइसन सरोवर रहलीं जे केहू निरास आ उदास होके उहाँ से ना लवटल।

काल देवता पर केकर बस बा। काल का अनन्त प्रवाह में एक दिन सबका दह जाए के बा। बाज इंसान कुछ अइसन होले जे काल-प्रवाह में आपन चीन्ह छोड़ जाले। पंडित केदार जी भले अपना शरीर से ई संसार छोड़ के चल गइले, तबो यश के शरीर से उहाँका हमनीं का बीच में कायम रहब। धरती पर अपना कर्म, सेवा आ प्रेम के गंगा प्रवाहित कके पाण्डेयजी काल देवता के अनवरत आ शाश्वत प्रवाह के अंग बन के चल गइलीं। हमनी के ई कर्तव्य बा जे उहाँ का बतावल राह पर चलीं आ एगो समर्पित आदमी बन के समाज के सेवा करीं। इहे उहाँ का प्रति हमनी के सही श्रद्धांजलि होई।

"विद्या वृत्तेन शोभते"

रीडर, हिन्दी विभाग
एम० एस० कालेज, मोतीहारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकप्रिय जननायक श्री केदार पाण्डेय जी

उमानाथ

□ □

स्वाधीन भारत के पहिला राष्ट्रपति देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद जी, बिहार केसरी डा० श्रीकृष्ण सिंह जी आ बिहार-विभूति डा० अनुग्रह नारायण सिंह जी के पीढ़ी का बाद, बिहार-प्रदेश में, देशभक्ति आ जनसेवा का वलिवेदी पर मर मिटे के हौसला रखेवाला नौजवानन के जवन पीढ़ी पैदा भइल ओह में श्री केदार पाण्डेय जी के स्थान बहुत ऊँचा रहे। गाँधी जी का नेतृत्व में, १९४२ में, जे अगस्त क्रान्ति आन्दोलन देश-भर में जोर-शोर से चलावल गइल, ओह में केदार पाण्डेय जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के तेजस्वी छात्र-नेता का रूप में शामिल भइलीं। उहाँ का पाँच बरिस के कठोर कारा-वास के सजा मिलल रहे।

काशी हिन्दू विश्वविद्याल से एम० एस-सी० आ एल-एल० वी० के परीक्षा पास करके, १९४५ में, श्री पाण्डेय जी बेतिया में वकालत शुरू कइलीं आ १९४८ तक बेतिया आ मोतिहारी में वकालत कइलीं। १९४९ में, उहाँ का पटना आके हाई कोर्ट में वकालत करे लगलीं।

वकालत का साथे-साथे श्री पाण्डेय जी काँग्रेस का आदर्शन के प्रचार आ चीनी मिल कर्मचारी लोगन का कल्याण के काम भी बहुत मन लगा के करत रहलीं। १९४७ में, स्वराज भइला पर जब अपना देश में आपन राज कायम हो गइल, त पाण्डेय जी का मन में आपन सारा समय देश का कामकाज में लगावे के भाव पैदा भइल। एकरा फलस्वरूप उहाँ का कालक्रम से वकालत का पेशा के तिलांजलि देके दिन-रात जनसेवा का काम में लीन हो गइलीं।

१९४६ में, वकालत का साथे-साथे, श्री पाण्डेय जी चम्पारण जिला काँग्रेस कमिटी के अध्यक्ष चुनल गइलीं। ओही घड़ी उहाँका भारतीय राष्ट्रीय चीनी मजदूर संघ के संगठन-सचिव भी रहीं। १९४७ से १९५४ तक उहाँका बिहार आई० एन० टी० यू० सी० के उपाध्यक्ष रहलीं। एह समय में पाण्डेय जी देश आ राज्य का मजदूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आन्दोलन में प्रमुख भूमिका अदा करे का अलावा, अपना जिला में, किसान लोगन का भलाई खातिर वकास्त जमीन का आन्दोलन में भी योगदान कइलीं।

१९५२ में, श्री पाण्डेय जी बगहा (पश्चिमी चम्पारण) निर्वाचन क्षेत्र से काँग्रेस उम्मीदवार के रूप में बिहार-विधान-सभा के सदस्य चुनल गइलीं। १९५७ में पुन: उनकर चुनाव बिहार-विधान-सभा का सदस्य का रूप में भइल आ स्वर्गीय डा० श्रीकृष्ण सिंह का नेतृत्व में गठित मंत्रिमंडल में सामान्य प्रशासन, सिंचाई, विजली, श्रम, यातायात, नदीघाटी योजना आ आरक्षी विभागन के उप-मंत्री भी मनोनीत भइली। १९५७ से १९६२ तक बिहार-प्रशासन में कर्मठ उप मंत्री का रूप में पाण्डेय जी महत्वपूर्ण काम कइलीं। १९६२ से १९६७ तक उहाँका राज्य में काँग्रेस संगठन के मजबूत बनावे में योगदान कइलीं। १९६७ में फेनु विधान-सभा के सदस्य चुनइला पर, १९६८ में पाण्डेय जी बिहार के स्वास्थ्य मंत्री वनावल गइलीं। ओही साल उहाँका संयुक्त राज्य अमेरिका का नेवता पर अमेरिका के यात्रा कइलीं। १९७४ में, कॉमनवेल्थ पार्लियामेन्टरी एसोसिएशन का तत्वावधान में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय 'सेमिनार' (विचार-गोष्ठी) में भाग लेवे खातिर पाण्डेय जी इंगलैंड गइलीं।

१९६९ में जव देश भर में मध्यावधि आम चुनाव भइल त श्री पाण्डेय जी बहुत बड़ा बहुमत से बिहार विधान-सभा के सदस्य चुनल गइलीं। १९७१ में उहाँ का बिहार-सरकार के उद्योग-मन्त्री भइलीं आ राज्य का उद्योग-धन्धा का विकास में बहुत योगदान कइलीं। १९७२ में प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का निदेश से श्री केदार पाण्डेय जी सर्व सम्मति से बिहार राज्य का मुख्य-मन्त्री के गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित भइलीं। उहाँ का शासन-काल में बिहार राज्य के बहुत तरक्की भइल। विशेषकर शिक्षा का क्षेत्र में जे सुधार भइल, ओकरा के आज तक सब लोग आदर का साथ इयाद करेला।

श्री केदार पाण्डेय जी मुख्य मन्त्री का हैसियत से बिहार-राज्य का साथे-साथ समस्त पूर्वी भारत में पर्यटन का व्यापक विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान कइलीं। हमरा उनका कार्यकाल में बिहार-सरकार के पर्यटन-निदेशक का रूप में सेवा करे के अवसर मिलल रहे। हमरा अच्छी तरह इयाद वा कि उहाँ का सुयोग्य नेतृत्व में जीवन का भिन्न-भिन्न क्षेत्रन में बिहार के जे विकास भइल, ओह सबसे बढ़-चढ़ के अन्तर राष्ट्रीय पर्यटन का विकास का क्षेत्र में बिहार बहुत महत्वपूर्ण प्रगति कइलस। देश-विदेश का पर्यटक लोगन का सुभीता खातिर बिहार में उत्तम कोटि के होटलन का निर्माण आ आरामदेह आवास आउर परिवहन व्यवस्था का विस्तार में उहाँ का विशेष रुचि लिहलीं। उहें का प्रभाव से भारत-सरकार के यशस्वी पर्यटन आ नागरिक विमानन-मन्त्री डा० कर्ण सिंह भी बिहार में पर्यटन-विकास का व्यापक कार्यक्रम के सफल बनावे पर विशेष ध्यान देलीं। पटना में 'पाटलीपुत्र होटल' आ 'मौर्य होटल' जइसन उच्च कोटि का अन्तरराष्ट्रीय होटलन के निर्माण श्री केदार पाण्डेय जी का विशेष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रोत्साहन से ही भइल। राज्य स्तर पर वीरचन्द पटेल पथ पर 'पर्यटन-भवन' का निर्माण के योजना भी उहेंका स्वीकृत कइलीं। बोधगया, राजगीर आ नालन्दा जइसन अन्तर राष्ट्रीय पर्यटन-केन्द्रन का विकास का साथे-साथ उत्तर विहार में, वैशाली, वाल्मीकिनगर, अरेराज, लौरियानन्दन गढ़, रमपुरवा, सरैयामन, जीरादेई, हरिहर क्षेत्र आ गाँधीजी से सम्बद्ध जगहन के पर्यटन का दृष्टिकोण से विकास करे खातिर उहाँका विशेष निदेश आ प्रोत्साहन देले रहीं।

मार्च, १९७३ में, पश्चिम बंगाल का मुख्यमन्त्री श्री सिद्धार्थ शंकर राय का विशेष अनुरोध पर श्री केदार पाण्डेय जी कलकत्ता में आयोजित 'पूर्वी भारत पर्यटन-सम्मेलन' के उद्घाटन करे खातिर गइल रहीं। ओह अवसर पर उहाँ जे ओजस्वी आ सारगर्भ भाषण भइल रहे, ओकरा के देशभर के पर्यटन से संबंधित पदाधिकारी आ कर्मचारी लोग स्मरण करके आज भी प्रेरणा गहण करेला। ओह विद्वत्तापूर्ण भाषण में श्री पाण्डेय जी पर्यटन का आर्थिक, सांस्कृतिक आ शैक्षिक मूल्यन का अलावा राष्ट्रीय एकता आ अन्तर राष्ट्रीय सद्भावना का विकास का दृष्टि से भी पर्यटन का अधिकाधिक विकास के महत्व प्रतिपादित कइले रहीं। १९७२ में, पटना में, भारत-सोवियत सांस्कृतिक संघ के राष्ट्रीय समित आ ओकरा दसवाँ वार्षिक अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष के रूप में श्री पाण्डेय जी देश-विदेश के प्रतिनिधि लोगन के स्वागत करत जे भाषण कइले रहलीं ओकरा से उहाँ के अन्तरराष्ट्रीय सद्भाव आ विश्ववन्धुत्व का भावना के परिचय मिलल रहे।

भोजपुरी भाषा-साहित्य का महान प्रवर्त्तक का रूप में श्री केदार पाण्डेय जी के महत्वपूर्ण योगदान जन-मानस में सदा सजग रही। १९७३ में, जब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संघटन पहिले-पहिल भइल त पाण्डेय जी के सशक्त समर्थन ओह लोकसेवी संस्था का मिलल। मई १९७६ में, जब डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी का अध्यक्षता में ओह सम्मेलन के दोसरका अधिवेशन पटना में भइल त स्वागताध्यक्ष का रूप में पाण्डेय जी सक्रिय योगदान कइलीं। ओही सम्मेलन का संकल्प का मोताबिक सितम्बर १९७६ में श्री केदार पाण्डेय जी का अध्यक्षता में एगो गैर-सरकारी भोज-पुरी अकादमी' स्थापित, भइल जवना के निदेशक-सह-सचिव श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' (वर्तमान निदेशक, भोजपुरी अकादमी) के बनावल गइल आ कोषाध्यक्ष श्री शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी (वर्तमान अध्यक्ष, भोजपुरी अकादमी) भइलीं। हमरो ओह 'भोजपुरी अकादमी' में कार्य-समिति का सदस्य का रूप में सक्रिय योगदान करे के अवसर मिलल रहे। लगभग दू वरिस तक ऊ गैर-सरकारी 'भोजपुरी अकादमी' पाण्डेय जी का निदेशन में भोजपुरी भाषा-साहित्य का प्रचार-प्रसार के काम कइलस। ओकरा बाद बिहार सरकार ओकर प्रभार ग्रहण करके अपना ढंग से, १९७८ में, सरकारी 'भोजपुरी अकादमी' के स्थापना कइलस। ई खुशी के बात बा कि भोजपुरी अकादमी, बिहार-सरकार का छत्र-छाया में, अपना उद्देश्य के पूर्ति खातिर सफलतापूर्वक काम कर रहल बा। जब तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह लोकसेवी संस्था के कवनो चिह्न संसार में रही, तब तक एकरा आदि प्रवर्त्तक का रूप में श्री केदार पाण्डेय जी के नाम श्रद्धा का साथे इयाद कइल जाई !

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी अकादमी का अलावा भोजपुरी विद्यापीठ का संस्थापक-अध्यक्ष का रूप में भी श्री केदार पाण्डेय जी के योगदान स्मरणीय बा। भोजपुरी विद्यापीठ का उपकुलपति का रूप में हमरा पाण्डेय जी का साथे लगभग एक बरिस तक काम करे के मौका मिलल रहे। ओकरा कुलपति का रूप में डा० दुखन राम जी के सहयोग उपलब्ध भइल रहे। पाण्डेय जी ओह समय बिहार प्रदेश काँग्रेस (इ) के भी अध्यक्ष रहीं। बिहार विधान सभा के प्रमुख सदस्य आ प्रदेश काँग्रेस का अध्यक्ष का रूप में बहुत व्यस्त रहला पर भी भोजपुरी अकादमी आ भोजपुरी विद्यापीठ का सब कार्यक्रम में उहाँ के पथ-प्रदर्शन बराबर मिलत रहे।

१९८० में, जनता पार्टी का विघटन का बाद, लोकसभा (भारतीय संसद) के जे आम चुनाव भइल, ओह में श्रीपाण्डेय जी प्रबल बहुमत से लोकसभा के सदस्य चुनल गइलीं। १९७७ में जब देशभर में जनता पार्टी के प्रभुत्व कायम हो गइल, ओह कठिन समय में भी पाण्डेय जी बिहार प्रदेश काँग्रेस (इ) का प्रादेशिक अध्यक्ष का हैसियत से बहुत परिश्रम आ अध्यवसाय से काँग्रेस के झण्डा के ऊँचा रखलीं जेकरा सुफल का रूप में १९८० में फेनु काँग्रेस (इ) के प्रभुत्व लौट आइल। एकर परिणाम ई भइल कि १९८० का प्रारम्भ में जब दिल्ली में फेनु श्रीमती इन्दिरा गाँधी का नेतृत्व में काँग्रेसी मन्त्रिमण्डल स्थापित भइल, त श्री केदार पाण्डेय जी केन्द्रीय सिंचाई मन्त्री का रूप में ओह में शामिल भइलीं। कुछ काल बाद उहाँ के रेल-मंत्रालय के प्रभार सउँपल गइल। भारत के सिंचाई मंत्री आ रेल-मंत्री का रूप में पाण्डेय जी सार्वदेशिक आधार पर जे जन-कल्याण कार्य निष्ठापूर्वक कइलीं, ओकरा वजह से उहाँ के प्रतिष्ठा देशभर में प्रमुख राष्ट्रीय नेता का रूप में हो गइल। पाण्डेय जी का लोकोपयोगी जीवन के विशेषता ई रहे कि उहाँ का समाज का गरीब, निस्सहाय आ जरूरतमन्द लोगन के मसीहा रहीं। पाण्डेय जी ओह पीढ़ी के राजनीतिक नेता रहलीं जेकरा मन में जनता का प्रति सात्विक सहानुभूति के भाव भरल रहे। जनसाधारण के दुर्दशा देख के उनका आँख में बहुधा आँसू छलके लागत रहे। एह से गरीब जनता का हृदय में उहाँ का प्रति सच्चा स्नेह आ श्रद्धा के भाव रहे।

श्री पाण्डेय जी अब हमनी का बीच नइखीं। उहाँके चालीस साल का सार्वजनिक जीवन में जे सच्चा देशभक्ति आ सात्विक लोक सेवा के आदर्श कायम कर गइलीं ओकरा से प्रेरणा ग्रहण कइल ही उहाँका दिवंगत आत्मा के हमनी के सर्वोत्तम श्रद्धांजलि होई !

भूतपूर्व पर्यटन-निदेशक, बिहार
जय प्रकाश पथ, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी अकादमी अउर केदार पाण्डेय

हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'

□ □

संयोग कहीं चाहे भावी कहीं, बात एक ह। हम बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् (पटना) से सन् १९७४ ई० के जुलाइए में सेवा-निवृत्त होके घरे चल गइल रहीं। सन् १९७६ ई० के बरसात (सितम्बर महीना) रहे। हम अपना मित्र उपेन्द्र महारथी जी के चीठी पाइके उन्हुका से मिले पटना आइल रहीं आ उन्हुके घरे ठहरल रहीं। सन् १९७५ ई० के एही सितम्बर महीना में पटना में भयंकर बाढ़ आइल रहे, जवन राजा-रंक-फकीर के एके छत प खाये, पीए आ सूते खातिर बिवस कइ देले रहे। १९७६ ई० के बरसात में जवना घरी हम पटना आइल रहीं, ओहू घरी फेरु लगातार पाँच दिन तक बारिस बरिसत रहल आ आकासबानी बोले लागल कि पुनपुन नदी के बाँध में दरार पड़ गइल बा, लोग अपना-अपना जान-माल के हिफाजत करसु। दक्षिन पटना के रहेवालू लोगन के गाड़ी ऊँच जमीन खोजे खातिर दउरे लगलीं सँ। समूचे पटना में हल-चपल मच गइल। महारथी जी के परिवार घबरा के आपन बोरिया-बिस्तर बाँधे लागल आ हम आउर महारथी जी बगल के पाटलिपुत्र होटल में सामान आ परिवार के सुरच्छित राखे खातिर मैनेजर से बात करे चल गइलीं। ई घटना रात के आठ बजे के ह। ओहू घरी घनघोर बरखा बरिसत रहे।

भाई महारथी जी के साथे जब हम होटल से उन्हुका डेरा में लवटलीं त देखतानी कि शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी जी बरामदा में कुर्सी पर बइठल बानीं। ओह राति में आ ओह बूनी-पानी में उहाँ के ओहिजा देखि के हमरा भारी अचम्भा भइल। हम पूछलीं-"इहवाँ कइसे भाई जी ?" हमरो से बेसी अचरज-भरज बोली में उहाँ के पूछलीं-"तूं एहिजा कहाँ से ?"

हम बतवलीं कि ई घर महारथी जी के ह ! हम घर से आइल बानीं आ इहें के इहाँ ठहरल बानीं। शास्त्री जी आपन भींजल कुरता-धोती देखावत कहलीं कि हम त भारी आफत में पर गइल बानीं। केदार (स्वर्गीय केदार पाण्डेय जी) के इहवाँ से आवत बानीं। बूनी-पानी जब ना अँगेजाइल हा त रिक्सा के हेड़ी इमली के पेंड़ त रोकवा के लुकइलीं हाँ। ओहिजो जब ना अँगेजाइल हा त एह घर के बरामदा में बिना केकरो से पूछले घुस अइलीं आ कुर्सी खींच के बइठ गइलीं हाँ। हम का जानीं कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई महारथिए जी के डेरा ह। महारथी जी त आपन बोरिया-बिस्तर सरिआवे में लागि गइलीं लेकिन हम गरम-गरम चाय बनवा के पहिले शास्त्री जी के देलीं त उहाँ के पूछलीं, "तू पटना काहे छोड़ देल ?"

हम कहलीं-"कहाँ रहितीं ? एहिजा कवनो घर-दुआर त बनवलीं ना। बिना कवनो जिअका के पटना में घर के किराया देके खरचा चलावल त बड़ा मुसकिल बा।"

शास्त्री जी कहलीं "हम घर के इन्तिजाम कइ दीं त रहबऽ ?"

"काहे ना, जरूर रहबि" हम कहलीं।

"काल्हे से हम ठीक कइ देत बानीं आ तू काल्हे से रहि जा। एही घरी चलऽ केदार जी के इहाँ, ओहिजे सभ बात हो जाई।" पूरा बात जाने खातिर हमरा के जब उहाँ के बहुत उतसुक देखलीं, तब कहलीं कि हमनीं का 'भोजपुरी अकादमी' नाँव के एगो संस्था खोलल चाहतानीं। एही काम खातिर केदार जी पाँच हजार रोपेया धइले बाड़न जवन अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना अधिवेसन के बेरा तसिलाइल रहे। मगर केहू अइसन सुजोग बिद्वान निदेशक नइखे मिलत, जे एह खातिर ठीक होखे। जे केहू मिलतो बा ऊ पइसा जादे चाहता। केदार जी अकादमी के छवे महीना में सरकारी करा देवे के वादा कइले बाड़न। संजोग देखऽ कि तू एह आफत के घरी-बेरा में भेंटा गइलऽ। अब तोहरा से जोग के हमरा भेंटाई ? मगर एक बात सोचि ल। अवहीं हमनीं का रहे के जगह त देबि, बाकिर वेतन कुछ ना दे सकीं। पाकिट खरच खातिर १५०/-रोपेया सिरिफ देबि। एगो पार्ट टाइम के चपरासियो देबि जा, जेकर महीना सूखा ७५/- रोपेया होई।"

हम जोस में आके कहलीं-"ठीक बा।" मन में सोचलीं, रहे के जगह त मिलीं नू। घर से खाये-पीए के सामान ले आइबि !

तबले बूनी कम हो गइल रहे। शास्त्री जी फेरु भोर में आठ बजे अइलीं आ हाँथ में एगो संचिका लेले अइलीं। हमरा के लेके स्वर्गीय केदार पाण्डेय जी के इहाँ छज्जूबाग वाली कोठी में गइलीं। ओहिजा शास्त्री जी संचिका पर कुछ टिप्पनी लिखलीं आ केदार पाण्डेय जी अपना के अकादमी के अध्यक्ष, हमरा के निदेशक आ शास्त्री सर्वेन्द्रपति जी के कोषाध्यक्ष बना के टिप्पनी पर हस्ताक्षर कइ देलीं। ओही दिन शास्त्री जी भैरवनाथ पाण्डेय आ हमरा के लेके केदार पाण्डेय जी बोरिंग कनाल रोड के हेलेना-हाउस में ले अइलीं। मकान के मालिक श्री शिवकुमार सिंह आ उन्हुकर पत्नी हेलेना जी पाण्डेय जी के अंतरंग मित्र रहे लोग। जब शिवकुमार जी के देखलीं तब ऊ हमरो पूर्व परिचित निकल गइले। सन् १९४४ ई०.में हमनींका दूनो आदमी भागलपुर सेंट्रल जेल में स्वतंत्रता अन्दोलन में भाग लेला खातिर बन्दी जीवन बितवले रहीं।

श्री केदार पाण्डेय जी एकरा पहिले बिहार के मुख्यमंत्री हो चुकल रहीं। एह से शिवकुमार सिंह जी पर उहाँ के भारी प्रभाव रहे। छोटी-छोटी दूगो कोठरी कार्यालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर १५० रु० मासिक पर लिआइल। भइल कि एही में कार्यालय आ निदेशक के निवासो रही। आनन-फानन सभ काम कइल गइल।

हेलेना हाउस (वोरिंग कनाल रोड) में कार्यालय के घर ठीक कइके हम आपन ओढ़ना-विछवना, वरतन आ भोजन के सामान ले आवे घरे चलि गइलीं। घर पर हमरा बुद्धन वर्मा भेंटइले, जे वेरोजगारी के मारल धुनाइल रहन। उन्हुका से कहलीं कि बुद्धन तू नौकरी करवऽ ? ऊ धधा के कहले-"वावा, काहे ना करवि ?" मगर जब हम कहलीं कि अबहीं सिरिफ ७५ रोपेया माहवारी मिली, तव उदास हो गइले। कहले कि एह में का खाइब आ वाल-वच्चा के का देवि ?

हम वुद्धन के समुझवलीं कि तूं चलऽ। तोहार खाना-दाना हम आपन पासे से देवि। जवन हम खाइव तवने तूं खइहऽ। मोसहरा के ७५ रोपेया जवन मिली ऊ वाल-वच्चा के भेजिहऽ। बुद्धन तइयार हो गइले आ तीन चार दिन के वाद उन्हुका के लेले हम कार्यालय में आ गइलीं। उहे बुद्धन आज अकादमी में दफ्तरी के पद पर वाड़न।

विहान भइला शास्त्री जी के इहाँ हम गइलीं। उहाँके एगो दरी, एगो स्टूल आ एगो टुटहा वेंच घर से देलीं। ओही दिन दू गो काठ के कुर्सी खरीदाइल। शास्त्री जी पहिलहीं साइन बोर्ड वनावे के आडंर दे देले रहीं। वड़का साइन वोर्ड आ गइल, गड़ाइओ गइल। एकरा वाद शास्त्री जी एगो पुरान टाइपराइटरो कार्यालय में भेजवा देलीं। विहार राष्ट्रभाषा परिषद में हमरा गाँव के वगल के रहेवाला िवभजन सिंह वाड़न। उन्हुका के ५० रोपेया महीना पार्ट टाइम पर टाइप करे खातिर राखि दिहल गइल। कार्यालय के स्थापना २१ सितम्वर १९७६ ई० के वाजाप्ता शुरू हो गइल। आने भोजपुरी अकादमी खाड़ हो गइल। कइसन नदिआ-नाव संजोग रहे। एही से कहत वानीं कि संजोग कहीं चाहे भावी कहीं, वूनी-पानी ना आइल रहित त ना शास्त्री जी भेंटइतीं आ ना हम अकादमी में आइल रहितीं। काम शुरू भइल त सरकारी मान्यता खातिर धड़धड़ स्मार पत्न जाये लगले स। बुद्धन हमार खाना वनावसु आ भुँइए दरी विछा के हम आ वुद्धन कार्यालय में सूतीं जा। रोज जवन चिट्ठी टाइप होखे तवना में वाहर के चीठी त डाक में डलाय, बाकिर पटना के सभ चीठी बुद्धन पैदल ले जाके दे आंवसु। रोज के खरच के हिसाव शास्त्री जी लिखसु आ रोज पइसा देसु। एकरा वाद भोजपुरी अकादमी के संविधान वनल आ संविधान वनला पर अकादमी के स्वायत्त संस्था के रूप में सरकार के इहाँ से निवन्धित करा लिहल गइल। संविधान के अनुसार जे पहिलकी कार्य-समिति वनल ओह में निम्नांकित लोगन के नामजद श्री केदार पाण्डेय जी से शास्त्री सर्वेन्द्रपति जी करा देलीं :- १ श्री केदार पाण्डेय—अध्यक्ष, २ श्री हवलदार त्रिपाठी "सहृदय"—निदेशक, ३ शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी—कोषाध्यक्ष, ४ श्री रामेश्वर सिंह काश्यप—सदस्य, ५ श्री विद्यानाथ ओझा, ६ श्री उमानाथ जी, ७ श्री वासुदेव उपाध्याय, ८ श्री अलखराज पाण्डेय, ९ श्री अविनाशचन्द विद्यार्थी, १० श्री भैरव नाथ पाण्डेय, ११ श्री रामेश्वर नाथ तिवारी, १२ श्री गणेश चौवे, १३ श्री विश्वनाथ सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४ श्री सत्यनारायण लाल; १५ श्री पाण्डेय कपिल, १६ श्री रसिक विहारी ओझा "निर्भीक" १७ श्री तैयब हुसैन "पीड़ित"—सभे सदस्य।

सभ से पहिले अकादमी के ओर से एगो शिष्ट-मंडल, श्री केदार पाण्डेय जी के अगुआई में अकादमी के मान्यता दिलावे खातिर तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ० जगन्नाथ मिश्र जी से उहाँ के डेरा पर ३०-१०-७६ के मिलल आ आपन खर्च के वजट देत प्रतिवेदन देलस। मिश्रजी के श्री विद्यार्थी जी आपन भोजपुरी कवितो सुनवलन। मगर मुख्यमंत्री जी कहले—"देखेंगे। मगर पहले आप लोगों को भोजपुरी की पढ़ाई महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में आरम्भ करानी चाहिए।" सभ कोई निरास होके लवटि आइल।

गैर सरकारी अकादमी के कार्य समिति के २५-१२-७६ के बइठक में निरनय भइल कि अकादमी के ओर से "भोजपुरी समाचार" नाँव के एगो मासिक पत्रिका निकली, जेकर संपादक हवलदार त्रिपाठी "सहृदय" आ श्री भैरवनाथ पाण्डेय रहिहन। पत्रिका के निकाले में जे खरच रहे, ओकरा खातिर भइल कि सदस्य लोग चन्दा उगाहसु आ अकादमी चन्दा वही छपवा के सदस्य लोगन के दे दे। कार्य-समिति के सदस्य श्री उमानाथजी (भूतपूर्व पयर्टन-निदेशक) त ओही घरी ५१/-रोपेया निकाल के दे देलन, लेकिन दोसर कवनों सदस्य एको पइसा ना देलन। पत्रिका तुरत छपे लागल। एह पत्रिका के प्रकाशन से अकादमी के मरजादा त बढ़वे कइल, भोजपुरी भासा आ भोजपुरी आन्दोलनो के बहुत बड़ वल मिलल। पत्रिका सभ मंत्री आ विधायक के पास भेजाये लागल आ भोजपुरी छेत्र के कुछ सांसदों के पास। भोजपुरी साहित्यकार लोगन से रचना आ समाचार के बारे में भारी सहयोग मिलल आ उत्साह बढ़ावे वाला बधाइओ।

एह बीच केदार पाण्डेय जी विहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष हो गइलीं। अब उहाँ का काग्रेस के संगठन में अतना अझुरा गइलीं कि अकादमी के भुला गइलीं। जे होखे, मगर सगरो ई सोहरत मच गइल कि श्री केदार पाण्डेय जी के वरद हाथ भोजपुरी अकादमी पर वा। एह सोहरत से अकादमी के बड़ा लाभ मिलल। पइसा जब खतम हो गइल त कोषाध्यक्ष शास्त्री श्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी जी पइसा के ममिला में लाचारी देखावे लगलीं। दोसर कारन ई भइल कि सँउसे उत्तर भारत में कांग्रेस संसद आ विधान सभा दूनों में हार गइल आ विरोधी दल के जीत हो गइल। एह से स्वर्गीय पाण्डेयजी के चूलती वन्द हो गइल आ एने अकादमी में, हमार आ चपरासी बुद्धन वर्मा के, एकादसी चले लागल। ओने सुनाइल कि कांग्रेस के हार भइल त मुख्यमंत्री डॉ० जगन्नाथ मिसिर जी अपना अन्तिम मंत्रिपरिषद् के बइठक में अकादमी के मान्यता दे दिहलीं। मगर ओह निरनय के नोटिफिकेशन ना भइल।

एही बीच में सलेमपुर (भोजपुर) के मशहूर स्वतंत्रा-सेनानी आ कट्टर कांग्रेसी आ हमार मित्र श्री हरपाल दूबे के लइका कृष्णचन्द्र दूबे हमरा कार्यालय में एक दिन हमरा से भेंट करे अइले। ऊ देखले कि त्रिपाठी जी आ बुद्धन एके दरी भुइआँ में विछा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के एके साथे सूतत वाड़न। ऊ पूछले कि चउकी चाहे खाट काहे नइखीं कीन लेत? हम बतवलीं कि इहवाँ त अब भोजन मोहाल भइल वा, चउकी कहाँ से कीनी? अब त अकादमी वन्द क के हमरा घरे चल जाये के परी। सरकार से मान्यता ना मिलल आ एको पइसो ना रहि गइल। एकरा वाद केदार पाण्डेय जी के आ आपन कठिनाई उन्हुका के बतवलीं।

कृष्णचन्द्र दूवे ओह घरी दाउदनगर (औरंगावाद) जिला में थाना के प्रभारी रहन आने वड़का दरोगा रहन। दूवे के वड़ा चलावा रहे। ऊ जवना थाना में रहेलन, ओह छेत्र के जनता उन्हुका के भगवान अइसन मानेले। उन्हुकर अइसन प्रशासन रहेला कि चोर-डाकू लोग उन्हुकर नाँवे से इलाका छोड़ देला। दूवे दरोगा ओही घरी वुद्धन वर्मा के साथे ले गइले वा दूगो चउकी खरीदवा के रिक्सा पर लदववले ले अइले आ अकादमी में रखवा देले। ऊ दूनो चउकी आजु ले हमरा पासे वाड़ी स। एकरा वाद दूवे जी हमरा के कहलन कि रउरा हतास मत होखीं। हम सभ इन्तिजाम करवि। हमरा के चन्दा के रसीद वही दीहीं।

ई सभ कठिनाई अकादमी में रहे, मगर 'भोजपुरी समाचार' छपते रहे। छापे के काम जयदुर्गा प्रेस उधारे करत रहे। खाली कागज खरीद के दिआत रहे। एह से वाहर केहू ना जाने कि अकादमी संकट में विआ। दूवे रसीद वही ले गइले आ पहिले खेप में अपना आदिमी से तीन हजार चार सइ पचास रोपया भेजले। एह रोपेया से मकान के किराया दिआइल आ जय दुर्गा प्रेस के उधार छपाई के पइसो दिआइल। प्रेस के भरोसा हो गइल कि हमार उधार मरी ना।

अतने में जनता पार्टी के राज हो गइल आ श्री कर्पूरी ठाकुर जी मुख्यमंत्री बन गइलीं। माननीय केदार पाण्डेय जी के पास हम गइलीं आ उहाँ से पूछलीं कि अव त अपने बेवस हो गइलीं। अब हमरा के छूट दीहीं। हम अपना "भोजपुरी समाचार" में जनता पार्टी के मुख्यमंत्री के स्वागत में एक पेज लिखल चाहतानीं। अपने के अगर कवनो आपत्ति होई त हम ना लिखवि। पाण्डेय जी कहलीं "एह में आपत्ति काहे होखी? अकादमी के सरकारी मान्यता दिआवे के बा। एकरा कवनो पाटा-पार्टी से का मतलब वा। जेकर सरकार वनीं, ऊ अकादमिओ के सरकार होई। रउवा जरूर लिखीं।" हम ओही घरी देखलीं कि एह आदिमी में कतना बड़प्पन वा, जे अपना संस्था से विरोधी पार्टी के मुख्यमंत्री के स्वागत-वचन लिखे में तनिको उजुर नइखे करत।

अव हम मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर जी के पास दउरे लगलीं। अकादमी के एगो शिष्टमंडल मुख्यमंत्री से मिले खातिर हम एगो दिन ठीक कइलीं। ई शिष्टमंडल २० मार्च ७७ के मुख्यमंत्री-कक्ष में कर्पूरी जी से मिलल। एह शिष्टमंडल के अगुआई श्री केदार पाण्डेय जी से करावल गइल। शिष्टमंडल में चले खातिर जब हम पाण्डेय जी से निवेदन कइलीं त उहाँ के खुशी-खुशी ई कहत तइआर हो गइलीं कि एगो उत्तम काम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर भेंट करे में हमरा कवनो उजुर नइखे। मुख्यमंत्री कक्ष में जब शिष्टमंडल मिलल, तब श्री कर्पूरीओ जी ओही ललक से पाण्डेय जी से मिललीं आ तुरंते शिक्षा आयुक्त के बोलवा के आदेश देलीं कि अकादमी के संगठन के सभ विधि जल्दिए पूरा होखे के चाहीं। मगर एह आदेशो के बाद सभ करते-धरते एक बरिस लागि गइल आ १६-६-७८ के दिन संगठन के विज्ञप्ति सरकार प्रकाशित कइलस। भोजपुरी अकादमी के सरकारीकरन करे में अवरू जे लोग भारी सहजोग देले रहे, ओह में विपिन विहारी सिन्हा, बसावन सिंह, श्री उपेन्द्र महारथी, श्रीमती प्रेमलता राय, श्री देवेन्द्र प्रसाद सिंह, श्री रामसुन्दर दास मुख्य रहन।

एह से पौने दू बरिस के भीतर जवन आर्थिक संकट अकादमी झेललस ऊ बड़ा कठिन रहे आ दम साधि के झेले के परल रहे। हम घर से चाउर–दाल आ गेहूँ मँगाईं आ बुढ्ढन के साथे-साथे आपन खरचा चलाईं। अउरो काम खातिर फेरू चन्दा उगाहे बाहर जाईं, आ एहिजा मंत्री लोग आ शिक्षा विभाग के इहाँ दउड़ो लगाईं। हमार कठिनाई जान के के०सी०दूबे दरोगा फेरू लगभग २०००/रु० उगाहि के भेजलन। प्राचार्य रामेश्वर सिंह काश्यप जी १५०/रु० चन्दा दिअववलन आ ऐहू से पार ना लागल त हम डालटेनगंज चलि गइलीं। उहाँ मदन सिंह ठेकेदार हमार दोस्त रहन आ सिंचाई विभाग के मुख्य इंजीनियर बँगलाभासी डी०एन०राय चौधरीओ जी मित्र रहन। ई लोग से लगभग १२००/-रु० चन्दा उगाहि के ले आवे के परल आ अपना खोराकी आदि खरच जे करे के परल, ऊ अलगे रहल। एह तरह से घर-किराया, पत्रिका छपाई डाक-खरच, सवारी-खरच इत्यादि में लगभग बारह हजार से बेसी पइसा पौने दू बरिस में खरच भइल। ओकरा बादो पाँच-छह हजार रोपेया जे उधार रह गइल, तवन सरकारी अनुदान मिलला पर दिआइल जवना में मकान भाड़ा, प्रेस के उधार, चपरासी के बकाया वेतन, आ टाइपराटर के किराया रहे। बाकिर निदेशक के बकाया मानदेय, जे पाछे २५०/-रु० प्रति माह भइल रहे, ऊ लगभग २५००/-रु० भ गइल रहे, ऊ ई कहि के ना दिआइल कि निदेशक त अब अकादमी से वेतन पइबे करिहें।

एह तरह अकादमी पौने दू बरिस के रगड़ पर आ भारी दम सधला के बाद खड़ा भइल। एकरा स्थापना के मूल में अगर श्री केदार पाण्डेय जी आ शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी जी ना रहितीं आ हमरा से शास्त्रीजी के भेंट ना होइत त ना हम अकादमी में आइल रहितीं आ ना अकादमी बनल रहित। अकादमी के स्थापना के कहानी इहे नदी-नाव संजोग ह।

निदेशक

भोजपुरी अकादमी, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी जब ले जीही..........

अविनाशचन्द्र विद्यार्थी

□ □

धनि भाग कहाई रघुवंश बाबू के चरन के जे बीस बरिस से आरे-पटना-बलिया-बनारस-कलकत्ता-जमशेदपुर धावत-धूपत तनी अड़ान पवलसि १९७२ में पटना का ब्रजकिशोर पथ के पछिमवारी कगरी 'इंडिया मशीनरी' के मालिक जगन्नाथ सिंह जी (अब स्वर्गीय) का फयलाँव बँगला में। 'भोजपुरी महासभा' के बड़गा गो साइन बोर्ड टँगा गइल मेन रोड का गेट पर। इहें बास करत आरे के 'भोजपुरी' के संपादक बाबू रघुवंश नारायण सिंह भोजपुरी भाषा-साहित्य के चरचा आ एकरा खातिर एगो बड़का संगठन का उतजोग में लगले। कतने विधायकन आ मंत्री-उपमंत्री लोगन के अपना बइठकन में हाजिर करा-करा के अजमावत जात रहसु बाकिर उजिआत कुछुओ ना रहे। आखिरस एक दिन ऊ पहुँचले स्वास्थ्य मंत्री केदार पाण्डेय जी का डेरा पर। पाण्डेयोजी सोझे-सोझे कहले कि अइसे ना होई, भोजपुरी के एगो बड़हन संस्था खोलीं, सभ के बोलाईं, केहू के छोड़ीं मत। 'अबकी कुछ हो के रही' कहत फिरसु रघुवंश बाबू।

एह तरे उनुका नेवता पर जानल-मानल भोजपुरी सेवक लोग ७ नवंबर १९७३ के साँझि खा केदार पाण्डेय जी का छज्जूबाग वाला क्वाटर में जवराइल आ बहुते विचार-मंथन का बाद 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन' नाँव के एगो संस्था स्थापित करे के प्रस्ताव पास भइल। मधुर जलपान का साथे-साथ पाण्डेयजी सम्मेलन खातिर बनल 'तदर्थ समिति' के प्रारंभिक खरच खातिर पइसो दिहलीं।

एह समिति के गठन के प्रस्तावक में हमार, समर्थक में भैरवनाथ पाण्डेयजी के आ अध्यक्ष में केदार पाण्डेयजी के नाँव छपल।

पाण्डेय कपिलजी के क्वाटर, २ ईस्ट गार्डिनर रोड में, उनुका आ उनुका परिवार के परिश्रम आ भैरवजी के भोजपुरी भावावेश का चलते साल लागत-लागत ३७३ गो सदस्यन वाली सउँसे भारत के प्रतिनिधि संस्था अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन ठाढ़ हो गइल। अब सवाल उठल एकर पहिल अधिवेशन करा के एकरा के चला देवे के। अपना आँखी देखल १५-१६ मार्च १९६९ के गहमर में 'भोजपुरी संसद' वाला अभूतपूर्व 'अखिल भारतीय भोजपुरी सांस्कृतिक सम्मेलन' करवनिहार भोलानाथ गहमरी जी के नाँव हमरा सूझल। गहमरी जी के गोहरावल गइल। उनके हिम्मत से अवधी-भोजपुरी के संगम-स्थल प्रयाग राज में ८-९ मार्च १९७५ के अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन डा० उदयनारायण तिवारी जी का अध्यक्षता में भइल।

सम्मेलन के अधिवेशन उत्तर प्रदेश आ बिहार में पारा-पारी करे के परंपरा बनावे का लेहाज से अबकी बारी रहे बिहार के। तइ भइल कि इलाहाबाद के जोड़ पटने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में लागि सकेला काहें कि ई हो विशुद्ध भोजपुरी भाषी-क्षेत्र में ना होके दूगो मातृभाषा भोजपुरी आ मगही के संगमे-स्थल वा। सवाल उठल कि केकरा के मेंह बना के दँवरी नाधल जाउ। सम्मेलन के ठाढ़ करवनिहार भूतपूर्व मुख्यमंत्री केदार पाण्डेय जी के धइल गइल। उहें अइसन स्वागताध्यक्ष का छतरछाँह में भोजपुरी भावावेग में कतने आदमी एह अभियान में लगले। पटना के गण्य-मान्य से लेके महमुलिओ आदमी के भोजपुरी प्रेम उजागर भइल। १५-१६ मार्च १९७६ के राममोहन राय सेमिनरी में दू दिन वाला अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दोसरका अधिवेशन "न भूतो न भविष्यति" के कथन सटीक कइलसि। सम्मेलन के अध्यक्ष डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी आ उद्‌वोधक केन्द्रीय कृषि मन्त्री जगजीवन राम जी के सुन्दर सरस भाषण का बाद स्वागताध्यक्ष केदार पाण्डेयजी विशेष अतिथि के रूप में पधारल राज्य के मुख्यमंत्री मैथिली भाषी डा० जगन्नाथ मिश्र जी के स्वागत करत कहलीं, "जब हम मुख्य मंत्री रहलीं त मैथिली के विकास खातिर बहुत कुछ कइलीं; अब डा० मिश्र भी भोजपुरी के विकास खातिर कुछ करे के कृपा करीं। मैथिली अकादमी के स्थापना के हम स्वागत करतानीं आ आशा करतानीं कि ओही तरह से भोजपुरी अकादमी के स्थापना करे में सरकार देरी ना करी।

अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दोसरका अधिवेशन का स्वागत-प्रबंध खातिर अपना हाथे जुटावल पइसा में से केदार पाण्डेयजी पाँच हजार रुपया के राशि वचा लेले रहीं जेकरा के उहाँका 'चोरा के' यानी 'लुका के' कहल करीं। एही पूँजी से वोरिंग रोड में 'हेलेना हाउस' में २१ सितंबर १९७६ के गैर सरकारी 'भोजपुरी अकादमी' के प्राण-प्रतिष्ठा करे का बेरा आउर लोगन का आवे के पहिले उहाँके हमरा से कहले रहीं—"कुछ जस ले लेवे के चाहीं।"

'भोजपुरी अकादमी' के चरचा एकर निदेशक आदरणीय सहृदय जी अपना लेख में नीके तरे कर चुकल बानीं। हमहूँ कुछ दिन से अकादमी का सेवा में बानीं एह से वेसी ना कहि सकीं। तबो एगो बात जरूर कहबि। अपना पचीस वरिस के अनुभव का आधार पर हम कहबि कि एह धरती पर अवहीं भोजपुरी साहित्य-सेवी के आस-बिस्वास के बस एके अलम भोजपुरी अकादमी के रूप में लखार बा। मातृभाषा भोजपुरी के जिआवल इनिका सपूतन के चहले-कइले पर बा। भोजपुरी खातिर अपार ममता रखनिहार एकरा अमर सपूत केदार पाण्डेय जी के हमरा अतने सुनावे के बा —

माई के बोली हमनी के भोजपुरी जब ले जीही
रोआँ-रोआँ एकर पांडेजी ! नइयाँ राउर लीही.

उपनिदेशक
भोजपुरी अकादमी, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के गउरव-भूँइ चंपारन

हवलदार त्रिपाठी "सहृदय"

□ □

जवना पुन्न भूँइ में श्री केदार पाण्डेयजी के जनम भइल रहे, जेकराके इहवाँ हम चम्पारन जिला कहत बानीं, ऊ आज पुरुबी आ पच्छिमी नाँव से दू भाग में बँटा गइल बा। चम्पारन के ई भूँइ, गण्डकी, सोनाह, रोहुआ, मनोर, भवसान, कोसी, हरहा, कापन, मसान, रामरेखा, बाणगंगा, मानदेवा, सिकरहना, पडई, मंगुराहा, अमोलवा, धोरम, दुलौरा, करटहा, उरई, मनुसमारा, कोनहरा, बितना, चन्द्रावती (चमइनी) झरही, तेलावे, तियर, बगरी, अनुरवा, धनौती, चुकनाहा आ लाल बकेया नाँव के नदिअन के जरिए ले आइल बालू-माटी से बनल बा। एकरा अलावे अवरू कुछ छोट-बड़ पहाड़ी सोत बाड़े सँ, जवन आजो माटी भरे के काम करत बाड़े सँ। एह नदिन के इतिहास आ करनामा एगो अलगे लिखे के चीज बा।

बेलकुल पुराना जवाना में चंपारन के ई भूँइ "पूर्व विदेह" के नाँव से मसहूर रहे। ओह घरी के "पच्छिमी विदेह" में बाराबंकी, खीरी, बस्ती, नेपाल के लुम्बिनी जिला आ गोरखपुर के जिला पड़त रहे। एही तरह पूरुब विदेह में चम्पारन, नेपाल के कुछ तराई, सीतामढ़ी, दरभंगा आ मुधुबनी के भाग रहे। १५०० ई० पू० जब पूरुब विदेह "मिथिला" कहाए लागल, तब पच्छिमी विदेह के नाँव "कोसल" हो गइल। एह बात के पता महाभारत, बृहदारण्यक, उपनिषद्, पदुमपुरान अउर बराहपुरान के पढ़ला से चलत बा।

ई बात बहुत लोग जानता कि बहुत पुरान कल्प में, बिन्धाचल के उत्तर में सगरो समुन्दर हिलकोरा मारत रहे। एह समुन्दर से हिमालय के पाँति तराजू के डंडी निअन तन गइल, जे पूरुब समुन्दर से ले के पच्छिम समुन्दर तक फइलल रहे। ओकरा करोड़ो बरिस बाद एह भाग में आदिमी निवास कइले जे देवता कहलाये लगले। एकरा बाद हिमालय के बरफानी चोटी, बरफानी झील आ बरखा से जवन नदी बनली सँ, ऊ हिमालय के माटी के बहावत दक्खिन के समुन्दर में गिरावे लगली सँ। एह से समुन्दर भराए लागल आ एह भाग में धरती निकसे लगली। अइसने धरती प आज उत्तर प्रदेश, उत्तर बिहार आ बंगाल बसल बा। उत्तर बिहार में, सप्त गंडकी के पुन्न-पवित्तर माटी से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वनल चम्पारन जिला के भूँइ ह, जे सभ से पुरान जमीन ह। एही जमीन में कूर्मावतार भइल रहे। पाछे हिमालय से देवता अउर ऋषि लोग जब एह भूँइ में उतरे लगले त सभ से पहिले चंपारने के भूँइ में आके निवास कइले।

चम्पारन के, खास क के उत्तरी भाग, बड़ापवित्र स्थान ह, जहाँ पुलह, "पुलस्त्य" सालंकायन, और्व, अष्टावक्र, जड़ भरत, याज्ञवल्क्य ओगएरह ऋषि निवास करत रहन। एही भाग से बढ़ि के ब्राह्मण आ ऋषि लोग दक्खिन के ओर बढ़लन, जे लंका ले चलि गइलन। रावन के पितृभूमि इहे भाग रहे, एह से रावन इहवाँ आ के शिव के पूजा करत रहे आ ओकर नाँव 'रावन तपोवन' रहे। ओह शिवजी के नाँव आजुओ "रावनेश्वर" चाहे "वामेश्वर" कहाला। पानी के अभाव देखि के एगो नहरो रावन बनवले रहे, जेकर नाँव "वाणगंगा" ह, जवन नदी आजो चम्पारन में बहत बिआ। शिवजी के रिझावे खातिर जहवाँ रावन नाच करत रहे, ऊ पहाड़ "नर्त्तनाचल" कहाला। आज 'कुंभकरन"-नाँव के एगो परवत-शृंखला पुलस्त्य-कुल का स्मारक रूप में मौजूद बा, जवन "भिखनाठोरी" के पच्छिमी भाग में परेला। "सोमेश्वर" तिरिथ अतना पुरान हउवे कि ओकर विस्तार से बरनन आ बड़ाई महाभारत के "कर्ण पर्व" में कइल गइल बा, जहवाँ पूजा करे युधिष्ठिर आइल रहन। पाँचो पांडो लोग जब काम्यक बन से गिरिव्रज आवे खातिर चललन, तब कुमायूं होते अउर नदिअन के पार करते "सप्त गंडकी" के इलाका में आके दक्खिन मुड़लन अउर चम्पारन होते गंगा तट प गइलन। एकरा बाद गंगा पार कइके सोन पार भइलन आ तब गिरिव्रज पहुँचलन।

आजु जवना "भँइसा लोटन" के घींचि-घाँचि के बालमीकि आसरम बतावल जात बा. ऊ स्थान अपना गउरव खातिर एह दुरूह आ अगड़म-बगड़म इतिहास के काहे भरोसा करो ? ई त ऊ करि सकेला, जेकरा पासे आपन कवनो पूँजी ना होखे। गंडकी खुदे गंगा अइसन पवित्र नदी ह, जेकरा गरभ में "शालग्राम" बसेले। एह स्थान प बड़ा नामी जगह "पुलस्त्य पुलहाश्रम" रहे जहाँ सप्तर्षि लोग जुटत रहे। एहिजे चक्रतीर्थ रहे। एकरे पासे "गोनिष्क्रमण" तिरिथ बड़ुए। छछात शालग्राम भगवान एहिजे उपजेले। एहिजे गज-ग्राह के लड़ाई भइल रहे, जहवाँ गरुड़ प चढ़ि के बिसुन भगवान दउरल आइल रहन। एही स्थान पर "कामिक" अउर "त्रिजलेश्वर" नाँव के तिरिथ रहे। एहिजे "जड़ भरतो" के आसरम रहे, जहवाँ "समंग" नाँव के तिरिथ रहे। जड़भरत, त्रिजलेश्वर शिव के पूजा कइके मोक्ष पवले रहन। एह जगह प "पंचनद" आ "कोटिवट" नाँवों के तिरिथ रहे अउर एही जगह प कूर्मावतार भइल रहे। "तिरबेनी क्षेत्र" ई एह से कहात रहे कि नारायनी, देविका आ ब्रह्मतनया नाँव के तीन नदिअन के इहवाँ संगम भइल बा। ई संगम-तिरिथ तिरिथन के राजा ह। जवना स्थान के अइसन महातम होखे, ऊ काहे "बाल्मीकि आसरम" कहावे खातिर कठदलेली करी आ "तमसा" नदी के एहिजा काहे खींचि के ले आई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चंम्पारन के इंच-इंच जमीन अपना प्राचीन पुरातत्व वाला इतिहास से भरल बिआ, जेकर खोज खबर आज तक केहू ना कइल। साँच पूछीं त पुरवी आर्यावर्त्त के पितृभूमि चम्पारन ह जहाँ से वेद के ऋचन के साथ वैदिक धरम भारत में फइलल। भारत में हमरा जाने सभसे पहिले एहिजे गहुँम आ धान के खेती ऋषि लोग एहिजे के देविका नदी के कछार में कइलन, जहवाँ के अन्न "दाविक" कहात रहे, "देविकायाँ सरम्याँ च भवेद्दाविक सारवौ।" देविका नदी के नाँव आज नेपाल के ऊ राप्ती ना ह, जवन बरहज के ऊपर "घाघरा" में मिलल बिआ। ई नेपाल के ऊ राप्ती ह जवन भीमफेदी के पास से निकलि के चितवन जिला के पच्छिम में तिरवेनी-छेतर के ऊपर नारायनी में मिलेले। एही देविका के तट प्रदेश में ब्राह्मन लोग पहिले-पहल आर्यावर्त्त के धरती पर उत्पन भइल रलन।

ई सभ बात त इतिहास से पहिले के हवन सँ, जवना के महिमा महाभारत आ पुरान गावत बाड़े सँ। अब तनी इतिहास काल के बात देखल जाय। भगवान् बुद्ध के समे एह भाग में "मोरिय" नाँव के क्षत्रिय जाति बसत रहे अउर ई भाग "पिप्पलीकानन" कहलात रहे। भगवान् बुद्ध के निरवान के बाद उन्हुका धातु में मोरिय लोग के हिस्सा मिलल, जेकरा ऊपर ऊ लोग बुद्ध स्तूप बनवले रहे। ई सभ बात विनय पिटक के "परिनिव्वाण सुत्त" में लिखल बा। एही "मोरिय" वंश के लइका चन्द्रगुप्त मौर्य रहे, जे पाछे चल के नन्दवंश के नाश कइलस आ मगध के सम्राट बन गइल। एही चन्द्रगुप्त के नाती सम्राट् अशोक रहे, जे अपना पितृभूमि में आ के लउरिया-नन्दन गढ़ लोरिया अरेराज आ रामपुरवा में धरम के स्मारक खातिर पत्थर के खंभा गड़ववलस आ केसरिया में स्तूप तइआर करववलस। एह तरह के चम्पारन के भूँइ बड़ा पुन्नवाली जमीन ह, जे इतिहास के खान सँजोवले बिआ।

एह चम्पारन में कहाँ-कहाँ अउर का देखे परखे के चीज आ स्थान बा, थोरे में ओकर परिचे दीहल जात बा।

भैंइसा लोटन

सभसे मनमोहक रूप भैंइसालोटन के बा, जेकरा के आज "बाल्मीकि आसरम" कहल जाता। असल में त ई स्थान बहुत पहिले "पुलस्त्य-पुलहाश्रमम" के नाँव से मसहूर रहे। एही भैंइसालोटन के पास गंडकी (नारायणी) नदी, सातो गंडकी के पानी ले के, बिहार के सीमा में घुसेले। गंडकी, देविका अउर ब्रह्म-तनया गाँव के नदिअन के संगम भइला से ई "त्रिवेणी क्षेत्रो" कहाला। बराह पुरान के १४४ अध्याय से पता चलत बा कि एही त्रिवेणी में गज अउर ग्राह के जूध भइल रहे, जहाँ गरुड़ पर चढ़ि के विसुनजी के आवे के परल रहे। महाभारत के वन-पर्व के ८२ वाँ अध्याय के १०- श्लोक बतलावत बा कि ई भाग ब्राह्मन लोगन के उत्पति स्थान रहे, जहाँ से ऊ लोग भारत में सगरो फइल गइलन-"प्रसूतिर्यत्र विप्राणां श्रूयते भरतर्षभ"। वराहपुरान अउर महाभारत एह भाग के बहुत विस्तार से चरचा करत बाटे। एह स्थान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के 'त्रिवेणी तीर्थ', 'गजेन्द्र मोक्ष' तीर्थ, 'पुलस्त्य पुलहाश्रम तीर्थ,' 'ब्रह्मातनया-संगम तीर्थ' 'कोटिवट तीर्थ, 'गोनिष्क्रमणतीर्थ', 'गोस्थलक तीर्थ', 'पंचनद तीर्थ', 'ब्रह्मपदतीर्थ', 'त्रिजलेश्वरतीर्थ' कहल जाला। एह से एह स्थान के 'त्रिवेणी सा महापुण्या देवानामपि दुर्लभा' कहल गइल बा आने एह तिरिथ खातिर देवता लोग तरसत रहे।

एही जगहा प त्रिवेणी में बाँध बान्हल गइल बा आ गंडकी से पच्छिम आ पूरुब-दूनू ओर नहर निकालल गइल बाड़ी सँ। एहिजा गंडकी के दहिना ओर (पच्छिम में) नेपाल देश के जमीन परे ले अउर पूरुब ओर चम्पारन के जमीन। एहिजा तक गंडकी के ऊपरी जल-ग्रह इलाका १४, ९०० वर्गमील में फइलल बा। बरसात में गंडकी अपना एह स्थान पर ८, ५०, ००० घनफुट हर छन पानी निकासे के काबू राखेले।

एहिजा जे बान्ह बनल बा, ओकर जल निकास वाला मारग के लंबाई २७४९ फुट बा आ बान्ह के मथेला के सतह ३४, ७०० फुट ऊँच बनल बा। बान्ह में पानी के निकालेवाला जे दुआर बनल बाड़े सँ, ओहनी के मुँह ७०-७० फुट चाकर बा। दूनो किनार में दू-दू गो नहर आने चार गो नहर निकालल गइल बाड़ी सँ। एह त्रिवेणी के गरभ में पहिले पहाड़ के बड़े-बड़े ढोका पड़ल रहन सँ, जवना से नाव ना चल सकत रहे। मगर जब बराज बने लागल त भीतर के सभ बड़े-बड़े ढोकन के निकाल देल गइल। चरियारन के त त्रिवेणी क्षेत्र जनमभूमिए हउवे। एह तिरबेनी के पूरुब में जे पहाड़ी बन बा, ओकर नाँव 'बनरीवन' ह। एह बनरीवन के सोनाह, सनोर अउर रोहुआ नाँव के नदी 'पंचरूखा' गाँव के ऊपरे भाग में गंडकी से मिलेली सँ। एकरा बाद पे 'पंचरूखा' के नीचे (दक्खिनमनोर,) में 'भवसान' आ कोसी नाँव के नदी गंडकी के बायें किनारा में आपन जल ढालेली सँ। तिरबेनी के इलाका आ एकरा पूरुब के जंगल के सोभा देखहीं जोग बा।

दरुआबारी

तिरबेनी बान्ह से एगो सड़क 'रामनगर' आवेले। एही सड़क के किनारे 'भैंसालोटन' के पाँच मील दक्खिन, बहुत पुरान गाँव 'दरुआवारी' बा जे रोहुआ नदी के किनारे बसल बा। दरुआवारी-के कुछ लोग "दरबार द्वार" कहेला। गाँव के उत्तर ओर कई गो खँड़हर आ टील्हा बाड़े सँ। लोगन के कहनाम के मोतबिक एहिजा ५२ गढ़ आ ५३ बाजार रहे। एही से एह गाँव के एगो दोसर नाँव 'बावन गढ़ी' ह। विंसेंट स्मिथ पहिले-पहिल एही गाँव के "रामपुरवा" बनवले रहन आ कहले रहन कि एहिजा चीनी यात्री फाहियान आ ह्वेनसाँगो आइल रहन। कुछ लोग 'दरुआवारी' के टिल्हन के 'सिभा-राँवराजवंस' के कवनो राजा के गढ़ कहेलन, जवन सिमराँव मिथिला के पहिला राजा 'नान्य देव' के राजधानी रहे। फेरू कुछ लोग बतलावेलन कि दक्खिनी बिहार के कवनो 'भीमसिंह' नाँव के राजा रहन, जेकर भाई लोग एहिजा आ के आपन गढ़ बनवले रहन। आखिर एह ओर के नट लोग एगो अइसन गीत गावेलन, जेकरा से बुझाला कि 'जसोर' आ 'टोडर' नाँव के दू भाई रहन, जिन्हिकर हवेली 'दरुआवारी' में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे। जे होखे, मगर ई चम्पारन के एगो पुरान जगह ह, जेकरा भीतर बहुते पुरान इतिहास छिपल बा आ जे पर्यटक लोगन के देखे-परखे लायक जगह बा।

बानेश्वर

चम्पारन के उत्तरवारी सीमा के पहाड़ अउर जंगल में 'बानेश्वर' महादेव के स्थान बा, जे 'गोवर्धना' से लगभग ९-१० मील उत्तर बा आ 'सोमेश्वर' किला से तीन मील दक्खिन। ई स्थान सोमेश्वर शिव-मंदिर से दक्खिन-पश्चिम कोन में तीने मील दूर परेला। कहल जाला कि एह शिव के आराधना रावन करत रहे। एही शिव के रिझावे खातिर रावन एहिजा नाचत रहे, जे से एह पहाड़ी भाग के नाँव 'नर्त्तनाचल' परि गइल—'तेन रावण नृत्येन प्रख्यातो नर्त्तनाचलः' (वरा० पु० १४४-२९३)। ओह जगहा प पानी के बहुते अभाव रहे, जेह से शिव के पूजा अरचा में बाधा होत रहे। रावन अपना बान से पहाड़ी के वेध के जवन जलधारा बहअवलस ओकर नाँव-'बानगंगा' नदी परल। ई बानगंगा बड़ा पुन्नवती नदी ह अउर पाप नाश करेवाली ह। ई बानेश्वर से दक्खिन ओर ढरकि के पहाड़ी आ जंगली जमीन से 'गोवर्धना' होखत 'घोड़ाघाट', 'मछगाँवा' आ 'जवका' गाँव आके अगिन कोन में चले लागेले। कई मील बहला के बाद एकरा पच्छिमी किनार में 'चानकी गढ़' नाँव के जगह बा।

चानकीगढ़—

चानकीगढ़ के कुछ लोग 'जानकी गढ़ी' कहेलन अउर एकर संबंध राजा 'जनक' अउर 'जानकी' से जोड़ेलन। मगर 'वाल्मीकि-रामायण' जे पढ़ले बा, ऊ जनकपुरी के एह इलाका में ना मान सके। असल में 'जानकीगढ़' के संबंध चन्द्रगुप्त मौर्य से होखे के चाहीं। चम्पारन के लोग त एकर लगाव 'चाणक्य' से मानेला आ कहेला कि चाणक्य एहिजे के रहे। हमरो विचार से 'चानकी गढ़' के सबंध एह दूनू में से जरूर केकरो से होखे के चाहीं। हमरा त बुझाला कि मोरिय छत्री लोगन के राजधानी 'चानकीगढ़' में रहे। आज से २०-२५ बरिस पहिले तक एहिजा के टील्हा ९० फुट ऊँच आ २५० फुट लाम रहे। आज से ७५ बरिस पहिले बेतिया के राजा एह टील्हा के खोद-ववले रहन त उन्हुका सोना के त ना, बाकिर ताँबा के ढेर मने सिक्का मिलल रहे। ऊ ताँबा के सिक्का कवना काल के रहे, ई पता ना चलल।

सोमेश्वर शिवलिंग—

सोमेस्वर किला से चार मील पूरुब आ बानेस्वर से ३ मील उत्तरपूरुब कोन में 'सोमेश्वर शिव' के मंदिर बा। सोमेश्वर शिव के बहुत बड़ महिमा महाभारत के वनपर्व (अध्याय ८४) में; ब्रह्मपुरान (अध्याय ३८) में; वामन पुरान (परि० पु० ७३५) में अउर बराह पुरान (अध्याय १४४) में बखानल बा। एह से साफ बा कि सोमेस्वर बहुत पुरान समय के पुन्न स्थान ह। युधिष्ठिर जब तिरिथ करे निकललन, त गिरिव्रज से होके जनककूप गइलन। ओकरा बाद 'बिनसन तिरिथ' होके सोमेस्वर सिव के आराधना करे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइल रहन। ई 'कुरुक्षेत्र' आ 'धर्मारन्न' अइसन भारत के पुरान तिरिथन में से एगो तिरिथ ह।

सोमेस्वर सिव के स्थापना 'सोम' कइले रहन। एही सोमेस्वर सिव के वरदान से 'सोम' आपन खोवल तेज आ वल पवलन। इन्हिके वरदान से त्रियम्वक सिव परगट भइल रहन। जइसे शालग्राम तिरिथ में चक्रनाभवाला पत्थर मिलेले सँ, ओसहीं सोमेश्वर स्थान के आस-पास में शिवनाभ पत्थर मिलेलें सँ। घूमन्तू लोगन खातिर वड़ा रमनीक जगह सोमेस्वर हउवे, जहाँ कुछ दिन ले वास कइला से कइसनो रोग अपने आप छूट जाला। सोमेस्वर मंदिर से पूरुव में रावन-तपोवन बा आ एकरा आगे कुम्भकरन नाँव के पहाड़ बा। एह सभ बात से पता चलत वा कि पुलस्त्य-कुल के लगाव एह इलाका से वरावर वनल रहे। अवहीं वानेश्वर आ सोमेश्वर तक जाये-आवे के सवारी के कवनो सुविधा नइखे। लोग पैदल चाहे अपना जीप गाड़ी से जालन। एह भाग के पहाड़, जंगल आ कुदरती सोभा देखहीं लायक वा। सखुआ विरिछ के जंगल एहिजा वड़ा सघन वा, जेह में जंगली जानवर भरल वाड़े।

रामपुरवा

चम्पारन जिला के 'नरकटियागंज' से एगो रेल लाइन भिखनाठोरी (नेपाल) जाले। रेल लाइन के साथ-साथ एगो पुरान सड़को भिखनाठोरी पहुँचेले। नरकटियागंज के लगभग ३५ मील उत्तर, सड़क के किनारहीं रमपुरवा स्थान वा, जे पंडई नदी के दहिना (पच्छिम) ओर वा। रामपुरवा गाँव के उत्तर पच्छिम कोन में 'गौनाहा' रेलवे स्टेशन ३ मील दूर परेला। एही रमपुरवा में सम्राट अशोक के लाट वा, जेकरा प उहे सभ वात टाँकल वा, जवन 'लउरियानन्दन' के लाट प खोदल वा। लिखावट ब्राह्मी लिपि में वा। एह लाट के मथेला के घेरा ठीक ओतने वा, जतना लउरियानन्दन गढ़ वाला लाट के वा। एह रमपुरवा में वौद्ध साधुन का मठन के आ भिक्खु लोग के समाधि के वहुत खँड़हर भरल वाड़े सँ। इतिहास आ पुरातत्त प्रेमी लोगन खातिर रमपुरवा एगो अजाएवघर अइसन महिमावान स्थान वा।

लउरियानन्दन गढ़

'रामरेखा' नदी के समेटत 'वानगंगा' नदी नरकटियागंज के दक्खिन में आके 'सिकरहना' से मिलेले। एह संगम पर ओकरा पूरुव में, 'मटिअरिआ' नाँव के गाँव वा। एहिजे सिकरहना के दहिना (दक्खिन) किनारा लउरियानन्दन गढ़ के टीला वा। 'जिनप्रभूसूरि' नाँव के एगो जैन साधु चउदहवीं सैंवरिसी में भइल रहन। 'विविध तीर्थ-कल्प' नाँव से एगो किताव ऊ लिखले वाड़े जेकरा 'मिथिला तीर्थकल्प' खंड में लिखल वा—'सिरि महावीर-सामिपयपंकयपवित्ति अजलाओ वाणगंगा-गंडई नईओ मिलित्त एयं नयरि पवित्तयंती।' एह से वुझात वा कि जवना नगरी के वारे में जिनप्रभूसूरि कहत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाड़े ऊ लउरियानन्दन गढ़े हो सकेला, काहे कि वानगंगा अउर बूढ़ी गंडकी के संगम प नगर कहलावे के हक ई राखत वा। लउरियानन्दन गढ़ बेतिया से उत्तर पच्छिम के कोना में १२ मील प वा। एहिजो अशोक के जरिए गड़वावल लाट वा, जे जमीन के सतह से २२ फूट साढ़े ९ इंच ऊपर ऊँच वा। एकरा जरि के मोटाई के घेरा ३५.५ इंच अउर मथेला भीरी के २६.२ इंच वा। मथेला के उपर कलश के ऊँचाई ६ फुट १० इंच वड़ए। मथेला भाग में राजहंसन के तस्वीर उरेहल बा। सभ हंस मोती के दाना चुगत देखावल गइल वाड़े सँ। मथेला के उपरी भाग में एगो सिंह के मूरत वइटावल गइल वा, जवना के मुँह टूट गइल वा। एह लाट प अशोक के लिखवावल आदेश खोदल वा, जेकर अच्छर ब्राह्मी लिपि में बा जे २४२-२४३ ई० पहिले खोदाइल रहे। चम्पारन में जे तीन गो लाट वा, तीनू प एके तरह के लेख खोदल वा। एही लाट प १६६१ ई० के लिखल एगो अवरू लेख फारसी लिपि में वा, जेकरा में लिखल बा—'मोहिउद्दीन मुहम्मद औरंगजेव वादशाह आलमगीर गाजी (फसली) सन् १०७१।' एह प एगो अवरू लेख नागरी लिपि में वा, जे १४८८ ई० के ह, वाकिर एकरा के अइसन मिटिका दीहल गइल वा कि पढ़ाय ना। मगर पढ़ाय लायक नागरी लिपि में दोसर लेख एह तरह से वा—'नृप नारायण सुत नृप अमर सिंह' वाकिर एह लेख के साथे ईस्वी सन् नइखे, एह से पता नइखे चलत कि नृप नारायण अउर अमर सिंह कहाँ के रहन आ कव भइलन। अँगरेजिओ लिपि में एगो अँगरेज के नाँव खोदल वा।

लाट से कुछुए दूर प एगो खँड़हर वा, जेकरा के 'नन्दन गढ़' कहल जाला। एह ढूह प एगो पुरान मन्दिरो के खँड़हर बा। एकर नन्दन नाँव काहे परल, ई बात मालुम नइखे। बाकिर हमरा जाने एहिजा नन्दवंश के कवनो राजा के गढ़ रहे, एह से ई नन्दन गढ़ कहाइल। विंसेंट स्मिथ के कहनाम रहे कि ई कवनो गढ़ के खँड़हर ना ह, बलुक भगवान बुद्ध के अवशेष पर बनल स्तूप ह, वाकिर डा० ब्लाच एकरा के गढ़ के खँड़हर मनले वाड़न। खँड़हर के उत्तर तरफ, तीन गो पाँति में, १५ गो टीला बाड़े स जे भिक्षुअन के समाधि कहल जाले सँ। एहनी में से एगो के जब खोदाई भइल रहे, त ओह में चाँदी के अइसन एगो सिक्का मिलल रहे, जेकरा के ईस्वी सन् १००० बरिस पहिले के सिक्का कहल रहे—आने अशोक के ७५० वरिस पहिले के जेनरल कनिंघम के विचार से ई सभ टील्हा चम्पारन के ओह ओह राजा के समाधि ह, जे ईसा से ६०० बरिस से १००० वरिस पहिले भइल रहस। एकरा अलावे नन्दनगढ़ से उत्तर-पच्छिम, 'मसान' नदी आ सिकरहना के संगम पर अइसन टील्हन के भरमार बा। एह से पता चलत वा कि चम्पारन (पूर्व विदेह) के जमीन वहुत प्राचीन ह अवरू एहिजा के सभ्यतो वहुते पुरान ह।

मधुबन-बेदीवन

पुरुबी चम्पारन में सिकरहना नदी के पच्छिमी किनारे, मधुबन-बेदीवन नाँव के स्थान वा, जे वहुते प्राचीन ह। हमरा अनुमान के मोताविक महाभारत (वन पर्व ८४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१/१२) आ पद्मपुराण, स्वर्ग खण्ड (३८/२९) में जवना "विनसन तिरिथ" के वरनन आइल वा, ऊ विनसन इहे "वेदीवन" ह, काहे कि "जनककूप" अउर गंडकी तिरिथ के बीच में, "विनशन तिरिथ" रहे। एकरे पासे पिपरा- मोतिहारी सड़क के किनारे "सीताकुंड" नाँव के जगह वा, जहाँ नदी विला गइल बिआ। ई वेदीवन रेल-स्टेशन पिपरा से पूरुव उत्तर के कोना में एक मील हटि के वा। पिपरा से जवन रास्ता ढाका होके बैरगनिया जाला, ओकरे किनारे वेदीवन मिलेला। वेदीवन, मधुवन आ सीताकुंड- एह तीनू स्थानन में टील्हन के जमघट लागल वा। वेदीवन वाला खँड़हर के उत्तर २० फूट ऊँच एगो टील्हा वा, जवना प एगो पुरान मन्दिर आजो खाढ़ वा। मन्दिर के भीतर दू फुट लाम एगो पत्थल वा, जेकरा के भगवान राम के चरन-चिन्ह कहल जाला। मुसलमान लोग एकरा के अपवित्तर करे खातिर अरवी लिपि में सात लाइन लिख देले वाड़न, जवन अब पढ़ल नइखे जात। जेनरल कनिंघम महाराज बड़ा कोरसिस कइके एक पाँति में से एगो शब्द पढ़लन आ कहलन कि एह प "महमूदशाह" लिखल वा, जे जौनपुर के महमूद शर्की रहे। महमूद शर्की १४५० ई. में मिथिला के राजा कीर्त्ति सिंह के मदद करे एह इलाका में आइल रहे। कनिंघम के कहनाम के मोताविक एहिजा के मस्जिद कवनो मन्दिर तूरि के वनावल गइल वा।

सीताकुंड के खँड़हर के वारे में लोग के विचार ह कि कवनो किला के भसल ढूह ह। ई किला वर्गाकारमें रहे, काहे कि एकरा हर भाग के लम्वाई ४५० फूट रहे। किला के चारू कोना में अउर वड़का फाटक प गुंवज वनल रहन सँ। किला के दीवारन के चकराई साढ़े २१ फूट रहे। एह दीवारन के वहरी भाग में १०—१० फूट के अउर भीतर के ओर तीन-तीन के ईंट जोड़ल गइल रहन सँ आ वीच में माटी के भराई भइल रहे। किला के उत्तर ओर दूगो फाटक रहे, वाकिर तीनू ओर एकक गो फाटक वनल रहे। किला के चारू ओर वहुते गहिड़ खाई खोदाइल रहे, जेकर जहाँ-तहाँ चिन्ह आजो वुझा जाला। एही किला के वीच में "सीताकुंड" वा, जे कवनो पुरान तिरिथ ह। रामनउमी के वेरा आजो इहवाँ वहुते बड़ मेला लागेला अउर लोग कुंड में नहा के पवित्तर होखल। ई स्थान देखहीं जोग वा, जेकरा के जरूर देखे के चाहीं।

लउरिआ-अरेराज

गंडकी (नारायणी) के वाँयाँ किनारा वेशुमार पुरान-पुरान आ खँड़हर टील्हा वाड़े सँ। तेजपुरवा, गुजरुलिया, घटिया, नगदहा सखवा, गोबिन्दगंज, साल्हा ओगएरह गाँव एह तरह के टील्हन से भरल वाड़े सँ। गोविन्दगंज से तीन मील उत्तर में लउरिआ-'अरेराज' नाँव के स्थान वा। एहिजो अशोक के लाट गाड़ल वा, जे जमीन के सतह से साढ़े ३७ फूट उपर खाड़ वा। लाट के निचिला चौकी के घेरा ४१.८ इंच अउर उपरवाला मथेला के पास के घेरा ३७.६ इंच वा। एह लाट के मथेला टूट गइल वा, जेह प जरूर सिंह के मूरत वनल होई। एह पर उहे लेख वा, जवन नंदनगढ़ अउर रमपुरवा के लाट प खोदल वा, वाकिर एह पर के सभ लेख अवहुँओ वड़ा साफ वा जे मजे में पढ़ा जाला। एह प छव गो धरम लेख वा, जवन अशोक के राजगद्दी पवला के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२६ वाँ वरिस में लिखाइल रहे। लाट के उत्तरवारी ओर लेख के १८ गो पाँति आ दक्खिनवारी ओर २३ पाँति खोदल वा। एह लाट के पच्छिम-दक्खिन कोन के ओर, एक मील प हटि के शंकर महादेव के बहुते पुरान मन्दिर बा, जहाँ आजो बहुत बड़ मेला लागेला। एह जगहा पर सम्राट अशोक तिरिथ करे आइल रहन।

केसरिया

गंडको के पुरुवी कछार पर चंपारने जिला में 'केसरिया' नगर वा। छव सइ वरिस पहिले गंडकी नदी एकरा पास से वहत रहे। सतवीं सइवरिसी में चीन के बटोही ह्वेनसाँग केसरिया में आइल रहले। ऊ अपना किताव में लिखले वाड़े कि वैशाली से ३० मील उत्तर पच्छिम में एगो बहुते धनी आ पुरान नगर रहे, जे उजाड़ हो गइल रहे। भगवान तथागत कहले रहन कि हम एक बे कवहूँ एहिजा चकरवर्ती राजा होके जनमल रहीं। एही से ओह इयादगारी खातिर एहिजा एगो बुद्ध-स्तूप वनवावल गइल रहे। एह से पता चलत वा कि केसरिया ढूह अशोक के वनवावल बौद्ध स्तूप ह। वाकिर एहिजा के लोगन के कहनाम के मोताविक ई "राजा वेन" के किला के ढूह ह। आज-काल्ह एकरा के "देवरा" कहल जाला आने "देवघरा" (देवकुल) मगर "देवघरा" शब्दो से पता चलत बा कि ई स्थान कवहूँ— "देवगृह" रहे अउर जब देवगृह रहे, तब जरूर ई बौद्ध-स्तूप हउवे। एह "देवरा" के सटले एगो अवरू टील्हा बा, जेकरा के रनिवास महल के ढूह मानल जाला। "देवरा" के बारे में कहल जाला कि एह गढ़ के छत से पटना नगर लउकत रहे।

एहिजा के 'गँगेयाताल' 'राजावेन' के राजमहिषी 'पद्मावती' के नहान-पोखर रहे। वाकिर इतिहास जाने वाला लोग कहेला कि रनिवास टील्हो कवनो बौद्धमठ के टील्हा ह। कनिंघम एह टील्हा के देखले रहन। उन्हुकरा बिचार से ई स्तूप कवनो पुरान स्तूप के ढूह पर २०० ई० से ७०० ई० के बीच में कवहूँ वनवावल गइल रहे, वाकिर कनिंघम के मत हमरा जँचत नइखे, काहे कि ह्वेनसाँग के ही समे में ई नगर अउर स्तूप बीरान हो गइल रहन सँ। हमरा विचार से मूल जगह ई "वेने राजा" के ह, जे भगवान बुद्ध के पूरुव जनम वाला चकरवर्ती राजा रहन। उन्हुके महल के ढूह पर पाछे चलि के अशोक बौद्ध-स्तूप बनववले।

ई स्तूप केसरिया से दू मील दक्खिन दिशा में वा। एकर उँचाई आजो लगभग ६२ फुट होई, जेकर नीचेवाला घेरा १४०० फुट में वा। सन् १८६२ ई० में एकर खोदाइओ भइल रहे, जवना में एगो मन्दिर मिलल रहे आ ओह मन्दिर में बुद्ध के मुरती मिलल रहे।

एह सभन के अलावे गंडकी के पुरुबी किनारा के डोमवलिया, वगहा, रतनमाला बरगाँव, पिपरिया, पतजिरवा, संग्रामपुर, ओगएरहे अउर मेहसी, सुगौली, त्रिन्दावन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पचरुखा, धोरम नदी के किनारे के भभटा, सिंघासिनी आदि में पुरान पुरान-टील्हन के भरमार वा जे सभ चंपारन के पुरातत्त के गवाही दे रहल बाड़े सँ। मिथिला के शासक "नान्यदेव" के राजधानी 'सिमराँव' एही चंपारन में रहे, जे सुगौली—संधि के बाद नेपाल राज में चलि गइल। सुगौली से ७ मील उत्तर सिंघासिनी गाँव के टील्हा के "ऊँचाडीह" कहल जाला। एहटील्हा के चारो कोन प ऊँच—ऊँच ढूह बाड़े सँ, जवना से पता चलेला कि ई सभ एह किला के बुरुज रहन सँ। किला तक आवे खातिर सड़क बनल रहे, जेकर चिन्ह आजो बुझाला। ई टील्हा सिकरहना नदी के बायाँ ओर बा। एही तरह बेतिया से ७ मील पच्छिम गंडक के पूरुब 'पतजिरवा' गाँव बा। एहिजा के मन्दिर के बारे में कहल जाला कि "दुर्विजय सिंह" नाँव के राजा के बनावल ह, जे एह इलाका के बड़ा मानिन्द राजा रहन। कवनो मुसलमानी जूध में ई मारल गइलन। पति के वियोग में उन्हुकर रानी सती हो गइली। एही से एकर नाँव "पतजिरवा" परल। राजा-रानी के मउवत से इन्हिकर परजा लोग अतना दुखी हो गइलन कि ऊ लोग खटिया प सूतल छोड़ देलन आ पक्का मकानो मेंरहल छोड़ दिहलन।

एह तरह के अनेकन चिन्हन से उत्तर भारत के सभ ले प्राचीन जमीन चंपारन के ह जहवाँ से सगरो वैदिक धरम फइलल आ एहिजा के इंच-इंच जमीन पढ़े, समुझे आ देखे जोग आज हो गइल बा।

भोजपुरी अकादमी

बोरिंग रोड, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चंपारन के अशोक स्तम्भ

हरिश्चन्द्र प्रसाद

□ □

चम्पारन जिला में तीन गो अशोक स्तंभ पावल जाला जेकर विवरण नीचे देल जात बा।

१. लउरिया नन्दनगढ़ :—

ई जगह बेतिया शहर से १६ मील उत्तर-पश्चिम में बा। उहाँ साढ़े ३२ फुट ऊँचा एगो सिंह के मूर्त्ति वइठावल बा। सिंह के मुख-भाग टूटल बा। ई के तुरलस एकर पता ना चले। स्तम्भ चमकदार पत्थर के एगो कुंदा बा। ए पर पाली भासा के सुन्दर आ साफ-साफ अक्षर में अशोक के धर्म लेख खोदल बा। एकरा अलावे स्तम्भ पर तीन तरह के आउर खोदाई पावल जाला। एक जगह फारसी-लिपि में मोहिउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब पादशाह आलमगीर गाजी, १०६१ लिखल बा। दोसर जगह देवनागरी लिपि में नृप नारायण सुत नृप अमर सिंह खोदल बा। लेकिन ए पर कोई तारीख नइखे खोदल जेह से पता चलो कि ई कब खोदल गइल। सन् १७९२ ई० में रयूबन वर्रो साहेब, जे बंगाल के अनुसंधान सोसाइटी के एगो सदस्य रहस, आपन नाम स्तम्भ पर खोदवा देलन।

२. लउरिया अरेराज :—

ई जगह मोतिहारी शहर से १९ मील दक्खिन-पच्छिम में बा। इहाँ भी प्रियदर्शी अशोक के द्वारा ई० पू० २४९ में बनवावल एगो स्तम्भ बा। जमीन से एकर ऊँचाई साढ़े छत्तीस फुट बा। एकरा ऊपर के भाग नइखे। लेकिन अनुमान कइल जाला कि एह पर एगो सिंह के मूर्त्ति जरूर रहल होखी। एकरा उत्तर के भाग काल के प्रभाव से बिल्कुल काला हो गइल बा। एह पर अशोक के धर्म-लेख दू जगह खोदल बा। एक जगह १८ पंक्ति बा आ दोसरा जगह २३ पंक्ति। एहू स्तम्भ पर रयूबन बर्रो साहेब आपन नाम सन् १७९२ ई० में खोदववले रहस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३. रमपुरवा-पिपरिया :—

ई जगह शिकारपुर थाना में गौनाहा रेल-स्टेशन से २ मील दक्खिन में वा। इहाँ भी अशोक के बनवावल एगो स्तम्भ रहे। लेकिन ओह स्तम्भ के केहू चिढ़ के तोड़ देलस। अनुमान वा कि ई दुष्कर्म मीर जुमला, जे औरंगजेब के सेनापति रहस, शाह शुजा के मार के बंगाल से लौटे के बेर कइलन। एकर पता कार्लेल साहेब लगवले रहस। एक दिन कुछ थारू लोग उन्हुका के कहल कि लउरिया के स्तम्भ के अइसन एगो स्तम्भ रमपुरवा में वा जेकरा के ऊ लोग भीमसेन के लाठी कहेला। एह पर भी अशोक के धर्म-लेख खोदल वा जे लउरिया-नन्दनगढ़ आ लउरिया अरेराज से मिलत-जुलत वा। ई देख के बड़ा अचरज में पर जाइल जाला कि एह स्तम्भ के ऊपर साँढ़ के एगो मूर्त्ति रहे जब कि अउर सभ स्तम्भ पर सिंह के मूर्त्ति पावल जाला। आजकल ई मूर्त्ति नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में सुरक्षित वा।

हम ऊपर लिख अइलीं ह जे चम्पारन के तीनों स्तम्भ पर एके तरह के लेख खोदल वा : सब स्तम्भ पर छव गो धर्म-लेख लिखल वा जेकर विवरण नीचे देल जाता :--

१. पहिला लेख :—

"देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा अइसन कहत बाड़न:—राज्याभिषेक के २६ बरिस बाद हम ई धर्म लेख लिखववलीं। अत्यन्त धर्मानुराग के बिना, विशेष आत्म-परीक्षा के बिना, खूब सेवा के बिना, पाप से खूब भय के बिना आ महान उत्साह के बिना एह लोक में आ परलोक में सब जगह सुख दुर्लभ वा। लेकिन हमरा शिक्षा से [लोग के] धर्म में आदर आ अनुराग बढ़ल ह आगे अउरू भी बढ़ी। हमार 'पुरुष' [राजकर्मचारी] चाहे उच्च पद पर होखस भा नीचे पद पर, चाहे मध्यम पद पर [हमरा शिक्षा के मुताबिक] काम करेलन आ अइसन उपाय करेलन कि चंचल बुद्धि के लोग [दुर्विनीत भा पापी] भी धर्म के आचरण करेले। धर्म के मुताबिक पालन कइल, धर्म के मुताबिक काम कइल, धर्म के मुताबिक सुख दीहल आ धर्म के मुताबिक रक्षा कइल इहे कानून [शासन के सिद्धान्त] वा।"

२. दूसर लेख :—

"देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा अइसन कहत बाड़न:—धर्म कइल अच्छा ह। लेकिन धर्म का ह ? धर्म इहे ह कि पाप से दूर रहे, बहुत-सा अच्छा काम करे, दया, दान सत्य आ शौच [पवित्रता] के पालन करे। हम कई तरह के आँख [चक्षु] के दान भा आध्यात्मिक दृष्टि के दान भी लोग के देले बानीं। दू पैर के जानवर, चार पैर के जानवर, चिरई आ पानी में के जीव-जन्तु पर भी हम किरिपा कइले बानीं, हम ओकरा के प्रान के दान भी देले बानीं। आउर भी बहुत किसिम के कल्यान के काम हम कइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वानीं। ई लेख हम एह ला लिखववलीं ह कि लोग एकरा मुताविक आचरन करे आ ई चिरस्थायी रहे। जे एकरा मुताविक काम करी, ऊ पुन्य के काम करी।"

३. तीसर स्तम्भ लेख:—

"देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा अइसन कहत वाड़नः – मनुष्य अपना अच्छे काम के देखेला [आ मन में कहेला कि] 'हम अच्छा काम कइलीं ह।' लेकिन ऊ अपना पाप के ना देखेला [आ मन में कभी ना कहे कि] 'ई पाप हम कइलीं ह भा ई दोष हमरा में वा।' एह तरह के आत्म-परीक्षा वड़ा कठिन वा। तवहूँ आदमी के ई देखे के चाहीं कि क्रूरता, निष्ठुरता, क्रोध, मान, ईर्ष्या, ई सभ पाप के कारन ह आ एह वजह से आदमी आपन नाश ना होखे देवे। एह वात के ओर खास कर के ध्यान देवे के चाहीं कि एह [रास्ता] से हमरा एह लोक में सुख मिली आ एह [दोसरा रास्ता] से हमार परलोक भी वनी।"

४. चउथा स्तम्भ लेख:—

"देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा अइसन कहत वाड़नः राज्याभिषेक के २६ वरिस वाद हम ई लेख लिखववलीं। हमार 'रज्जुक' नाँव के कर्मचारी लाखो आदमी के ऊपर वहाल वा। इनाम भा दंड देवे के अधिकार हम उनुके अधीन कर देले वानीं, जे से कि ऊ निश्चिन्त आ निर्भय हो के आपन कर्त्तव्य करस आ लोग के हित आ सुख के खेयाल राखस आ लोग से अनुग्रह करस। [लोग के] सुख आ दुख के कारन जाने के कोशिश करिहन आ 'धर्मयुक्त' नामक छोटे कर्मचारी के जरिए लोग के अइसन उपदेश दीहन जे से ऊ लोग एह लोक में आ परलोक में दूनू जगह सुख पाई। रज्जुक लोग हमार आज्ञा के पालन करी। हमार 'पुरुष' [नाँव के कर्मचारी] भी हमार इच्छा आ आज्ञा के मुताविक काम करो। ऊ [पुरुख] भी कभी-कभी अइसन उपदेश दीहन जे से रज्जुक लोग हमरा के खुश करे के कोशिश करी। जे लेखा कवनो आदमी अपना वच्चा के निपुन धाय [लउँड़ी] के हाथ सउँप के निश्चिन्त हो जाले [आ सोचेले] कि ई धाय हमार वच्चा के सुख पहुँचावे के भरपूर कोशिश करी, ओही लेखा लोग के हित आ सुख पहुँचावे ला हम 'रज्जुक' नाँव के कर्मचारी नियुक्त कइले बानीं। ई लोग निर्भय निश्चिन्त आ शान्त-चित्त हो के काम करो, एह खातिर हम इनाम आ दंड देवे के अधिकार एह लोग के अधीन कर देले वानीं। हम चाहीले कि व्यवहार [न्याय के काम] में आ दंड [सजाय] देवे में पक्षपात ना होखे के चाहीं। एह से आज से हमार ई आज्ञा वा कि कारागार [जेल] में पड़ल जवन आदमी के मौत के दंड निश्चित हो गइल बा उन्हुका के तीन दिन के मुहलत देल जाय। [ए बीच में अर्थात् तीन दिन के मुहलत के भीतर] जे लोग के वध के सजाय भइल बा उन्हुकर जाति-परिवार के लोग उन्हुका ओर से उन्हुका जीवनदान खातिर [रज्जुक लोग से] पुनर्विचार खातिर प्रार्थना करो' भा ऊ आखिरी समय तक ध्यान में रख के परलोक खातिर दान दीहन भा उपवास करिहन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काहे कि हमार इच्छा वा कि कारागार में रहते भी दंड पावल लोग परलोक के चिन्तन करो आ बहुत प्रकार के धर्माचरण, संयम आ दान करे के इच्छा लोग में बढ़ो।

५. पाँचवाँ स्तम्भ लेख :—

देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा कहत बाड़न:—राज्याभिषेक के २६ बरिस बाद हम नीचे लिखल प्राणी के बध वर्जित कर देलीं—सुग्गा, मैना, अरुन, चकोर, हंस, नान्दीमुख गेलाड़, जतुका [चमगादड़] अम्बा कपीलिका [दीमक], दुड़ि [कछुई], बिना हड्डी के मछरी, वेदवेयेक, गंगापुपुटक, सकुज, मत्स्य, कछुआ, साही, पर्णशास [गिलहरी], स्टमर [बारहसिंगा], साँड़, ओकपिंड, पलसत [गंडा], सफेद कबूतर, गाँव के कबूतर आ सब तरह के अइसन चार पैर वाला जे न त कवनो तरह के काम में आवेले आ ना खाइल जाले। गाभिन भा दुधारू बकरी, भेंड़ी भा सुअरी के आ ओकर बच्चा के, जे छव महीना से कम होए, ना मारे के चाहीं। मुर्गा के बध ना करे के चाहीं। जीवित प्राणी के साथ भूसा के ना जलावे के चाहीं। अनर्थ करे ला भा प्राणी के हिंसा करे ला बन में आग ना लगावे के चाहीं। एगो जीव मार के दोसरा जीव के ना खिलावे के चाहीं। हर चार-चार महीना के तीन रीतु, पूरनमासी के दिन, पूस महीना के पूरनमासी के दिन, चतुरदसी, अमावस आउर प्रतिपदा के दिन आउर हर उपवास के दिन, मछरी ना मारे के चाहीं आउर ना बेंचे के चाहीं। ए सभ दिन हाथी के बन में अउर तालाव में कोई भी दोसरा तरह के जीव ना मारे के चाहीं। हर पख के अठमी, चतुरदसी, अमावस भा पूरनमासी आउर पुनरवस नक्षत्र के दिन, तीन चतुरमासी के दिन आउर त्योहार के दिन बैल के दागे के ना चाहीं अउर बकरा, भेड़ा, सुअर अउर एही तरह के दोसर प्राणी के जेकर बध होखेले, बध ना करे के चाहीं। पुख अउर पुनरवस नक्षत्र के दिन हर चतुरमास के पूरनमासी के दिन अउर हर चतुरमास के इँजोरिया पख में घोड़ा अउर बैल के ना दागे के चाहीं। राज्याभिषेक के बाद २६ बरिस में हम २५ बेर कारागार से बन्दी लोग के मुक्त कइलीं।"

छठवाँ स्तम्भ लेख :—

देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा अशोक अइसन कहत बाड़न:—राज्याभिषेक के बारह बरिस के बाद हम धर्म लेख लोग के हित ला लिखवलीं, जे से कि ऊ लोग पाप के रास्ता के छोड़ के भिन्न-भिन्न प्रकार से धर्म के बढ़ावा देवे। एही लेखा हम लोग के हित अउर सुख के लक्ष्य में रख के ई देखीले कि ना केवल हमार जाति कुटुम्ब के लोग बलुक दूर के लोग अउर पास के लोग भी एके लेखा सुखी रह सकेले। एही [उद्देश्य] के मुताबिक हम काम करीले। एही लेखा सब समाज के [हित अउर सुख के] हम ध्यान में राखीले। हम सब पार्षड [सम्प्रदाय] के भी अनेक प्रकार से सत्कार कइले बानीं। लेकिन अपने आप खुद (लोग के पास) आइल ई हम (आपन) मुख्य [कर्त्तव्य] मानीले। राज्याभिषेक के २६ बरिस बाद हम ई धर्म लेख लिखववली।

('अँजोर' से साभार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चम्पारन के थारू आ थरुहट

सिपाही सिंह 'श्रीमन्त'

□ □

थरुहट—चंपारन जिला के पच्छिम—उत्तर के छोर पर बसल इलाका थरुहट कहाला। ई पूरा के पूरा इलाका सोमेसर पहाड़ी के घाटी आ हलुक-फलुक जंगलन से भरल परल बा। एही पहाड़ी आ जंगली इलाकन के आस-पास, खास कइके रामनगर, बगहा, मैनाटाँड़ आ सिकारपुर थाना के गाँवन में थारू जाति के बास बा। एही वजह से ऊ पूरा इलाका थरुहट नाँव से मसहूर हो गइल बा। थरुहट के कुछ भाग गंडक नदी पार कइ के उत्तर प्रदेश में चलि गइल बा आ कुछ थारू लोग, नेपाली सिवाना के भितरो बा। साँच पूछीं त पच्छिम में उत्तर प्रदेश के नैनीताल से लेके पुरुब में बिहार के दरभंगा मधुबनी जिला तक पहाड़ के तराई में थारू जाति के आबादी बा, बाकिर असल थरुहट, जवन मसहूर बा, तवन बिहार के चंपारने आ गोरखपुर वाला थरुहट ह। एही में 'दोन' आ 'चउपारन' नाँव के दूगो अइसन जगह बा जवना के खोजी विद्वान लोग असल थरुहट मनले बाड़न। कुछ लोग नेपाल के तराई में बसल चितवनो के असल थरुहट में गिनेला।

अब जिला चंपारन दू खंड में बँटा गइल—पुरुबी चंपारन आ पच्छिमी चंपारन। एह हिसाब से असली थरुहट पच्छिमिए चंपारन में परि गइल। जवना घरी (सन् १९६०-६१ में) हम थरुहट के लोकगीत जुटावे खातिर थरुहट में घूमत रहीं, ओ घरी भइँसालोटन नाँव के जगहा में आजु के आधुनिक बालमीकिनगर ना बनल रहे। अब त सड़क इसकोल वोगएरह बनि गइला से भइँसालोटन में हवाई अड्डा के निरमान हो गइला से थरुहटो के आपन जनजाति वाला रूप बहुत कुछ बदलि चुकल बा आ आगे अवहीं बदलते जाए के उमेद बा।

थारू गाँव के रहस्य—आजु से १७-१८ साल पहिले थरुहट में घूमत खा सभ से पहिला सवाल मन में इहे उभरे कि इहाँ के बसिन्दा थारू काहे कहाला लोग ? कुछ बूढ़-पुरनिआँ थारू लोग बतावल कि ओह लोग के पुरबज लोग राजपूताना के "थार"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(मरुस्थल) से आके इहाँ बसि गइले, एही से हमनी के थारू नाँव परि गइल। ई कवनो अचरज के बात नइखे। बाकिर सभे इहे बात कहित तब नू ? कुछ लोग बतावल कि ओह लोग के पुरवज चित्तौड़ से आइल रहे लोग। केकरा संगे आइल लोग, एकर जबाब दू किसिम के मिलल। एक त ई कि एह घरी के नेपाल-महराज के पुरवज लोग के संगे गढ़ चित्तौड़ से भागि के आ के एह सभ इलाकन में बसि गइल लोग। दोसर ई कि गढ़ चित्तौड़ के पृथ्वीराज चउहान का संगे भागि के आइल लोग।

मालुम ना ई गढ़ चित्तौड़ कवन ह ? ओह जगह से पृथ्वीराज चउहान के का संबंध रहे ? बूढ़-पुरनिआँ थारू सभ का ई फिकिर थोरे बा कि इतिहासो के ताल-मेल बइठे के चाहीं। बाकिर ओह लोग का मुँह से "पृथ्वीराज चउहान" के नाँव सुनि के हमार अनुमान "रणथंभौर" तक दउरत बा। सएकड़न बरिसन में "थंभौर" से "थार" बनि गइल कवनो अचरज के बात नइखे।

थारू लोग के एगो उपजाति के नाँव ह "अहिरवाट"। ई लोग आपन संबंध गोकुल-वृंदावन से जोरेलन। कहेलन कि ई लोग "किसुनउत" ह। वृंदावन के तरफ से आके इहाँ बसि गइल बा लोग। ई सभ त भँउजाल बा, बाकिर एगो बात बेलकुल सही बा कि थारू लोग के पुरवज पछिमे देने से आइल रहे आ ओह लोग के संबंध निहिचित रूप से कवनो हारल-बिखरल राजपूत राज से रहे। साइत इहे अनुमान सही होखे कि जब नेपाल महराज के पुरवज लोग चित्तौड़ से आ के नेपाल में बसलन त ओह लोग के साथे कुछ आउरो बरन के लोग आ कृ नेपाल के तराई मे बसि गइलन, जे थारू कहइलन।

एह बात के सही पता अबहीं तक ले नइखे लागल कि थारू लोग कब से थरुहट में रहि रहल बा। थरुहट में थारू के अलावे जे बाहरी लोग बसि गइल बा ओह लोग खातिर "बाजी" सबद के परयोग होला। अगर मानि लीहल जाउ कि ई "बाजी" सबद "वृज्जि" के बिगड़ल रूप ह त बात बेलकुल साफ हो जाई।

ई बात सभे जानत बा कि आजु से लगभग अढ़ाई हजार बरिस पहिले "वृज्जि" संघ के तूती बोलत रहे। पूरुबी चंपारन जिला के दक्खिन-पूरुब सिवाना से सटले जे इलाका बा ओह में वृज्जि लोग के आवा-जाही लागल रहत हऽई। अचरज ना कि ओने से आवे वाला लोग खातिर "वृज्जि" नाँव थरुहट में ओही घरी परचलित हो गइल, जवन बाद में "वृज्जि" से "वज्जि" आ "बज्जि से "बाजी" बनि के आजु ले डेरा जमवले रहि गइल। एह "बाजी" सबद के डोरी पकड़ि के थरुहट में थारू लोग के बास आजु से तीनि हजार बरिस पहिले सहजे में परमानित हो जात बा।

जनजाति कि पिछड़ा बरग—पहिले थारू लोग के गिनती जनजाति में कइल जात रहे। १९४१ के जनगनना में एह लोग के जन-जातिए लिखल गइल बा बाकिर बाद में दूगो थारू नेता एकर बिरोध कइलन आ अपना के जनजाति कहल आपन हिनाई माने लगलन। ऊ लोग अपना के पिछड़ा बरग में गिने लागल। तब से ऊ लोग पिछड़े बरग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के कहाला । कुछ थारू लोग त अपना के कासिप (कश्यप) गोत्र के छत्री कहे लगलन बाकिर ओह लोग के ई दावा सही नइखे काँहेकि कतहीं के थारू जनेव ना पहिरे लोग आ ना एकरा खातिर कवनों पावंदिए वा। दोसर चीज वा एह लोग के पदवी जे महतो, राउत, खतइत, काजी, खोजवाह, दिसवाह, वोगएरह कतहीं के छत्री के पदवी नइखे।

जनसंख्या—पच्छिम में नैनीताल से लेके पूरुब में जनकपुर तक तराई इलाका के कुल्हि संख्या जोड़ला पर एह घरी थारू जाति के जनसंख्या लगभग पाँच लाख तक पहुँचि जाई। एह में चपांरन जिला के भोजपुरी थारू पंचास हजार से अधिके बाड़न।

थरुहट के भासा—चंपारनी थारू लोग के मातृभासा भोजपुरी ह। अइसन हो सकेला कि जगह-जगह के भेद से कतो-कतो तनी-मनी कुछ भेद लउकि जाउ बाकिर कुल्हि मिला के ऊ लोग भोजपुरिए बोलेला। वगहा थाना के थारू लोग त उहे भोजपुरी बोलेला जवन भोजपुरी चंपारन के दोसर लोग बोलेला। बाकिर चितावन [भिखनाठोरी से उत्तर नेपाल के तराई] के थारू बोली पर तनी-मनी मगही के असर झलकेला। एकर एगो ऐतिहासिक कारन वा। चितावन से लगभग तीनि कोस दक्खिन-पूरुब में रमपुरवा बा, जहाँ के अशोक के लाट आजुओ एह बात के गवाही दे रहल वा कि ई सभ इलाका मगध-समराज का परभाव में रहि चुकल वा। मगही लोग से ढेर संम्पर्क भइला पर इहाँ के भोजपुरी आप-से-आप मगही परभाव गरहन क लेले होई। अवहीं एकरा बारे में खोज करे के जरूरत वा।

मेहरारू पवित्तर, मरद अपवित्तर—थारू औरत अपना रसोई घर में कवनो मरद के आवे ना देसु। इहाँ तक ले कि अपना पति आ अपना बेटो के चउका का भीतर ना पइसे देसु। पकल-पकावल खाना के छुए के अधिकार खाली मेहरारुए के वा। एह खातिर थारू मरद अपवित्तर मानल जालन। मरद के जूठ खाए के रेवाज मेहरारुन में नइखे। एह परथा से थारू लोग दीगर हिन्दू-समाज से एकदम अलग वा। हमनीं किहाँ त मेहरारू अपना मरद के जूठ खाइल सउभाग के बात मानेली स। अपना संतान के चउका में ना ढूके देवे के त हमनीं किहाँ के मेहरारू सोचिओ ना सके। एह ममिला में बाल-गोपाल लोगन का त पूरा छूट रहेला।

('भोजपुरी अकादमी पत्रिका' से)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थरुहट के कुछ लोक गीत

थारू स्त्री आ पुरुष वहुत निष्कपट आ सच्चा होले। अतिथि-सेवा एह लोग के महान गुन ह। थारू लोग के लोक गीतन में एह लोग के सीधापन आ सच्चाई झलकत रहेला। एकाध गीतन के बानगी देखल जाय :—

निसुके रे खेतिआ,
कइसे पोसव घर के वेकतिआ !

रोपा भइले तोपा; लेवा भइले सेवां,
कइसे पोसब घर के वेकतिआ,
निसुके रे खेतिआ !

एगो लोक गीत के नाँव "बिरहनी" ह जे धान के रोपनी के बेरा गावल जाला। एगो सुनल जाय :—

ठूँठी त पकड़िआ सीतल जुड़ि छँहिआ रे,
आहे ताहि तर सूते हरवाह हे !

अँगना वहरइत सैलखी रे चेरिआ,
पनिआँ माँगेला हरवाह हे !

आहे खोंइछा टाँगि लिहले आनन्दी के भुँजवा,
माथे लेले कुड़नी हेवाल हे !

आहे कवन हरवहिआ के आनन्दी भुँजवा;
केंकरा ही कुड़नी हेवाल हे !

आहे अगिला हरवहिआ के आनन्दी के भुँजवा,
पछिलाहि कुड़नी हेवाल हे !

बिचला हरवहिआ के अँचरा के छँहिआ
नवरंग बेनिआँ डोलाव हे !

(ठूँठ पकड़ी के गाछ तरु हरवाह सुस्ता रहल बा। घास में मेहनत कइला से हार गइल बा। घरे खवर गइल कि पानी आ भोजन आओ। ओकर मेहरारू खोंइछा में आनन्दी के भूँजा (थरुहट के बहुते प्रिय खाद्य पदार्थ) आ माथा पर पानी के वरतन लेके अइली। कवना हरवाह के भूँजा देस आ केकरा के पानी देस। अगिला हरवाह जे जेठ रहे ओकरा के भूँजा देली, पछिला के पानी पिअवली आ विचला जे उनुकर सवाँग रहे ओकरा के अँचरा के हवा दे के हिरदेआ जुड़वली। एह सुन्दर गीत के थारू मरदे-मेहरारू झूमि-झूमि के गावेले।)

(संकलित)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार में महात्मा गाँधी के उतरनिहार

प्रभात वर्मा

□ □

हिन्दुस्तान के आजादी के लड़ाई के इतिहास में पंडित राज कुमार सुकुल के नाम सोना के अछरन में लिखाए जोग बा। बाकिर आज कमे लोग बा जिनिका सुकुलजी के बारे में पूरा जानकारी होखे। हम उनका जनम-भूँइ पर जा के आ ओह इलाका में घूमि के आ किताबन में पढ़ि के जे कुछ जानि पवलीं ऊ संछेप में दे रहल बानीं।

चंपारन जिला के चनपटिया बजार से सटले उत्तर सतवरिया गाँव के एगो ब्रह्मभट्ट परिवार में कोलाहल सुकुल के बेटा राजकुमार सुकुल के जनम आजादी मिले के सत्तर साल पहिले (१८७७ ई. में) भइल रहे। राजकुमार सुकुलजी के थोरिका जमीन ओह घरी के बेलवाकोठी के अधीन मुरली मरहवाँ गाँव में (आज के सिकारपुर थाना के भीतर) रहे जहाँ अपना मेहरारू आ बाल- बच्चन के साथ ऊ रहत रहले।

अपना बाप के तीन बेटन में सबसे छोट राजकुमार सुकुल रहले। गरीबी के कारन ऊ जादा पढ़- लिख ना पवले। तेरह बरिस के उमिर होत इनकर बिआह कर दिआइल। सादी के बाद आपन जनम भूँइ सतवरिआ छोड़ि के हथुआ राज में नोकरी करे गइले। नोकरी करत सालो ना लागल रहे कि मेहरारू मरि गलहिन आ ऊ नोकरी छोड़ि के सतवरिया लवटि अइले। दू साल बाद इनकर दोसर बिआह भइल। फेरू राजकुमार सुकुल घर छोड़ले आ अबकी अपने जिला में नरकटियागंज में दोसर नोकरी धइले। एहू नोकरी में ऊ जादे दिन टिक ना सकले। एगो अंगरेज मुलाजिम के मारि-पीटि के घरे भागि अइले।

अंगरेज मुलाजिम के मारल आ नोकरी छोड़ि के आइल सुनि के घर के बेकतिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के चेहरा सूखि गइल। अपना बाबूजी के सलाह मानि के राजकुमार सुकुल सतवरिया छोड़ि के मुरली मरहवाँ आ के बसि गइले। ओह घरी पारन जिला में निलही कोठी आ निलहा अंगरेज जमीन्दार साठ-सत्तर गो ले रहल होइहन। निलहन में सबसे जादा क्रूर आ चालचलन के बदमास बेलवा कोठी के जमीन्दार ए० सी० एमन रहे।

साढ़े छव फुट लंबा, अँइठल देह-धाजा, भूअर-भूअर भेआवह आँखिवाला एमन जब घोड़ा पर असवार होके, चमड़ा के चाभुक नचावत, हवाखोरी खातिर निकले त दूर-दूर ले आतंक फैल जाय। दूरे से ओकरा घोड़ा के टाप सुनि के अपना घरे-दुआरे, खेते-खरिहाने, राहे-बाटे जे जहाँ रहे सिर नवा के खड़ा हो जाय। तनिको बेअदबी के सजाय एमन लोगन के पीठ पर अपना चाभुक से देत चले। नियम बना देले रहे कि इलाका में कवनो नया-नोहर कनिआँ के डोली पहिली राति ओकरे कोठी पर उतरी।

एक रात के बात ह। गाँव के एगो नया बिआहल लइकी के बरिआरी से एमन के मउज-मस्ती खातिर ओकर लठइत लेले जात रहलन स। लइकी जार-बेजार रोअति रहे, तले त राजकुमार सुकुल उहाँ पहुँचले आ राह रोकि के खड़ा हो गइले। डपटि के कहले कि अब एह गाँव के बेटी-पतोह के हरामजादा एमन ना छुए पाई। खाली हाथ लवटि के दलाल लठइत जब एमन से राजकुमार सुकुल के कारनामा सुनवलन स त ऊ खीसी काँपे लागल आ जल में रहि के मगर से बैरु के मजा सुकुल के चखावे के ठानि लेलस। सुकुलजी के मेहरारू उनुकर गोड़ धइ के कहे लगली कि एमन से दुसमनी कइके रउआ पार ना पाइबि। बाकिर सुकुलजी उनुका के समुझवले कि अन्याय आ अधरम का आगे मूड़ी ना गाड़े के चाहीं भलहीं ओकरा विरोध में जानो के बाजी लागि जाय।

१९१६ के नवंबर के जाड़ा के दिन में सुकुल जी अपना मड़ई के पँजरा के खेत में आलू कोड़त रहले। करमचन्द नाँव के एमन के एगो बराहिल आइल आ कहलस कि एह आलू में से कोठी के हिस्सा चाहीं। "कइसन हिस्सा ?" सुकुलजी खीस में कहले, "ई जमीन हमार ह, बन्दोबस्ती पर केकरो से लीहल ना, जवना के उपजा पर कोठी के हक-हिस्सा होई।"

"लेकिन साहेब के हुकुम बा" करमचन्द बोलल। "केकरो हुकुम होखो, जे हुकुम देले बा ओकरा से जा के कहि द कि पंडित जी एको आलू देवे के तइआर नइखन" सुकुलजी सुनवा दिहले।

करमचन्द के गइला के घंटे भर बाद लठइतन के लेले एमन खुद सर जमीन पर पहुँचल। पहिले ऊ खेत के सजी आलू अपना कब्जा में ले लिहलसि, तेकरा बाद सुकुलजी के मड़ई उजरवा घललसि। बाद में अपना लठइतन से उनुका के धरवा के उनुकर कुरता उतरवा के उनका उघार पीठ पर दनादन चमड़ा के चाभुक जमावे लागल। गाँव-घर के लोग उहाँ आइल बाकिर केकरो हिम्मत ना होखल ओकर विरोध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करे के। जव एमन अपना लठइतन के साथे चलि गइल त केहू डेरात-डेरात सुकुल से पूछल, "अइसन काहें खातिर होखल हा ?"

"ईहो होनी रहल हा," बिना कवनो अरज-अफसोस के उनुका मुँह से अतने निकलल। ओही ठाँवें आपन जनेव तूरि के फेंकले आ सपथ लेले—"एगो अछूत अंगरेज के हाथे चमड़ा के चाभुक खा के ब्राह्मन के धरम नष्ट भइल वा। हम जनेव तूरि के किरिआ खातानीं कि चाहे त अँगरेजी राज खतम होई च'हे खुद हमहीं खतम हो जाइवि। ।"

मुरली मरहवाँ छोड़ि के साँझ होत-होत सुकुलजी सतवरिया पहुँचले आ आपन पीठि देखा के लोगन से कहले, "जव ले अंगरेजन के एह देस से निकाले के कवनो रास्ता नइखे निकलत हम चैन से ना बइठवि। वस, घर से सर-सातू बान्हि के रातो-रात गाँव से निकलि गइले आ सीधे पटना पहुँचले। पटना के अखबारन के आफिसन में जा-जा के एमन के अत्याचार के कहानी सुनवले वाकिर अंगरेज जमीन्दार के खिलाफत करे के हूव केकरो ना रहे एह से केहू उनुका बात प ओतना ध्यान ना दीहल। हँ, केहू ई सलाह जरूर दीहल जे ऊ कानपुर चलि जासु आ उहाँ के दैनिक "प्रताप" के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थीजी से भेंट करसु।

सुकुलजी कानपुर गइले आ "प्रताप" कार्यालय में विद्यार्थीजी से मिलले। विद्यार्थीजी अंगरेज जमीन्दार के अत्याचार के एह कहानी के प्रकाशित करे के आश्वासन दिहले। साथे-साथ विद्यार्थीजी इहो बतवले कि दस महीना पहिले मोहनदास करमचन्द गाँधी दक्षिन अफ्रीका से अपना देस में लवटल बाड़े आ उहो अंगरेजन के अत्याचरन से क्रुद्ध बाड़े आ उन्हन के अत्याचार के खिलाफ, लडत-भिड़त बाड़े। एह घरी ऊ साबरमती में रहत बाड़े, रउआ उनुका से मिलीं आ उनुका से अपना दुख-तकलीफ के हाल सुनाईं आ कहीं कि चंपारन के हाल ऊ खुद अपने आँखी देखसु।

सुकुलजी सावरमती पहुँचले। कई दिन के वाद उनुकर मुलकात गाँधीजी से भइल। उहाँ चंपारन के निलहा अंगरेज जमीन्दार के अत्याचार के कहानी गाँधीजी के सुना दिहले आ चंपारन चलि के देखे खातिर निहोरा कइले। एगो गाँव-गँवई के एह भोला-भाला किसान के वात गाँधीजी गौर से सुनले आ वचन दिहले कि मोका मिली त उनुका साथे चम्पारन चलिहें। फेरु त लखनऊ, कलकत्ता जहाँ-जहाँ गाँधीजी के जाए के होखे सुकुलजी गाँधीजी के पाछा-पाछा चलल करसु। कानपुर, पूना, अहमदावाद सुकुलजी के मालुम होखे भर के देरी रहे आ ऊ ओह जगहा दू-चार दिन अगतहीं पहुँचि जासु आ गाँधीजी से भेंट होते एके वात पूछसु, "महातमाजी रउआ हमरा साथे चंपारन कब चलत बानीं ?"

गाँधीजी कब ले टरिते। सुकुलजी टरे वाला त रहले ना, एह से गाँधीजी के समय देवहीं के परल। आ १०अप्रील १९१७ के दस बजे दिन में कलकत्ता के ओर से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवत ट्रेन से सुकुलजी का साथे गाँधीजी पटना स्टेशन पर उतरले। ओह दिन विहार के धरती पर पहिले पहिल महात्माजी चरन धइले रहीं। अपना आत्मकथा में महात्माजी लिखले वानीं श्री कि शुक्ल विहार के हजारन लोगन पर से नील के कलंक धो देवे के कृतसंकल्प रहले।

पंडित राजकुमार सुकुल आ अंगरेज़ जमीन्दार ए.सी.एमन के दुसमनी आ आजादी के अगहर सिपाही मोहनदास करमचन्द गाँधी के बिहार के धरती पर उतारे के एगो लमहर कहानी सुकुलजी के जीवन-कथा से जुड़ल वा। आज से ६७ वरिस पहिले राज कुमार सुकुल अस एगो साधारन पढ़ल-लिखल देहाती किसान के अपना इहाँ के अत्याचारी अंगरेज जमीन्दार से अदावत ना भइल रहित त भारत के आजादी के इतिहास केह तरे लिखाइल रहित आ राष्ट्रपिता बापू के एह इतिहास में कहँवाँ आ कवना रूप में इआद कइल जाइत, ई कहल मोसकिल वा।

आ ईहो साँच ह कि चंपारन आवे के पहिले गाँधीजी के आन्दोलन सहरने तक ले समेटल रहे। गाँधीजी पढ़ले-लिखल लोगन के मन-मस्तिष्क में रहले। उनुका के जन-जन तक पहुँचवनिहार राज कुमारे सुकुल भइले। सुकुलजी गाँधीजी से उमिरो में बड़ रहले। ऊ अकेल आदमी रहले जे चंपारन के धरती पर गाँधीजी के ले आके ई एहसास करा दिहले कि आजादी के लड़ाई सहरन से ना, वलुक गाँवन से सुरू करे के चाहीं काहें कि गाँवें एह देस के जान ह। ओह समे के देस के राजनीति में मसहूर नेता राजेन्द्र प्रसाद, ब्रजकिशोर वाबू आ जवाहर लाल नेहरुओ सुकुलजी के कर्त्तव्यनिष्ठा के लोहा मानत रहलन। खुद गाँधी जी अपना "आत्मकथा" में उनुकर वखान कइले बाड़े। जिनिगी भर सुकुलजी स्वतंत्रता के आन्दोलन में लागल रहले।

चउदह वरिस ले गाँधीजी से जुड़ल रहला के वाद सुकुलजी काफी वुढ़ा गइल रहले आ रोगी हो गइल रहले। उनुका जनाए लागल रहे कि अब ऊ जादा दिन एह संसार में ना रहि सकिहें। तब ले गाँधीजी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मसहूर हो गइल रहले। एक दिन राजकुमार सुकुल गाँधीजी के एगो चिट्ठी में लिखले.."अब बुझने ही वाला हूँ, क्या आप चंपारन नहीं आयेंगे ?"

लेकिन ओह घरी गाँधीजी के आ पावल अपना वस के वात ना रहे। आखिरस एक दिन सुकुलजी खुदे गाँधीजी का तलास में मोतिहारी से निकलिए त पड़ले। घर से चलला के पैनरह-सोरह दिन वाद गाँधीजी आ कस्तूरवा दूनों आदमिन से सावरमती में भेंट भइल। 'वा' के आँखि भरि अइली स। सुकुलजी के जरजर देहि-धाजा देखि के रोआँसा हो के पूछि बइठली, "आपको यह क्या हो गया पंडितजी ?" गाँधीजी कहले, "आपकी तपस्या अवश्य रंग लायेगी। आज नहीं तो कल देश आजाद होगा।" "क्या वह दिन मैं देख सकूँगा ?" सुकुलजी के सवाल के कवनो जवाव गाँधीजी के पासे ना रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साबरमती आश्रम में 'बा' आ 'बापू' के साथे दू दिन बितवला के बाद सुकुलजी वापस लवटि अइले। लमहर राह के थकान से अउरू कमजोर हो गइल रहस। मोतीहारी स्टेशन पर उतरले त फेरु आगे कतो जाए के मन ना भलहिन। स्टेशन से सीधे केडिया जी के फुंलवारी वाला 'अतिथि-घर' पहुँचले आ ओकर उहे कोठरी खोलववले जवना में गाँधीजी रहत रहले। ओही कोठरी में सुकुलजी के साँस टूटल।

मोतीहारी के लोग चंदा उगाहल आ सुकुलजी के दाह-संस्कार सँपरावल। सुकुलजी के मरला के खबर केहू एमन के जब दीहल त ओकर चेहरा सिआह हो गइल। अफसोस के साथ बोलल, "चंपारन का वह अकेला मर्द था जो अकेले मुझसे पच्चीसो वर्ष तक लड़ता रहा। अब मैं भी ज्यादा दिनों तक जिन्दा नहीं रह पाऊँगा।" आ सुकुलजी के मरला के साते-आठ महीना बाद ओकरो ई संसार छूटि गइल।

राजकुमार सुकुल के संतान में बस दूगो बेटी रहली। देस के समर्पित एह महान आत्मा के पारिवारिक जीवन बड़हीं कष्टमय रहे। गउरव भूँइ चंपारन के एह अवतारी पुरुष के स्मृति-रेख देस के नजर से ओझल ना होखे के चाहीं।

(मूल हिन्दी से भोजपुरी में रूपांतरित)

शांति सदन, लहेरिया टोला
खुसरूपुर (पटना)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वहाँ सत्य का साक्षात्कार किया

(महात्मा गाँधी की 'आत्मकथा' से)

□ □

नील के दाग :

चंपारन राजा जनक की भूमि है।

चंपारन में जाने के पहले मैं उसका नाम-निशान नहीं जानता था। यह खयाल भी प्रायः नहीं के बराबर ही था कि वहाँ नील की खेती होती है। नील की गोटियाँ देखी थीं, परन्तु मुझे यह बिल्कुल पता न था कि वे चंपारन में बनती थीं और उनके लिए हजारों किसानों को वहाँ दुःख उठाना पड़ता था।

राजकुमार शुक्ल नाम के एक किसान चंपारन में रहते थे। उन पर नील की खेती के सिलसिले में बड़ी बुरी बीती थी। यह दुःख उन्हें खल रहा था और उसीके फलस्वरूप सबके लिए इस नील के दाग को धो डालने का उत्साह उनमें पैदा हुआ था।

जब मैं कांग्रेस में लखनऊ गया था तब इस किसान ने मेरा पल्ला पकड़ा।

१९१७ के आरंभ में कलकत्ते से हम दोनों रवाना हुए। हम दोनों की एक-सी जोड़ी—दोनों किसान-से दीखते थे। राजकुमार शुक्ल और मैं—हम दोनों एक ही गाड़ी में बैठे। सुबह पटना उतरे।

अहिंसा देवी का साक्षात्कार :

चंपारन गंगा के उस पार, ठेठ हिमालय की तराई में नेपाल के नजदीक का हिस्सा है। उसे नई दुनिया ही कहना चाहिए। यहाँ कांग्रेस का नाम निशान भी नहीं था न उसके कोई मेम्बर ही थे। जिन लोगों ने कांग्रेस का नाम सुन रखा था वे उसका नाम लेते हुए और उसमें शरीक होते हुए डरते थे; पर आज वहाँ कांग्रेस के नाम के बिना कांग्रेस ने और कांग्रेस के सेवकों ने प्रवेश किया और कांग्रेस की दुहाई घूम गई। साथियों के साथ कुछ सलाह करके मैंने यह निश्चय किया था कि कांग्रेस के नाम पर कुछ भी काम यहाँ न किया जाय। हमको 'नाम से नहीं काम से' मतलब है। कथनी की—कहने की —नहीं, करनी की जरूरत है। कांग्रेस का नाम यहाँ लोगों को खलता है। हमने सोचा कि वे कांग्रेस के अक्षर को—नाम न जानते हुए उसकी आत्मा को जानें और उसका अनुसरण करें तो बस है। यही वास्तविक बात है। इसलिए कांग्रेस की तरफ से किसी छिपे या प्रकट दूतों के द्वारा कोई जमीन तैयार नहीं कराई गई थी; कोई पेशबंद नहीं की गई थी। राजकुमार शुक्ल में हजारों लोगों में प्रवेश करने की सामर्थ्य न थी, वहाँ लोगों के अन्दर किसी ने भी आज तक कोई राजनैतिक काम नहीं किया था। चंपारन के सिवा बाहर की दुनियां को वे जानते ही न थे। फिर भी उनका और मेरा मिलाप किसी पुराने मित्र के मिलाप-सा था। अतः यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं मालूम होती, बल्कि यह अक्षरशः सत्य है कि **मैंने वहाँ ईश्वर का, अहिंसा का और सत्य का साक्षात्कार किया।** जब साक्षात्कार-विषयक अपने इस अधिकार पर विचार करता हूँ तो मुझे उसमें लोगों के प्रति प्रेम के सिवा दूसरी कोई बात नहीं दिखाई पड़ती और यह प्रेम अथवा अहिंसा के प्रति मेरी अचल श्रद्धा के सिवा कुछ नहीं। चंपारन का वह दिन मेरे जीवन में ऐसा था, जिसे कभी नहीं भूल सकता। यह मेरे तथा किसानों के लिए उत्सव का दिन था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संपर्क भाषा हिंदी : मातृभाषा भोजपुरी

हिन्दी का प्रयोग बढ़ावें

(३१ दिसम्बर १९८१ को कलकत्ता में अ० भा० रे० हिन्दी सप्ताह समारोह में भाषण)

□ □

मान्यवर फादर कामिल बुल्के और साथियो !

इस महानगरी कलकत्ता में आप सबका स्वागत-अभिनन्दन करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। कलकत्ता पश्चिमी बंगाल प्रदेश की राजधानी होने के साथ-साथ, सम्पूर्ण देश के गतिशील, प्रवुद्ध और चेतन मन का प्रतीक भी है। इसलिए यह महानगरी सम्पूर्ण देशवासियों के लिए तीर्थ स्थल है। मेरे इस कथन का समर्थन पिछले लगभग तीन सौ वर्षों का इतिहास करता है।

इसी नगरी में आधुनिक भारत का उदय हुआ। विदेशी हुकूमत के चलते जब देश में पस्तहिम्मती, घुटन और निराशा थी, जब लोगों को लगने लगा कि हम नगण्य हैं, हमारा अतीत, वर्तमान और भविष्य दयनीय, ग्लानिमय और अंधकारपूर्ण है तब इसी बंगाल और कलकत्ते के मनीषियों ने सांस्कृतिक नवजागरण का शंख फूँक कर पूरे देश को स्वाभिमान और आत्म-विश्वास की भावना से उद्वेलित-उत्प्रेरित कर दिया। हमारा अतीत प्रेरणा का स्रोत बन गया और भविष्य का आकाश आलोकित हो उठा। यह अकारण ही नहीं हुआ। ईष्ट इंडिया कम्पनी को प्रश्रय-प्रोत्साहन देनेवाला यह नगर बहुत जल्द अपने देश का ऋण यानी गुलामी का जुआ उतार फेंकने के लिए आकुल-व्याकुल हो उठा। सांस्कृतिक नवजागरण, राष्ट्रीयता का आन्दोलन और भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठापन की शुरुआत इसी महानगरी से हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १८३४ ई० में टामस मैकाले ने अंग्रेजी नीति की आधारशिला रखी थी। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाएँ दरिद्र और भोंड़ी हैं। अंग्रेज असीम समुद्रों के व्यापारी और शासक हैं। भारतीय लोग न शासक हैं और न समुद्र के व्यापारी। अतएव उनकी भाषा शासन और शिक्षा की भाषा कैसे हो सकती है? उन्होंने साम्राज्यवाद की दुंदुभी वजाते हुए अंग्रेजी शिक्षा के उद्देश्य का प्रतिपादन निम्नलिखित शब्दों में किया—

"हमको वर्तमान में भरसक प्रयत्न करना चाहिए कि हम ऐसे वर्ग का निर्माण करें जो करोड़ों शासित प्रजा के वीच दुभाषिये का कार्य कर सके, जिसका रक्त और वर्ण भारतीय हो किन्तु जिसकी रुचि और विचार, शील और बुद्धि अंग्रेजियत से भरी हो।"

आश्चर्य की वात तो यह है कि मैकाले ने उन्नीसवीं सदी में अंग्रेजी भाषा के अति विकसित होने का दावा किया था, जवकि सत्रहवीं सदी तक यूरोप और इंग्लैंड के लोगों में कूटनीतिक सम्पर्क लैटिन में रखा जाता था। और अंतर्राष्ट्रीय वाद-विवाद भी लैटिन में होता था। चौदहवीं-पन्द्रहवीं सदी में तो इंग्लैंड में वहुत से साहित्यकार फ्रांसीसी में रचना करते थे। उन दिनों फ्रांसीसी भाषा अंग्रेजी से अधिक विकसित थी।

मैकाले के आगमन के पूर्व से ही देश के कुछ विचारक अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक वन गये थे, किन्तु वे मैकाले की इस ओछी नीति के समर्थक कदापि नहीं थे। हमारे मनीषी तो पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की जानकारी के लिए अंग्रेजी शिक्षा का स्वागत करने को तैयार हुए थे। इन महापुरुषों में एक थे राजा राम मोहन राय जो राष्ट्रीयता, देश-प्रेम और भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक थे। सांस्कृतिक नवजागरण का शंख फूंकने वालों में वे अग्रणी थे। उनकी दृष्टि कलकत्ते अथवा वंगाल तक सीमित नहीं थी, वल्कि सम्पूर्ण देश में वे स्वाभिमान और आत्म-विश्वास भर देना चाहते थे। इसका सवूत है कि १८२९ में ही उन्होंने अपनी पत्रिका "वंगदूत" में वंगला के अतिरिक्त संस्कृत और हिन्दी को भी स्थान दिया क्योंकि वे अपने विचार और आदर्श का प्रचार सम्पूर्ण देश में करना चाहते थे। इसलिए वे मानते थे कि हिन्दी को अपनाये वगैर उनका अभीष्ट सिद्ध नहीं होगा। वे स्वयं उस पत्रिका में हिन्दी में लिखा करते थे। आचार्य केशव चन्द्र सेन ने उनकी इस परम्परा को आगे वढ़ाया और हिन्दी को सम्पूर्ण देश की एकता साधने वाली भाषा घोषित किया। उन्होंने ही स्वामी दयानन्द को राय दी कि वे अपना ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" हिन्दी में लिखें।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सांस्कृतिक नवजागरण, राष्ट्रीयता और हिन्दी आन्दोलन का उदय लगभग एक ही समय और एक ही जगह यानी कलकत्ता से शुरू हुआ। आगे चलकर महात्मा गाँधी ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के काम को अपने रचनात्मक कार्यक्रम का एक हिस्सा वना लिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज कुछ लोग हिन्दी को लादने या उतारने की बात करते हैं तो आश्चर्य होता है और दुख भी। आरम्भ से हिन्दी संतों, सूफियों और गुरुओं की भाषा रही है। जैनियों, नाथ पंथियों और भक्त कवियों ने इसे अपने विचारों को प्रचारित-प्रसारित करने का माध्यम बनाया। अमीर खुसरो, कुतबन, मंझन, जायसी, कबीर, दादू, रहीम और रसखान जैसे महान कवियों ने इस भाषा को अपनी साधना से सिंचित करके पुष्पित और पल्लवित किया। हिन्दी किसी एक जाति या धर्म या सम्प्रदाय की भाषा नहीं रही है, यह सामासिक संस्कृति की संवाहिका रही है। ऐसी भाषा भला किसी पर लादी भी जा सकती है ? १९ वीं सदी से ही इसे सम्पूर्ण देश की सम्पर्क भाषा बनाने का आग्रह अहिन्दी भाषियों ने ही किया; जिनमें बंगाल के मनीषी और नेताओं के अतिरिक्त स्वामी दयानन्द, लोकमान्य तिलक, सुब्रह्मण्य भारती, महात्मा गाँधी और विनोबा भावे जैसे महान आत्मा प्रमुख हैं। हिन्दी का सर्वप्रथम पत्र "उदन्त मार्तण्ड" ३० मई, १८२६ को कलकत्ते से ही प्रकाशित हुआ। १८५० में "सुधाकर" नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ जिसके सम्पादक अहिन्दी भाषी तारा मोहन मित्र थे। १८५४ में इसी महानगर से "समाचार सुधा वर्षण" नामक हिन्दी के समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ, जिसके सम्पादक श्याम सुन्दर सेन थे।

उन दिनों जितने भी देशव्यापी स्तर के संगठन बने जैसे ब्रह्म समाज, थियोसाफिकल सोसायटी और आर्य समाज, उन सबने हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया, और आप जानते हैं कि इन सभी संगठनों के मुख्यालय हिन्दी भाषी क्षेत्र से बाहर क्रमशः कलकत्ता, मद्रास और बम्बई में थे। फिर क्या बात हुई कि इधर हिन्दी लादने या उतारने की चर्चा चल पड़ी। विद्वानों की इस मंडली से क्षमा याचना करते हुए मैं कहना चाहूँगा कि ऐसी चर्चा करने वालों के कथन से क्षेत्रीयता 'की बू आती है। सच तो यह है कि हिन्दी का विकास ऐतिहासिक, आध्यात्मिक कारणों से हुआ।

मैं यह भी स्पष्ट करना चाहूँगा कि मैं अंगरेजी भाषा का विरोधी नहीं हूँ, अंग्रेजियत का विरोधी हूँ। अँग्रेजी ज्ञान की भाषा है और जिस रूप में इसे सीखने का आग्रह बंगाल के सांस्कृतिक नेता राजा राम मोहन राय ने किया था, उसी रूप में मैं भी इसका समर्थक हूँ। किन्तु आधुनिक भारत का विकास और उसके प्रशासन की सफलता भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही संभव है। भारत की सभी भाषाएँ महत्वपूर्ण और समृद्ध हैं। बंगला को ही लीजिए, जिसने महाकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर, माइकेल मधुसूदन दत्त, बंकिम चन्द्र, शरत् चन्द्र, तारा शंकर वन्दोपाध्याय, आशापूर्णा देवी और विमल मित्र जैसे महान लेखक माँ भारती को दिये। इतने बड़े रचनाकार अपनी भाषा के माध्यम से ही महान् बन सकते थे। तमिल भाषा की कम्ब रामायण, वाल्मीकि रामायण या रामचरित मानस से किसी भी दृष्टि से कम श्रेष्ठ नहीं है! हमारे संविधान ने देश की पन्द्रह भाषाओं को राजभाषा का दर्जा दिया और हिन्दी को पूरे देश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार करते हुए, केन्द्र सरकार की राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया। यह महज इसलिए कि हिन्दी बहुमत की भाषा है और इसे सीखना और बोलना आसान है। यह भी सही है कि यह हिन्दी किसी न किसी रूप में दसवीं सदी से ही इस देश के उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम को जोड़ने वाली भाषा रही है। विस्तार में न जाकर, प्रमाण स्वरूप मैं महाराष्ट्र के ज्ञानदेव, गुजरात के नरसी मेहता, पंजाब के गुरु नानक देव, कश्मीर के केशव भट्ट, असम के शंकर देव, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु और तमिलनाडु के रामानन्द के पवित्र नामों का उल्लेख करना चाहूँगा। इन लोगों के पवित्र विचारों को अभिव्यक्ति देने में हिन्दी भी माध्यम बनी। आप सब जानते हैं कि यूनेस्को ने हिन्दी को संसार की तीसरी बड़ी भाषा के रूप में स्वीकार किया है, जिसे बोलने या समझने वालों की संख्या ४२ करोड़ से अधिक है।

मैं एक और निवेदन करना चाहूँगा। लोकतन्त्र में एक शर्त यह भी है कि राजकाज लोक भाषा में चले, न किसी ऐसी विदेशी भाषा में, जिसे जानने समझने वाले मुट्ठी भर लोग हों। यदि अंग्रेजी राजकाज की भाषा रही तो प्रशासन और जनता के बीच की खाई और गहरी, और चौड़ी होती चली जायेगी। जाहिर है, इससे लोकतन्त्र सफल नहीं हो पायेगा। १९३१ में गाँधी जी ने लिखा था—

"यदि स्वराज्य अंग्रेजी-पढ़े भारतवासियों का है और केवल उनके लिए हैं, तो सम्पर्क भाषा अवश्य अंग्रेजी होगी। यदि वह करोड़ों भूखे लोगों, करोड़ो निरक्षर लोगों, स्त्रियों, सताये हुए अछूतों के लिए है तो सम्पर्क भाषा केवल हिन्दी हो सकती है।"

महात्मा गाँधी द्रष्टा थे। उन्होंने ५ जुलाई, १९२८ के "यंग इण्डिया" में लिखा था—

"मैं यदि तानाशाह होता, तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा का दिया जाना बंद कर देता। जो आना-कानी करते, उन्हें बर्खास्त कर देता। मैं पाठ्य पुस्तकों के तैयार किये जाने का इन्तजार नहीं करता।"

इससे भी पहले ब्रह्म समाज के प्रख्यात नेता आचार्य केशव चन्द्र सेन ने सन् १८७५ में घोषित किया था—

अभी जितनी भी भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं, उनमें हिन्दी भाषा ही सबसे अधिक प्रचलित है। इसी हिन्दी को भारतवर्ष की एक मात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाये तो सहज ही यह एकता सम्पन्न हो सकती है।"

यहाँ उपस्थित रेल अधिकारियों और कर्मचारियों से मैं विशेष रूप से कहना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहूँगा कि वे ऐसे संगठन में काम करते हैं जो देश में एकता स्थापित करने की प्रमुख भूमिका अदा कर रहा हैं। इस नाते उनका यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे हिन्दी के प्रयोग-प्रसार में उत्साहपूर्वक हिस्सा लें। भारयीय रेलों पर हिन्दी की उल्लेखनीय रूप से प्रगति हुई है। इस सत्य को सभी स्वीकार करते हैं, किन्तु रेल कार्यालयों में किसी को भी हिन्दी का प्रयोग करने के लिए मजबूर नहीं किया गया। सब काम सद्भाव और समझदारी के साथ किया गया। इस सम्बन्ध में रेल की नीति बहुत ही दूरदर्शिता-पूर्ण रही है। भारतीय रेलों के जो कार्यालय हिन्दी भाषी क्षेत्र में हैं पहले वहीं हिन्दी के प्रयोग प्रसार पर जोर दिया गया। आज पूर्वोत्तर रेल, पश्चिम रेल, मध्यम रेल और उत्तर रेल पर हिन्दी का प्रयोग ६० प्रतिशत से अधिक हो गया है। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हमारे जितने कार्यालय हैं, वहाँ अनुवाद और प्रशिक्षण का काम पूरा किया जा रहा है। हमारे संविधान ने और भारतीय संसद ने हिन्दी के सम्बन्ध में जो व्यवस्था की है, उसका पालन करने में हम सफकतापूर्वक सचेष्ट हैं। रेल अधिकारियों को चाहिए कि वे संविधान की भावना का आदर करें और हिन्दी का प्रयोग बढ़ायें। पूर्व और दक्षिण-पूर्व रेलों का मुख्यालय अहिन्दी-भाषी कलकत्ते में है। यहाँ अनुवाद और प्रशिक्षण का काल प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए। इसी नीति का अनुपालन मद्रास, सिकन्दराबाद और गौहाटी में किया जाना चाहिए। किन्तु संसद ने राजभाषा के सम्बन्ध में अधिनियम पारित किये हैं। इनका उल्लंघन करने की छूट केन्द्र सरकार के किसी कार्यालय को नहीं है।

प्रसन्नता की बात है कि विभिन्न प्रदेशों में वहाँ का राजकाज वहाँ की प्रादेशिक भाषा में होने लगा है। अब इसमें स्थायित्व लाने की आवश्यकता है। महात्मा गाँधी ने दिसम्बर १९१६ में कहा था "कभी-कभी तो अंग्रेजी न जानने के कारण लोगों को बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। यहाँ तक कि मुझ जैसे लोगों को हिन्दी का व्यवहार करने के कारण, रेलवे इत्यादि में धक्के भी खाने पड़ते है।" प्रसन्नता की बात है कि अब रेल में मेल की भाषा हिन्दो हो गयी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे बढ़ल चलीं सभे

(२९ अक्टूबर १९८२ के अमनौर (सारन) में अ० भा० भो० सा० सम्मेलन के मंच से)

□ □

हमरा दुःख बा कि आज तक यू० पी० आ मध्यप्रदेश में भोजपुरी अकादमी के स्थापना ना हो सकल हालाँकि भोजपुरी भाषा-भाषी लोग बिहार से जादे उत्तरे प्रदेश में बा। भोजपुरी में काफी ताकत बा। हमरा विश्वास बा कि प्रजातंत्र के एह युग में अगर लोकमत तइयार हो जाव त भोजपुरी के आपन हक जरूर मिल के रही। हमरा खुशी बा कि बिहार में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी अकादमी जइसन महत्वपूर्ण शोध संस्था रचनात्मक काम के भी काफी आगे बढ़ा रहल बा। जे लोग कहेला कि हिन्दी आ भोजपुरी में विरोध बा ऊ लोग मूर्ख ह। हम त कहब कि भोजपुरिये काहें आउर आउर बोलियन के शक्ति के भी तरक्की होखे के चाहीं। हमरा विचार से क्षेत्रीय बोलियन के अनुपाते में हिन्दीओ के ताकत बढ़ी। बाकिर भोजपुरी के ताकत त बढ़ावहीं के पड़ी। आ ई काम अकादमी बनाइये के हो सकेला काहे कि पूरा पइसा सरकार अकादमिये के देतिया। आ दोसर उपाय भोजपुरी के पढ़ाई कइल बा। जवन अबहीं जोर पकड़त नइखे। का बाबू प्रभुनाथ जी, पहिले त रउआ प्रोफेसरे रहीं। आपन काम—भोजपुरी का पढ़ाई पर ध्यान—भूल गइलीं का? भोजपुरी के पढ़ाई खातिर जोर लगाईं, हमहूँ वादा करतानी कि एह काम खातिर जोर लगाइब। भाषा के प्रभाव धर्मो से जादे होला। अब ई विवाद नइखे कि भोजपुरी भाषा ना ह आ इहो कि एकरा उन्नति से हिन्दी के प्रगति में बाधा पहुँची। जब ई बात बोलतानी त हम खूब सोच के बोलत बानीं आ आपन मंत्री पद के उत्तर-दायित्व समझ के बोलत बानीं कि जनता आपन जोर लगाओ, जीव-जान से मदद भोजपुरी के बढ़ंती खातिर करब। भाषा दिल के तूरे ना जोड़ि देले, लोग एकरा के नोट कर लेब। हमार त खेयाल बा कि भारत के राष्ट्रीय समग्रता के साधन भोजपुरी हो सकेले आ ई राष्ट्रभाषा हिन्दी के मजबूत करी, कमजोर ना करी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम एक बेर बैंकाक गइल रहीं। उहाँ फुटपाथ धइले टहलत रहीं कि एक गोरखपुरिया दरवान से भेंट हो गइल। अइसन प्रेम ओह जवान के उमड़ल कि ऊ हमरा के बे चाय पिअवले उठहीं ना देलक, लासा हो गइल आ हमार बहुते मदद कइलक। भोजपुरी के उन्नति खातिर हम अनकण्डिशनल मदद करब काहें कि ई हमर भाषा ह। हम एकरा के मदद ना करब त हम खुदे आगे कइसे बढ़ब? कहिया रवा सभे साहित्य अकादमी में भोजपुरी के स्थान दियावे खातिर हमरा से मदद मँगलीं हाँ? अबहियों कुछ बिगड़ल नइखे बलुक एही घड़ी त अच्छा मौका बा। खबर करके हमरा के आईं सभे दिल्ली। हम अपने के साथ एह काम खातिर उचित पदाधिकारी लोगन भिरी चलब, लिखब, पढ़ब आ सिफारिस करब। अपना के कमजोर मत समझीं सभे। हम अपने सभे के कमजोरी दूर करब। रवा सभे हमरा से कुछुओ मत छिपाईं। हम भोजपुरिया 'वेल्ट' के हईं एह बात के हमरा गर्व बा। हम इहे रवा सभ से कहे खातिर दिल्ली से दउरल आइल बानी कि रवा सभे हमरा के अपना से अलग मत समझीं। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी अकादमी खातिर जमीन पावे के कोशिश करीं सभे। हम उत्तर प्रदेश से आइल अपना भाई लोगन आ खास करके भाटपार (देवरिया) कालेज के प्राचार्य आ आपन साहपाठी केशवचंद्र मिश्र जी से कहतानीं कि उत्तर प्रदेश में भोजपुरी अकादमी के स्थापना करावे खातिर उहां सभे कोशिश करीं। बड़ा अच्छा मोका बा। श्रीपति मिश्रजी एह घड़ी मुख्य मंत्री बानीं। उहाँ के हमार बहुते अच्छा दोस्त हईं। हमार बात उहाँ के ना उठाइब। हम उहाँ से उत्तर प्रदेश में भोजपुरी अकादमी के स्थापना खातिर कह देब।

आज से पाँच-सात बरिस पहिले ले ई सवाल पूछल जात रहे कि भोजपुरी में अबहीं साहित्य बड़लहीं कहाँ बा बाकिर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी अकादमी लोग के मुँह बंद कर देलक। अब ई सवाल त नइखे उठत बाकिर तबो अबहीं भोजपुरी में खूब लिखाई होखे चाहीं। उत्तर प्रदेश, बिहार आउर मध्य प्रदेश मिल के एह दिशा में काम करो। काहे ना मारिशस में एगो विश्व भोजपुरी सम्मेलन होखो। सम्मेलन के असल उन्नति शोध से होई जवन काम अकादमी कर सकेली स। अगर सब रोपेआ स्थापने पर खर्च हो जाई त शोध का होई? का सब काम मासिक वेतने से होई? मानदेय से ना हो सके? खैर, काम बढ़ चुकल बा—नाधा त आधा, कवनो कमी ना होई। सालाना एक-दू लाख रोपेआ शोध में खर्च करीं सभे। फाँफी मरला से काम ना चली। आगे बढ़ल चलीं सभे, खूब आगे बढ़ीं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.